ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' 247 म अंक 01 अप्रैल 2018 (वर्ष 11 मास 124 अंक 247)



ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

जगदीश प्रसाद मण्डलक ३ टा लघुकथा संग्रह

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल छनि। नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केँ "**तरेगन**" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "**अर्चिस**" (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "**देवीजी**" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ "**निश्तुकी**" (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ "**मोहनदास**" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)

२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)

२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-

(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईशा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य अभिनय-

(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर ६**०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मूर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र**- श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी
सुपुत्र श्री ,
पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

काँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,
पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि।
पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
तान्पुरा सह भाव संगीत
(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघरडीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)
तरसा/ तासा-
श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-
श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढ़ियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)
गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा
श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।
श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंका/ ढोल वादक
श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)
श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)
श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
नड़ेरा/ डिगरी-
श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-
१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८
Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf
२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८
Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf
३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०
Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67
४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०
Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70
५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०
Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72
६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११
Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77
७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२
Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111
८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३
Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126
९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३
Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142
१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६१ म अंक १ जनवरी २०१५
Videha_01_01_2015
११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५
Videha_01_11_2015
१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५
Videha_01_12_2015
१३) विदेह सम्मान विशेषांक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६
Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन
विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]
The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor
Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह


मैथिलि साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकें देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ कोंhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html ''भालसरिक गाछ''- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा ''विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'' धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब ''भालसरिक गाछ''जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटर रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

सिद्धिरस्तु

बेटीक पैरुख

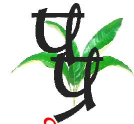


जगदीश प्रसाद मण्डल



बेटीक पैरुख

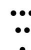
जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

कुवृत्ति वृत्ति चित्र बनि-बनि
रूप समाज सजैए।
दृश्य-अदृश्य, अदृश्य दृष्टिक
रूप धार धारण करैए।
धरिते रूप धार धरिया
दृश्य महार सजैए।
धार-महार महैर-महि
रंग समाज चढ़ए लगैए।
चढ़िते रंग समाज संग
निखाइर रूप निरखैए।
परखनिहारो निखैर-परैख
गति-विधि समाज देखैए।
जेहने गति-विधि समाजक
तेहने शीलो-शूल बनैए।
मन मन्दिर बैस पुजारी
पूजा यज्ञक पूर्ति करैए।



ISBN : 978-81-936422-4-5

दाम : ₹ 251/-

पहिल संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

BETIK PAIRUKH
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

अपन गारि अपन दुआरि

फगुआक प्रात। ओना छल फगुआक पराते मुदा जहिना मासक अन्त तहिना सालोक अन्त तँ छेलैहे। माने ई जे फागुन सालक अन्तिम मास छी आ चैत सालक पहिल मास। फगुओ एहेन पाबैन छी जे मासक अन्तिम दिन पुरनिमा-कँ होइए। ओना, सालमे बहुतो पाबैन होइए मुदा फगुआ सन धमगज्जर दोसरमे नहियेँ होइए।

आन साल जहिना केते गोरेक कुरसी-ब्रेंच, आगिमे–माने सम्मत जरैमे–स्वाहा होइ छल तहिना केते गोरेक टाटो-फरक होइते छल। तँए मनमे जिज्ञासा रहबे करए जे ऐ बेर की सभ भेल से तँ बुझबे अछि, तँए सबेरे-सकाल चौकपर पहुँचलौं।

ओना, चौकक रोहानी आन साल जकाँ नहियेँ छल, तेकर कारण भेल जे आन साल जेना लोक भाँग-गाँजा, ताड़ी-दारू पीब झुमबो करै छल, फगुओ-जोगिरा गबै छल आ लोकक कुरसियो-ब्रेंच जरबै छल से ऐ बेर नइ भेल।

चाह पीब पान खा घरमुहाँ भेलौं। मनमे उठल- ऐ बेरक फगुआ रीब-रीबेमे चलि गेल, मुदा नीक भेल कि अधला, से तैंये ने कऽ पबै छेलौं। जँ नीक भेल तँ पुश्तैनी परम्परामे ठेंस पहुँचै छल, जँ अधला भेल तखन तँ धीरे-धीरे पाबनियेँ मेटा जाएत..!

ओना फगुआ रंग-अबीरक पाबैनक संग ढोलक-डम्फापर नाचो-

गानक तँ छीहे।

दरबज्जापर अबिते सुनलौं जे आँगनमे पत्नीक संग जेठकी पुतोहु कहा-कही कऽ रहली अछि।

अढ़ दबि कऽ चौकीपर बैस अँगने दिस कान पाथि देलौं। ओना, फगुआक खुमारि मनसँ नइ हटल छल। खुमारि ई जे फगुआ तँ रंग-अबीरक उत्साह छी। माने जीवनक रंगक उत्साहक पाबैन...।

दरबज्जापर अबैसँ पहिने दुनू गोरे–पत्नी आ पुतोहु–मे की सभ कहा-कही भेलैन से तँ हल्लामे ने नीक जकाँ सुनि पेलौं आ ने बुझिये पेलौं, मुदा जखन कान ठाढ़ केलौं तखन सुनलौं, पुतोहु सासुकेँ कहैत रहथिन-

"सासुसँ कोनो सुख नहि भेल।"

'सासुसँ कोनो सुख नहि भेल' सुनि पत्नी निरुत्तर छेली तँए बकार बन्न रहैन। ओना, कोन एहेन प्रश्न अछि जेकर नीक कि अधला उत्तर नइ अछि। मुदा किछु एहनो उत्तर तँ ऐछे जे रहितो तत्काल मनमे एबे ने करैए। भरिसक सएह पत्नियोंकेँ भेलैन।

निरुत्तर सासुकेँ देख पुतोहुकेँ आरो सह भेटलैन तँए रंग-बिरंगक प्रश्न उठा-उठा मुहेँ-काने तोपि रहल छेली...।

पुतोहुक एकभग्गु अवाज सुनि मनमे भेल जे भरिसक पत्नी पछैर रहली अछि। परिवार छी, जखने एक दिन पुतोहु सासुकेँ दाबि देती तँ दोसरो-तेसरो दिन की जे जिनगी भरि दाबिते रहती। जखने सासु दबि जेती आ पुतोहु उठि जेती तखने परिवारमे अराजकताक स्थिति बनि जाएत..!

दरबज्जापर सँ उठि आँगन दिस विदा भेलौं। पुतोहु पुवारि भागमे रहैथ आ पत्नी पछवारि भागमे। दरबज्जाक ओसारसँ जखने आगू बढ़लौं कि पत्नीक नजैर हमरापर पड़लैन। नजैर पड़िते पत्नी

दरबज्जा दिस अपन बात कहए आगू बढ़ली। पत्नीकेँ दरबज्जा दिस बढ़ैत देख अपने ओसारक निच्चेंमे अँटैक गेलौं। अँटकैक कारण भेल जे भने बेरा-बेरी दुनू गोरे अपन-अपन बात कहती जइसँ सभ बात नीक जकाँ बुझैमे आबि जाएत।

लग अबिते पत्नी कहली-

"एना जे पुतोहु कहै छैथ जे 'सासुसँ कोनो सुख नहि भेल' से एहेन होइ?"

पत्नीक बात सुनि मनमे भेल 'एहेन होइ' आकि 'ओहन होइ' ई तँ भेल विचारक दुनियाँक बात, मुदा जैठाम झगड़ा होइए तैठाम जँ मुँह बन्न भऽ गेल तँ वएह ने हारब छी, से तँ सासु हारिये रहल छेली। होइते छै किने जे बुधिक पेंच-पाँच बुधियारीक होइए मुदा कुश्तीक पेंच-पाँच तँ तइसँ भिन्न होइए किने। कुश्तीकाल तँ जमीनपर खसाएबे ने हार-जीतक फैसला करैए...। पत्नीकेँ कहलयैन-

"अहाँ सासु भेलौं आ ओ पुतोहु भेली। जहिना ओ कहलैन जे सासुसँ कोनो सुख नहि भेल, तहिना अहूँ ने उनटा कऽ कहितिऐन जे पुतोहुओसँ कोनो सुख नइ भेल।"

प्रश्नक जवाब प्रश्ने जकाँ सुनि पत्नी झुझुएली, तँए ठमैक कऽ चुपचाप ठाढ़े रहली। ओना, बाजैथ किछु ने मुदा मनमे ई जरूर होइत रहैन जे एहेन कटगर जवाब भेटै जे पुतोहुक विचारकेँ काट करैत हुअए...।

पत्नीकेँ ठमकल देख अपना मनमे भेल जे जनु रूचिगर उत्तर नहि भेटलैन तँए अकबकाएल छैथ। अपना जनैत तँ कटगरे जवाब सिखौलयैन मुदा भरिसक ओ जवाबक रहस्य बुझिये ने पेली। जाबे कोनो विचारक रंग-रहस्य बुझिमे नहि औत ताबे रंग-रभस केना हएत। आँखिक इशारासँ पत्नीकेँ लगमे शोर पाड़लयैन आ अपने ओसारक

चौकी दिस बढ़लौं।

ओना, पुतोहु हमरा नहि देखने छेली मुदा सासुकेँ तँ देखनहि छेली जे हारि कऽ हँसेरी आनए गाम दिस भगली, आँगनक जीत तँ भाइये गेल छेलैन। जीतक खुशीमे पुतोहु दम कसलैन। ओना, दम विचारे नइ कसलैन, तेसर कियो आँगनमे नहि छल तँए केकरा कहितथिन तँए मुँह बन्न कऽ लेलैन। खाएर जे जेना भेल मुदा शान्त तँ भाइये गेली।

चौकीपर बैसते मनमे भेल जे पत्नीकेँ बुझा दिऐन जे परिवारमे सासुक अपन सीमा अछि आ पुतोहुक अपन, यएह सीमालांघन अतिक्रमण भेल, जइसँ विचारसँ बेवहार धरिक अतिक्रमण हएत। अही अतिक्रमणक रक्षा करब परिवारक सिरजनक[1] काज भेल। मुदा अखन तँ डंकाक अखड़ाहा छी, विचारक अखड़ाहा नहि, तँए विचारक कल-पुरजासँ थोड़े काज चलत। अखन तँ कुश्तीक कल-पुरजासँ ने काज चलत, तँए कहलयैन-

"देखू, जहिना पुतोहुकेँ डेढ़ साल एना नहि भेलैन कि सासुसँ हिस्सा पुछए लगली जे 'अहाँसँ की सुख भेल?' -जिनका एतबो होश नइ छैन जे जे हाथ पकैड़ जीवनक भार उठा अनला, ओकर जन्मसँ अखन धरिक जे बीस बरख सेवा केलिऐ तेकर बदला पुतोहु-लग हिसाब छैन।"

हमर बात सुनिते पत्नीक देहमे फुनफुनी जागए लगलैन। भरिसक नअ मासक पेटक सेवा मन पड़लैन। जेकरा चिड़ैक अण्डा जकाँ रूप गढ़ि ओते सुन्दर बना धरतीपर उतारि आइ धरि सेवा केलिऐ, जिनगीक पचास बर्ख जइ धरतीकेँ जन्मभूमि बुझि रंग-रंगक घर-दुआर, माल-जाल, गाछ-बिरीछ रोपि शोभा सुन्दर बढ़बैत रहलिऐ

[1] श्रेष्ठजनक

तैठाम डेढ़ बर्ख पूर्व एनिहारि भगा देत, ईहो तँ लाजिमी नहियेँ हएत।

पत्नीक मन खनहन बुझि पड़ल मुदा पुन: दोहरा कऽ पुतोहुक प्रश्नक उत्तर दइतथिन से साहसे ने होइन। अपना मनमे भेल जे सासु-पुतोहुक झगड़ा छी, समाजो ओते बेकूफ नहियेँ छैथ जे केकरो सासु-पुतोहुक रक्षा-टोकीक पनचैती करए चलि औता मुदा सुनलापर किछु ने बजता, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। एते तँ बजैक अधिकार छैन्हे जे समाजमे सबहक अपन-अपन दायित्व बनैए जे अपन-अपन परिवारकेँ एकमुहरी समेट अपन प्रदर्शनो करैथ आ समाजिक दायित्व सेहो निमाहैथ। जँ परिवार-परिवारमे समाज ओझराएत तँ समाजिक क्रिया-कलापमे बाधा पहुँचबे करत। मुदा ऐठाम तँ साँप-छुछुनैरक प्रश्न अछि जे जँ गीर जाएत तँ मरि जाएत आ जँ उगैल देत तँ आन्हर भऽ जाएत..!

किछु फुरबे ने करए। एक दिस पत्नीकेँ तिले-तिले तिलमिलाइत देखिऐन तँ मन थरथराए लगए आ दोसर दिस शान्त भेल झगड़ामे खोरनी चला भुमहुरक आगिकेँ फेर जगाबी सेहो नीक नहि बुझि पड़ए।

ओना, हारल सिपाही जकाँ पत्नीकेँ डेग आगू-मुहेँ नहि उठैन मुदा मनमे ई जरूर रहैन जे जहिना बोलक पटका हमरा मारलैन तहिना तेहेन कटुगर जवाब दिऐन जे धरतीपर खसि मुँह रगड़ती।

अपनो मनमे हुअए जे जे देशक सत्ताधारी छैथ, जइमे ऐमला-फैमला, सर-सिपाही, कोट-कचहरीक संग जहलो अछि तैठाम तँ सदिकाल एकभग्गुए पनचैती होइए आ हमरा तँ किछु ने अछि। तहूमे जे जिनगीक संगी छैथ, आगि-पानि सभमे जाइले तैयारक जिम्मा नेने छैथ, ओहो पटकाइये गेल छैथ, तैठाम जँ धड़फड़ा कऽ आगू बढ़ब आ पुतोहुक दसटा सोखर सुनि लेब सेहो केहेन हएत।

मुदा दुनूक बीच सामंजस करब सेहो नान्हिटा बात नहियेँ अछि। नान्हिटा बात ई जे जखने परिवार सासुक संग पुतोहुओक छिऐन तखने सबहक सझिया परिवार छीहे। मुदा लगले मनमे उठि गेल जे जैठाम एकटा पटकनिहार आ दोसर पटकाएल रहत तैठाम उचित बातक मानि थोड़े हएत..!

किछु केने किछु बनिते ने रहए। अन्तो-अन्त यएह विचार भेल जे जे पत्नी अपने बात नइ बुझि पेब रहली अछि तिनका मनमाफित बात बुझा दिऐन जइसँ ओ झगड़ाक मुहरी पकड़ती आ पछाइत बीचमे पड़ि दुनूकेँ अपन-अपन बात बुझा देबैन। मानती सेहो बढ़ियाँ नइ मानती सेहो बढ़ियाँ। ओना, लोकक एहेन धारणाक परिवेश बनियेँ गेल अछि जे जेरमे रहइ ने चाहि रहल छैथ, कि जानि सोचि रहल छैथ से तँ ओ जानैथ, मुदा मनुख जँ मनुखक संग नहि रहत, तँ ओकरामे मनुखपन केना औत आ जँ मनुखपन नइ औत तखन ओ केते मनुख भेल?

जे बुधिक आर अपने आड़ि-धूर सीमा-सरहद बना दुनियाँमे नइ चलत ओ केते दूर इचना माछ जकाँ चलिये सकैए आकि नोनी साग जकाँ चतड़िये सकैए। ओ तँ सोलहन्नी ताड़क गाछ जकाँ बिनु डारि-पातक गाछे ने बनल रहत। जइसँ ने चिड़ैयेकेँ छाँह भेटत आ ने लोकेकेँ फल। पत्नीक रूप तहिना बुझि पड़ैत रहए, तहूमे आगूमे ठाढ़ भेल छेली। मन पसीज गेल। बुझबैत बजलौं-

"जहिना पुतोहु कहली जे 'सासुसँ कोनो सुख नइ भेल', तहिना जँ अहूँ उनटा कऽ कहबैन तखन ने ओ बुझती जे अपन गारि अपना दुआरि केना गड़ल अछि।"

जहिना ओसमे ओसाएल वा पानिमे नहाएल चिड़ै अपन पाँखि झाड़ि फड़फड़ाइए तहिना पत्नी बुझि पड़ली। मुँह झाड़ि बजली-

"जँ पुतोहु किछु पुछि दैथ तखन दोहरा कऽ की बाजब?"

पत्नीक बात सुनि मन ममताए लगल, आखिर किछु छैथ तैयो ऊपरक सीढ़ीक तँ छथिए। जइसँ किछु बेसी हक-हिस्सा बनिते छैन। जँ परिवारमे परिवारजनकेँ उचित स्थान नइ भेटै तँ अराजकताक स्थिति लाजिमीए। बजलौं-

"देखू पहिने बेटा तखन पुतोहु। पुतोहुओकेँ जँ कोनो समस्या छैन तँ ओ परिवारमे पतिक माध्यमसँ राखैथ, ओइ समस्यापर विचारब सबहक दायित्व अछि, मुदा ओ विचारधाराक रूपमे।"

हमर बात सुनिते पत्नीकेँ जेना मनमे हूबा जगलैन। हूबा जगिते मनसुआइत उनैट कऽ आँगन दिस बढ़ली। तही बीच पुतोहुओ सासुकेँ पछुअबैत, कनसोह लैत बढ़ली।

तीन कोण जकाँ तीनू गोरे भऽ गेलौं। ओना ओ दुनू गोरे ठाढ़ छेली आ अपने बैसल छेलौं मुदा छेलौं, तीन कोण जकाँ। तीनूक मनमे अपन-अपन विचार नचिते छल। ओना, पुतोहुकेँ देख सासु थोड़े सहमली। मुदा आगूमे बैसल देख हूबा बढ़िते रहलैन। होइतो अहिना छै जे जँ गलती काज केला पछाइत कियो केकरो हाथे मारि खा नेने रहैए, तेकरा देखते नजैर कनी निच्चाँ भाइये जाइ छइ। ओना, केकरो हाथे मारि खाएब दुनू रंगक अछि। उचितोपर अछि आ गरउचितोपर अछि। उचितपर गलती काज भेला पछाइत होइए आ गरउचित ओ भेल जे बलउमकी वा बलधकेल होइए। मुदा ऐठाम तँ मात्र वैचारिक अछि, जे तेसर तरहक समस्या भेल। मुदा विचारोक तँ अपन उठा-पटक अछिए। किछु एहेन अछि जे पटकाइ-जोकर अछि आ किछु उठै-जोकर अछिए। ओहीमे कल्याण-अकल्याण केतौ नुकाएल अछि मुदा ओकरा के देखत। मनमे अबिते उत्कंठा जगल। जगिते मुस्की दैत पत्नी दिस तकलौं। हमरा मुस्कीसँ पत्नीकेँ की भेटलैन, से तँ ओ जानैथ

मुदा अपना बुझि पड़ल जे पत्नीक मनक हूबा हूबघटूसँ हूबबढ़ू भऽ रहल छैन।

ओना गहुमनक पोआ जकाँ पुतोहु लहलहाइत रहैथ मुदा विचार एते मनमे रहबे करैन जे बुढ़ी परोछमे बुड़हाकेँ की सभ कान भरने छैथ से पहिने बुझि लेब, तखन उत्तर देब नीक हएत।

अपना विचार उठैत रहए जे जखन आगू भऽ पुतोहु बजती, तँ पत्नीकेँ बुझा-सुझा देबैन जे जहिना अपन बेटी तहिना परायाक बेटी, जँ अपन बेटी एहेन गलती केने रहैत तखन की करितिऐ। तहिना पुतोहुओ अखन किछु अछि तँ डेढ़े सालसँ ने ऐ घर-दुआरिमे, सासु-ससुरक बीच अछि। ई तँ सभकेँ ने बुझए पड़त जे माए-बापक घर सिरिफ माइये-बाप तक समटल नइ अछि, ओइ गामक समाजक लोक, पाबैन-तिहार, आचार-विचार, खान-पान, काज उद्यम सभ किछु ने समाज बदलने (गाम बदलने) प्रभावित होइए। तैठाम नव गामक बास, नव लोकक चास आ नव-नव सभ किछु भेने किछु-ने-किछु कोनो-ने-कोनो रूपमे भेटबे करै छै, तैबीच सामंजस करब बाल-पोथीसँ काज नइ ने चलत। पोथी तँ पोथी छी, लोक बुझैए- लुक्खी आ पोथी बुझैए- गिलहरी। तैठाम ने बाल-बोधकेँ बुझाएब अछि जे बौआ दुनियाँ देखैमे भाषे तेतेक अछि, जेकरो बुझब जिनगीसँ फाजिल अछि, तैठाम दुनियाँकेँ देखब ओते असान अछि।

ओना पुतोहुक मनक तहमे जे रहल होनि मुदा अपन मन कहैत रहए जे परिवारक रोच पुतोहुक विचारमे जरूर छैन। तँए मुँह बन्न कए किछु सुनए चाहि रहली अछि।

मुदा अपनो की बाजब से फुरबे ने करए। किएक तँ मन टघैर कऽ झगड़ाक जड़ि दिस घुसैक गेल छेलए, जइसँ विचारक सभ मुँह एकमुहरी जकाँ भऽ गेल, तँए मनमे किछु रहबे ने करए। फेर हुअए जे

कनियेँ पहिने अँगनामे आगि धधकै छल आ लगले एना पनिया केना गेल। खढ़ो-नारक छारक घरमे आगि लगै छै तैयो ओकर खुट्टा-खाम्ही सात दिन तक आगि जोगौने रहैए आ ऐठाम तँ मनुखक विचारक आगि छी। जेकर आदिये अन्त ने अछि। तखन तँ लोक हारि कऽ यएह ने करत जे जेते दिन जीबै छी तेते दिनक अपन भार अछि, तँए ओकरा भारी बना नहि, भारपन बुझि निमाहैत चलैक अछि। मुदा लगले एकटा जुक्ति फुरल। फुरिते पुतोहुकेँ कहलयैन-

"चौक पर तेहेन ने चाहबला चाह पिऔलक जे मन अखनो भभाइते अछि, तँए पहिने चाह पिआउ। परिवारे छी भरि दिन लागल रहब तैयो ने अन्त लेत।"

खग जानए खगक भाषा, पुतोहु बुझि गेली जे फगुआ दुआरे दूधबला आएल नइ हेताइ, तँए बिनु दूधेक चाह भेल हेतैन। जँ दूधबला पीने रहितैथ तखन ने फोकराइन कहितैथ। जखन मने भभाएल छैन तखन विचारो ने तेहने हेतैन।

दरबज्जापर सँ ससैर पुतोहु आँगन दिस चाह बनबए गेली।

पुतोहुकेँ हटिते पत्नीकेँ कहलयैन-

"पहिने पानि पिआउ जे मन शान्त रहत तँ चाहो पीबैमे नीक लागत।"

हमर बात सुनिते पत्नी आगू बढ़ि हिया कऽ चापाकल दिस देखली जे पुतोहु केतली-गिलास धोइ अनली की नहि। मुदा चुल्हि पजारि पुतोहु चाह बनबै छेली, तँए पत्नियोँ अपन देहमे पानि आनि पानि आनए कल दिस बढ़ली।

टूटा गिलासमे पुतोहु चाह नेने दरबज्जापर एली। चाह देख अपन मन हरिया गेल। हरियाइक कारण भेल जे पुतोहु सासुकेँ सासु जकाँ आदर कैये रहली अछि। मुदा पत्नीक मन घुर-बहूर करए

लगलैन। घुर-बहुर ई जे बिनु झगड़ा फरिछेने माने बिनु कहा-कही भेने पुतोहु हाथक चाह नहि पीब। मुदा लगले ईहो होनि जे पुतोहु तँ चौकीपर चाह पतिक आगूमे रखि देलैन। जँ अपना विचारे नइ उठाएब आ जँ पति कहैथ, तखन हारल नटुआक झुटका बीछब हएत। तँए नीक हएत जे जखने चाहक गिलास, चाह पीबैले पति उठेता तखने हमहूँ उठा लेब। यएह भेल। दू घोंट चाह पिबते बजलौं-

"बड़ निम्मन चाह बनल अछि। चाह-चिन्नी आ दूध-पानि मिला लोक चाह बनैबते अछि, मुदा जे जेहेन तकतियान केनिहारि अछि ओ ओहेन ताककेँ पकैड़ बनबै छैथ आ जे तकतियान केनिहारि नहि अछि ओ किछुसँ किछु कए चाहक सेखिये उतारि दइए।"

बाजि पुतोहु दिस नजैर उठेलौं तँ पुतोहुक मनमे खुशी बुझि पड़ल। ओना, पत्नीक मन सुक-पाक करैत बुझि पड़ल। सुक-पाकक कारण पत्नीक जे रहल हौनु मुदा अपना बुझि पड़ल जे ओ चाहि रहली अछि जे पति चाहकेँ दुसि देथुन। ओना, अपना मनमे ईहो होइत रहए जे आने भनसिया जकाँ जँ पुतोहुओ चाह चीख नेने होथि आकि पछातिये पीबैथ, तँ की ओ नै बुझती? बुझबे करती। हुनका कि मुँह-कान नइ छैन जे नीक आकि अधला की भेल से बुझती।

चाह पीब पुतोहुक हाथमे गिलास थमा देलिऐन। गिलास नेने पुतोहु आँगन दिस बढ़ली। तैबीच अपने हाँइ-हाँइ कऽ पान लगा खेलौं। मुँहमे पान फुलाएलो ने छल, कोढ़ियाएले छल, कि पुतोहु सेहो आँगनसँ पहुँच गेली। ओना, तीन कोण जकाँ तीनू गोरे रही मुदा तीनूमे कियो किछु बजैत नइ रही। सभ सबहक बात सुनैले सबहक मुहेँ तकैत रही...।

समगम वातावरण देख मनमे उठल जे जइ बात-ले दुनू गोरेमे रक्का-टोकी भेल तेकरा छोड़ि अपनो आ परिवारोजनक सीमा-सरहद

अपने जे बुझै छी से हिनको सभकेँ बुझा दिऐन। केते दूर तक विचार मनमे गड़ै छैन आ कि नइ गड़ै छैन से तँ पछाइत ने बुझब, तेकर पछाइत बुझल जाएत।

पुतोहु दिस तकैत बजलौं-

"देखू, अखन परिवारक नीक-बेजा बजैक सोल्होअना भार हमरा ऊपर अछि, जँ समाजोकेँ कहबैन तँ ओहो कहता जे घरक जे गार्जन छैथ पहिने ओ ने अपन भार निमाहता, जखन अपना बुते नइ हेतैन तखन दर-दियाद आ अड़ोसिया-पड़ोसियाक पछाइत ने समाज अबै छैथ, तँए परिवारक बात छी सभ अपन-अपन अधिकार आ कर्तव्य बुझब तखने ने परिवार चैनसँ चलत।"

ओना, पत्नीक मनमे कनी कछमछी बुझि पड़िते छल मुदा पुतोहु शान्तचित्त जकाँ बुझि पड़ली। अपन नजैर पुतोहुक नजैरपर अँटैक गेल जे पुतोहुओ बुझि गेली। बजली-

"हम कहाँ चाहै छी जे परिवारमे अट्ठा-बज्जर खसए..?"

पुतोहुक बात सुनि मन शान्त भऽ गेल। शान्त होइते बजलौं-

"देखू दुनियाँमे जेते मनुख ऐ धरतीपर अबैए, सभकेँ अपन-अपन कालबद्ध सीमा छइ। बच्चामे जन्म लइए, माता-पिताक आश्रयमे ओ ठाढ़ होइए, पछाइत बिआह-दान भेलापर परिवारक जवाबदेह लोक बनैए।

जवाबदेह लोक बनला पछाइत एक दिस वृद्ध माए-बापक सेवा आ दोसर दिस बाल-बच्चाक सेवाक भार उठा चलैए। पछाइत माता-पिताकेँ अन्त भेने परिवारक सभसँ ऊपर पहुँच परिवारकेँ नीकसँ नीक दिस बढ़बैक परियास करैए।"

बिच्चेमे पत्नी टोकि देली-

"से अखुनका लोक थोड़े बुझैए।"

ओना, पत्नीक इशारासँ बुझि पड़ल जे पुतोहुपर झटहा फेक रहली अछि। मुदा तैबीच पुतोहु किछु बाजल नइ छेली। बजलौं-

"अखुनका लोक–माने नवतुरिये नहि–जे अखन धरतीपर छैथ से सभ भेला। तँए सभकेँ अपन-अपन परिवारक प्रति अधिकार आ कर्तव्य दुनूकेँ निमाहैत चलैक छैन। जैठाम चारिटा बरतन एकठाम रहैए तैठाम विचारक भिन्नताक कारणे कनी-मनी टोना-टोनी होइते अछि।"

◌

शब्द संख्या : 2546, तिथि : 17 मार्च 2017

बेटीक पैरुख

पचहत्तैर बर्खक फुलकुमारीक देहक पानि अखनो ओहिना जलजलाउ छैन जेना ढेरबामे रहैन, माने ढेरबामे जे चढ़लैन ओ अखनो चढ़ले छैन।

बैशाख मासक एगारह बजेमे मारन बाधसँ पुतोहुक संग घास नेने फुलकुमारी आँगन नहि जा सोझे मालक थैरक छाहैरमे आबि बैसली। छाहैरमे बैस अपन देहक थकानो हेट करए लगली आ गाइयो-बच्चाकेँ हिया-हिया देखए लगली। देखैत-देखैत जेना-जेना देहक थाकैन कमैत गेलैन तेना-तेना गाइक सिनेह मनमे उठैत गेलैन। उठैत सिनेहसँ सिनेहासिक्त होइत फुलकुमारी अपन दुनू हाथ जोड़ि आठ किलो दूधवाली गाएकेँ प्रणाम करैत पुतोहुकेँ कहलखिन-

"छोटकी, एक लोटा पानि नेने आबह।"

'छोटकी' माने भेल 'छोटकी पुतोहु', नाओं छिऐन जलेसरी। नि:सन्तान एवं बैधव्य जीवन-यापन करैत जलेसरी करीब चालीस बर्खक अछि। दुइए सासु-पुतोहुक परिवार छैन।

बच्चेसँ फुलकुमारी नैहरेमे रहल जइसँ सासुर बसैवाली औरतसँ बेसी बजैक संस्कार रहबे केलइ। ओना समाजमे बेटी-जातिक विचारकेँ कम आँकल जाइए जइसँ ओकर कटाहो बातकेँ तन्नुक बुझले जाइए। तन्नुक आँक रहने ने गड़ैक सम्भावना आ ने गड़ला पछाइत

बिसविसाइयेक।

फुलकुमारीकेँ दू सन्तान भेलैन, दुनू बेटे। जेठ जीबछ आ छोट राधेश्याम।

जीबछ नोकरी करए बम्बइ गेल। कपड़ाक एकटा कारखानामे नोकरी भेलै, तैबीच बिआहो भेलइ। बिआहक दू सालक पछाइत पत्नियोकेँ बम्बइये लऽ गेल। अखन जीबछकेँ चारिटा सन्तान–तीनटा बेटा आ एकटा बेटी–छइ। चारू हाइ स्कूल-सँ-कौलेज धरि पढ़ैए।

बम्बइ गेला पछाइत जीबछ चारि-पाँच साल तक गामकेँ बिसरल नहि। मासे-मास रूपैयो पठबै आ साले-साल एबो करइ। जीबछेक लाटमे राधेश्यामो बम्बइ गेल। ओकरो ओही कारखानामे नोकरी भेलइ। ओना, राधेश्यामकेँ बम्बइक पानि नइ पचलै, रसे-रसे रोगाए लगल। छह मास बम्बइमे इलाजो करौलक मुदा रोग कमलै नहि जे बढ़िते गेलइ। ओना, सेवो जइ रूपे हेबा चाही से नै भेने निराश भऽ राधेश्याम गाम चलि आएल। जेहेन इलाजक आ पथ्य-पानिक जरूरत छेलै से गामोमे नइ भेने थोड़बे दिनक पछाइत रोधेश्याम मरि गेल।

राधेश्यामकेँ तीन साल पहिने बिआह भेले छेलइ। सन्तान-शखा एकोटा ने भेलै, तइ बिच्चेमे ई दुनियाँ छुटि गेलै, छुटि कि गेलै जे छोड़ि कऽ जाए पड़लै।

पतिकेँ मुइला पछाइत जलेसरी मनमे रोपि लेलक जे दोसर घर नइ जाएब। माने दोसर बिआह नइ करब। ओना समाजो तँ समाजे छी, जइमे सबहक अँटावेशो होइए आ सभ रंगक नियमो-बेवहार चलिते अछि। सभ नियम ई जे एहनो नियम ऐछे जे बिआहक पछाइत जँ पति मरि जाए तँ पत्नीकेँ दोसर बिआह वर्जित अछि। माने ई जे जीवन भरि विधवा बनि जीबह। ई भेल लड़की लेल नियम, मुदा

ओहीठाम लड़का लेल एहेन नियम नहि अछि। ओ दोसर-तेसर कि जे दर्जनो बिआह कए सकैए।

तहिना समाजमे किछु जाति एहेन अछि जइमे लड़का-लड़की–माने बिआहक पछाइत पति-पत्नी–मे कियो मरौ, माने 'पत्नी' मरौ आकि 'पति', दुनूकेँ दोसर-तेसर बिआह करैक अधिकार अछिए। तैसंग ईहो होइते अछि जे जइ जातिमे दुनूकेँ माने जहिना लड़काकेँ तहिना लड़कीकेँ दोसर-तेसर बिआह करैक अधिकार रहितो जँ दोसर-तेसर नइ करए चाहैए तँ सेहो बड़बढ़ियाँ–माने नहियोँ कए सकैए। ओना चोरा-नुकी दुनूक संग चलिते अछि, माने जइ जातिमे लड़कीकेँ दोसर बिआह करैक अधिकार नइ छै, चोरा-छिपा कऽ ओहूमे कैये सकैए, मुदा से भेल समाजसँ छीप कऽ करब। हलाँकि समाजो तैपर सँ अपन नजैर छीपिये लइए आ छीपिते नहि अछि बल्कि छिपाएल धन जहिना लोक धीरे-धीरे बिसैर जाइए तहिना रसे-रसे बिसरियो जाइते अछि। मुदा तँए ई कहब जे नियम ढील भऽ बदैल गेल, सेहो नहियेँ भेल अछि। अखनो जीवित अछि आ कहिया तक जीवित रहत सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

घास झाड़ब छोड़ि छोटकी पहिने सासुक आदेश पूरबए विदा भेली। कलपर पहुँच हाथ-पएर धोइ कऽ पहिने अपने भरि छाँक पानि पीब लेली। पछाइत, बैशाख मासक गरमाएल लोटा जे आँगनमे बैसल-बैसल तबि गेल छल, तेकरा कलपर आनि चिक्कनि माटि नहि छौरसँ मजली।

चिक्कनि माटिसँ नइ माजैक कारण भेलैन जे माटिक राखल ढेरी लग जलेसरी नइ गेली, कलक बगलमे राखल छौरक ढेरीपर नजैर पड़ि गेलैन, ओहीमे सँ एक मुट्ठी छौर लऽ लेली।

छौर-पानिसँ भीतर-बाहर रगैड़ते लोटाकेँ ताउ शान्त होइत-

होइत सभ तामस मिझा गेल। तामस मिझाइते धुआइओ गेल। धुएला पछाइत कण्ठ लगतक पानि भरि छोटकी सासुकेँ दइले बढ़ली, तैबीच शान्त भेल लोटा मने-मन छोटकीकेँ असिरवाद देलकैन जे ओ हमरा फुलकुमारी लग पहुँचबैत-पहुँचबैत कंचन बना देलक जइमे अमृत रूपी जल अछि। अमृतो तँ वएह ने छी जे जिनगी दइए। जखने मुहसँ प्रवेश करैत अमृत रूपी पानि नाभिकुण्ड लग पहुँचैए तखने ने शान्त-चित्तक किछु अवधि बढ़ि जाइ छै, जइसँ ऐगलो काजक मुहरी जागि-जागि जिनगीक संग चलैत रहैत अछि। सएह फुलकुमारियोक संग भेल। गाएपर नजैर अँटकौने फुलकुमारी मने-मन प्रणाम करैत बजली-

"हे लछमी माता! अहीं एहेन दाता छी जे अपने बच्चा जकाँ हमरो दुनू सासु-पुतोहुक रछिया करै छी।"

गाइक लक्ष्मी रूपकेँ देखते फुलकुमारी आराधना करए लगली, माने अपन कतर्व्य-कर्मकेँ अराधए लगली। तैबीच छोटकी पानि भरल लोटा नेने आबि लगमे ठाढ़ भऽ गेली। जेकरा फुलकुमारी नइ देख रहल छेली, किएक तँ आराधनामे नजैर तेना अँटैक गेल छेलैन जेना जीवन भेटला पछाइत एक संग मन-मस्तिष्क दुनू अँटैक जाइत अछि।

फुलकुमारीक बन्न आँखि देख छोटकीकेँ बुझि पड़लैन सासु ओंघा रहली अछि, सिनेह भरल स्वरमे बजली-

"माए, लगले आँखि लागि गेलैन?"

होइतो अहिना छै जे किछु भेटला पछाइत खुशीसँ आनन्दक ओंघी सेहो अबिते छइ।

निमग्न फुलकुमारी पुतोहुक बात सुनिते अकचका कऽ बजली-

"नहि! ओंघाइ नइ छी कनियाँ, गाइक रूइयाँपर नजैर पड़ि गेल छेलए।"

रूइयाँ देखब, माने दुधारू गाइक प्रमुख लक्षणकेँ देखब छी, ई बात छोटकीकेँ बुझले रहैन। बजली-

"घासो झाड़ब पछुआएले अछि।"

आशा भरल शब्दमे फुलकुमारी बजली-

"ऐठाम लोटा रखि दहक आ घास झाड़ए चलि जा।"

छोटकी सएह केलक।

पानि पीला पछाइत फुलकुमारीक नजैर फेर गाइयेपर जा कऽ अँटैक गेलैन। अँटैकते मन विस्मित हुअ लगलैन। विस्मित ई जे जहिना अपन जिनगी अछि तहिना ने गाइयोक अछि। ओना, दुनूमे ई अन्तर ऐछे जे धनक भण्डार रहितो गाएकेँ अपन जिनगीक रक्षा करैक लूरि-बुधि नइ छै तँए, ने अपने रक्षा कऽ सकैए आ ने बच्चेक आ ने अपन दूधेक उपयोग अपनासँ कऽ सकैए। मुदा मनुख तँ से नहि छी। सभ किछु कऽ सकैए। तँए जँ दुनूक सम्बन्ध बनल रहत तँ एक-दोसरक आशापर असानीसँ जीवन-यापन कऽ सकै छी।

गामक बेटी फुलकुमारी। दू कट्ठा घराड़ी पिताकेँ रहैन। पिता–सिंहेश्वर–किसानी जिनगीसँ जुड़ल छला। खेत-बोनिहारक रूपमे जे सोल्हे बर्खक अवस्थामे सिंहेश्वर जीवन धारण केलैन ओ ता-जिनगी धारण केनहि रहला। किसानी जिनगीक अधिकांश लूरि सिंहेश्वरकेँ रहबे करैन। हर जोतब, रोपैन करब आ कमठौन करबक संग घर बन्हैक सभ लूरिसँ सम्पन्न छला।

सिंहेश्वरक पहिल पत्नी पहिल सन्ताने होनिहारिक समए मरि गेली, आ बच्चो माइये संग मरि गेल। परिवारमे दोसर-तेसर नइ रहने, असगरे सिंहेश्वर पेटक ओरियान करितैथ कि पत्नीक सेवा-टहल।

अपना आँखिसँ सिंहेश्वर पत्नीयोँ आ बच्चोकेँ मरैत देखने छला, मुदा जिनगियो तँ जिनगी छी, सभकेँ जीबैक आशा रहिते अछि।

ओना, समाजिक नियमो आ अपन टुटल मनोक चलैत सिंहेश्वर साल भरि तक उपारजनक संग अपने हाथे भानसो-भात करैत रहला। मुदा साल भरिक पछाइत समाजो दवाब दैत सिंहेश्वरकेँ कहलकैन-

“दुनियाँमे अहींटा केँ एहेन गति नहि भेल, बहुतोकेँ भेलैन। तँए जखन मनुखक जिनगी भेटल तखन मनुख जकाँ ने परिवार बना परिवारिक जिनगी जीब।”

समाजोक विचार आ अपनो जिनगीक खगता देख सिंहेश्वर दोसर बिआह केलैन। दू सालक पछाइत दोसर पत्नीसँ फुलकुमारीक जन्म भेल। तीन सालक जखन फुलकुमारी छल तखने मइटुग्गर भऽ गेल। माने सिंहेश्वरक दोसर पत्नी सेहो ऐ दुनियासँ चलि गेली।

दोसर पत्नीकेँ मुइला पछाइत सिंहेश्वर तेसर बिआह नहि केलैन। केतबो समाजक लोक रंग-रंगक तर्क दऽ बुझबैत रहलैन मुदा किनको बात नहि सुनला।

सिंहेश्वर दू-दूटा पत्नीक मृत्युक संग पहिल सन्तानक मृत्यु देख चुकल छला। दुनूक कष्ट-पीड़ा आँखिक सोझमे नचिते रहै छेलैन, तैसंग ईहो आशा मनमे जागिये गेल छेलैन जे जखन तीन बर्खक सन्तान ऐछे तखन वंशो तँ आगू बढ़बे करत। एकरे नीक जकाँ पोसब-पालब। पोसै-पालैमे चारि-पाँच बर्ख धरि किछु बेसी परेशानी हएत, सएह ने। हएत तँ हएत। जखन मनुख बनि धरतीपर जन्म लेलौं तखन जँ अपन भार अपने नइ उठा चलब, तँ जेकर आशा हम करब ओकरो तँ अपन जिनगी छै, अपन बाल-बच्चा छै, अपन परिवार छइ। सभ ने अपन-अपन परिवार चलबैमे लागल रहैए। आब तँ फुलकुमारी तीन बर्खक भेल, छहमसिया बच्चा जकाँ तँ नहि अछि जे भरि दिन देह धरा राखए पड़त आ माइक दूधो दिऐ पड़त। अन्नो-पानिपर फुलकुमारी जीवियेे सकैए।

पाँच बर्ख टपला पछाइत फुलकुमारी आँगन-घरक किछु-किछु काज करए लगल। आठ बर्ख अबैत-अबैत भानसो-भात आ घरक आनो-आनो काज सम्हारए लगल। तैसंग सिंहेश्वर असगरूआ जिनगी जीबैक लूरिक अभ्यस्त सेहो होइत-होइत भाइये गेला।

बाल-विवाहक चलैन समाजमे सभ दिनसँ आबि रहल अछि। ओना, बाल-विवाहक प्रश्नपर समाजमे सभ दिनसँ विभाजन रहल आ अखनो अछि। बालो-विवाहक अपन उत्तर अछिए। उत्तर ई जे बेटा-बेटीक बिआह-दान करब माता-पिताक धार्मिक काजसँ जोड़ल अछि। धार्मिक काज भेल ओहन काज जे जिनगीसँ जुड़ल अनिवार्य काजक श्रेणीमे अबैत अछि। अनिवार्य तँ ऐछे जे वंशकेँ आगू बढ़ैक सीढ़ी छी। मुदा ओहन काज रहितो जँ माता-पिता बेटा-बेटीकेँ बीस-पच्चीस बर्खक जुआन बनबए चाहता आ बिच्चेमे अपने चलि जेता तखन जिनगीक काजक पूर्ति केना हेतैन। जँ पूर्ति नहि हेतैन तखन अधरमी तँ भेबे केला किने। जखन अधरमीक विचार मन मानि लेतैन तखन तँ नर्कक भागी भऽ गेला किने। एक तँ ओहुना कियो नर्क नहि जाए चाहैए, मुदा जँ कियो धोखा-धोखीमे चलि जाएत से आ बुझलमे जाएत से, दुनू एक रंग थोड़े हएत। जानि कऽ नर्क जाएब बेसी कष्टकर होइ छइ। तँए केकरो अपन मन जानि कऽ एहेन विचार देत? नहि देत।

ओना, समाजोक बन्धित चलैन आ आँखिक देखल अपन परिवारो तँ सिंहेश्वरकेँ छेलैन्हे, तँए सातमे बर्खमे बेटी–फुलकुमारी–क बिआह कऽ देलखिन ।

आइये नहि पहिनौं लोक परदेश खटिते छला। कलकत्ताक पटुआक कारखानामे लड़काक पिता नोकरी करै छला आ बाल-बच्चाक संग पत्नी गाममे रहै छेलैन। तँए ओहन परिवारकेँ परदेशी

परिवार नहियेँ कहल जा सकै छल, तँए भीतर-बाहरक विचार नइ रहने सिंहेश्वरक कुटुमैती माने बेटीक बिआह ओइ परिवारमे भेलैन। ओना समाजक किछु विचारवानक विचार स्पष्ट रहैन जे ग्रामीण परिवेश आ शहरी परिवेशमे जिनगीक सभ कथुमे अन्तर आबिये जाइ छै, जइसँ केतौ-ने-केतौ जिनगीमे बेवधान उपस्थित होइते छइ।

ओना, आन कारण जे लड़काक पिताक रहल होनि मुदा मूल कारण छेलैन जे बारह घन्टा चटकलमे[2] काज केला पछाइत पान-सात गोरेक परिवार शहरमे चलब कठिन भऽ जाइन। मुदा गाम तँ गाम छी, गाममे लोक नोनियोँ साग खा साए बर्खक जिनगी हँसैत-खेलैत काटिये लइए। मुदा जे हौउ, कलकतिया लोक तँ बरागत छेलाहे तँए आगू-पाछू किछु-ने-किछु जनिते छला।

फगुआमे लड़काक पिता–मोतीलाल–गाम एला। सिंहेश्वरक पिसियौत बहिन ओही गाममे बसैत, तँए हुनके अगुआइमे बिआहक गप-सप्प शुरू भेल। ओना, बहिनकेँ घटक नहियेँ कहि सकै छिऐन आ ने बिआह-दानक दलाल। ओ तँ घटकैतीक रस्ताक राही भेली। तहूमे ओहन राही जे राहगीर बनबैमे सहयोगी होइथ। ओना, एहेन सूत्र सूत जकाँ गाम-गाममे पसरल ऐछे आ कथा-कुटुमैतीमे सक्रिय रूपमे चलितो अछिए।

फुलकुमारीक बिआह नअ बर्खक विनाशक संग भऽ गेल। टुकधुम करैत विनाश गामक स्कूल धेने छल तँए नाम-गामसँ लऽ कऽ परगना तक बुझल रहइ।

सिंहेश्वर अपन बेटीक बिआह ओहन लड़कासँ करैक विचार मनमे रखने छला जेकर चमड़ी काज करै-जोकर होइ।

पाँच गोरेक संग सिंहेश्वर अपनो घर-वर देखए अन्तिम विचारक

[2] पटुआ-कारखानामे

दिन मोतीलालक ऐठाम गेला। अखन तक पिसियौते बहिनक माध्यमसँ गप-सप्प होइत रहल छल। जइमे सहमतक झलकी तँ छेलैहे।

एक तँ ओहुना गामक ओहन बच्चा जेकर परिवारिक आमदनी कम छै, ओकर जिनगियो तेहने–माने वगे-वाणि आ रहन-सहन–रहल अछि। तहूमे कलकतिया परिवार तँ भाइये गेल छल तँए मनसँ सिंहेश्वर मानि लेलैन। ओना, ई प्रश्न पहिने उठि गेल छल जे लड़काकेँ जँ अपन नाम-गाम लिखल हेतै तँ कुटुमैती कैये लेब।

एक गोरे पितेक सोझमे लड़काकेँ नाओं-गाँओं लिखैले कहलैन, जे विनाशकेँ लिखल भऽ गेलैन। तैपर लड़काक पीठ ठोकैत हुनकर पिता ईहो आश्वासन दैत सभकेँ सुना देलखिन-

“बिआहक पराते लड़काकेँ कलकत्ता लऽ जाएब। ओतै पढ़ेबो-लिखेबो करबै आ चटकलमे काजो सिखेबै।”

विह्वल सिंहेश्वर आश्वासन दैत बजला-

“बैशाखमे काज[3] सम्हारि लेब।”

ओना मोतीलालक गीध-दृष्टि सिंहेश्वरक अढ़ाइ कट्ठा घराड़ी-बाड़ीपर अँटकल छेलैन, जेकरा ओ खुलि कऽ नहि बजै छला, तेकर कारणो छल जे चारि भाँइक भैयारीमे सतरह धूर घराड़ी अपना छेलैन जइसँ ऐगला पीढ़ीकेँ घराड़ियो बास हएब कठिन छेलैन्हे। ओ समैयो नहियेँ छेलैन जे कलकत्तामे बासक चर्च-बिचर्च मनमे उठितैन। तँए सोलहन्नी गामेक आशा मनमे रहैन। ओना कखनोकाल खास कऽ जाड़क मासमे जखन चटकलसँ भरि देह पटुआक रूसी लगले डेरा अबैथ आ नहाइक समए रहै छेलैन, तखन मने-मन तामसो उठबे करै

[3] वैवाहिक कार्य

छेलैन जे जइ गाममे बसैयो-जोकर–ओना बसबक विराट रूप अछि, मुदा अखन से नहि, अखन एतबे जे रहै-जोकर जमीन घरक लेल–जमीन नहि अछि तइ गाममे रहियेे केना सकै छी। ओना, तामस उठला पछाइत मोतीलालक मनमे ईहो एबे करै छेलैन जे जे भोज नइ खाइ ओइमे पारा मरौ आ जइ गाममे बसैयो-जोकर खेत नहि तइ गाममे साँझ-भोर नढ़िया-कुकुर भुकौ...। मुदा बेवस मनक बेवसी विचार कैये की सकैए। ओना करैले दुनियाँ बड़ीटा अछि, मुदा केनिहारो बड़ीटा हुअए तखन ने, से तँ बुझले बात अछि जे जँ कमेने होइत तँ गरिबोहोकेँ होइत जे भरि दिन कोदारि तमैए...।

बैशाख मास, फुलकुमारीक बिआह भेल। ओना गाम-घरमे–माने जैठाम फुइसिक घर अछि–बैशाखक लगन माने बैशाखमे बिआहक दिन खतरनाक अछिए। कखन हवा-बिहाड़ि उठि जाएत आ भानसेक आगिसँ घरो जरि जाएत तेकर कोनो ठेकान नहियेँ अछि। मुदा फुलकुमारीक बिआहमे से नहि भेल। तीन दिन पहिने तेहेन निराउ बरखा भऽ गेल जे फागुनोक लगनक दिनसँ बेसी सोहनगर बना देलक।

एक तँ शहरी वातावरण दोसर पढ़ै-लिखैक सुविधा रहने मोतीलाल अपन बेटाकेँ मैट्रिक तक पढ़ा लेलैन। किछु-किछु अपन काजो, देखा-देखी सिखेबे केने छला तँए मनमे ईहो आशा रहबे करैन जे जखन चटकलक बिसवासू नोकर छीहे तखन धियो-पुताकेँ काज किए ने चटकलक मालिक देता। मुदा मनमे ईहो खरोंच उठबे करैन जे जखन अपने छेहा अनपढ़ छी तखन जँ लेबरक काज करै छी तँ बड़बढ़ियाँ, मुदा बेटा तँ पढ़ल-लिखल मैट्रिक पास अछि, ओकरा किए ने ऑफिसमे बाबूक काज हएत..?

विचार तँ मोतीलालक अनुकूले रहैन मुदा ई बात मनमे उठबे ने

करैन जे जहिना घोंदा-घोंदे लेबरकेँ धिया-पुता सुतपुतिया भँट्टा जकाँ फड़ैए, तहिना जँ करखनो फड़ै तखन ने अँटावेश हएत, जँ से नइ फड़त तँ अपन मनक सपना सुतली रातिक सपना जकाँ फूसि हएत की नहि।

ओना, पेंशनक बेवस्था सेहो मोतीलालक मनकेँ भरने रहै छेलैन जे सेवा निवृत्तिक पछाइत जँ बेटा खाइयो-पीबैले नइ देत तैयो दुनू परानी ठाठसँ जिनगी काटि लेब। तहूमे साठि बर्खक पछाइत ने रिटायर हएब। मुदा ई बात मोतीलाल बुझबे ने करैथ जे सेवा-निवृत्तिक पछाइत अदहा जिनगी आरो जीब, मुदा तइले ओहन काजो करैत देहक रक्षा केने रहब तखन ने, से तँ पटुआक रूस्सी रसे-रसे फेफड़ेमे बसि रहल अछि, तखन केतेटा औरुदा लऽ लऽ नाचब, से बुझबे ने वेचारा केलैन।

पचासे बर्खक अवस्थामे मोतीलाल मरि गेला, पेंशनसँ वंचित भाइये गेला। आजुक समए नहि छल जे अनुकंपासँ दोसरो समांगकेँ नोकरी भेट जइतैन।

मुदा रच्छ रहलैन जे काजुल घरवाली रहैन जे अपन भार अपने उठौने छेली।

ओना विनाश सेहो उट्ठा काज शुरू कऽ नेने छल, जइसँ पिताक मृत्युक पछाइतो कलकत्तेमे रहल। मोतीलालकेँ मुइलाक साल भरिक पछाइत विनाशक दुरागमन भेल।

सासुरक परिवारिक स्थिति देख-बुझि विनाश अपने दिससँ दुरागमनक खर्च केलक। दुरागमनक पछाइत फुलकुमारी सासुर गेली, मुदा से वीध पुरबैले, मात्र सात दिन सासुरमे रहली।

सात दिनक पछाइत फुलकुमारी अपन पैत्रिक गाम चल एली। विनाश सेहो कलकत्ता गेला। खाली विनाशक माए–माने

फुलकुमारीक सासु–अपन गाम धेने रहली।

सालमे एक मासक छुट्टीमे विनाश गाम अबै छला, जइमे दू-चारि दिन अपना गाममे रहै छला बाँकी समए सासुरेमे। कबैया-डोर रहने दू सालक पछाइत विनाश अपन गामक घराड़ी दियादक हाथे बेचि, माइयोकेँ सासुरे लऽ अनलैन।

दूटा बेटा विनाश-फुलकुमारीकेँ भेलैन। दुनूकेँ गामेक स्कूलमे नाओं लिखा देलखिन। दू सालक पछाइत विनाशक माए सेहो मरि गेली, जे सुख-सराध सासुरेमे विनाश केलकैन।

बाबन बर्खक अवस्थामे विनाशकेँ दमा रोग पकैड़ लेलकैन। एक तँ कलकत्ताक पानि जबदाह, दोसर दमा रोग, बेमारी बढ़िते गेलैन। अन्तो-अन्त चटकलक मालिक एक मासक दरमाहाक अतिरिक्त तीन हजार रूपैआ मिला अरतीस साए दऽ विनाशकेँ ताधरिक छुट्टी दऽ देलकैन जाधैर रोगमुक्त नहि भऽ जेता।

विनाशक रोग जड़ियाइते गेल, जइसँ कलकत्ता छोड़ि गामे आबि इलाज-बात करए लगला आ आमदनी लेल एकटा लटखेनाक दोकान केलैन। मुदा से नइ चला सकला। नइ चलबैक कारण रहैन जे एक तँ शहरी वातावरणक अभ्यस्त, दोसर वेपार करैक लूरि नहि। ओना विनाश मैट्रिक पास रहबे करैथ, तँए मनमे भेलैन जे भलेँ कलकत्ता जकाँ कमाइ नइ हुअए मुदा ट्यूशन पढ़ा किछु कमा तँ लेबे करब।

दोकानक संग-संग विनाश आठ-दसटा बच्चाकेँ ट्यूशन सेहो पढ़बए लगला। वएह आधार आमदनीक अपन रहलैन, जइमे बेमारीक दवाइयो आ पथो-पानि चलब कठिन भाइये गेल रहैन। मुदा फुलकुमारी तँ मेहनती रहबे करैथ।

एकटा निम्मन गाए सेहो पोसने छेली आ दू कट्ठा घरसँ बँचल जे

वाड़ी रहैन तइमे तीमन-तरकारीक खेती तेना भऽ कऽ कऽ लइ छेली जइसँ खेनाइ-पीनाइक संग किछु-ने-किछु आमदनियोँ भाइये जाइत रहैन, जइसँ गुजर-बसरमे बेसी दिक्कत नहियेँ होइन।

गाममे रहलाक चारि सालक पछाइत विनाश मरि गेला। ओना फुलकुमारीकेँ सासुरक जे सुख होइ छै–माने परिवारसँ दियाद-वाद आ सर-समाजक–से नहियेँ भेटलैन। माने कहियो केकरो मुहेँ 'भौजी', 'काकी', 'दादी' नहि सुनि सकली। भौजी-काकी-दादी सासुर बसैवाली ने होइ छैथ, से तँ फुलकुमारी सासुरमे रहबे ने केलीह। ओना, परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरिमे फुलकुमारी 'बहिन', 'दीदी' सभ दिन बनल रहबे केलीह।

जहिना जीवन चिन्हनिहार जिनगीक श्रमकेँ चिन्ह अपनाकेँ श्रमशील जिनगीमे पएर रोपि ठाढ़ होइत चलब सिखैए आ चलैत-चलैत डेगा-डेगी दौड़ए लगैए तहिना फुलकुमारी अपन जीवन-श्रमकेँ चिन्ह तहियेसँ दौड़ए लगली जहिया पति मरि गेलैन, एकटा बेटा मरि गेलैन आ दोसर बेटा अपन परिवार बम्बइये लऽ कऽ चलि गेलैन।

ओना, फुलकुमारीक परिवार अखनो ओहिना भरल-पूरल छैन जेना पैछला पीढ़ीमे छेलैन। माने जहिना विनाशो भैयारीमे असगरे छला आ फुलकुमारियो असगरे...।

आइ भलेँ फुलकुमारी अपन विधवा पुतोहुक संग असगरे किएक ने जीवन-बसर कऽ रहली-हेँ मुदा बाप-पुरखाक घराड़ीपर तँ छैथे, तैसंग बम्बैयेमे किएन ने बसि गेलैन मुदा चारिगो पोता-पोतीक दादियो आ बेटा-पुतोहुक माइयो तँ वएह ने छैथ।

◌

शब्द संख्या : 2735, तिथि : 26 मार्च 2017

बेटीक कुभेला

नीनसँ सुतले रही मुदा भोर भऽ गेल रहइ। चिड़ैयो सभ अपन हाजरी दऽ दऽ पेटक जोगारमे लगि गेल छल। जिनगी-ले तँ पहिने पेटे-पूजाक ओरियान ने करए पड़ै छै, तँए चिड़ैयो सभ अपन पेट-पूजाक जोगारमे लागि गेल छल। ओना अपने सेबेरे उठै छी मुदा काल्हि देहक धौजैन तेते ने भेल जे रातिमे सुतैकाल नीने ने अबै छल, मुदा जेना-जेना ओछाइनपर कर लगैत गेल तेना-तेना नीनक आगमन हुअ लगल। नीक जकाँ नीन कखन पड़लौं से मन नइ अछि किए तँ घड़ी देख नीन नइ पड़ल रही। मुदा भोरमे करीब डेढ़ घन्टा बेसी नीन रहल से तँ घड़ीसँ थाह लगिये गेल।

नीन टुटिते अँगनोमे आ पछुआर दिस–रस्तापर सेहो लोकक गलगुल सुनि पड़ल। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल अनुमान लगबए लगलौं जे केतौ किछु भेल अछि। आरो कान पाथि सुनए लगलौं जे कनी नीक जकाँ बुझिऐ। मुदा से भेल नहि, दुखिया कक्काक नामटा नीक जकाँ बुझलौं, बाँकी बात बाँकीए रहि गेल।

ओना पत्नियोँ ई सोचि नहि उठबैथ जे काल्हि भरि दिन मेहनतिया काजमे लगल रहला, तँए जँ कनी बेसी अराम भऽ जेतैन तँ देह बेसी फुहराम भऽ जेतैन जइसँ मनो फुहराम भाइये जेतैन। आइ कोनो तेहेन काजो अखन नहियेँ अछि जे कोनो नोकसान हेतैन। ओना

पत्नी अपना विचारे बुझली मुदा से अछि नहि, जिनगीक तँ एक-एक क्षण एक-एक पल जीवन क्रियासँ जुड़ल अछि तँए नोकसान नहि हएत, एहनो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

समाचार बुझैक खियालसँ ओछाइन छोड़लौं। ओना आन दिनक ओछाइन छोड़ब माने ओछाइनपर सँ उठब आ औझुकामे किछु अन्तर भाइये गेल छल। अन्तर ई जे आन दिन अपन दैनंदिनक काजकेँ नजैरमे रखि उठै छेलौं से आइ नइ भेल। अपन काज विचारक तर पड़ि गेल आ समाजक काज अगुआ गेल जइसँ अपन नित्य-क्रिया दिससँ मने बहैट गेल।

ओछाइनपर सँ उठिते मनमे भेल जे धाँइ-दे केबाड़ खोलि केकरोसँ पुछैसँ बेसी नीक हएत जे ओरिया कऽ केबाड़क एकटा पट्टा घुसका पत्नीकेँ इशारासँ बजा हुनके पुछि लिऐन। मुदा से गरे कुगर छल। कुगर ई छल जे पत्नी विपरीत दिसामे घुमल छेली आ आन-आन लोक, दोसर आँगनक स्त्रीगण, सोझमे पड़ै छेली।

ओना अपनो पत्नी कखनोकाल बजैमे तिलकेँ ताड़ बनबै छैथ आ ताड़केँ तिल, मुदा भाँज बुझल अछि, तँए कोनो विचार वा बातकेँ नीक जकाँ बुझि जाइ छी।

केबाड़ खोलि ओसारपर ठाढ़ भऽ हिया कऽ देखलौं तँ एक गोरे भौजी-तुल्य आ दू गोरे भावो-तुल्य छैथ, अखन गप-सप्पक क्रममे एकबट्ट छैथ तँए नजैर पड़िते ओहो सभ साकांछ भऽ जेती। मुदा से भेल नहि। होइतो अहिना छै जे सम-तुल्य समयक बात-विचार वा लाज-विचार आ बेर-बिपैतिक समयक लाज-धाकमे कनी अन्तर आबिए जाइ छै। बिनु मुँह झँपने भावो गप बजैले–माने समाचार सुनबै-ले–उताहुल रहबे करैथ, मुदा एते होशियारी सभ करबे केलैन जे भौजी-तुल्य जे रहैथ हुनके समर्थनमे सभ मुँह उघारने ठाढ़ रहली।

भौजी बजली-

"बौआ, बड़ अनर्थ भेल!"

'बड़ अनर्थ भेल' से तँ भौजीक मुहेँ सुनलौं मुदा की अनर्थ भेल बुझबे ने केलौं। दोहरा कऽ आँखि उठा भौजीपर देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे अस्सी मनक भार जेना हुनका मनपर पड़ल होइन। मनमे उठल जे नीक ई हएत जे किए ने अपने मात्र खोंरनी चलाबी आ भौजीए मुहेँ सभ बात सुनी। काटि-छाँटि अपन विचारकेँ रखैत बजलौं-

"से की?"

विह्वल होइत भौजी बजली-

"दुखिया कक्काक परिवारमे बज्र खसि पड़लैन।"

ओना तैयो भौजी सोझ-साझ नइ बजली, मुदा अपन मन मानि लेलक जे दुखिया कक्काक परिवारक किछु अंग-भंग जरूर भेलैन अछि।

आगूक बात भौजीसँ नहि पुछि पत्नीकेँ इशारा दैत बजलौं-

"कनी एमहर सुनू।"

बजैत-बजैत मन जेना क्षीण हुअ लगल, देहमे कोनो लज्जतिये ने बुझि पड़ए। हुअए जे खसि पड़ब। मुदा कहुना कऽ हाथ-पएर बँचबैत ओछाइनपर आबि चारूनाल चीत भऽ ओंघरा गेलौं।

लगमे आबि पत्नी बजली-

"बुधनी काकी मरि गेली।"

पत्नियोँक बातपर जेते बिसवास हेबा चाही से नइ भेल, मुदा लगले मन गवाही दैत कहलक- घटना-घटनाक अपन-अपन मोल होइ छइ। एहेन घटनाक चर्च करैमे जेते इमनदारी लोकमे रहै छै तेते आन घटनामे थोड़े रहै छइ। इमनदारी रहबो केना करत। घटनो-घटनोमे

अन्तर अछि किने, कोनो इज्जत-आबरूसँ जुड़ल रहैए तँ कोनो शासन-सत्तासँ, तहिना कोनो धन-सम्पैतसँ तँ कोनो अपन चालिसँ सेहो जुड़ल रहैए। मुदा किछु हौउ, एते तँ इमानदारी लोकमे ऐछे जे केकरो घरमे आगि लगौ कि कियो गाछपर सँ खसि पड़ैए आकि केकरो साँपे-छुछुनैर काटि लइ छै, तँ एहेन बात बजैमे लोक इमानदार अछिए।

पत्नीक बात सुनि भादवक ओइ अन्हार जकाँ मन अन्हरा गेल जइमे तरतर अन्हार करैत तरतर मेघ तरतराइत ठनको खसबैए आ तरतराइत बरखो होइए, मुदा उपाय?

एकाएक मनमे नव उत्साह जगल। उत्साह जगिते शक्तिक संचार भेल। संचार होइते मनमे उठल- एहेन अन्याय दुखिये काकाकेँ भेलैन से तँ नइ अछि, एहेन-एहेन अन्याय बहुतोक संग भेल अछि आ आगूओ हएत...।

मुँह-कानमे बिना पानि नेनहि दुखिया काका-ऐठाम विदा भेलौं। पहुँचते देखलौं जे कक्काक आँखिसँ नोर टघैर रहल छैन, मुदा तैयो मुइल पत्नीकेँ जरबैक ओरियानमे लागल छैथ।

दुखिया कक्काक दशा देख अपनो मनक ओहने दशा भेल। दशा होइते दुनियाँ मनमे नाचल। यएह छी दुनियाँ जे जइ बुधनी काकीक संग दुखिया काका जिनगी-ले खेत-पथारक काज संगे करै छला, जारैन-काठी गाछी-बिरछीसँ संगे अनै छला, से आब केकरा संगे करता? मुदा दुखिया कक्काक मनक विचार हमरा विचारसँ बिलकुल भिन्न छेलैन। हुनकर जे क्रिया-कलाप छेलैन तइसँ बुझि पड़ै छल जे होइ छैन केते जल्दी लहाश अँगनासँ निकैल आगिमे जरि जाइक। जेना सिनेह नामक कोनो विचार मनमे छैन्हे नहि। ओना, मृत्युक पछाइतो सिनेह रहिते अछि, मुदा ओ कम-बेसी। किएक तँ जैठाम असगरूआ जिनगी अछि तैठाम मृत्युक पछातिक जे क्रिया-कर्म अछि

ओ सिनेहकेँ धकेल अपना दिस खिंच लइए मुदा जैठाम भरल-पूरल परिवार अछि तैठाम तँ एहेन घटना भेलापर सिनेही पतिकेँ घरक केबाड़ बन्न कऽ रखले जाइए। ओना ओहूठाम दू रंगक हिसाब होइए। पहिल होइए जे जैठाम पति-पत्नीक बीच आत्मीय प्रेम रहल से आ दोसर भेल जैठाम जिनगीक विचारधारा एते दूरी बना दइए जे एक-दोसरकेँ देखैये ने चाहैए।

दुखिया कक्काक काज देख मनमे उठल- जँ किछु मृत्युक विषयमे पुछबैन से समए तँ निकैल गेल अछि। माने ई जे मरैक कारण नीक रहल होनि कि अधला, ई तँ मृत्युक पूर्वक क्रियाक विचारक समए छी। ऐठाम तँ बुधनी काकी मरि चुकल छैथ। अखन तँ मृत्युक पछातिक जे उपचार अछि सएह ने कएल जा सकैए।

ओना, मृत्युक पछातिक सूत्र–माने कि सभ कएल जाइत अछि–देखलो पछाइत बिसैर गेल रही तँए पुछब तँ जरूरी अछिए। ओना सूत्रधार–आँगनसँ असमसान तकक काज केनिहार–दुखिया कक्काक पितियौत जेठ भाय रहैथ, मुदा मनमे उठल- काज तँ दुखिया कक्काक परिवारक छी, तँए पुछबो अनुचित नहियेँ हएत, तैसंग ईहो तँ भाइये सकैए जे अपन उपस्थितिक मोजर भऽ जाएत आ जँ कहीं दुखक धारमे दुखिया काका बहि गेला तँ मृत्युक कारणोक भाँज लगि जाएत। यएह सोचि पुछैक विचार भेल।

मुदा लगले आँखि माए लग–बुधनी काकी लग–बैसल पाँच बर्खक बेटी सबुरियापर पड़ल। दुनू आँखिसँ बेटीकेँ नोरक टघारो चलैत रहै आ चिचिया-चिचिया कनबो करै छल, मुदा तैयो माइक मुँह लग बैसल माछियो दहिना हाथसँ रोमैत रहै आ कियो जँ देखए चाहैथ तँ वस्त्रसँ झाँपल माइयक मुँह उघारि देखा कऽ पुन: झाँपि सेहो दइ छल।

सबुरियाकेँ किछु कहैक साहस नहि भेल। साहस ऐ दुआरे नहि भेल जे जहिना दुखिया काका ऐगला ओरियानमे लगल छैथ तहिना सबुरिया सेहो लगले अछि तैठाम बीचमे अनेरे किछु बाजि बाधा उपस्थित करी से नीक नहि बुझि पड़ए तँए बजैक साहस नहि हुअए। ओना, समाजक बहुतो जिज्ञासु जिज्ञासा करए आएल छैथ, कियो बाँस काटए गेल छैथ, तँ कियो हाँइ-हाँइ जौड़ बाँटि रहला अछि। तैसंग किछु गोरे एहनो तँ छथिये जे बैस कऽ किछु स्मरण कऽ रहला अछि। हमहूँ ओही पाँतिमे बैस गेलौं।

ओना, दुखिया कक्काक ऐगला-पैछला गप-सप्प चलि रहल छल, माने ई जे दुखिया कक्काक की परिवार छल आ आगू की हएत से दुनू गप-सप्प चलि रहल छल।

बुधनी काकीक मृत्युक चारि दिनक पछाइत ऐगला क्रियाक जिज्ञासा करए दुखिया काका ऐठाम गेलौं। काल्हि छौरझँप्पी छल। बुधनी काकीक सारा बनि तुलसी गाछ रोपा गेल छेलैन।

हमरा जाइसँ पहिने जीवन काका आ सिंहेश्वर भाय सेहो पहुँच चुकल छला। तीनू गोरे ऐगला क्रिया-कर्मक चर्च कऽ रहल छला। ओना, अपना मनमे एकटा विचार नाचि रहल छल, ओ विचार छल जे दुखिया काका अपने जे पत्नीकेँ आगि देलैन से ओते नीक नहि भेल जेते बेटी–सबुरिया–केँ देने होइत।

ओना आन बात धियानमे नहि छल मुदा ई तँ रहबे करए जे असगरूआ दुखिया काका जे गरदैनमे उतरी लेलैन तइसँ ई तँ भेबे केलैन जे ऐगला काज करैसँ घेरा गेला। किएक तँ कर्ताकेँ–जे आगि देने रहल हुनका–अपन विहीतोक काज आ सोगो-पीड़ा रहिते अछि जइसँ ऐगला काज बाधित होइत अछि...।

..अपन मनमे कोनो जवाब उठबे ने करए जे मन असथिर

होइत। बजा गेल-

"जीवन काका, अपने तँ उमरदार भेने अनुभवी सेहो छीहे, दुखिया काकासँ नीक होएत जे सबुरिया आगि दइतैन।"

ओना हम ऊपरे-ऊपर हल्के-फुलके ढंगसँ सराध-कर्मक काजकेँ नजैरमे रखि बाजल रही। परम्परा की अछि, बेवहार की अछि, से सभ मनमे नइ छल। मुदा जीवन काका गंभीरतासँ प्रश्नकेँ लैत किछु समए मने-मन तर्क-वितर्क करैत बजला-

"नीक जरूर होएत, मुदा लोकोक विचार मानब तँ जरूरी भाइये जाइए।"

जीवन कक्काक सह पेब आरो मनमे अपन विचारपर बिसवास जगल, जइसँ बुझैक जिज्ञासा सेहो बढ़ए लगल, बजलौं-

"से की काका?"

जीवन काका बजला-

"पोथी-पतराक बात तँ नइ बुझल अछि मुदा समाजमे दुनू विचारधारा तँ बहिये रहल अछि। किछु गोरे एहनो छैथ जे पक्षमे छैथ आ किछु गोरे विपक्षमे सेहो छथिये। एक तँ ओहिना सराध-कर्म सीमित दिनक भीतरक काज छी, तैसंग समाजसँ जुड़ल सेहो अछिए। तैबीच जँ समाजमे विचारक विवाद उठत तँ काज ढंस होइक संभावना बनियेँ जाएत।"

जीवन कक्काक विचार मनमे जँचल मुदा लगले दोसर प्रश्न उठि गेल। उठि ई गेल जे समाजे छी, सदिकाल एहेन-एहेन क्रिया अबिते रहत, तखन किए ने समाज एकरा एकठाम बैस विचार करैए..?

बजलौं-

"काका, एहेन काजकेँ समाज पछुआ कऽ किए रखने अछि?"

जेना जीवन काकाकेँ एहेन घटनासँ भेँट भऽ चुकल होनि तहिना मनमे खुशी एलैन।

मुस्की दैत बजला-

"जे नि:सन्तान छैथ हुनकर उपाय की अछि?"

जहिना बाढ़ि एलापर माने पानिक धारमे खढ़ो-पात प्रवाहित होइए तहिना अपनो मनमे भेल। बजलौं-

"काका, जिनका ने धिया-पुता छैन आ ने पति, तिनकर उपाय की हेतैन?"

ओना जीवन काका ठमकला मुदा हमरा सन-सन लोक-ले हुनका लग घटना-घुटनी आकि खिस्सा-पिहानीक कमी थोड़े छैन जे जवाब नइ दइतैथ। मुदा बीचमे सँ दुखिया काका उठि कऽ अँगना कोनो काजे गेला। हम तीनियेँ गोरे दरबज्जाक बिछानपर बैसल रहि गेलौं।

गर पेब सिंहेश्वर भाय बजला-

"दुखिया काकाकेँ बड़ परेशानी हेतैन, अखन बेटी भानस-भात करै-जोकर नइ भेलैन अछि, अपने हर जोति दुपहरमे औता तखन भानस-भात करता!"

हमरा गर भेटल, बजलौं-

"तेतबे नहि ने अपने समरथ हड्डी छैन तँ कनी बरदासो कऽ लेता मुदा पाँच बर्खक सबुरिया भूखे छटपटाएत की नहि?"

हमर बात जेना जीवन कक्काक मनमे गड़लैन तहिना मुँहक विसविसीसँ बुझि पड़ल। मुदा देखल-सुनल विचारक काज जेना मनमे नाचि उठलैन तहिना बजला-

"ई स्थान अखन एहेन गप्पक नहि अछि, तँए अखन मुँह बन्ने

राखह।”

बजा गेल-

“से किए काका?”

जीवन काका-

“तूँ जे बाजऽ चाहै छह से मृत्युक साल भरि बरजित[4] अछि तँए साल भरि मुँह बन्ने राखह।”

सिंहेश्वर भाय बजला-

“सालक सीमा किए अछि ओ तँ भरि जीवनोक भऽ सकैए?”

साल भरिक सीमा सोझमे अबिते जीवन कक्काक मनमे साल भरिक क्रिया-कर्म उपैक गेलैन। बजला-

“आइ चारिम दिन छी माने बुधनी काकीककेँ जरौला, नअ दिनमे सराध कर्म सम्पन्न हएत, तेकर पछाइत बारहो मास मासे-मासे छाया हएत जे साल लगलापर पूरत, तेकर पछाइत बरखी हएत, जे साले-साल होइत रहत, तैबीचमे मातृनवमी सेहो होइत चलैत रहत।”

जीवन कक्काक बात सुनि सिंहेश्वर भाय टोकलकैन-

“जखन साले-साल बरखी आ मातृनवमी चलिते रहत तखन बीचमे दुखिया काकाकेँ दोसर बिआह करैक समए कहिया भेटतैन?”

तैबीच दुखिया काका आँगनसँ दरबज्जापर चलि एला। हुनका देखते तीनू गोरे अपन-अपन मुँह बन्न कऽ लेलौं।

लगमे अबिते दुखिया काका बजला-

“अपने लोकैन समाज भेलिऐ, केना गरदैनसँ उतरी हेट हएत से तँ अपने लोकैन ने विचार करबै।”

[4] दोसर बिआह करब बरजित

दुखिया कक्काक बात सुनि जीवन काका बजला-

“केकरा गरदैनमे उतरी लटकल रहल अछि जे अहाँक नहि उतरत। तखन तँ रंग-बिरंगक चलैन उतरी उतरैक ऐछे तइमे जे सकरता हएत तइ हिसाबसँ उतरी उतारि लेब।”

अपना जनैत जीवन काका दुखिया काकाकेँ जवाब दऽ देलखिन, मुदा की कहलखिन से अपने बुझबे ने केलौं। बिनु बुझने किछु बाजबो नीक नहियेँ बुझि पड़ए। मुदा दुखिया काका जखन समाज बना समस्या रखलैन तखन चुप्पो रहब केहेन हएत? फेर हुअए जे कहि दिऐन जे बड़बढ़ियाँ विचार जीवन कक्काक छैन। मुदा लगले ईहो हुअए जे बड़बढ़ियाँ आकि बड़खराप से तँ बुझला पछाइत ने बुझब, बिनु बुझने नीक की अधला की से केना बेराएब?

अगदिगमे मन पड़ि गेल। कोनो गरे ने देखिऐ जे दुखिया काकाकेँ की जवाब दिऐन। फेर मनमे भेल जे जीवने काकासँ किए ने पुछिऐन। बजलौं-

“की कहलिऐ काका जे रंग-बिरंगक चलैन अछि?”

जीवन काका बजला-

“अपना समाजमे रंग-रंगक चलैन अछि। पहिल भेल बिरखौ, दोसर भेल पंचदान आ तेसर भेल कुरसी।”

जेना नव चीज सुनने होइ तहिना मनमे भेल, जइसँ आरो बुझैक जिज्ञासा जगल। बजलौं-

“कनी तीनूकेँ फुटका कऽ कहियौ।”

हमर बात सुनिते जीवन काका हमरा निहारए लगला। मनमे की भेलैन से तँ ओ जनता मुदा अपना बुझि पड़ल जे मने-मन विचारि रहला अछि जे केहेन ढहलेल जकाँ बाजल। ओना जीवन काका किछु

अधला बात मुहसँ नहि निकालि असथिरसँ बजला-

“बौआ, अखन तूँ बाल-बोध छह तँए समाजक तरी-घटी नइ बुझै छहक। हमरा तँ देखैत-देखैत केश-दाढ़ी पकि गेल।”

किछु बुझब छल तँए ललचाइत मने कहलयैन-

“काका, एकरा के काटत। खेलहा-पीलहा देह अछि तँए ने, नहि तँ मरि गेल रहितौं। अहीं कहू जे अहाँ उमेरक केते गोरे समाजमे छैथ।”

हमर बात जेना जीवन कक्काक मनकेँ भरलकैन तहिना बुझि पड़ल। बजला-

“बौआ, पहिल जे बिरखौ अछि ओइमे लोक हाथी-घोड़ा, गाए-बरद, गहना-जेबरक संग जर-जबारमे भोजो करैए आ सभ किछु दान सेहो करैए।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“हाथीबला ने हाथी दान करता आ जिनका से नइ छैन ओ की करता?”

हमर बात जेना जीवन काकाकेँ कठाइन लगलैन तहिना मुँहक रूपसँ बुझि पड़ल। बजला-

“एते धड़फड़ेने समाजक पेनी पौबह। पहिल ने कहलियह आ दोसर रंगक अछि पंचदान, जइमे लोक कमसँ कम एगारह गोरेकेँ खाइयो-ले दइए आ जे विभव रहलै तइ हिसाबे दानो करैए।”

जीवन कक्काक बात सुनि मन कनी थितगर भेल। तइ बिच्चेमे सिंहेश्वर भाय पुछलकैन-

“कुरसी की भेल?”

जीवन काका बजला-

“जेना बिरखौ आ पंचदान नमगर-चौड़गर अछि तेना कुरसी नइ अछि। ‘कुरसी’मे जएह भेल सएह दानो केलौं आ खाइयो-ले देलिऐ।”

दुखिया काका सेहो सभ बात सुनलैन मुदा बजला किछु ने। तैबीच एकभुक्तक समए सेहो लगिचा गेल छल। तँए आँगन दिस विदा होइत दुखिया काका बजला-

“ओना, अखन सराध दिनगर अछि। जेना जे अपने लोकैन कहब, तेना से करैले हाजिर तँ छीहे।”

सभ कियो उठि कऽ विदा भेलौं।

साल भरिक पछाइत पहिल बरखी भऽ गेल। बरखी भेलाक तीन दिनक पछाइत दुखिया काका ऐठाम गेलौं। दुखिया कक्काक रंग-रूप बहुत बदलल बुझि पड़ल। जेना पत्नीक सभ सोग-पीड़ा बिसैर नव जिनगीक परिवार बना नेने होथि तहिना। सबुरिया सेहो छह बर्खक भऽ गेल। दुनू बाप-बेटी भानसक काजमे लगल रहैथ। डेढ़ियापर पहुँचते सोर पाड़लयैन-

“काका यौ?”

अँगनेसँ दुखिया काका बजला-

“हँ, अँगनेमे छी। एम्हरे आबह।”

अँगनेमे पीढ़िया बैसैले देलैन आ दुखिया काका-अपने भुँइयेमे चुक्कीमाली बैसला। गामेपर सँ विचार केने गेल रही जे दुखिया काकाकेँ बड़ परेशानी पत्नीक अभावमे होइ छैन। से नइ तँ दोसर बिआह कऽ लैथ।

मनमे अगुआएल विचार छल तँए बजैक उत्सुकता तँ छेलएहे। मुदा बिना कुशल-समाचार बुझने बजबो केना करितौं तँए कुशले-समाचारसँ गप शुरू करैत पुछलयैन-

"काका, जिनगी अहाँकेँ बड़ परीछा लऽ रहल अछि।"

हमर प्रश्नक उत्तर जेना दुखिया काकाकेँ ठोरेपर रहैन तहिना धाँइ-दे बजला-

"जिनगीमे जे जेते परीछा देत, वएह ने ओते जिनगीकेँ चिन्हबो करत।"

दुखिया कक्काक जवाबसँ बुझि पड़ल जे गप-सप्प करैक मूड बनल छैन। बजलौं-

"काका, बिआह कऽ लिअ। सबुरियो चेष्टगर भेल, बिआह-दान हेतइ सासुर जाएत। अहाँ आरो परेशानीमे पड़ि जाएब। असगर रही कि दस गोरेक परिवारमे रही, जिनगी तँ जिनगी छी ओकर तँ सभ काज पुरबै पड़त।"

बजला-

"से तँ अछिए, मुदा समस्यो तँ अपने-अपनेटाक ने अछि।"

बजलौं-

"हँ, से तँ अछिए, मुदा परिवारिक जिनगीक अपन महत् छइ किने।"

हमर बात सुनिते दुखिया काकाकेँ पहिल पत्नी मन पड़लैन। केना हथियाक झाँटमे प्रसव पीड़ा भेलैन आ लाख परियास केलो पछाइत बँचा नइ पौलिऐन। पछाइत दोसरो बिआह केलौं सेहो मरि गेली, साल भरि पहिने सराधसँ उरीन भेलौं। बर्ख दिन भऽ गेल। केना बर्ख दिन बीतल सेहो कहाँ बुझि पेलौं। अपन जिनगीमे जहिना रमैत एलौं तहिना रमैत आगूओक जिनगी काटि लेब। तइले एक नइ दू-दूटा सन्ताप भोगि रहल छी। सबुरिया भानसो-भात आ अँगनो-घरक काजमे सम्हारिये रहल अछि। बजला-

"परिवार केतौ हेराएल अछि, दू बाप-बेटीक परिवार अखनो अछि। यएह ने हएत जे बिआहक पछाइत बेटी सासुर जाएत। जँ ओकर मन हेतइ तँ हमहूँ ओतै चलि जाएब नइ जँ बेटियेक मन हेतै तँ ओहो सभ एतै रहत।"

ओना दुखिया कक्काक उत्तर मनोनुकूल नइ भेल, मुदा उत्तरकेँ काटबो तँ असान नहियेँ अछि। आँखिक सोझमे एहेन अनेको जिनगी अछिए। बजलौं-

"काका, बेटाक वंश आ बेटीक वंशक अन्तर तँ भाइये जाइत अछि किने?"

दुखिया काका बजला-

"हँ, लोको तँ सएह बुझैए, मुदा मूल प्रश्न जिनगीकेँ चैनसँ जीब अछि। जखने दोसर बिआह करब तखने अपन पत्नी रहितो सबुरियाक तँ सतमाइये हेतै किने। जेकरा वंशक फूल बुझि सेवा करै छी ओकरा आगू एहेन बगुरक गाछ रोपि दिऐ, ई अपन मन नइ कहैए। किछु भेल तँ सतमाइये भेल। ओकरा कुभेला करबे करतै।"

बजलौं-

"की कुभेला?"

काका बजला-

"सभ रंगक कुभेला। ओ अपन बेटी सबुरियाकेँ बुझबे ने करत। मुदा हमर तँ बेटी छी, हम केना अपना सोझामे कुभेला होइत देखब। तइसँ नीक ने जे ओहन गाछे ने रोपब जेकर काँट बाल-बच्चाकेँ गड़त।"

◌

शब्द संख्या : 2767, तिथि : 31 मार्च 2017

अपन रोपल गाछी भुताहि

रामनवमी दिनक बेरुका उखड़ाहाक पाँच बजेक समए। अनेको लॉडस्पीकरसँ सूर भरल गीत-नाद गाममे अनघोल केने...। कोनोसँ अवाज निकलै- 'रामराजमे सभ बरबैर..!' तँ कोनोसँ निकलै- 'दैहिक-दैविक भौतिक ताप रामराजमे नहि रहि पबैत..!' तँ कोनोसँ अवाज निकलै- 'रघु कुल रीत सभ दिनसँ आएल, प्राण जाएत तँ जाएत मुदा वचन नहि जाएत..!'

अनघोल वातावरण रहने रघुवीर कक्काक मन सेहो घोर-घोर होइत रहैन।

अपन साठि बर्खक बीतल जिनगी दिस नजैर देलैन। पाछू घुमिते अपन बाल-बोधक जिनगीक मिलल रूप–विद्यार्थी जीवन–होइत अपन चालीस बर्खक समाज सेवाक बीच जखन एलैन तँ मन ओझराए लगलैन।

केतेको प्रश्न मनमे उठए लगलैन जे जखन अपना जनैत केकरो ने अधला सोचलिऐ आ ने अखनो सोचै छी आ ने केकरो अधला केलिऐ आ ने अखनो करै छिऐ, तखन लोक किए अधला करैपर उताहुल भेल अछि? माने ई जे समाजेक लोक समाजोक लोककेँ आ तैसंग अपनो आ हमरो किए अधले नजरिये देखबो करैए आ करबो करैए..?

रघुवीर कक्काक मनमे एकाएक ठनका जकाँ ठनक जगलैन। जगिते बकार फुटलैन-

"अपन रोपल गाछी भुताहि! जइ समाज रूपी गाछीकेँ रोपि समाजरूपक माली बनि सेवा करैत अखन तक आबि रहल छी ओ एना भुताहि किए बनि रहल अछि..!"

रघुवीर कक्काक ठनकल मन रहबे करैन, चोटे पाछू उनैट तकला तँ बुझि पड़लैन जे केतौ-ने-केतौ एहेन रोगक प्रकोप भीतरे-भीतर भेल अछि, जे चाहे बाँकी रूपमे हुअए आकि आने-आन कोनो रोगसँ गरसित भेल हुअए, मुदा भेल तँ जरूर अछि..!

रघुवीर काका जेते विचारकेँ सोझराबए चाहैथ तेते ओझरी लगि-लगि जाइत रहैन। कोनो एहेन उत्तर मनमे जगबे ने करैत रहैन जे पेब मन हल्लुक होइतैन।

गुम-सुम भेल रघुवीर काका अपन मनक घोड़ाकेँ चारूदिस दौड़ा-दौड़ा ताकए लगला मुदा आँखि देखबे ने करैन! भाय आँखि देखब ओते असान थोड़े अछि जे लगले देख जाएब..? तही बीच चाह नेने पत्नी पहुँच कहलकैन-

"चाह पीब लिअ, पान खा लिअ आ रामनवमी दिन छीहे रामराज देखए चलू।"

ओना तैबीच रघुवीर काका चारि-पाँच घोंट चाह पीब नेने छला तँए मनक ओझराएल विचार पतराए लगल छेलैन, ओना सोलहन्नी नइ पतराएल रहैन तँए पत्नीक बात सुनि तामस तँ नइ उठलैन मुदा झड़क जरूर उठलैन। झड़कवाहि उठिते मन नचलैन। नचैत मनमे एलैन जे एक दिस पत्नी कहि रहली अछि- 'रामनवमीक मेला छी, देखैले चलू।'

आ दोसर दिस अपन मन रूपी पति[5] लोकक लीला देख-देख घोर-घोर भेल अछि! तैठाम की मेला देखब आ कोन मेला देखब..? मुदा लगले होनि जे पति-पत्नीक बीच तँ एहेन पार्टनरशीप ऐछे जे अदहा-अदहा बँटवारा अछि। अपने किछु छी तैयो अदहे छी आ पत्नियेँ किछु छैथ तँ अदहाक मालिक छथिए...।

रघुवीर काकाकेँ किछु फुरबे ने करैन जे की केने की हएत। थोड़ेकालक पछाइत, चाह जखन अदहापर एलैन–माने अदहा गिलास जखन पीब लेला–तखन एकटा जुकती मनमे औनाइत खसलैन। खसलैन ई जे केतबो अदहाक मालिक पत्नी किए ने होथि मुदा छैथ तँ पत्नियेँ। बहला-फुसला अधिक हिस्सा लाइए सकै छी। कक्काक मन कनी सुगबुगेलैन।

सुगबुगाइते बजला-

“जखन मेला देखए जाएब, तहूमे जुड़शीतलक धुर-खेल तँ छी नहि जे ‘जय-शिव, जय-शिव’ करैत मेला घुमि लेब। रामनवमी छी। रामक जनम दिनक उछाही जेकरा छै ओ तँ आइ की-की ने लूटाएत मुदा हमरा बुते तँ अहूँकेँ खुशी-खुशी मेला देखौल नइ हएत।”

ओना, रघुवीर कक्काक बात सुनि काकीक मन मधुआ गेल छेलैन मुदा तैयो लाड़-झाड़ करैत बजली-

“जइ दिनसँ बाप-माइक घर छोड़ि एहेन जरल घर एलौं जे कोनो मनोरथ पूर नइ भेल।”

एक तँ पहिनहिसँ रघुवीर कक्काक मन भुतियाएल रहबे करैन, जेकरा समेट समाज-परिवारसँ हटि पत्नी लग पहुँचल छला, तैठाम तेहेन बज्जर सन कथा भेटलैन जे मन आरो चुरम-चुर भऽ गेलैन।

[5] विचार

चुरम-चुर होइत मनकेँ कहुना-कहुना बीछि-बीछि कऽ समटलैन।

समैटते मन बिहुसलैन, बिहुसिते बकार फुटलैन-

“हम तँ चाह अदहा पीब नेने छी अहाँ पीलौं?”

पतिक बात सुनिते सितियोकाकी सभ लाड़-झाड़ समटैत बजली-

“नइ कहाँ पीलौं हेन। हम कि कोनो औझुका लोक छी जे पतिकेँ बिना खुऔनहि-पीऔने अनजल कऽ लेब! अखुनका लोक ने टेस्ट करैत अपनो टेस्ट करैए जे नीक-बेजाए-क विचार पति करता कि पत्नी। हँ, जैठाम सूर्यक उदय अछि तैठाम पतिक की दशा छैन सेहो तँ सबहक सोझहे अछि।”

सितिया काकीक सिताएल विचार सुनि रघुवीरो कक्काक मन सिता गेलैन। सिताइते बजला-

“अदहे गिलास चाह पीलौं हेन अखन अदहा बाँकीए अछि तँए जँ आँगनमे कोशलौने होइ तँ जा कऽ पीब लिअ, नहि तँ अदहा रखने छी लीअ पीबू।”

पतिक बात सुनि सितिया काकी लजा गेली। लजा ई गेली जे खाइ-पीबैक कारोबारी तँ अपने छी किने तैठाम जँ मौगियाही चालि पकैड़ जे परिवार रहत, माने परिवार रहत दस गोरेक आ सिदहा लगाएब सात गोरेक जे खाइत-पीबैत रस्तेमे सठि जाएत! ओइ परिवारमे विवाद हएत की नहि? हेबे करत, जखने खाइक भोजन रस्तामे सठत तखने ने किछु गोरे खा कऽ सुखे ढेकार करत आ किछु गोरेकेँ भुख ढकार करए पड़तैन। जखने दुनू ढकार हएत तखने दू रंग हवा चलबे करत, तैठाम के दोखी हएत? हँ! एहेन संभव अछि जे उपार्जनकर्ता भरपूर उपारजन, कोनो कारणे नइ कए पबैत होथि मुदा ई तँ हमरे ने बुझए पड़त। भरि थारी नहि, हिस्से भरि।

हँ! एहनो संभव ऐछे जे दस गोरेक भोज्य-विन्यासमे, वस्तुक वाहुल्य देख, दस गोरेक जगह पनरह गोरेक बना रस्ता-पेरापर फेक गन्दा करबै सेहो केहेन हएत? मन कहलकैन- तखन? तखन तँ यएह ने हएत जे जहिना छबे-छबे खेत बढ़ैए, कौरे-कौरे पेट बढ़ैए तहिना रसे-रसे बुधियो-बेवहार ने सिखैत-सिखैत सीखि चलैए।

सितिया काकी अपन लड़-झड़क चालि-प्रकृति पकैड़ बजली-

“जहिना हमर अदहा गिलास तहिना ने अहूँक अदहा भेल, तैठाम अपन-अपन दायित्व तँ निमाहए पड़त किने।”

पत्नीक बात सुनिते रघुवीर काका बजला-

“शुभ काजमे अपने ने देरी करै छी, दसटा हॉर्नक अवाज जे कानक ठेकीकेँ केतबो ठेलत तइसँ की हेतइ। नीक जकाँ बनि-ठनि कऽ मेला देखए चलू, अहीं संगे हमहूँ जाएब।”

‘अहीं संगे हमहूँ जाएब’ सुनि माने पतिक बिसवासू विचार सुनि सितिया काकी विस्मित हुअ लगली।

पत्नीकेँ विस्मित होइत देख रघुवीर काका बजला-

“तेते ने लॉडस्पीकरक अवाज आबि रहल अछि जे अहाँकेँ सुनैमे रामनौमीए-टा अबैए मुदा चैती नवरात्राक[6] नौमी सेहो छी। तँए दुनूक बीच छी, कोन मेला देखए जाएब से पहिने विचारि लेब तखन ने घरसँ डेग उठाएब।”

रघुवीर कक्काक बात सुनि सितिया काकी औनेली नहि, ऐ दुआरे नै औनेली जे भगवतीक आराधना–नवमीक मेला–आ रामनवमीक मेला–तहूमे केते सालक पछातिक राम जन्मोत्सव छी–दुनूमे अन्तर तँ अछिए। ओना, ओइ दिस सितिया काकीक नजैर नइ गेलैन। रस्तेमे

[6] भगवतीक आराधनाक नवमी

अँटैक रामनवमीए दिस बढ़ि गेलैन।

पतिक विचारकेँ सोल्होअना अनदेखी करी, सेहो केहेन हएत। सितिया काकीक मन उमुर-घुमुर करए लगलैन। कोनो रस्ते ने देखैथ जे आगू की केने दुनू बेकती मिलानसँ मेला देखए जइतैथ। मुदा लगले जुकती फुरलैन। जुकती ई जे रामनौमियो मेला छी आ नवरात्रियोक मेला छी, मुदा छी तँ दूनू मेले, तँए किए ने दुनू मीलि मेल-मिलान-मिलाप करैत मेला जाइ...।

सितिया काकीक मन मानि गेलैन जे पतियेपर किए ने जहिना सीता रामकेँ माता-पिता बोन जाइले छोड़ि देलखिन तहिना हमहूँ आश्रित भऽ मेला देखए जाय।

ओना, सितिया काकी धड़फड़मे अपने भरिक विचार कऽ लेली, जइसँ नजैरमे ई एबे ने केलैन जे नारियोक रूप अरूप अछि। केतौ नारी अपन इज्जत-आवरू-ले अपने बलिक बकरा बनि रक्तसँ धरती सींचै छैथ तँ केतौ दर्जन भरि बाल-बच्चावाली दूधमुहाँ बच्चाकेँ पतिक सिर मेढ़ि दोसर घरक बरक पूजा नइ करै छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

सितिया काकी नजैर उठा रघुवीर काकापर देलैन, मुदा बजैक जे विचार रहैन ओ मनेमे घोंटाइत रहलैन जे रघुवीर काका बुझि गेलखिन। मुस्कुराइत रघुवीर काका बजला-

“जखन मेला जाइक विचार मनमे उठल, तखन नहियोँ जाएब मनकेँ मारब हएत किने। से नहि तँ झब-दे चाह पीब बनि-ठनि कऽ आँगनसँ तैयार भेल आउ।”

पतिक बात सुनि सितिया काकी ठमकली। ने आँगन दिस डेग उठैन आ ने मेला जाइ दिस विचार उठैन।

मेला तँ मेला छी दुनियाँक मेला। जे दुनियाँक कोण-कोणमे

पसरल अछि। अयोध्या जे रामक जन्मभूमि छिऐन, ओइठामक सोहान आ जनकपुरक सोहान, जे सासुर छिऐन, दुनू एक्केरंग थोड़े हएत। तैसंग गाम-गाम आ परिवार-परिवारक आराध्य देव रहने गाम-परिवारक संग बेकतीगत सेहो पूज्य छथिए, तैठाम केते दूर तक देखल जाए ई तँ नजैर-नजैरिक खेल छी किने?

ठमकल पत्नीक रूप देख रघुवीर कक्काक मनमे परिवारक ओइ अभिभावक (रक्षक) जकाँ विचार उठलैन जिनका लेल एक दिस घर-परिवारक गाड़ीकेँ आगू ससरब कठिन अछि आ दोसर दिस पाछूसँ कोनो सहारो नहियेँ अछि, माने हाथ सोलहन्नी खाली...। तैठाम पत्नीक रूप बदैल सियाही सन सियाह बनियेँ रहल छेलैन, तँए विचारकेँ आगू करैत रघुवीर काका बजला-

“मेला देखए नइ जाएब तँ नहि जाउ, मुदा दुनू परानी एकठाम रहैत जे चुपा-चुपी केने छी से हमरा नीक नहि लगैए।”

जहिना कोनो पशु आँखिक इशारा मात्र पेब फुरफुरा उठैए आ कोनो अँड़पेन देला पछाइतो नहि उठए चाहैए तेना सितिया काकीकेँ नहि भेलैन, ओ अपनो बले उठैत बजली-

“मेला देखी वा नइ देखी, जहिना छी तहिना तैयार भऽ टहैल आबए चलू।”

पत्नीक विचार सुनि रघुवीर कक्काक मनमे खुशी उपकलैन- जे पत्नियेँ ने लक्ष्मियो आ लक्ष्मीपात्रो छैथ जे अपन विभव देख अपन शक्ति अजमा घरसँ बाहर दुनियाँक मेला देखए चाहै छैथ। बजला-

“बड़बढ़ियाँ कहलौं। मुदा गामो तँ गामे छी किने, कोनो कि शहर-बजार छी जे पतियानी लगा बनत। जेकरा जेतए अँटावेश होइ छै से तेतए बसि जाइए तँए शहर जकाँ एकपेरिया तँ नहि अछि, अछि तँ बहुपेरिया तखन कोन रस्ते जाएब शुरू करब, ई विचार तँ अखने ने

कऽ लेब।”

ओना सितिया काकीक नजैर (मन) अखन धरि आन-आनकेँ जे देखने छेली तेही हिसाबक छेलैन, तँए आगू दिस तकैक ने खगते पड़लैन आ ने तकबे केलीह। जखन खगते नहि तखन कियो ओरियाने कथीक करत। अनेरे दुनियाँक बोनमे जे असगरे वौआएत, से कथीले? मुदा रघुवीर कक्काक विचार ठनका जकाँ सितिया काकीक मनमे खसले छेलैन। तैपर तेहाला (तेसर बेकती) कियो अछियो तँ नहियेँ जे कनी-मनी टपो-टोइया आकि संगो-साथ दइत। असगरमे दुसगर होइते छइ। मुदा लगले मन कलशलैन।

कलैशते चैती गाछक नवटुस्सा जकाँ मन काकीक टुसियेलैन, टुसियाइते बजली-

“जखन दुनू परानी अदहा-अदहा घरसँ बाहर धरिक दुनियाँ बाँटि नेने छी तखन अपन विचारक[7] विचार[8] अपने ने पहिने ओइ मुहसँ देबै जइ मुहसँ विचार निकलल, पछाइत ने हमर पार औत?”

सितिया काकीक ‘पत्नी रूप’केँ पति–रघुवीरकाका–देखलैन। देखते मन गवाही देलकैन जे अपन विचार पत्नी पूर केने बजली अछि, ओकरा पुराएब तँ अपने दायित्व छी किने। मुदा मुहसँ तँ वएह ने निकालब जे ओकर[9] मुँह केमहर छइ? जाबे मुँह नइ देखब ताबे मुँह मिलानी केना करब आकि मुँह मिलान हएत केना..?

जहिना सम्पन्न फड़ल आमक गाछपर अनठेकानियोँ गोला फेकलासँ गोटे पाकल आम खसिये पड़ैए, मुदा की ओकरा ठेकानल कहब आकि ओ बेठेकानले भेल। मुदा बेठेकानलो तँ ठेकानल भाइये

[7] प्रश्नक
[8] उत्तर
[9] विचारक

गेल जे तोड़ि के अनलक।

ओना ठेकानल तँ ओ ने भेल जे ठेकना कऽ–माने लक्ष्य करि कऽ–गोला ओइ आमपर फेकलौं जइ आमपर मन गड़ल छल। गाछमे तँ सोहरी लागल आम ऐछे मुदा जेते अछि तेते खगतो नहियेँ ने अछि। आकि सभटा हमरे-ले अछि जे गोट-गोट कऽ तोड़ि लेब..! रघुवीर काका बजला-

“जहिना देश सेवा, मानव सेवा देश भक्ति छी तहिना भक्तिक बीच अभक्ति आ सभक्ति केहेन अछि ओ बिना बुझने भक्तियो केना करब..?”

ओना अपना जनैत रघुवीर काका सोझराएले बात बजला मुदा सितिया काकी नीक जकाँ नहि बुझि पेली। ने ई बुझि पेली जे पतिक विचारक आगू अपने अदहे छी। तँए पिपाशु पक्षी जकाँ सितिया काकी रघुवीर काका दिस मुँहक दोसर बोल सुनैले आँखि उठौली।

मने-मन रघुवीर काका सितिया काकीक विचारकेँ तारि रहल छला। तारिते भारैत बजला-

“जहिना दुनियाँक बोनमे सभ हेराएल अछि तहिना अपनो दुनू परानी तँ छीहे, तँए मेला देखैसँ पहिने मेलाक रस्ताक प्रण मनमे रोपए पड़त तखन ने मेलाक रस पीब, नहि तँ लोकेक भीड़ देखैत चलि आएब!”

ओना अखन धरि सितिया काकी मेलाक वएह रूप बुझै छेली, मुदा पतिक अनमोल विचार सुनि थकमकेली। मन कहलकैन अपने की बुझि रहल छी आ पतिक मुहेँ की सुनि रहल छी..! ओना सितिया काकी जिद्दयाहि स्त्रीगणक श्रेणीमे अबिते छैथ मुदा ने जिद्द धरैक विचार सक्कत छैन आ ने जिद्द पकड़ैक मन मजगूत छैन। मुदा आइ तँ रामनवमीक मेलाक संग नवरात्राक नवमी मेला सेहो छी..! सितिया

काकी बजली-

“एना जे झाँपल-तोपल श्लोक बचै छी तइसँ नइ हएत, हमरा मुरकुट्टियेमे कहू जइसँ मन मानि जाए।”

पत्नीक सिनेह भरल पिपाशु मनकेँ जँ रघुवीर काका नहि थतमारि सकैथ, ई केहेन होएत। तहूमे ओ पत्नी जे जहियासँ माता-पितासँ उत्सर्जित भऽ हाथ पकड़ने एलैन, ओ केना हाथ पकड़ने आगूओ चलतैन ई तँ विचारणीय प्रश्न रघुवीर कक्काक मनमे रहबे करैन...।

जहिना कोनो विचार चितासन्न भेला पछातिये नव विचारक संग नव जीवन दइए तहिना काकाकेँ भेलैन। ओना जहिना सितिया काकी मने-मन विचारकेँ घोंटि रहल छेली तहिना मने-मन घोंटैत रघुवीरो काका अपन जिनगी पढ़ए लगला।

चालीस बर्ख पूर्वसँ, जइ गाम-समाजमे साइयो रंगक छुआ-छूत पसरल अछि–माने जातियेटा मे नहि आनो-आनोमे–तँए ओइ समाजमे एकरूपता आनब तँ ओइ समाजक प्रमुख क्रिया भेबे कएल। जँ से नहि भेल तँ सदिकाल कखनो किछु-ले तँ कखनो किछु-ले हल्ला-फसाद, झगड़ा-झंझट होइते रहत आ समाजो टुटिते रहत। तँए जाबे कोनो बेवहारिक बन्धन–माने बेवहारिक चलैन–केँ एकसूत्रमे नहि आनि चलब ताबे समाजमे एकसूत्रताक जड़ि केना जड़ियाएत..?

यएह सभ विचार मथन करैत रघुवीर काका समाजक बीच अपन विचार रखलैन जे जखन सभ मनुखे छी तखन सभ एकठाम बैस किए ने खाएब-पीब। अनेरे, छुत-अछुतक बीच बँटल छी..!

रघुवीर कक्काक विचार संजीवनी जकाँ समाजकेँ जीवनदात्री बुझि पड़लैन, समाजक सभकेँ विचार नीक लगलैन। ओना रंग-रंगक अरचन बीचमे उठैक संभावना सेहो बुझिये पड़लैन, जइसँ विचारक

संग बाटो टुटैक संभावना अछिए। मुदा गामक अधिकांश परिवारक एकमुँहरी विचार भऽ गेलैन।

समाजो तँ समुद्रे जकाँ अछि। जहिना समुद्रमे हरण, मरण आ जरन सदिकाल चलिते रहैए तहिना समाजोमे तँ होइते अछि। सएह भेल। एक गोरेक वृद्ध बाबाक मृत्यु भेलैन। जहिना सभ एकठाम बैस खाइ-पीबैक विचार केने छला तहिना सभ लोरिक बरियात जकाँ जरबैयो-ले गेला। जइसँ सबहक भेँट सभकेँ असमसान घाटमे भेबे केलैन। असमसाने घाटपर ने असमानक मन्दिर सेहो अछि। जे कखनो बरफवारी करैए तँ कखनो जलवारी आ कखनो अगवारियो तँ करिते अछि...। ओना जइ रोगक निदानक बाट पकैड़ समाजक कर्णधार उठि कऽ ठाढ़ हुअ चाहै छला ओइ दिस ओइसँ पहिने–माने वृद्धक मृत्युक पूर्व–सेहो कनी-कनी डेग उठा नेने छला जइसँ समाजमे आड़िक माने बन्धनक टुट-फाट सेहो शुरू भऽ गेल छल। जइसँ जाति-जातिक बीच विचार संघर्षक संग बेवहारमे सेहो उतैर रहल छल। मुदा आगि लगलेपर ने कुकराहा सेहो उड़ैए जे दोस्त-दुश्मनक भेद खतम करैत केकरो घरमे लगि जाइए। सेहो भाइये रहल छल। जइसँ समाजक कोढ़-करेज खोखैर खाइबला बेवहार जरिये रहल छल।

ओना समाजमे समाजिक बन्धन हौउ आकि देशमे देशक बन्धन, मुदा सभ–समाजिक संगठनो आ राजनीतिक दलो–मंचपर एकरा अधला कहिते छैथ, भलेँ परोछमे एकरे बले–माने छुआ-छुतेक बले–नचबो-गेबो किए ने करैत होथि।

ओना जहिना समाजो तहिना राजनीतिक दल सेहो अछिए। जे कियो हाथीक नाँगैर पकैड़ हाथीक परिचय दइ छैथ तँ कियो हाथीक सूढ़ पकैड़ आ कियो हाथीक टाँग पकैड़, मुदा सभकेँ तँ देखैक अपन-अपन दाबी छैन्हे जे असल हाथीक परिचय हमरे अछि।

भलेँ सभ अपन-अपन दाबी अपने-अपने घरमे किए ने रखैत होथि मुदा समस्यो तँ समस्या छी। जहिना समाजकेँ समाजक मंचपर आबि संकल्पक संग अंगीकार करैत बेवहारिक धरातलपर आबए पड़तैन तहिना राजनीतिक दलकेँ समाजिक मंचपर चढ़ि समाजकेँ राजनीतीकरण करैक संकल्पक संग जमीनी सच्चाइकेँ प्रतिपादित करए पड़तैन। जा से नइ हएत ता दिल्लीक लड्डु बनैत रहत, रामनवमीक संग नवरात्राक नवमीक मेला अबैत-जाइत रहत।

रघुवीर कक्काक मनमे सेहो नव विचार जगलैन जइसँ मन मुस्कियेलैन। मुस्कियाइत मन रघुवीर कक्काक विचारकेँ टुस्कियौलकैन। टुस्कियाइते विचार चैती कलश जकाँ भकरार हुअ लगलैन। भकरार होइते मुहसँ निकललैन-

"चलू जे राम से राम, रस्ते-रस्ते चलबो करब आ गपो-सप्प करब, भलेँ मेला देखी आकि नहि देखी।"

रघुवीर कक्काक विचारकेँ केते दूर तक सितिया काकीक सिताएल मन बुझलकैन से तँ ओ अपने जानैथ आ जानैथ सुनयना दादी मुदा रघुवीर कक्काक मनमे बिसवास जगबे केलैन। विस्मित होइत सितिया काकीकेँ जहिना माइयक गोदमे बैसल बच्चा अपन जिनगीक सोग-पीड़ा बिसैर चैनक साँस लइत अरामसँ जीवन मुक्त भऽ सुतैए तहिना पतिक खलियाएल गोद देख मनमे जगलैन।

जगिते मनमे उठलैन- चालीस बर्खसँ आइ माने पूबसँ पच्छिम, की देख रहल छी? की अपन रोपल गाछी भुताहि भऽ गेल..?

ओना, टुटैत-बँटैत समाजकेँ देख जेते चिन्तित रघुवीर काकाकेँ हेबा चाहिऐन से नइ छैथ, मुदा चिन्ता नइ छैन सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

कम चिन्तित हेबाक कारण छैन जे जेतए-जेतए एहेन बान्हक

बन्धन अछि तइ बन्धनकेँ या तँ तोड़ि लेलैन वा छोड़ि-छाड़ि देलखिन। जइसँ हिमालयक तराइक सघन बोनमे जहिना ने केतौ रस्ता रहै छै आ ने बिनु रस्तेक कोनो जगह खाली छै, गाछक बोन छै अपन-अपन अँगना-घर सभ बनौनहि अछि।

सूर्यास्त होइते एक दिस घड़ी-घन्टक अवाज भेल तँ दोसर दिस आरती गायन। सितिया काकी बजली-

"गपे-सप्पमे रहि गेलौं, चाहक बेर सेहो भेल। अहूँ तैयार हौउ आ हमहूँ चाह बनौने अबै छी।"

पत्नीक पत्नीत्व देख रघुवीर कक्काक मनमे सामक समत्व विचार जगलैन मुदा बजला किछु ने..!

◌

शब्द संख्या : 2619, तिथि : 7 अप्रैल 2017

बलधकेल कटौज

चाहक दोकानपर अबिते सुवोध नाथ बजला-

"हऽऽ जान बचल!"

सुवोध भाइक बात सुनिते भकचका गेलौं। ओना मुँहक हँफनीसँ बुझि पड़ैत रहए जे कमसँ कम तीन किलोमीटरक रबाड़क हँफनी छिऐन। घामे-पसीने तर-बेतर, ठाम-ठीम कुरतो भीजल आ अदहासँ बेसी पैरक चप्पल सेहो गरदा-धुरा चटने छैन..!

किछु फुरबे ने करए जे सुवोध भाइकेँ प्रवोधियैन आकि वाह-वाही दिऐन, से तँ किछु बुझले ने छल तँ की बजितौं। मुदा मनमे प्रश्न तँ नाचिये रहल छल जे सुवोध भाइ सन बेकतीत्व बला बेकतीक मुहसँ 'जान बँचब' निकलल..!

साधारण लोक नहियेँ छैथ, साहित्यिक मंच हौउ आकि पंथाइक, सभठामक प्रवचनकर्ता छथिए। छेबे नहि करैथ सभ मानितो छैन्हे। तेकर कारण अछि जे शब्दक पतियानी आ मिलानी तेहेन छैन जे पाँति सुनि अनेरो धड़िया जेबे करब।

नअ बजेक समए, हरिपुर कार्यक्रममे जेबाक छल तँए चाहक दोकान अड्डा बनल जैठाम सभकेँ आठ बजे सम्मिलित होइक विचार सभ कियो कऽ लेलौं। सबा आठ बजे टेम्पू पकैड़ हरिपुर जाएब।

अदहा घन्टाक रस्ता अछि, पौने नअ बजे तक पहुँच जाएब। पौने आठ बजे सुधीरक संग चाहक दोकानपर पहुँच गेल छेलौं। श्यामाचरण आ सोहन चाहक दोकानसँ दस लग्गा पाछू आबिये रहल छला, मनोहर आगू बढ़ता तँए सबहक सभ विचार मिलले छल।

ओना सुवोधनाथकें सेहो बुझले रहैन जे आठ बजे तक टेम्पू पकड़ैले चाहक अड्डापर पहुँच जाएब अछि। मुदा सुतिहार लोक तँ सुवोधनाथ छथिये। तीन बजे भोरे उठबे करै छैथ, चारि बजैत-बजैत घरसँ निकैल केतौ-ने-केतौ अपन पंथक अड्डावाजी कैये अबै छैथ। मानो-प्रतिष्ठा आ द्रवो-जातक उर्पाजन भाइये जाइ छैन। ओना, जे चला-चलती दस बर्ख पूर्व छेलैन तइमे कमी एबे केलैन अछि, मुदा तैयो तेते जजमनिका बना नेने छैथ जे ने काजक कमी भेलैन अछि आ ने आमदनीक। यएह ने छी जिनगी जे सुवोध मंचोपर बजिते छैथ जे हँसैत-खेलैत जिनगी जीब लेबे मनुखक जिनगीक सफलता छी।

एक संग सुवोध भाय हाइ स्कूलमे शिक्षक छैथ, होमियोपैथी इलाज सेहो करै छैथ, तैसंग साहित्यिक मंचक सम्मानित बेकती आ तैसंग अपन पंथक जिलाध्यक्ष सेहो छथिए।

दोकानक देवालमे टँगल घड़ीपर नजैर दिऐ तँ बुझि पड़ए जे क्षणे-क्षण, पले-पल कार्यक्रममे बाधा उपस्थित भाइये रहल अछि। पजेबाक घर जकाँ काजपर जोड़ल जिनगीक घर सेहो अछिए, जेकर जोड़ दैनंदिनक काजसँ अछि। श्यामाचरण आ सोहन सेहो बिलंम होइत देख मने-मन कुड़बुड़ाइत रहैथ मुदा सुवोध भाइक स्थिति देख कियो बजैक साहस नहि करै छला। हँफनी कम होइते सुवोध भाय दोहरा कऽ बजला-

“हऽऽ जान बँचल तँ लाख उपाय हएत।”

सुवोध भाइक बातक कोनो अरथे ने लगए आ ने आगू बजैक

कोनो विचार मनमे रहए जे किछु पुछबो करितिऐन। मुदा जेहेन रूपमे सुवोध भायकें देख रहल छेलिऐन तइमे रूपे अरूप बुझि पड़ै छल। तँए मनमे ईहो हुअए जे ओहन बात ने बजा जाए जे सुवोध भाय कहैथ काटलपर नोन छिटै छी। तँए किछु बजबो केना करितौं मुदा जँ बजबे ने करब तँ सुवोध भाइक मनक थरथरी कमितैन केना? ओना, पहिने जे बाजल छला जे ‘जान-बँचल’ आ पाछू जे बजला ‘जान बँचल तँ लाख उपाय’ तइमे किछु अन्तर बुझिये पड़ल। तँए पैछला गपक नाँगैर पकैड़ बजलौं-

“सुवोध भाय, आगूक की उपाय अछि?”

ओना, हमर प्रश्न सुवोध भाइक प्रति छल मुदा सुवोध भाय बुझला ऐगला कार्यक्रमक, तँए बजला-

“जे समए गेल से गेल, आबो साकांछ भऽ चलै चलू।”

श्यामाचरण ऐ ताकमे छला जे सुवोध भाय पहिने अपन दर्द-पीड़ा मेटबैक बात बजता, मुदा से भाइये ने रहल छल। ओना ई विचार मनमे उठि गेल छल जे ऊपरसँ सबहक जिनगी एकरंग लगितो भीतरे-भीतर छिड़ियाएल अछि, मुदा से तेना भऽ कऽ नइ बुझल छल। एते जरूर बुझल छल जे हाइ स्कूलमे अपन धाराक अनुकूल पढ़बै छैथ। ऐठाम एकटा प्रश्न तँ उठिते अछि जे ‘अपन धारा’ कोनो शास्त्रीय विचारधारामे केना मिलत? मुदा स्कूल-कौलेजक जे विषय वार पढ़ाइ अछि तइमे किछु विषय एहेन अछि जइमे अपन विचारधाराक प्रवेशक गुंजाइश कम रहैए आ किछु एहनो तँ ऐछे जइमे धड़ धड़ा धारा बनि विचारधारा चलैए। जँ से नइ अछि तँ किए कियो ‘अहिंसा परमो धर्मः’ बुझै छैथ तँ कियो ‘वैदिक हिंसा हिंसा न भवति’ बुझै छैथ? खाएर जे अछि…, सुवोध भाइक अप्पन धारा छैन। जहिना अपन पंथ पच्चीसे प्रतिशत (चौथाइ) मीठ दवाइमे मरचाइ मिलबै छैथ तहिना

अपनो पच्चीसे प्रतिशत पढ़बैमे बदलै छैथ। ओना सुवोध भाय जखन होमियोपैथीक इलाजक क्रममे रहै छैथ तखन विद्यालयक खोराकसँ दोसर रंगक खोराक चलै छैन तहिना पंथाइक जे मधुरधारा छैन तेकरा तेना तौल कऽ खोराक बनबै छैथ जे दवाइ खेनिहारकें ने सुआदेमे लगै छैन आ ने विचारेमे। विचारमे तँ तखन लगैए जखन सभ रंगक सुआद बुझि कियो निर्णय करए से तँ अछि नहि, नीपल-पोतल, केतौ-केतौ बाढ़िमे दहाएल जकाँ खेत भेटै छैन, तँ केतौ ओहन पुरान परती जकाँ भेटै छैन जेकर उपजाउ शक्तिये पथरा कऽ माटि बनैत-बनैत तेते पथरा गेल अछि जे राड़ी-डबहारी छोड़ि दोसर घासो-पातकें जनमबैक शक्तिये क्षीण भऽ गेल छइ।

ओना सुवोध भाय जखन पंथक जिलाध्यक्षक रूपमे मंचपर बजै छैथ, तखन विलक्षण भाषाक प्रयोग तेना करै छैथ जे पुरना इतिहासक विचार कहै छैथ आकि आधुनिक इतिहासक, से बुझिये ने पाएब। अहाँ कहब जे जइ हवाइ जहाजकें उड़ैत देखै छी ओ आधुनिक छी मुदा एकरा केना झूठ कहबै जे भगवान राम लंकासँ अयोध्या पएरे आएल छला। ओहो तँ हवाइये जहाजसँ ने आएल छला?

ओना, सुवोध भाइक आमदनी गिनतीमे ठीके-ठाक छैन, आकि किछु-ने-किछु बढ़ोत्तरियो भेबे केलैन अछि। भलें पहिने लोकक जिनगीए पाइ-पाइक हिसाबमे छल आ आइ ओइ पाइकें महत्ते समाप्त कऽ देल गेल अछि। जइसँ अनेरे भरि जेबी किए रखि माल-जालक घन्टी जकाँ टनटनबैत रहत…।

सुवोध भाय आ सुवोध भाइक जे पंथ छैन ओइ पंथोक एहेन विचारधारो आ क्रियाशीलो[10] रहलैन जे प्रेमसँ प्रेमी पकैड़ प्रेमास्पद

[10] काजक शील

होइत चलै छैन। जइसँ नव जजमान[11] सँ किछु-ने-किछु गुरु-दछिना प्राप्त करिते आबि रहल छैथ, मुदा आइ तेहेन विर्ड़ो उठि गेल अछि जे गुरुए-जी ढौआ दऽ दऽ बौआ बनबै लगल छैथ, जइसँ सुवोधो भाय आ सुवोध भाइक पंथोकें नीक धक्का लगबे केलैन अछि। तइमे एकटा बाधा तँ बीचमे भाइये गेल अछि।

ओना नवका जजमान लग एहेन समस्या नइ अछि, किएक तँ बेकतीगत स्वतंत्रता तँ उत्तम कोटिक जीवन अधिकार छीहे। मुदा जे पहिनेसँ सुवोध भाइक पंथसँ जुड़ल रहला जे रौदियाहा बबाजी जकाँ भेष-धारी आकि कतिका मछखौक जकाँ भेष-उतारी छैथ जे मौसमी नहि बरखाउ छिआ, माने समैया नहि सभदिना छैथ। ओना फेर बरखा-बाढ़ि ऐबे करत आ पोखैर-झाँखैरसँ लऽ कऽ खेत-पथारमे माछो फड़बो करत आ जनमबो करबे करत तखन फेर बुझल जाएत। हुनका संग बलधकेल कटौज भीतरे-भीतर भाइये गेल अछि। तेतबे नहि, नवयुगक जे विचारक छैथ ओ पुरान विचारक रस्तापर खाधि खुनि रोड़ा-पाथर गाड़िये रहल छैन। तेकर कारणो अछिए…।

सुवोध भाइक हँफनियोँ छुटलैन, दू बेर चप्पलकें पटैक गरदो-धूरा झाड़लैन आ दोकानक पंखाक हवासँ कुरतो सुखिये गेलैन। पानि-चाह पीब जखन भाइक कण्ठ सर्रास भेलैन आ मुँहमे पान देलखिन तखन बजला-

“बलधकेल कटौजमे जान फँसि गेल छल!”

ओना, सुवोध भाय अपन मनक बेथाक कथा बजै छला मुदा ने हमहीं बुझि पबै छेलौं आ ने तीनू संगीए–सुधीर, श्यामाचरण आ सोहन–मे कियो बुझि पबै छला, तँए सभ सबहक मुहोँ देखी आ मने-मन विचारबो करी। चारू गोरे बलधकेल शब्दमे वौआएल रही।

[11] चेला

केतबो गर लगबी तैयो बलधकेलक माने बलउमकी लागि जाए...। बलउमकी उठै छै तँ लोक आगू बढ़ैए मुदा सुवोध भाय डरे थरथर कपै छला तँए दुनूक गर मिलबे ने करए। चारू गोरे बजैसँ परहेज ऐ दुआरे करैत रही जे सुवोध भाय शिकारी छैथ, जँ एकोरत्ती कलछपन हएत तँ कुन्ज गली जकाँ सुवोध भाय केमहर ससैर जेता, तेकरो ठीक नहियेँ छल।

ओना, श्यामाचरण मने-मन सुवोध भायपर आगि बबुल होइत रहैथ, तेकर कारण रहैन जे ई कि कोनो साहित्यिक मंच छी आकि पंथक जे विद्वताक प्रदर्शन कऽ रहला अछि, ई तँ मात्र चाहक दोकान छी जैठाम दोकानदारो पढ़ै-लिखैक अभावमे उधार लेनिहारक नाम मने-मन मोन रखै छैथ आ गिलास वा कपक हिसाब कोयलासँ डाँरि खींच-खींच रखै छैथ, हम सभ संगीए छिऐन, तखन अनेरे किए पण्डिताइ करै छैथ। ओना ई शंका होइत रहए जे जँ कहीं सुवोध भाय आ श्यामाचरण दुनू अपनामे ओझरेला आ ओझराइत-ओझराइत ओझरीमे फँसि खिशिया कऽ घरमुहेँ ने भऽ जाथि। जखने चारि गोरेमे दू गोरे घरमुहाँ भेला तखने अपनो ओकाइत तँ अधिआइये जाएत, सेहो डर हुअए।

सभ विचारकेँ समेट बजलौं-

“आगूक की विचार सुवोध भाय?”

ओना सुवोध भाय मुँह नहि खोलने छला, मुदा खोलैक उपक्रम जरूर करै छला, तइ बिच्चेमे श्यामाचरण बजला-

“एहेन जे बुड़िवान सुवोध छैथ जे अपनो मनकेँ अनेरे परेशान कऽ रहला अछि आ हमरो सबहक मनकेँ..!”

श्यामाचरणक विचारक वान जेना सुवोध भाइक मनमे लगलैन तहिना बजला-

“भाय, अहाँ सभ तँ एक मंचक संगी छी तँए अहाँ सभसँ केतेकाल छीप कऽ रहब?”

ओना–हमहूँ, श्यामाचरणो आ सोहनो–तीनू गोरे कान ठाढ़ केने रही जे सुवोध भाय अपन वेथावान छोड़ता मुदा चिक्कनि माटिक वा संगमरमरक पीछराह घाट परहक घटवार सुवोध भाय छथिए, फेर पीछराहे बात बाजि सभकेँ पीछरबए लगला...।

तरे-तर श्यामाचरण उमड़बो करै छला आ गुम्हरबो करिते छला, मुदा बाता-बातीमे समए बेसी खटियेने ऐगला काजो छुटिये रहल छल तँए थोड़ेक परहेज श्यामाचरण जरूर कऽ रहल छला।

बजलौं-

“जखन गामसँ निकैल सभ कियो हरिपुर जाइक विचार केने छी तखन गामक काज पहिने सम्हारि लेब किने, जँ से नइ सम्हर रहत तँ अनेरे ने मनमे एकटा मोटरी लाधल रहिये जाएत।”

हमर बात सुनिते सुवोध भायकेँ डरियाएल साँस छुटलैन। मन हल्लुक भेलैन, बजला-

“भोरे मनमे उठल जे जाबे हरिपुर जाइबेर हएत, तइसँ पहिने एकटा जजमनिकाक काज सम्हारि आबी। भाय समए तँ काल छी किने, एको क्षण जँ हूसि जाएत तँ ओते ओ जिनगीकेँ हूसा दैते अछि!”

सुवोध भाइक घटना फेर चौपेतलक चौपेतले रहि गेलैन। ओना मनमे ईहो भेल जे सुवोध भाय जखन गैंची माछ जकाँ हाथोसँ छिछैल माटिमे गड़ि कऽ नुका जाइ छैथ तखन अनेरे ऐगला काजकेँ रोकने छी। मुदा तेहेन रूप सुवोध भाय चाहक दोकानपर आबि देखौने छला जे मनसँ हटिते ने छल। बिनु बुझने हटबो केना करत। बुझला पछातिये ने समधान होइत सम्हार करब। से तँ भाइये ने रहल छल। दू-चारि मिनट जँ ऐगला कार्यक्रममे बिलंम हेबे करत तँ कहबैन जे

चारि गोरेक जमात जमैमे किछु फेर-फार भाइये जाइ छइ। मुदा से तँ पहुँचला पछाइत हएत। अखन तँ गामसँ विदाहे ने भेल छी। तँए जरूरियो ऐछे जे पहिने घर-गाम सोझरा ली। जँ घरे ओझराएल रहत तँ बाहरक काज मनसँ कैयो तँ नहियेँ सकै छी। अनेरे जीह सिकपर टाँगल रहत...।

तइ बिच्चेमे सोहन कहलकैन-

“सुवोध भैया, अहाँकेँ ई ने तँ होइए जे सासुरमे सारि-सरहोजिक दिलक संग दिल्लगी करै छी आ दिलहोरि खेलाइ छी।”

ओना सोहनक बात सुनि हँसियो लगल, मुदा जइ जगहपर छी तैठाम जँ हँसि देब तखन अनेरे मीठहा-माहुर परसा जाएत तँए अपने चुपे रही। मुदा सोहनक बात जेना सुवोध भाइकेँ सहवान जकाँ बुझि पड़लैन। बजला-

“सोहन बौआ, कहुना भेलह तँ तूँ छोटे भाए ने भेलह, तोरे सबहक बल-बुत्तापर ने हमहूँ सभ ठाढ़ो छी आ आगुओ रहब।”

श्यामाचरण मने-मन गुम्हरै छला, मुदा सोझराएल विचारकेँ–माने रस्तापर आएल विचारकेँ–पुन: ओझराबऽ नहि चाहैथ। तँए सह दैत श्यामाचरण कहलखिन-

“सुवोध भाय, केहेन बढ़ियाँ बात तँ सोहन कहलक। जवाब तँ अहीं ने देबइ।”

‘अपन हारल आ केकर दिनक मारल’ के बजैए जे सुवोध भाय बजता। तहूमे मंच परहक मचवान छैथ। मुदा समए केकरा छोड़लक जे सुवोध भायकेँ छोड़ि देतैन। खसल मने सुवोध भाय अपन विचारकेँ नुकबैत बजला-

“बौआ सोहन, जेना कियो कनसोह नेने छल कि की, जखने भरत ऐठाम पहुँचलौं कि चारि गोरे दम-दम कऽ पहुँच गेल!”

‘पहुँच गेल’ कहि सुवोध भाय चुप भऽ गेला। ओना साँससँ बुझि पड़ल जे तेज भऽ रहल छैन, मुदा बीचमे किछु बाजब उचित नहि बुझि चुपे रहलौं।

तैबीच श्यामाचरण सुवोध भायकेँ चरियबैत पुछलखिन-

“तब की भेल?”

श्यामाचरणक चरियाएब सुवोध भायकेँ जेना थरथरी पैसा देलकैन तहिना थरथराए लगला, मुदा तैयो जी-जाँति कऽ बजला-

“चारू गोरेकेँ पहुँचलापर देखलौं जे एकरंग वस्त्रो पहिरने अछि आ एकरंगा रूपो बनौने अछि।”

श्यामाचरण पुछि देलखिन-

“किए, घरवारी सभ नइ रहैथ?”

तैपर सुवोध भाय बजला-

“नइ, घरवारी असगरे रहैथ।”

श्यामाचरण पुछलखिन-

“अहाँ, हुनका सभकेँ चिन्है छिऐन?”

सुवोध भाय-

“किए ने चिन्हबैन। दू गोरे तँ वएह छल जेकरा हाथमे भट्ठा पकड़ा ‘अ-आ–सँ–ओना-मासी’ सिखौने छी, काल्हि तक संगे-संग छल, मुदा राता-राती की भेलै से बुझबे ने केलौं। जँ से बुझितौं जे एना गामक लोकक चालि बदैल रहल अछि तखन तँ गाम छोड़ि दैतिऐ, नइ जइतौं!”

श्यामाचरण-

“गप-सप्प की भेल?”

सुवोध भाय-

"गप-सप्प करैले तँ तैयारे रही, जाबे पहिने गप-सप्पमे रक्का-टोकी नइ हएत ताबे काजक संग विचार केना बदलत, ओ तँ जरूरीए अछि। मुदा से भेल नहि। हो-हो कऽ कऽ एक्केबेर रेबाड़लक।"

श्यामाचरण-

"अहाँ किछु ने बजलिऐ?"

सुवोध भाय-

"डरे पथरी चमैक गेल। तहूमे असगरे छेलौं, ओइठामसँ कहुना-कहुना कऽ जान बँचबैत भगलौं।"

खसल-पड़ल सुवोध भाइक विचार सुनि सोहन बाजल-

"भैया, अहूँ बड़ लोभी छी, अधला-सँ-अधला जगहक पाइ समटैक पाछू लगल रहै छी। जाबे दुनियासँ निकैल दुनियाँ नइ देखबै ताबे अहिना दुनियाँमे दीनिया बनल रहब।"

समगम होइत देख बजलौं-

"अच्छा, जे भेल से भेल दिनक दोख छल। आब ऐगला काजमे देरी नहि करू। नइ तँ गाम-सँ-बाहर धरि हँसारैत करैत रहब।"

सुवोध भाय बजला-

"मनोहरकेँ नहि देखै छिऐन?"

सोहन-

"ओ आगू टेम्पू पकड़ता।"

मनोहरकेँ आगू टेम्पू पकड़ब सुनि सुवोध भाय सहैम गेला। सहैम ई गेला जे जेते ऐठाम देरी भेल तेते मनोहरकेँ रोडमे ठाढ़ भेल-भेल बीतल हेतैन। एक तँ ओहिना गाड़ी-सवारीक प्रतीक्षा जनमारा होइए, ऐठाम तँ सहजे कीर्तिगत कर्मक समए छी दोखी तँ हमहीं

हएब। मुदा संगिये ने संगबुझो होइ छैथ।

यएह सोचि पाँचो गोरे टेम्पू पकैड़ हरिपुर विदा भेलौं।

◌

शब्द संख्या : 2100, तिथि : 11 अप्रैल 2017

जारैनक दुख मेटा गेल

सरस्वती पूजाक परात–माने माघक तेसर सप्ताहक अन्तिम दिन–चिन्तामग्न भुल्ली काकी गुमसुम भेल घूर लग बैसल छेली। बगलमे बारह बर्खक बेटी–मरनी–सेहो बैसल छेलइ। मने-मन भुल्ली काकी विचारि रहल छेली जे आइ भरि–माने राति तक–तँ जारैन चलत मुदा काल्हिसँ की हएत! कोनो गरे ने देखा पड़ि रहल छेलैन जे केना जारैनक दुख मेटाएत।

ओना मरनीक जन्म ओहन परिवारमे भेल छल जइ परिवारमे बिनु जोत-कोर कएल खेत जकाँ बाल-बच्चाक बुधि परती बनल रहिते अछि। रहबो केना ने करतै, एक दिस गाममे स्कूल नहि जे धिया-पुताक लाट पकैड़ बच्चा गामोक स्कूल धरिक शिक्षा प्राप्त करत, आ ने ओहन विस्तारित परिवार जइमे बहुआयामी कारोबार रहने बुधिक विस्तार होइए। तँए बाल-बच्चाक बुधि सकुचा कऽ थकुचा जाइते अछि। आ ने ओहन परिवारक संग सम्बन्ध रहैए जइमे परिवारजन अपने जिनगीसँ समाजक जिनगी आ समाजक जिनगीमे अपन परिवारक जिनगी देखनिहारो आ बुझि कऽ बुझौनिहारो रहैए।

ओना, आन दिन भुल्ली काकी दुनू माइ-धी जखन घूर लग बैसे छेली तखन अपन बीतल जिनगीक बेथा-कथाक संग भुल्ली काकी राजा-रानी, रजनी-सजनी, फुलकुमारी-फुलटुस्सीक संग फुलिया-

फलियाक खिस्सा सेहो मरनीकेँ सुनैबते छेली। भुल्ली काकीकेँ गामोक लोक खिस्सकैर बुझिते छैन जइसँ केते गोरे 'खिसनी काकी' सेहो कहिते छैन। अचेत बालबोध तँ सहजे घूर पजैरते चारूकात बैस खिस्सो सुनैए आ आगियो तपिते अछि। यएह ने भेल जिनगी जे जाड़क दुख मेटबै-ले आ जड़ाएल हथियारक आक्रमणकेँ रोकैले घूरक आगिकेँ हथियार जकाँ उपयोग करैए। जखने दुखक आक्रमण कमैए तखने ने ओते देहमे सुखक आगमन होइते अछि। जखने देह सुखाएत–माने देहमे सुख हएत–तखने ने सुखक सुख बुझि पड़त। दुनियाँमे के एहेन अछि जे सुख नहि चाहैए। भलेँ केते भेटल वा नइ भेटल ई दीगर बात भेल, मुदा केकरो सुखक खगता नइ छै ई बासी-मुहेँ झूठ बाजब नीक थोड़े हएत।

माइक खसल मन देख मरनी बाजल-

"माए, मन किए एना खसल छौ?"

बेटीक बात सुनि भुल्ली काकीक मनमे अपन जिनगी आ अपन परिवार नाचि उठलैन। ओना केते गोरेकेँ परिवारक संग समाजो कहियौ आकि परिवारसँ बेसी समाजेक कहियौ, मनमे नचै छैन मुदा से भुल्ली काकीकेँ नहि भेलैन। हेबो केना करितैन। ओ तँ समाजक बीच बसल रहितो परिवारेक चिन्ता–माने परिवारक भरण-पोषण–सँ आगू नहि बढ़ि सकल छेली, मुदा तँए कि भुल्ली काकी समाजक काजसँ सोल्होअना हटले रहली सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। समाजमे केतौ बिआहे-दान भेल आकि आने नमहर कोनो काज, तइमे नइ जा अपन भाँज पुरबै छेली सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। से तँ पुरैबते छेली। मुदा तेकरा लोक थोडे समाजक काज–माने समाज सेवा–बुझैए। ओ तँ तेहेन चलनसारि अछि जे काजक हकार पबिते लोक अपन भागीदारी उपस्थित करिते अछि।

मरनीक बातसँ भुल्ली काकीक मनमे ईहो तँ एबे केलैन जे कमसँ कम एते तँ बेटीक जिज्ञासा जगबे कएल जे खसल मन देख बुझैक जिज्ञासा केलक। मुदा जे जिज्ञासा केलक ओ अखन–जाड़क मासमे–थोड़े एकरा बुते पुरौल हएत। तेहेन समए अछि जे जारैनक खर्च बेसी रहनौं माने भानससँ घूर तक, आमदक रस्ता बन्न अछि। ओना, सूर्यक रौदसँ काँचो लकड़ी वा गाछक पातो सुखि कऽ जारैन भऽ जाइए मुदा सूर्य तँ अपने तेना जाड़ो आ शीतलहरियोक ज्वरसँ आक्रान्त छैथ जे मुहोँ देखब कठिन अछि, तैठाम जारैनक सुख केना भेटत?

भुल्ली काकीक मन जारैनसँ जरनबाह दिस बढ़लैन। जरनबाह दिस मन बढ़िते नजैर पतिपर पड़लैन।

पतिपर परिते मन पड़लैन केना पतिक संग बेरू पहरमे सभ दिन जारैन आनए जाइ छेलौं। आगू-आगू कान्हपर लग्गी नेने ओ रहै छला आ पाछू-पाछू अपने जाइ छेलौं। अम्बोह गाछी-कलम गाममे अछिए, निच्चासँ जे लग्गीसँ पबै छला सेहो तोड़ै छला आ जे नइ पबै छला तेकरा गाछपर चढ़ि कऽ तोड़ै छला। जइसँ दुनू साँझक जारैनक ओरियान तँ भाइए जाइ छल जे किछु-ने-किछु उगैरियो जाइत रहए जेकरा जाड़-बरसात-ले ओरिया कऽ घरमे रखै छेलौं।

चारि साल पूर्व झलिमा कक्काक मृत्यु गाछेपर सँ खसने भेल छेलैन। जामुनक गाछपर सँ जारैन तोड़ैकाल झलिमा काका खसि पड़ला। गाछक ऊपर चढ़ि कऽ जारैन तोड़ै छला, भारी लग्गी छेलैन्हे जे सम्हारमे नइ रहलैन, बेसम्हार होइत खसि पड़ला।

भेल ई जे एकटा मोटगर जामुनक डारि सुखल छेलै, जइमे लग्गी लगा जे अपन सभ बल तोड़ैमे लगौलैन जइसँ बल ऊपर बढ़ने पएर ढील भऽ गेलैन! जारैन तँ टुटि गेल मुदा लकड़ियेक आसमे

लगियो रहबे करै, जेकरा दुनू हाथसँ झलिमा काका पकड़ने रहैथ, ओही आसमे खसि पड़ला। लग्गियो हाथेमे रहैन डारिपर सँ डारिपर खसैत निच्चाँ खसला। ठनक जमीन रहबे करै चुरम-चुर भऽ गेला। घन्टा भरिक भीतरे प्राण छुटि गेलैन। जे भुल्ली काकी अपन आँखिक सोझमे देखने छेली।

ओना आजुक परिवेशो नहियेँ छेलैन जे भुल्ली काकीक मनमे गैसक चुल्हि वा गैसकेँ जारैन बुझितैथ...। लगले भुल्ली काकीक मनमे बेटीक प्रश्नक जवाब फुरलैन। जवाब फुरैक कारण भेलैन जे जहिना घरमे बाइस-बेरहट नइ रहने भुखाएल बच्चाकेँ माए प्रवोधैत किछु आन वस्तु दैत वा मुहसँ कोनो-कोनो बात कहैत तहिना भुल्ली काकी बजली-

“बुच्ची, आइये भरि जारैन चलत। काल्हिसँ कथी लऽ कऽ भानस करब आ कथी लऽ कऽ घूर करब। समए तेहेन अछि जे जान बँचब कठिन अछि।”

ओना मरनी बाध-बोनसँ गोबरो बीछि-बीछि आनै छल, जइसँ गोइठा-चिपरी सेहो पाथि जारैनक ओरियान करै छल आ गाछियो-बिरछी आ बँसवारिसँ सुखल पात खर्ड़ैर अनिते छल। मुदा जारैन-ले तँ अखन मासे कुमास अछि। भरि दिन सौनक झिसी जकाँ शीतो आ गाछपर सँ टप-टप पानिक बून जकाँ ओसो खसिते अछि।

अदहा अगहनसँ जे शीतलहर पनपल ओ रसे-रसे बढ़िते गेल। पूस चढ़ैत-चढ़ैत एहेन विकराल रूप बनि गेल जे लोकक दैनंदिनक काजेटा प्रभावित नइ भेल, जीबो दुभर हुअ लगलै। जइसँ बँचैक एकमात्र सहारा आगिये रहल। भरि-भरि दिन लोक आगि पजारि कहुना-कहुना दिवस गुदस करए लगला।

जखने अगियासीक विरधी हएत तखने जारैनक खर्च बढ़बे

करत। तहूमे बैसाख-जेठक अगियासी नहि जइमे समैयो संग दइए। एक तँ ओहुना जाड़क मासमे ठंढक प्रकोपसँ आगियोक शक्ति कमि जाइए, तैपर अधिक शक्तिक खगता भेने जारैनक अधिक खर्च होइते अछि। ओना भुल्ली काकी आने-सालक (पाछूक साल) अटकारि कऽ जारैनक ओरियान करि कऽ रखने छेली, मुदा खर्च बढ़ने ओ माघक तेसर सप्ताह बीतैत-बीतैत ओरा गेलैन।

ओना अचेतन मन मरनीक रहने माइक प्रश्नक उत्तर लगले सूरे दैत बाजल-

“जारैन की कोनो खाइक वौस छी जे काज नइ लागत–माने बोइन बुत्ता नइ हएत–तँ लोककेँ भुखसँ परान छुटि जेतइ। जारैन तँ बाधसँ बोन धरि भेटैए। दुनू माइ-धी आनि लेब।”

ओना बेटीक बात सुनि भुल्ली काकीक मन जुड़ेबे केलैन। जुड़ाइक कारण भेलैन जे जखन केकरो बेटा-बेटी जिनगीक विकट घड़ी कटैले फाँड़ बान्हि तैयार हएत तँ जरूर ओ ओइ विकट घड़ीकेँ टपबे करत।

मुदा लगले भुल्ली काकीक मनमे भेलैन जे एक तँ गाछ चढ़ै-जोकर नइ अछि, शीतसँ तेना भीज कऽ पीछड़ाह बनि गेल अछि जे ओइपर चढ़ि जरनवाहि करब दुसकर भऽ गेल अछि। तैपर ईहो तँ ऐछे जे गाछपर पुरुख-पात्र ने चढ़ि कऽ जरनवाहि करै छैथ, मरनी केना गाछपर चढ़ि जरनवाहि काए सकैए? ई तँ विचारक वेगमे भँसि, माइक बेथाकेँ कम करैक क्रममे बाजि गेल। हँ एते संभव अछि जे छोट लग्गीसँ छोट-छोट गाछक सुखल ठौहरी तोड़ि आनि सकैए। मुदा हमरेटा संगे शीतलहरीक प्रकोप अछि सेहो बात तँ नहियेँ अछि। सभकेँ छै, तँए छोट-छोट सुखल ठौहरी छोट-छोट गाछमे आब थोड़े हएत ओकरा तँ कहिया ने लोक तोड़ि कऽ जरा नेने हेतइ।

गाछक सुखल ठौहरीपर सँ उतैर भुल्ली काकीक मन गाछक पातपर पड़लैन। पातपर पड़िते मन कलियाएल फूल जकाँ कलियेलैन। कलियेलैन ई जे गाछेक पातटा नहि, बँसवारिमे बाँसोक पात तँ धरतीपर खसिते अछि। एक बेर बहुत नहि, मुदा थोड़बो-थोड़ तँ हेबे करत जे अपनो दुनू माइ-धी आनि सकै छी। खुशीक दशांश खुशी भुल्ली काकीक मनमे उठलैन। बजली-

“बेटी, जेहेन बेर-बिपैत पड़ैबला अछि ओकरा मेटेबहक केना?”

बजैक क्रममे मरनी समस्याक–माने प्रश्नक–नाँगैर पकैड़ तँ बाजि गेल छल मुदा पड़ाइतकेँ ने नाँगैर पकैड़ पकड़ल जा सकैए, मुदा जे–माने पैछला दू मासक शीतलहरी–असथिर भेल अजेगर जकाँ थुसकुनियाँ मारि बैसल अछि ओकरा केना पकैड़ सकैए। माइक प्रश्न सुनि मरनी जारैनक मरम दिस जखन नजैर उठौलक तखन मर्माहत हुअ लगलै। मनमे रंग-रंगक प्रश्न उठए लगलै। बाध-बोधसँ चराटी गाए-महींक गोबर बीछि-बीछि अनै छेलौं, ओकर गोइठा-चिपरी पाथै छेलौं, से ने आब गाए-महींस चड़ैले–ठंढ दुआरे–जाइए आ ने अपने ओइ कनकनीमे टहैल-बुलि पाएब। तखन गोबर केतए-सँ आनब। जखन गोबरे ने रहत तखन गोइठा कथीक बनाएब...?

फेर लगले मरनीक मन तरैप गेलइ। तरैपते उठलै जे रस्तो-पेरापर दू-चारि चोत गोबर भेटिये जाएत, जेकरा आनि कऽ पाथबो करब तँ ओ सुखाएत केना? काँच गोबरक जारैन केहेन हएत? गोबरोक जारैन बनबैक तँ मासो आ मौसमो होइ छइ किने। कम्मो-सम्म रौद भेने पातर गोइठा बनौलो जाइए आ सुखि-सुखि जरनो बनैए। मुदा सेहो नहियेँ अछि। जेना-जेना रौदक धाह बढ़ैत जाइए तेना-तेना ने गोबरो-गोइठाक आकारोमे बढ़ोत्तरी होइ छइ। जेठुआ रौद गोरहाक होइते अछि। जे रायफल जकाँ जाड़सँ रक्षा करिते अछि, सएह ने सठि

गेल।

मरनीक मन आगू बढ़ि गाछक सुखल ठौहरी आ निच्चाँमे खसल पातपर पड़लै। पातपर पड़िते मन औना गेलइ। औना ई गेलै जे अखन तँ गाछक पातो खसब बन्न अछि। ओकरो पतझाड़ होइक समए होइए। ओहो तँ बारहो मास एके रंग नहियेँ खसैए। तखन सुखल पात केतए-सँ खर्ड़ैर आनब?

दुनू माए-बेटी–माने भुल्ली काकी आ मरनी–घूर लग बैसल आगूक जिनगीक संग जीबैक आशा ताकि रहल छेली। कोनो आशा नजैरक सोझ आबिये ने रहल छैलैन। जखने केकरो जिनगी जीबैक आशामे विकट संकट उपस्थित भऽ जाइए तखने ने ओइ संकटकेँ भगबैमे मनो आ मनक मथनो ढाही मारि-मारि चूरम-चूर होइए, से तँ दुनू माए-बेटीकेँ भाइये रहल छल, तही काल तेरह-चौदह बर्खक करनी सेहो पहुँचल।

मरनी आ करनीक बीच सात-आठ बर्खसँ बहिना लगल छइ। जेहने मरनीक परिवार बोनिहारिनीक अछि तेहने करनीक परिवार सेहो अछि। ओना करनीक परिवार मरनीसँ नमहर अछि मुदा जीबैक–माने परिवार चलैक–आशा दुनूक एक्के रंग छइ।

लगमे करनी अबिते घूर लग बैसैत बाजल-

“बहिना, तोरा ऐठाम तँ अगियासियोक ओरियान छह, हमरा तँ दिनमे भानसो हएब कठिन अछि।”

करनीक बात सुनि मरनीक मनमे एते तँ आशा भाइये गेल जे हमरा आइ भरिक–माने रौतुका भानस करै तकक–जारैन अछियो मुदा बहिनाकेँ तँ सेहो ने छइ। जखन ओकरा आइयो भरिक जारैन नइ छै, तखन ओ केना जारैनक दुख मेटाएत?

तँए करनीक जुक्ति–माने जारैन ओरियान करैक विधि–केँ मरनी

अखियाइस कऽ सुनए चाहि रहल छल। कोनो बेमारी साए गोरेकेँ आकि हजारे गोरेकेँ किए ने हौउ, मुदा जँ सभकेँ एकरंग बेमारी रहत तँ ओकर दबाइयो एक्के हएत किने। ओना, दुनू-गोरेक मनमे गंभीर समस्यो छल आ ओकर समाधानक गंभीर विचारो चलिये रहल छेलै, मुदा तेकरा मरनी पतझाँप दऽ बाजल-

“बहिना, तोंहू भरि दिन झूठे-फूसेक परसादी बँटने फिरै छह?”

मरनीक बात सुनि करनीक मनमे जोरक धक्का लागल। धक्का लगिते मनमे फुरलै जे दुनियाँक तँ यएह सभसँ पैघ बेमारी अछि जे कियो केकरो दुख-बेथा नइ पतियाइत अछि आ जँ पतियेबो करैए तँ ओकरा हँसी-चौलमे उड़ा दइए।

कहू, जे जारैनक दुआरे एहेन समैमे भानस बन्न छै आ बहिना भऽ कऽ कहैए जे ‘भरि दिन झूठे-फूसेक परसादी बँटै छह।’ मुदा छी तँ बहिन किने, ईहो तँ भाइये सकैए जे हँसी-चौलमे दुखे बिसरा दियए। मनमे रहने ने दुख देहो आ मनोकेँ दुखबैए आ मन बहैल गेने तँ दुखो ने बहैल जाइ छइ। मनकेँ असथिर करैत करनी बाजल-

“बहिना, तोरा सन पथराएल लोककेँ जाबे आँखिसँ नइ देखा देब, ताबे अहिना अनका दुखकेँ सुनि-सुनि हँसबो करबह आ चौलो करबह।”

करनीक बात सुनि मरनी ठमकल। मुदा लगले जहिना जिनगी चीत-सँ-पट वा पट-सँ-चीत नइ होइए, रसे-रसे करोटिया होइत-होइत माने करोट बदलैत-बदलैत बदलैए तहिना मरनियोँक विचार केना लगले उनैट जाइत। ओना मने-मन मरनी अपन अबैबला दुखकेँ जरूर देख रहल छल मुदा गपो-सप्पक तँ अपन दुनियोँ अछि आ दुनियाँदारी सेहो अछिए...।

दुनू बहिनाक बीच विचारक बेवधानकेँ–माने बीचक दूरीकेँ–

सामंजस करैत भुल्ली काकी बजली-

“बुच्ची, अखन अहाँ दुनू गोरे बच्चा छी, तँए जेते बुझला पछाइत–माने बुधि भेला पछाइत–जिनगीमे गति अबैए से अखन नइ आएल अछि। तँए नीक जकाँ जइ ढंगसँ बुझक चाही से नइ बुझि पेब रहल छी।”

भुल्ली काकीक विचार सुनिते करनी जेना अपन विचार व्यक्त करैमे सह पौलक तहिना मुँहक रूखि बदललै। बदैलते मरनी दिस तकैत बाजल-

“बहिना, तोरा तँ दू गोरेक परिवार छह तँए हल्लुक सवारी पेब घोड़ा जकाँ फौद खेलाइ छह मुदा हमरा तँ छह गोरेक परिवार अछि, कहुना-कहुना तोरासँ दोबर-तेबर जारैनक खर्च अछि!”

करनीक बात सुनि भुल्ली काकी बजली-

“करनी बुच्ची, एहेन समैमे जारैनक ओरियान केना करब?”

भुल्ली काकीक बात सुनिते करनीकेँ अपन माइक सिखौल बात मन पड़लै। मन पड़िते बाजल-

“काकी, अखन तँ ने गोइठा-चिपरीक ओरियान भऽ सकैए आ ने जारैन-काठीक, गाछ-बिरीछक पातो नहियेँ भऽ सकैए, तखन तँ एकटा उपाय ऐछे जे गाछ-बिरीछ ने शीत-पाला बीता कऽ पात छोड़ैए मुदा बाँस तँ ओसक आगमन होइते पात छोड़ए लगैए, तँए बँसबिट्टीक बिच्चोमे आ कातोमे पात झड़िते अछि, ओहीमे सँ खर्ड़ैर कऽ आनब।”

करनीक विचार सुनि भुल्ली काकीक मन सहमलैन। सहैमते बजली-

“बुच्ची, अपना सभ सन-सन लोक-ले राजा आ दैव दुनू बेपाट अछि, तखन तँ अपनो सभ मनुखे छी ई तँ बुझए पड़त किने।”

भुल्ली काकीक बात सुनि करनी बाजल-

“काकी, ‘राजा-दैव’ नइ बुझलिऐ?”

करनीक प्रश्नसँ भुल्ली काकीक मनमे खुशी उपकलैन। खुशी उपैकते मुस्की दैत बजली-

“बुच्ची जहिना राजा मदारी छी जे परजाकेँ बानर बुझि नचबैए तहिना दैव मदनारी भेल जे दैव सभकेँ डोर पकैड़ नचबैए।”

भुल्ली काकीक बात जहिना करनी सुनलक तहिना मरनियोँ सुनलक मुदा बुझलक दुनूमे सँ कियो ने। तँए भुखल बच्चा जकाँ दुनू गोरे भुल्ली काकीक मुँह दिस बकर-बकर ताकए लगल। जे भुल्ली काकी सेहो बुझली। ओना भुल्ली काकीकेँ मनमे ई कुवाथ नहि भेलैन जे किए ने हमर बात दुनू बुझलक। मनमे ई भेलैन जे अखन तँ दुनू बच्चा अछि तँए दुनियाँदारीक बात नइ बुझैए। मुदा बुझै-जोकर तँ भाइए गेल अछि। आब कहिया बुझत। बारह-चौदहबर्खक दुनू ऐछे, किछु दिनमे बिआह-दान हेतइ, सासुर बसत, परिवारक भार पड़बे करतै। से नहि तँ दुनूकेँ दोसर ढंगसँ बुझौनाइ नीक हएत।

दोसर ढंगसँ बुझबैत भुल्ली काकी बजली-

“बुच्ची, जहिना देखै छहक किने जे एक दिस बरखाकेँ बहन्ना बना राजा गाछ-बिरीछ लगबै पाछू बेहाल अछि तँ दोसर दिस आन-आन देशसँ तेलो आ गैसो कीन-कीन, धुआँ-धुकुरक बहन्ना बना घरे-घर पसारि रहल अछि।”

भुल्ली काकीक बात करनियोँ आ मरनियोँ बुझलक। बुझैक कारण भेलै जे आँखिक सोझमे गाममे देख रहल अछि। ईहो देख रहल अछि जे भानस करैमे सुविधाजनक सेहो अछिए। मुदा लगले एकटा प्रश्न मनमे उठलै- तखन भुल्ली काकी किए ‘बहन्ना’ कहै छथिन..! करनी बाजल-

“काकी, अहाँ एकरा बहन्ना किए कहै छिऐ?”

करनीक जिज्ञासु प्रश्न सुनि भुल्ली काकी गंभीर भऽ गेली। गंभीर होइक कारण भेलैन जे जेहेन उपयोगी विचार अछि तेकरा जँ ऊपरे-झापरे किछु कहि बुझा देबै से नीक नहि। तँए प्रश्नक गंभीरताकेँ देख गंभीर होइत बजली-

“एते जे गाममे गाछ-बिरीछ अछि, जे गामक सम्पैत छी, जँ एकर उपयोग नइ हएत तँ हएत की? देखते छहक जे लकड़ीक काज जे अछि ओ धीरे-धीरे लोहो आ प्लाष्टिको पकैड़ रहल अछि, तखन गामक-गाम जे लकड़ीक बोन अछि, ओ की हएत?”

भुल्ली काकीक बात सुनि करनी मुड़ी डोलबैत बाजल-

“हँ, से तँ भाइये रहल अछि।”

विचारमे सहमति देख भुल्ली काकी बजली-

“छोड़ह दुनियाँदारीक गप, अखन जइ दुखसँ दुखी छह तेकर निमरजना केना हएत, से गप करह।”

भुल्ली काकीक बात सुनि करनीक मन एकाएक बैसए लगल। मनमे नाचए लगलै जे भानस बिनु जरने केना हएत? तोहूमे जैठाम छी तिनको नहियेँ छैन जे मुहोँ खोलब–माने मंगबो करबैन–तँ मुँह भरत?

पाछू उनैट करनी तकलक तँ माइक बात मन पड़लै। मन पड़िते बाजल-

“काकी, बँसबिट्टी सभमे तेते पातो आ सुखल कड़चियो सभ खसल अछि जे जँ ओकरा खर्ड़ैर आनब तँ जारैनक ओरियान भऽ जाएत।”

करनीक बात भुल्ली काकीकेँ सोहंतगर लगलैन। बजली-

“तखन ते जारैनक दुखे मेटा जाएत। समैयोमे देखै छी जे दिनो-

दिन (कुहेस) कमले जा रहल अछि। सरस्वती पूजा भाइये गेल। वसंतक आगमन सेहो भाइए रहल अछि। गाछो-बिरीछ पतझाड़ लेबे करत।”

हँसैत मरनी बाजल-

“तखन तँ जारैनक दुखे मेटा जाएत किने?”

◌

शब्द संख्या : 2465, तिथि : 17 अप्रैल 2017

पढ़ल सुगा बौक

भिनसुरका उखड़ाहाक नअ बजे, ललित काकाकेँ अपन फलित फल देख मने-मन कूहसँ कूही हुअ लगलैन। बेर-बेर मनमे उठि रहल छैन जे की केलौं? केकरा-ले केलौं..? आ लगले मन घुमि ईहो कहै छैन जे अपन कर्तव्य बुझि परिवारमे सभ किछु केलौं मुदा अपना-ले की केलौं? अपन कर्तव्य अपना लेल की हेबा चाही से केते दूर धरि केलौं..?

ललित कक्काक जन्म मध्यम किसान परिवारमे भेल छैन। ओना, मध्यम किसानक कोनो निसचित सीमा नै अछि।

दस बीघा जमीनबला सेहो मध्यम किसानक श्रेणीमे अबै छैथ आ बीस-तीस-चालीस-पचास बीघा जमीनबला सेहो अबिते छैथ। ओना, जमीन-जमीनक मोल सेहो अछिए। कोनो गाममे नीक माटि[12] रहने नीक उपज सेहो होइए, जखन कि कोनो गाममे दब माटि[13] रहने उपजो दब होइते अछि जइसँ एक रंग रकबा–जमीनक–रहितो उपजमे कमी-बेसी भेने जीवनमे सेहो अकास-पतालक अन्तर होइते अछि।

ललित कक्काक जन्म राधोपुर पंचायतक बेलबारी गाममे भेल

[12] उपजाक माटि

[13] उस्सर वा बाउल

छैन। राधोपुर पहिने तँ नमहर पंचायत छल मुदा हालक जे पंचायतिक सीमांकन भेल तइमे चारि गाम कटि दोसर पंचायत बनने राधोपुर पंचायतक सीमा छोट भऽ गेल, जइसँ अदहा-अदही जनसंख्यो आ जमीनो भऽ गेल मुदा तैयो जे पंचायतक जनसंख्या निर्धारित अछि तइसँ सबैयासँ किछु बेसीए जनसंख्या राधोपुर पंचायतमे अखनो अछिए। बेलबारी राधोपुरक बगलेक गाम रहने ओही पंचायतमे अखनो अछिए।

बेलबारी साए घरक गाम। ओना राजस्व गाम *(Revenue Village)* सेहो छीहे, मुदा गामक अधिकांश जमीन आन-आन गामबलाक छिऐन। गामक अदहासँ बेसी परिवार–माने पैंसैठ परिवार–छेहा बोनिहारक परिवार छी, बाँकी पैंतीस परिवार किसानक परिवार अछि। ओना, ओहो पैंतीस परिवारमे ने एकरंग जमीन अछि आ ने जनसंख्ये। तीन बीघासँ पचीस बीघा धरिक परिवार अछि। कहैले तँ पैंतीसो परिवार किसाने-परिवार छैथ आ किसानीए जिनगियो छैन, मुदा एक-दोसरक बीच दूरी नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

गाममे तीन परिवार ओहन अछि, जइमे मनोहरक परिवार सेहो छैन, जे खेतीक संग छोट-छीन महाजनियौं–अन्न-पानिक–करै छैथ आ गाइयो-महींस पोसने छैथ। मुदा अपना हाथे ने खेतियेक कोनो काज करै छैथ आ ने माले-जालक।

मनोहर गामे नहि चरि-कोसीमे इमानदारो आ प्रतिष्ठित सेहो मानल जाइत रहला। आन महाजन जकाँ–माने रतिकान्त आ मुनेसर जकाँ–मनोहरकेँ कियो खौदका बेइमान नइ कहलकैन। रतिकान्त आ मुनेसरकेँ लोक ई कहि बेइमान कहै छेलैन जे कर्ज आपस केला पछाइतो ई दुनू कहिते रहै छेलखिन जे अदहा जे बाँकी रहल ओ

अछिए। रतिकान्तो आ मुनेसरो जेहने कचहरिया–माने केश-फौदारी लड़ैबला–तेहने समंगरो, तँए बेइमानी केलाक बाबजूदो लोक हुनका सोझमे डरे किछु ने बाजि पबै छल, आ जे कहै छेलखिन से लोक दइते छेलैन।

ओना कर्ज लेनिहार केते गोरे केतेक बेर कर्ज चुकौला पछाइत सप्पतो खाइ छला जे 'एहेन महाजनक कर्ज आब कहियो नइ लेब।' मुदा लेब वा नइ लेब मात्र वैचारिकेटा तँ छी नहि, परिवारक भरण-पोषण करैले सभ कथुक खगता पड़िते छइ। भूख लागत अन्ने खाएब। जँ अपना नइ रहत तँ अनकासँ माँगहि पड़त। आनो ओहन केतए-सँ दऽ सकैए जेकरा अपने नइ छइ। तखन तँ जे कारोबारी छैथ, हुनके ऐठाम ने जाए पड़त।

गामसँ लऽ कऽ परोपट्टा धरिमे रतिकान्त आ मुनेसरसँ विपरीत परिचय मनोहरक रहलैन। तीन पुश्तसँ कबीर-पंथसँ जुड़ल वैष्णव परिवार रहलैन। साले-साल साए मुरतीक भनडारा सेहो करिते छला आ हराएल-भोथियाएल माने अपरिचितो अभ्यागतक सेवा सेहो करै छला। माने ई जे दूर-दराजक जे वेपारियो आ गाम-गमाइत जाइबला राहियो-बटोहीकेँ जँ अबेर भऽ जाइ छेलैन आ मनोहरक दरबज्जापर आबि जाइ छला तँ रहैयोले आ खाइयो-पीबैले दइते छेलखिन।

ओना, गामो आ आनो गामक भीखमंगाकेँ भीखो दइते छेलखिन। महाजनियोंमे मनोहर एते धर्म टेकने छला जे सूदि-सवाइमे सेहो कनी-मनी छोड़-छाड़ करिते छला आ जइ साल रौदी-दाही भेल तइ सालक सूदिमे अदहा-अदही माफ कऽ दइ छेलखिन।

मनोहर तेहेन पढ़ल-लिखल–माने स्कूल-कौलेजक सर्टिफिकेटधारी नहि छला मुदा 'रामायण', 'महाभारत' आ कबीर दासक 'अनुराग सागर', 'मन्सूर' आ 'बीजक' रखनौं छला आ नित्य

साँझू पहर पढ़ितो छला। नाम-गाम लिखब, जोड़-घटाउ-गुणा-भागक संग-संग जमीनक धूर-कट्ठाक हिसाब सेहो अबिते छेलैन।

पचीस बीघा जमीनक मालिक रहितो मनोहरक परिवार बेसी नमहर नइ छेलैन। ओना परिवार तँ साले-साल घटिते-बढ़िते रहैए, मुदा तैयो छह गोरेसँ कम आ दस गोरेसँ बेसीक परिवार मनोहरक कहियो ने बनलैन।

सुभ्यस्त किसान परिवार रहने मनोहर मालक सेवा करैले नोकर आ खेती करैले हरबाहक संग जन-बोनिहार सेहो रखने छला।

मनोहरकेँ चारि सन्तान। तीन बेटा आ एक बेटी, जइमे ललित चारू भाए-बहिनमे सभसँ छोट माने दू बेटाक पछाइत तेसर बेटी आ चारिम ललित। जेठ दुनू बेटा मिडिल स्कूलसँ आगू नहि पढ़ि सकल। तहिना बेटियो नाम-गामसँ लऽ कऽ चिट्ठी-पत्री धरि पढ़ली।

तीन बर्खक जखन ललित भेल, तखन एकटा कबीरपंथी-महात्मा मनोहर ऐठाम भनडारा पूरए एला। परिवारक परिचय लैत मनोहरकेँ ओ महात्मा कहलकैन-

"जइ हिसाबे लछमीक बास अछि तइ हिसाबे सरोसत्तीक नहि, तँए..!"

महात्माजीक विचारसँ मनोहरक हृदय विदीर्ण भऽ गेलैन। जेना सत्यसँ भेँट भऽ गेल होनि तहिना मनोहरक मन पसीज गेलैन, पसीजते बजला-

"गोसाँइ साहैब! अपनेक विचार तँ शिरोधार्य अछि, मुदा हएत केना?"

ओना, एकोटा शिक्षण संस्था गाममे नहि रहने पढ़ै-लिखैक वातावरण सेहो नहियेँ जकाँ छेलैन। दूर जा पढ़ैले तँ खर्चो ओते हेबे करै छै, राधोपुर पंचायतमे मिडिल स्कूलसँ आगू नहियेँ अछि। साढ़े

तीन कोस हटल–माने दस किलोमीटरसँ बेसीए हटि कऽ–हाइ स्कूल आ पचीस किलोमीटर हटि कऽ कौलेज, राघोपुर पंचायतसँ तहियो छल आ अखनो अछि। इंजीनियरिंग कि एग्रीकल्चर आकि मेडिकल कौलेज तँ अखनो सपनेमे अछि। ओना, दस किलोमीटर हाइ स्कूल आ पचीस किलोमिटर कौलेज, बहुत दूर नइ भेल जँ रोड-सड़क आ गाड़ी-सवारीक सुविधा रहए। मुदा से तँ बरसात मासमे एकटा नदी टपैमे भरि दिन समए लगि जाइए जेकर दूरी कोसो भरि नइ रहैए।

मनोहरक विचार सुनि महात्माजीक मन मोमबत हुअ लगलैन। जहिना इजोरिया पखक तृतीया चानक लाली आ अन्हरिया पखक[14] तृतीया चानक लालीक ललपनमे जमीन-अकासक अन्तर होइए तहिना महात्माजीक मनमे उठलैन। उठिते विचारए लगला जे अखन जे परिस्थिति मनोहरक परिवारमे पढ़ै-लिखैक अछि, जँ ऐ गतिये रहत तँ तेसर पीढ़ीमे हाइ स्कूल पहुँचत, आ जखन हाइये स्कूल पहुँचैमे तीन पुश्त लागत तँ परिवारमे पुस्तक केना औत आ पुस्तकालय केना बनत। तेहेन बनैमे पाँचो पुश्त लगि सकैए। तँए अखन परिवारजनक संग मनोहरो आ तीन बर्खक ललितोक मनमे शिक्षाक ओहन बीजवपन करी जे बिना एको क्षण गमौने परिवार सरस्वतीक धारमे प्रवेश करइ। मुदा से हएत केना?

महात्माजी कबीरपंथी छैथ जइसँ जिनगी आ जिनगीकेँ प्रभावित करैबला विचारो आ कर्मोकेँ खाली वैचारिके रूपमे नहि, बेवहारिक रूपमे सेहो अंगीकार केनहि छैथ तँए महात्माजीकेँ अपन अनुकूल विचार दइमे केतौ बाधा नहि बुझि पड़ै छैन, मुदा जहिना नव भूमिमे–जैठाम कोनो नव वस्तुक खेती नइ भेल अछि–कोनो नव वस्तुक खेती करैमे सभ किछुमे नवपनक खगता होइ छै तहिना ओइ

[14] माने द्वादशी अन्हरिया पक्षक

वस्तुक खेती-ले ओइठामक वातावरणोक पहचान करब तँ जरूरीए अछि। ओना वातावरण प्रकृति स्वरूप अछि मुदा कृत्रिम ढंगसँ सेहो बनौले जा सकैए...। महात्माजी तजबीज करए लगला। तजबीज करिते मनमे उठलैन- जइ काज-ले[15] जे विचार मनमे उठि रहल अछि ओकरा जाबे दृढ़तासँ नइ पकड़ब ताबे ओ बाल-बोधक दीक्षा[16] स्वरूप हएत। जे सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि, अखनो होइए आ आगूओ ताधैर होइत रहत जाधैर कर्मक संगी विचार आ विचारक संगी कर्म नहि बनत...।

मुदा लगले महात्माजीक मनमे ईहो विचार जागि जानि जे जैठामक विचार करए चाहै छी तैठामक वैचारिक रूप की अछि..?

वैचारिक रूपपर महात्माजीक नजैर पहुँचते रूपे कुरूप बुझि पड़ैन। कुरूप दिस जखन नजैर दैथ तँ आँखिक सोझमे देखैथ जे अखनो गाम-घरमे हाथक रेख देख रेखा गणितक हिसाबसँ रेखांकन करैबला रेखाकार सभ छथिए..! मुदा हुनकर रेखा गणित गड़बड़ केतए भऽ जाइ छैन आ किए भऽ जाइ छैन तैपर नजैर अँटकौलैन। बाल-बोधकेँ शिक्षाविद् वा कर्मशील बनै-बनबैक रस्तामे हाथो तँ महतपूर्ण अंग छीहे, तँए जँ कर्ताक मनमे ओ विचार रोपल जाए तँ ओ अधला केना भेल। मुदा ईहो तँ होइते अछि जे गाम-समाजक नकारात्मक दिशाक विचार सेहो कहिते अछि जे 'फल्लाँ अभागल अछि', 'फल्लाँक हस्तरेखा किछु कहिते ने छै' वा कहबो करै छै तँ ई कहै छै जे 'एकरा भागमे ने विद्या छै आ ने धन..!'

समाजिक परिस्थितिकेँ अँकैत महात्माजी अपन आँगुरसँ ललितकेँ देखबैत मनोहरकेँ वचन देलखिन-

[15] माने शिक्षण क्रिया-ले
[16] असिरवाद

"ई बच्चा ज्ञानवान हएत..!"

ओना महात्माजीक विचार ज्ञानक विराट रूपमे रहैन, मुदा से मनोहर नइ बुझि सकला। मनोहर खाली एतबे बुझि सकला जे बच्चाकेँ विद्या लिखैए। ओना, ज्ञानवानक विराट रूप होइ छै, खाली किताबे पढ़ि कऽ कोनो बात बुझबे-टा नहि अछि। दुनियाँमे जे किछु अछि ओ ज्ञान स्वरूप सिर्फ देखबेटा मे नहि, कर्म स्वरूप जिनगीक संग चलबोमे अछि।

मनोहर मनमे रोपि लेलैन जे जाबे तक ललित अपने नइ जवाब देत जे आब आगू नइ पढ़ब ताबे तक ओकरा पढ़ैक खर्चमे कहियो कोताही नइ करबै। जखन भागमे विद्या ब्रह्म रेखामे लिखल छै। तखन नइ किए हेतइ। जरूर हेतइ। ओना ललित तीनियेँ बर्खक छल मुदा महात्माजीक विचार मनोहरक मनमे रोपा गेलइ।

बेलबारी सैये परिवारक गाम अछि, मुदा बास अनेको जातिक तँ छइहे। अनेको जातिक बास रहने अनेको रंगक बेवसायसँ जुड़ल गाम अछिए। पैंतीस परिवार जे किसानक अछि ओइमे गामक अदहासँ बेसी जातिक लोक किसान छैथ। जइसँ गाममे बारहो विरहिणीक खेती सेहो होइते अछि। खेतियोमे जातिक गुणसँ खेती नइ होइए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खेतक उपजा एक रहितो किसान एक-दोसरसँ अपन दूरी बनौने आबियो रहला अछि आ अखनो अछिए।

गाममे खाली तीनियेँटा किसान ओहन छैथ जे अपना हाथे किछु ने करै छैथ। बाँकी बत्तीस परिवार ओहन छैथ जे दस बीघा खेतसँ निच्चाँबला छैथ। ओना तहूमे किछु किसान नोकरी सेहो करै छैथ जइसँ अपने नोकरीक कमाइ करै छैथ आ खेती जन-बोनिहारक हाथे होइ छैन।

बेवसायक रूपमे जे परिवार छैथ ओहो समाजसँ जुड़ल बेवसाय सेहो करै छैथ आ आनो-आनो गाम टहैल-टहैल करिते छैथ। ओना परोपट्टाक आन गामसँ पछुआएल गाम बेलबारी अछिए। जे आनो गामक लोक बुझै छैथ आ बेलबारीबला सेहो मानिते अछि। मानबो किए ने करत, भरि गाममे मात्र सोलह-गो परिवार ओहन अछि जइमे पढ़ै-लिखैक चलैन पकड़ने छै, बाँकी चौरासी परिवारक बच्चा अखन तक स्कूलक मुँह-आँखि नहि देखलक अछि।

तीन मास पहिनहि ललित पाँचम बर्खमे प्रवेश केलक। ललितकेँ संग केने मनोहर राघोपुर मिडिल स्कूल पहुँच नाओं लिखा देलखिन। एक तँ ललितक मनमे सेहो विद्याधनक जोग नचिते छेलै, तैसंग मतो-पिता आ भाइयो-बहिनक जोग पड़िये रहल छल। माता-पिताक मनमे ललितक विद्याक जोग रहने अपन बेवहारिक जोगसँ सेहो दुनू अपन विचारकेँ मजगूतीसँ जोड़लैन। ओना, जेठ दुनू भाँइक बेवहार सेहो अनुकूल बनैत गेलैन। अनुकूल बनैक कारण दुनू भाँइक मनमे ई जनमिये गेल छलैन जे हमरा सबहक रेखमे विद्या नहि छल तँए नइ पढ़ि सकलौं। जँ रहैत तँ बिनु साधनोक तँ केते गोरे पढ़ि-लिखि कऽ विद्वानो बनला आ पैघ-पैघ अफसरो तँ बनबे केलाह। तँए दुनू भाइक मनमे ई कहियो नै उठलैन जे पढ़ैबलाकेँ अभिभावको आ पढ़ै-लिखैक खरचो पढ़ैसँ बाधित करैए। ओना दुनू भाँइक विचारमे एकभग्गूपनक मात्रा जरूर छेलैन मुदा उदाहरण स्वरूप गामो आ परोपट्टोमे देखबे करैथ जइसँ विचारमे मजगूती बढ़िते गेलैन।

लोअर प्राइमरी स्कूल हुअ कि हाइ स्कूल आकि कौलेज, सभ पढ़निहारकेँ एकेरंग अनुकूल वातावरण भेटैए, ई आँखि मूनि नहियेँ कहल जा सकैए। अनुकूलो वातावरण भेटैए आ प्रतिकूलो वातावरण भेटते अछि। अनुकूल आ प्रतिकूल सेहो एकेरंग नहियेँ अछि। अनुकूलोमे अनुकूल अछि आ प्रतिकूलोमे प्रतिकूल अछि। अनुकूलमे

अनुकूल भेल- जे परिवारमे अगुआएल-पछुआएल पढ़निहारक संग पढ़ौनिहारो रहला आ प्रतिकूलमे प्रतिकूल भेल- जैठाम एक नहि अनेक बाधा एकसंग उपस्थित रहल।

ओना समाजो गनगुआरि साँप जकाँ दू-मुहाँ अछिए। माता-पिताक सोझमे वा तेहालाक बीचमे सभकेँ सभ पढ़ै-लिखैक विचार दइते अछि, मुदा तरे-तर पढ़ाइ रोकैक बाधा उपस्थित नइ करैत अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। करिते अछि। शासनो-सूत्र अदौसँ ओहने रहल।

ओना आइ धरिक जे इतिहास रहल ओ सोल्होअना तेहने रहल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए, नीको रहल आ नीकोमे नीक रहल। नीकमे नीक ई भेल जे समाजमे एहनो-एहनो कूलपूज्य बेकती भेला अछि जे अपन परिवारक अतिरिक्त आनो-आनकेँ अपन देख-रेखमे–माने अपना दिससँ खेबा-खर्चा दऽ कऽ–पढ़ैक प्रेरणो दैत रहथिन आ पढ़निहारकेँ अभावक पूर्तियो करैत रहथिन, करैबला अखनो काइये रहला अछि। मुदा आब ओ बिरल अछि।

मिडिल स्कूलमे नाओं लिखौला पछाइत जहिना ललित पढ़बकेँ अपन प्रमुख काज बुझलक तहिना मनोहरो अपन दायित्वकेँ प्रमुख काज बुझलैन। ओना मनोहर बहुत पढ़ल-लिखल लोक नहि, मुदा जहिना 'एकाएक' सँ 'बीसकान' तक खाँत अबैत रहैन जइसँ जोड़-घटाउसँ गुणा-भाग तक कऽ लैथ, तहिना 'अ'-'आ' सँ 'कब्बीरकाने' तक सेहो अबिते रहैन जइसँ रामायण, महाभारत, कबीर साहित्य–अनुराग सागर, बीजक, मन्सूर–सेहो धुर-झाड़ पढ़ि लैथ, मुदा धुर-झाड़ बुझि नहि पबैथ।

खाएर जे रहैथ मुदा ललित स्कूल आएब-जाएब शुरू केलक आ मनोहर सेहो 'अ'-'आ' सिखाएब शुरू केलैन। छबे मासक पछाइत

ललित अपन संगतुरियामे अगुआ गेल आ शिक्षकोक नजैरमे बसि गेल।

पहिले वर्गसँ ललित प्रथम स्थान प्राप्त करए लगल। जे सातमा तक करैत रहल। बेटाक लगन आ मेहनत देख मनोहर नीक हाइ-स्कूलमे दाखिला दिएबाक विचार मनमे रोपि लेलैन। ओना दस किलोमीटरसँ बीस किलोमीटरक बीच तीनटा हाइ स्कूल अछि, मुदा तइमे एक्केटा स्कूलक पढ़ाइ नीक छइ। जइमे नियमित शिक्षको छैथ आ नियमित विषयोक पढ़ाइ होइए। मुदा बाँकी दूटामे एकटा राजनीतिक अड्डा बनल अछि आ दोसर जाइतिक अड्डा बनल अछि। तीनूक दशा देख मनोहर पहिल हाइ स्कूलमे ललितक नाओं लिखा होस्टलक भार उठा लेलैन। बेटाकेँ होस्टलमे सुपुर्द करैत होस्टल सुपरीन्टेडेन्टकेँ कहलखिन-

"मास्सैब, अखन धरि ललितकेँ अपना देख-रेखमे रखलौं आब अहाँक भेल।"

बेवहारिक जिनगी जीनिहार सुपरीन्टेन्डेन्ट, जवाब देलखिन-

"पचाससँ ऊपर विद्यार्थी होस्टलमे अछि। हम ते एके निगाहे ने सभकेँ देखब।"

चारि बर्खक पछाइत ललित फस्ट डिवीजनसँ मैट्रिक पास केलक। गाममे–माने बेलबारीमे–ललित पहिल विद्यार्थी छल जे प्रथम श्रेणीमे पास केलक।

एक तँ नीक रिजल्ट, दोसर पढ़ैक लग्न ललितकेँ चढ़िये गेल छेलै जइसँ आगू पढ़ैक लिलसा आरो बढ़ए लगलै।

आगू पढ़ैक लिलसा जहिना ललितक मनमे हुमैड़ कऽ जोर मारै छल तहिना बेटाक सफल परीक्षा देख मनोहरक मनमे सेहो हुमरिये रहल छेलैन। कहलो गेल छै जे 'महींस-पर्डुक मिलान ठेहुनो पानि

दुहान।' दुनू बापुतक विचारमे केतौ राहु-केतुक दरस नहियेँ छल। सी.एम. कौलेजमे ललित, विज्ञान विषयसँ आइ.एस-सी.मे नाओं लिखौलक।

आइ.एस-सी. आ बी.एस-सी. मिला कऽ चारि बर्खक कोर्स रहितो ललितकेँ बी.एस-सी. करैमे छह बर्ख समए लगलै। छह बर्ख लगैक कारण ललितकेँ फेल करब नहि छल, किएक तँ फेल केने साल बेसिया जाइए कारण छल विश्वविद्यालयक बेवस्था। दू साल बिलमसँ परीक्षा चलि रहल छेलै, तँए ललितकेँ बी.एस-सी. करैमे छह बर्ख लागल। ओना किलास समाप्त भेला पछाइत ललित दरभंगासँ गाम आबि गाममे दू साल धरि परीक्षाक तैयारी केलक। गाममे रहने ललितकेँ पढ़ै दिससँ कनी-मनी मन सेहो उचटए लगल छेलइ। उचटैक कारण रहै जे जे काज दू बर्खमे पूरा कएल जा सकै छल तइमे चारि बर्ख लागब। तैसंग ईहो जे केते नोकरीक उम्र निर्धारित जे बैसले-बैसल बहि जाइए।

बी.एस-सी. केला पछाइत ललित पिताकेँ कहलक-

"बाबू, आगू नइ पढ़ब।"

ललितक विचारकेँ मनोहर मानि ऐ दुआरे लेलैन जे अपन संकल्प केने छला जे जाबे तक ललित पढ़ए चाहत ताबे तक खर्चक कोताही नइ हुअ देब। से तँ भाइए रहल अछि।

छह मास बैसला पछाइत माने बी.एस-सी. केला पछाइत ललितकेँ हाइ स्कूलमे विज्ञानक शिक्षकक पदपर नोकरी भेल। ओना स्कूलो हाले-सालमे खुजल छेलै मुदा पँचकोसीमे दोसर हाइ स्कूल नइ रहने चलैक संभावना रहबे करइ। परोपट्टामे हाइ स्कूल खुजने गौंआँ-घरूआसँ लऽ कऽ विद्यार्थियो आ शिक्षकोक बीच इच्छा छेलै जे कहुना स्कूल चलइ। चलैक कारणो भेल, कारण भेल जे विद्यार्थी सभकेँ

माहवारी पढ़ाइक फीस लगै छल। ओना मोटा-मोटी तीन रंगक बेवस्था हाइ स्कूलक छल। किछु हाइ स्कूल छल जेकर सोल्होअना देख-रेख सरकारी छल, ओना विद्यार्थीकेँ फीस सेहो लगिते छेलइ। दोसर तरहक किछु स्कूल एहेन छल जेकर मान्यता तँ सरकारी छेलै मुदा खर्चक भार सरकार नइ उठौने छल। सहायताक रूपमे सालमे एकबेर किछु दऽ दइ छेलइ। आ तेसर तरहक ओ हाइ स्कूल छल जेकर मान्यता तँ सरकारी छेलै मुदा सहायता किछु ने भेटै छेलइ। ओना तहूमे दू रंगक स्कूल छल। एक रंगक छल जे खास बेकती अपना नामे स्कूल खोलने छला आ दोसर छल जे जनसहयोगसँ माने समाजिक स्तरपर खुजल छल।

जइ स्कूलमे ललित शिक्षक बनला ओ जनसहयोगसँ खुजल छल। ओना दुनू तरहक स्कूलक शिक्षकक बीच वैचारिक दूरी सेहो बनिते अछि। पहिल दूरी अछि जे किछु खास बेकतीक काज, आ दोसर अछि अपन काज बुझि जनसमूहक सेवा करब। ई ओहन जगह छी जैठाम इमान-बेइमानक दूरी लग पहुँच जाइए।

हाइ स्कूलक नोकरी केना ललितकेँ दस बर्ख भेलैन तखन पिता मरि गेलखिन। अखन तक परिवार मनोहरेक देख-रेखमे चलै छल, जइसँ तीनू भाँइ ललितकेँ अपन परिवारक कोनो चिन्ता-फिकिर नइ छेलैन। मुदा पिताक मुइलाक पछाइत ललित अपन दरमाहाकेँ अपन कमाइ बुझि भैयारीक बीच–माने दुनू जेठ भाइक बीच–नइ राखि फुटा कऽ राखए लगला।

मुदा जेठ दुनू भाँइ जे खेती-पथारीसँ जुड़ल छला ओ अपन कमाइ फुटा कऽ नइ बुझै छला। ओना माए जीवित रहथिन, मुदा ओ परिवारक आमद-खर्च बुझबे ने करै छेली। तहूमे जखन पति मरि गेलैन आ बेटा-पुतोहुक बीच जिनगी एलैन, तखन मनमे किछु-किछु

कचोट जरूर हुअ लगलैन। मुदा माइयो तँ माइये थिकी किने जे देहपर बच्चाकेँ गन्दा केला पछातियो पानिसँ धोइ अपनाकेँ पूर्वबत बुझैत रहली। संजोग एहेन भेल जे छह मास बीतैत-बीतैत माइयो मरि गेली।

माइक श्राद्धक क्रिया-कर्म समाप्त होइते तीनू भाँइक बीच मनभेद मतभेदक रूपमे बदलए लगल जइसँ मास समाप्त होइत-होइत ललितक तीनू भैयारीक परिवार अलग-अलग भऽ गेल।

अपनाकेँ ललित सद्विचारी शिक्षकक रूपमे स्थापित केने छला। सद्विचारी ई जे आन शिक्षक जकाँ पाइ लऽ कऽ ने ट्युशन पढ़बै छला आ ने कहियो पाइ लऽ कऽ केकरो एको नम्बर परीक्षाक कॉपीमे बढ़ौलैन। ओना विद्यालयमे नियमित शिक्षकक रूपमे सेहो बुझले जाइत रहला। समयपर विद्यालय एनाइ-गेनाइक संग किलासो नियमित करिते रहला। अपन डेरा रखने छला, अपने हाथे भानसो-भात करै छला।

गामसँ बाहरक विद्यालयमे रहने ललित अपन हिस्साक सभ जमीन बटाइ लगा लेलैन। ओना दुनू जेठ भाय खेतिहरे छेलखिन मुदा अपन भैयारीकेँ खेत नहि दऽ तेहालाक हाथे ललित बटाइ लगा लेलैन।

तेहालाक हाथे बटाइ लगौने दुनू भाँइक मनमे भीतरिया चोट लगलैन। भीतरिया चोटक कारण छेलैन जे जइ खेतकेँ महींसिक गोबरसँ गोबरा गोरसार बनौने छेलौं जइसँ आन किसानसँ सबैया-ड्योढ़ा उपज बेसी होइए ओ खेत दोसराकेँ किए बटाइ देने छैथ! जँ अपने दुनू भाँइ ओकरा जोतितौं तँ खेतक उपजो घरेमे रहैत आ आन कियो ईहो ने बुझि पबैत जे तीनू भाँइक बीच कोनो तरहक मन-मतान्तर अछि। मुदा सभ विचार ओतए अन्त भाइए जाइए किने जेतए लोक अपन विचारकेँ सम्पैत नहि मानि हिस्साकेँ सम्पैत बुझि विचारक सम्पैत लुटबैए।

दुनू भाँइक मनमे रंग-बिरंगक वैचारिक तरंग सेहो तरंगित होइते रहैन। विचार उठिते देह सिहैर जानि जे की अही आशासँ छोट भाएकेँ बेटा जकाँ बुझि सेवो केलौं आ पढ़ेबो-लिखेबो केलौं..! भिनौज भेने अपन-अपन कमाइ जँ अपन परिवारक भरण-पोषणमे लगबै छी तँ ओ परिवारेक सेवा भेल मुदा अपन पैतृक सम्पैत–जमीन–केँ जे अपन इज्जत-आबरू बुझि सेवो करैत आबि रहल छेलौं आ नीक फलो पबै छेलौं ओ तँ बाल-बच्चाक जिनगीमे कटान भेबे कएल। हम दुनू भाँइ खेती करै छी, खेतीक जे दशा-दिशा अछि ओ ओते नीक नहियेँ अछि जेते हेबा चाही। मुदा ओइमे, जहिना किछु गलती लोहाक आ किछु गलती लोहारक भेने नीक औजार नहि बनि पबैए तहिना किछु गलती अपनो[17] आ किछु गलती शासनोक तँ ऐछे जइसँ किसानी जिनगी मेटाएल जा रहल अछि। जइसँ किसानो परिवारक नव पीढ़ी आँखि मूनि अपन श्रम बेचैपर मजबूर भऽ गेल अछि।

मनोहरकेँ अपना जीविते महाजनी समाप्त भऽ गेल छेलैन। तेकर कारण भेल जे एक दिस पढ़ै-लिखैक खर्च बढ़ल तँ दोसर दिस अनिसचित किसानक जिनगी छल जइसँ आमदनीक निसचितता नहि, आ तेसर भेलैन सूदि-सवाइकेँ भारी हएब, माने बेसी सूदि-सवाइ हएब। जइमे बैंकक आगमनसँ धक्का लगबे कएल। ओना गाम-गामक लोककेँ बजार दिस काज करैले बढ़ने, आमदनी सेहो बढ़बे कएल जइसँ गामक महाजनीमे धक्का सेहो लगबे कएल।

ललितकेँ चारि सन्तान, दू बेटा दू बेटी। ओना गामक बगलक गाममे–माने राधोपुरमे, जइ पंचायतमे बेलबारी सेहो अछि–हाइ स्कूल खुजल। जइसँ पढ़ै-लिखैक सुविधा बढ़ल। शुरुहेसँ ललित अठबारे छुट्टीसँ लऽ कऽ पाबैन-तिहार वा कोनो आनो अवकाश गाममे बितबैत

[17] अपनो माने किसानोक

आबि रहल छला। लगमे हाइ-स्कूल खुजने माने हाइ स्कूल तकक शिक्षाक बेवस्था भेने शुरूहेसँ ललित बेटा-बेटीपर धियान रखि पढ़बै-लिखबै दिस मुश्तैद रहबे करैथ। दुनू बेटीकेँ मैट्रिक केला पछाइत बिआह-दान कए कऽ नोकरीक तीसम बर्खमे निचेन भऽ गेला।

ललितक दुनू बेटा–मोहन आ सोहन–जेहने पढ़ैमे जहिनगर तेहने परिवारक आर्थिक आमदनी रहने कहियो कोनो बाधा नइ बुझलक। ओना दुनू भाँइक बीच चारि बर्खक अन्तराल रहने जखन मोहन हाइ स्कूल छोड़लक तखन सोहन हाइ स्कूलमे प्रवेश केलक। चारि बर्खक दूरी रहने दुनू भाँइक पढ़ाइक खर्चमे सेहो अन्तर छेलैहे। आइ.एस-सी केला पछाइत मोहन मेडिकल कौलेजमे नाओं लिखौलक।

चारिम बर्खक अन्तिम छोरपर जखन मोहन पहुँचल तखन सोहन सेहो नाओं लिखौलक।

नोकरीक शुरूमे ललितकेँ कम्मे दरमाहा रहैन मुदा सरकारीकरण भेने बीस सालक पछाइत माने नोकरीक बीस साल, नीक दरमाहा सेहो भेटए लगलैन, जइसँ बेटाकेँ पढ़बैमे कहियो कोनो असोकर्ज नइ भेलैन।

डॉक्टर बनला पछाइत मोहन विदेश चलि गेल। एक तँ ओहुना लोक विदेश जा पढ़ब आ नोकरी करबकेँ प्रतिष्ठाक रूपमे बुझिये रहल छैथ, जे ललितो अपनाकेँ बुझलैन। मोहनकेँ विदेश जेबाकाल ललितक मुहसँ एकोबेर नइ निकललैन जे बौआ, जे माए-बाप तोरा अपन जिनगीक भविस देख नीक फलक गाछ लगबैक ओहन परियास केलक जइमे खून-पसेना एकबट्ठ बहैए। दुनियाँमे बच्चासँ चेतन धरि के एहेन अछि जे जिनगीक रूपकेँ सोझामे नइ देखैए। सभ देखैए जे बच्चाक जन्मसँ लऽ कऽ मृत्यु धरि जिनगीक धार केना बहैए...।

मुदा से ललितक मनमे जगबे ने केलैन। भरिसक तेकर कारण

विज्ञान शिक्षकक जिनगी हएब छेलैन। हँसी-खुशीसँ ललित अपनो दुनू परानी आ लग-पासक जे कुटुम-परिवार रहैन सभ मीलि मोहनकेँ विदा करैले दिल्ली हवाइ अड्डापर पहुँचल छला।

जहिना गाम-घरक लोक जे मनचोभिया नाच सभ दिन देखैत आएल रहैए आ एकाएक जँ मनभोगिया नाच देखैए तँ ओकर मन वौला जाइत अछि, तहिना मोहनोकेँ भेल। तहूमे भोँटरो लिस्टसँ आ सर्टिफिकेटोसँ अपनाकेँ वयस्क बुझि अपन भविसक निर्माण करैक अधिकारी सेहो बनियेँ गेल छल। अविवाहितो छेलाहे। विदेश गेला पछाइत सालक आखिरी मासमे मोहन गाम आएल।

चरिमसिया मौसमसँ एकमसिया मौसम पाबि मोहनक देहक रंग सेहो बदैल गेल। जे पहिने कनी स्यामी छल ओ बदैल कऽ ओते बदामी भाइये गेल छल जेते पहिने स्यामी छल।

ललितकेँ डेढ़ साल नोकरी बँचले रहैन। तैबीच गाम एला पछाइत दोसर खेपमे जे मोहन विदेश गेल ओ दोहरा कऽ गाम नइ आएल। खोप-तोप ननहि चिड़ै जकाँ मोहन उड़ि गेल। जेतए नोकरी करै छल तेतै बिआहो कऽ लेलक।

भाय जखन बिआह केलौं तँ रहैले–माने जिनगी जीबैले–घरो ने चाही। आ जखन घर भऽ जाएत तँ ओही निच्चाँमे घराड़ियो ने रहिते छइ। आ जखन घराड़ीए बदैल जाएत तखन लोक अपन घर-घराड़ी छोड़ि लोक अनेरे वौआएत सेहो नीक थोड़े हएत। दोहरा कऽ मोहन गाम नइ आएल।

डाक्टरी पास केला पछाइत सोहनकेँ सेहो दिल्लीक अस्पतालमे नोकरी भेल। नीक अस्पताल, रहैयो-सहैक नीक बेवस्था।

पैंतीस बर्ख नोकरी केला पछाइत ललित दरबज्जापर बैस अपन जिनगी दिस निहारि रहला अछि। तीन मास सेवा निवृत्तिक भऽ

गेलैन। ओना ललितकेँ गाममे कियो ‘ललित काका’, तँ कियो ‘ललित बाबा’, तँ कियो ‘ललित भाय’, तँ कियो-कियो ‘मास्सैब’ सेहो कहिते छैन। मुदा आइ ललित अपनाकेँ परिवारे-समाज नहि, जिनगीमे सेहो असगरे पाबि रहल छैथ। मनमे कखनो-कखनो ईहो उठि रहल छैन जे लंका जकाँ कियो ने वंशमे बँचल जे एकनोर कनबो करत।

दमा रोगसँ पीड़ित पत्नी सोहन लग रहि अपन इलाज दिल्लीमे करबा रहली अछि। ओना दुनू परानी सोहनकेँ काजक बोझ एते अछि जे समैपर दवाइयो आ खेनाइयो माएकेँ पुराएब कठिन भाइए रहल छैन। भरि दिन असगरे माए डेराक एकटा कोठरीमे ओछाइन धेने रहै छैथ।

अपनासँ हजारो किलोमीटर हटल ललित अपन पत्नी, बेटा आ पुतोहुक स्वरूप देख रहला अछि।

अपन तीनू भाँइक भैयारी परिवारक बीच एते दूरी बनि गेल छैन जे एक-दोसरक मुहोँ देखब अशुभ बुझि रहल छैथ। ओना दूरी बनैक कारण ईहो रहल छैन जे अपनो ललित भतीजा-भतीजीकेँ अपन नहि बुझि आन बुझलैन। ने एको दिन पढ़ौलैन आ ने एको पाइ पढ़ै-लिखैमे दऽ भैयारीपन निमाहलैन।

आइ बेर-बेर ललितक मनमे उठि रहल छैन जे की केलौं, एक पढ़ल-लिखल शिक्षक बनि की केलौं? मुदा लगले दोसर विचार मनकेँ धोंपैत कहै छैन जे की अपनो जिनगीक आँट-पेट अपने नइ बुझि पेलौं? आइ जइ अवस्थामे पहुँच गेल छी, तइमे सहयोगीक खगता अछि की नहि, मुदा ओ औत केतए-सँ? अखन तक नोकरीक काजमे अपनाकेँ बहलौने छेलौं, दिन-राति हल्लुक बनि ससैर रहल छल। मुदा आब तँ कटने नइ कटि रहल अछि। हाथसँ काज छीना गेल। खेत-पथार जँ ऐछो तँ जिनगीमे ने कहियो खेती केलौं आ ने ओकर महिरम

बुझलिऐ। ने करैक लूरि अछि आ ने बुधि। आब जँ करैक कोशिशो करब तँ लोको हँसत आ अपनो जिनगीकेँ हँसेबे करब। जखने जिनगी हँसिया बनत तखने ने लोक ईहो कहबे करत जे पढ़ल सुगाकेँ बौकपन देखियौ।

◌

शब्द संख्या : 3775, तिथि : 26 अप्रैल 2017

हरवाहि

बैशाख मासक अन्हरिया पख। फागुनेसँ जे बिआह-दुरागमन आ उपनैन-मुड़नक लगन पकड़लक से दिनो-दिन बढ़िते गेल। ओना चैतमे बिआह-दुरागमन रूकल मुदा उपनैन-मुड़न चलिते रहल। चैतक सकराँइत बितते उपनैन-मुड़नक संग बिआहो-दुरागमन जोड़ पकड़लक। जोड़ो किएक ने पकड़ैत, तेते ने लोककेँ केरा पौंच जकाँ सखा-सन्तान होइए जे बेटा-बेटीक बाढ़िये आबि गेल अछि। जखने परिवारमे बेटा-बेटीक बाढ़ि औत तँ बिआहो-दुरागमनक बाढ़ि एबे करत।

आन सालक बैशाखसँ ऐ बेरक बैशाखक रोहानी सेहो सोहंतगर बनि गेल। किएक तँ जइ हिसाबे ऐ बेर शीतलहरी नइ भेल आ अगतेसँ सूर्य अपन धाही देखबए लगल तइ हिसाबे बैशाखक धू-धू धधकैत मौसम रहैत मुदा से नइ भऽ वसन्त रीतुक जे उतार मासक मदमस्त मधुर-सत्ता हेबा चाही से भऽ गेल। तेकर कारणो भेल। कारण भेल जे शीत-पालामे आम-जामुनक फूलो आ मोजरो कठुआ-कठुआ झड़ि जाइ छल से नइ झड़ल। तँए अगते फागुनसँ गाछ-बिरीछक डारि-पल्लो फूल-मोजरसँ जमीन दिस लबि-लबि निच्चाँ-मुहेँ भऽ गेल।

सोहंतगर समए पौने गाछ-बिरीछमे दनो-फड़ नीक पकड़लक। जइसँ बैशाख चढ़ैत-चढ़ैत माने जुड़शीतल पाबैन होइत-होइत जहिना

आमक गाछ तहिना जामुनक गाछ फड़सँ लदि लटैक गेल। ओना, सुभ्यस्त समए बनैक दोसरो कारण भेल। जहिना फगुआसँ तीन दिन पहिने तेहेन बरखा भेल जे दोहरा कऽ माघक मेघपनकेँ घुमा अनलक, जइसँ एक दिस सूर्जक प्रखर प्रभा–माने शीत-पालासँ स्वच्छ वायुमण्डल–तँ दोसर दिस माघक मेघपन पौने मौसममे मस्ती आबिये गेल। से खाली फागुनेक बरखा-टासँ नहि भेल। चैतक चढ़ैत प्रखरताक बीच रामनवमीक पराते, तेहेन झमझमौआ बरखा भेल जे बिगड़ैत मौसमक चेहरामे पुन: जुआनी आनि रोहानी भरि देलक।

बैशाख मासक अन्हरियाक सप्तमी तिथि आ जुड़शीतल पाबैनक तेसर दिनक नौत रूपलाल भायकेँ मात्रिकसँ एलैन। ममियौत भाय–अधिकलाल–क पोतीक बिआह छिऐन।

ओना रूपलालक गामोमे–हित अपेछितक ऐठाम–तीन गोरेक बेटीक बिआह छिऐ, मुदा रूपलाल भाय मात्रिक जेबे करता। गाममे दोसरो-तेसरो समांग सम्हारि लेतैन।

रूपलाल भाइक मात्रिक चालीस किलोमीटरक दूरीपर छैन। जाबत किलोमीटरक नाप नइ आएल छल ताबत चौबीस-पचीस माइल बुझै छला, माने बारह कोस, मुदा आब तँ माइल मेटाइये गेल आ कोस सेहो कोसो दूर भेल जा रहल अछि। ओना, पहिने दुनू गाम–माने रूपलाल भाइक गाम- 'सोहनपुर' आ मात्रिक- 'रघुनाथपुर'–दरभंगे जिलामे छल मुदा आब सोहनपुर मधुबनी जिलाक उतरबरिया-पुबरिया आ 'रघुनाथपुर' दरभंगा जिलाक दछिनबरिया-पुबरिया दिगारमे पड़ैए।

बिआहक दिन सबेरे-सकाल रूपलाल भाय जलखै कऽ पोताक संग मोटर साइकिलसँ मात्रिक विदा भेला। ओना दरभंगा जिलाक पुबरिया इलाका–जे धार-धूरक इलाका छी, रस्ता-पेरा नीक नहियेँ छै,

मुदा रूपलाल भाय मात्रिक नइ जेता से मन नहि मानि रहल छैन, जेबे करता।

चालीस किलोमीटर जाइमे मोटर साइकिलसँ घन्टो भरिसँ कम्मे समए लगैए मुदा रस्ता-पेराक दुआरे अढ़ाइ-तीन घन्टा लगलैन। साढ़े दस बजे रूपलाल भाय मात्रिक पहुँचला। बेटीक बिआह छी तँए सभ समांग सभ दिस काजमे लागल छल। ओना, अधिकलाल भाय पचासी बर्ख टपि चुकल छैथ। देह-दशासँ तँ दस बर्ख आउरो जीबे करता मुदा कानसँ तेहेन बहीर भऽ गेल छैथ जे अपनाकेँ अकाजक मानि नेने छैथ। भरि दिन दुआरे-दरबज्जापर रहै छैथ। दरबज्जेपर खेनाइ-पीनाइ-सुतनाइ-बैसनाइ होइ छैन आ दरबज्जाक आगूमे नहाइ-धोइले कलो छेबे करैन। बैसल-बैसल जखन मन अकछा जाइ छैन तँ दरबज्जेक आगूमे टहैलियो-बुलि लइ छैथ। परिवारमे एते सुविधो बेटा सभ देनहि छैन जे समैपर चाह, जलखै आ खेनाइ-पीनाइ सेहो भेट जाइ छैन।

तैबीच अधिकलाल भाय नहाइले कलपर पहुँचले छला कि रूपलाल पहुँचला। रूपलालकेँ पहुँचते अधिकलाल भाय नहाएब छोड़ि कलपर सँ दरबज्जा दिस बढ़ला।

तैबीच मोटर साइकिलसँ उतैर अधिकलाल भाय लग आबि पएर छुबि गोड़ लगलखिन, मुदा बजला किछु नहि। किए तँ रूपलाल भायकेँ सेहो बुझले छैन जे अधिकलाल भाय सोलहन्नी बहीर छैथ। तँए कुशल-समाचार किछु ने पुछलखिन। ओना, अधिकलाल भाय कानेटा सँ बहीर छैथ मुदा बोलियोमे टाँस छैन्हे आ आँखियो नीक रहने देखबो करिते छैथ।

घरे-अँगनामे समांग काज करै छल तँए रूपलाल भाइक नाओं सुनिते एकाएकी सभ दरबज्जापर आबए लगल।

अधिकलाल भायकेँ गोड़ लागि रूपलाल कलेपर पहुँच हाथो-पएर धोलैन आ गरदा-सभ जे देहपर लटकल छेलैन तेकरा अंगपोछासँ झाड़ि लेलैन। दुनू ममियौत-पिसियौत भाय दरबज्जापर आबि बैसला। तैबीच अधिकलालक जेठ बेटा–जीबछ–दरबज्जापर अबिते रूपलाल भायकेँ गोड़ लागि बाजल-

"काका, रस्ताक झमारल छी, तहूमे तेहेन रौद अछि जे तबैध गेल हएब तँए पहिने कनी शरबत पीब लिअ। पछाइत नहाएब-सोनाएब।"

जीबछक बात रूपलाल भायकेँ सोहंतगर लगलैन तँए चुपे रहला। मुदा बिच्चेमे अधिकलाल भाय रूपलालकेँ कहलकैन-

"भाय, गरदा-धूरा सौंसे देह पड़ल छह, तँए पहिने नहा लएह।"

ओना, रूपलाल भाइक मन रहैन जे गरमाएल आएल छी तँए पहिने कनी काल जीरा ली, पछाइत नहाएब-सोनाएब। मुदा तैबीच दोहरा कऽ अधिकलाल भाय बजला-

"भाय, पहिने नहा लएह, पछाइत जे हेतै से बुझल जेतइ।"

अधिकलाल भाइक विचार रूपलाल भायकेँ कनी अधलो बुझि पड़ैन मुदा जेठ भाय दुआरे विचारकेँ रोकबो नीक नइ बुझैथ। एकताले अधिकलाल भाय तेहरा देलखिन-

"भाय, पहिने नहा लएह।"

तैबीच गिलास आ लोटामे शरबत नेने सुशील पहुँच गेल। सुशीलक हाथमे शरबत देख अधिकलाल भाय आगू बजैसँ दम कसलैन।

रूपलाल भाय शरबत पिबते रहैथ कि पानो आबि गेलैन। पान खा रूपलाल भाय जीबछकेँ पुछलखिन-

“बौआ, केते गोरेक परिवार छह?”

ओना, रूपलाल भाय सालमे एक बेर, दू बेर मात्रिक अबिते छैथ, मुदा टोल जकाँ ममियौतक परिवार बनि गेल छैन। चारिटा बेटा आ तीनटा बेटीक संग पोता-पोती, नाइत-नातीनसँ घर भरल छैन। परिवारो तँ सभ दिन असथिरे नइ रहैए। धियो-पुता बढ़ने तँ परिवार बढ़िते रहैत अछि। ओना, मृत्यु भेने घटबो करैए। मुदा जन्म-मृत्युकेँ जनैमे कनी अन्तर अछिए। माने ई जे बाल-बच्चाक मृत्यु हौउ आकि चेतन-बुढ़क ओ घटना रूपमे बुझल जाइए तँए ओकर परसार बेसी होइ छै मुदा जन्म तँ से नइ छी, ओ तँ घटनाक घटित नहि वृद्धिक बढ़त छी, तँए ओते नइ पसरैए। तहूमे बहरबैया माने परदेशिया परिवार भेने आरो झँपाएल रहिते अछि। मने-मन परिवारक हिसाब जोड़ैत जीबछ बाजल-

“काका, एकसँ केतेक भेल से कहै छी।”

एकसँ अनेक भेल वा एकसँ एक्कैस भेल ई बात रूपलाल भायकेँ चनका देलकैन। मनमे उठलैन- छिड़ियाएल जगह रहने परिवारक रूप सेहो छिड़िया जाइते अछि मुदा एक विचारधारा रहने परिवारक धारमे केतौ बान्ह पड़ैक संभावना नइ रहै छइ। जेकरा लोक एकसँ एक्कैस मानि चलैए...।

मुदा लगले मनक कूह हटलैन माने रूपलाल भाइक मनकेँ जे कुहेस छाड़ए लगल छेलैन ओ छँटलैन। छँटिते बजला-

“से की बौआ?”

तैबीच जीबछ अपन परिवारक–जैठामसँ रूपलाल भाय फुटला तैठाम तकक–हिसाब मने-मन सेरिया नेने छल। रूपलाल भाइक मुहसँ खसिते जीबछ बाजल-

“काका, हमर परबाबा भेला आ अहाँक नाना। तैठामसँ कहै

छी।”

बाँसक बीट जकाँ रूपलाल भाय ममहरकेँ बिटिया कऽ पकड़ेलैन। पकड़ाइते मन असथिर भेलैन। बजला-

“बड़बढ़ियाँ।”

रूपलाल भाइक बात सुनि जीबछ सहैट कऽ परबाबा लग पहुँच सहचेत होइत बाजल-

“परबाबाकेँ दू सन्तान। एक बेटी, जे अहाँक माए आ हमर परदीदी भेली। आ एक बेटा जे अहाँक मामा आ हमर बाबा भेला।”

ओना दीदी तक रूपलाल भाय बुझै छला मुदा भातीजक मुहेँ ‘परदीदी’ सुनि मनकेँ आरो शान्त केलैन।

शान्त ई केलैन जे बुधि बपजेठ होइए तँए जँ निच्चोँ-खाढ़ीक मुहेँ आबए तँ मानि ली...।

मुड़ी डोलबैत रूपलाल भाय बजला-

“हँ, से तँ भेबे केला।”

जीबछ बाजल-

“परदीदीक हिसाबक भार अहाँक भेल आ परबाबाक हमर।”

रूपलाल भाय बजला-

“सेहो बड़बढ़ियाँ।”

जीबछ बाजल-

“बाबाकेँ तीन बेटा आ तीन बेटी। तीनू बेटीक हिसाब छोड़ि दइ छी। तीनू भाँइसँ हमर तेरह भैयारी अछि। तेरहो भाइकेँ बाबन-तीरपनटा सन्तान अछि।”

जीबछक बात सुनि रूपलाल भाइक मुहसँ मखानी लाबा फुटए

लगलैन, मुदा मने-मन अपनो परिवारपर नजैर खिरौलैन तँ बुझि पड़ैन जे ओइसँ हमरे कोन कम अछि। भलेँ अखन अठारहे गोरेक परिवार किए ने हुअए मुदा छी तँ टपले। मनुखक बाढ़ि कि अल्लू-कोबी जकाँ होइए जे कोबीमे एकटा फल हएत आ अल्लूमे कमसँ कम आठटा फड़ हेबे करत। भलेँ छोट हुअ कि पैघ खाली रोगहा गाछ छोड़ि कमसँ कम आठटा फड़बे करैए।

मुदा मनुखक वंश तँ से नहि अछि केतौ दर्जनो फड़त आ केतो एकोटा फड़त आ केतो नागा सेहो हेबे करत।

ओना अधिकलाल भायकेँ मने-मन दुनू गोरेक बीचक–माने जीबछ आ रूपलालक–गप-सप्पसँ खुशियो होनि आ तामसो उठैत रहैन। तामसक कारण रहैन जे अधिकलाल भाय पएरे सोहनपुर अबै-जाइ छला तँए चलैक थकान आ थकानक-भुखान केहेन होइए से अपन अंगेजल रहबे करैन। तँए होनि जे पहिने रूपलाल नहा कऽ खा लैथ पछाइत निचेनसँ गप-सप्प हेतइ। ओना दस बर्खसँ अधिकलाल भाय सोहनपुर नइ आएल छला। तँए बान्ह-सड़क आ गाड़ी-सवारी मनमे नइ उठै छेलैन।

हलाँकि रूपलाल सेहो गप-सप्प करैसँ बर्जित करए चाहै छला। तेकर कारण मनमे रहैन जे बेटी-बिआहक दिन छी, रंग-रंगक अनेको काजक बाढ़ि तँ परिवारमे आबिये गेल अछि, तँ जँ ओकरा छोड़ि गप-सप्प करब तँ काज पछुए-बे करत। जे अनुचित तँ भेबे कएल। अखन तँ ओतबे समए गप-सप्पमे गमेबा चाही जेते काजक दौड़क अछि, माने काजसँ जुड़ल अछि। परिवारक ऐतिहासिक गप तँ पछाइतो निचेन भेलापर कएल जा सकैए। मुदा जखन घरबैये ओइ महतकेँ मानि नइ दऽ रहल अछि, तखन...।

मुदा लगले रूपलालकेँ अपने मनक विचार उत्प्रेरित केलकैन।

उत्प्रेरित ई जे जइ काजे आएल छी आ सोझमे बाधित भऽ रहल अछि तैठाम मुँह बन्न राखब–माने नइ बाजब–विचारक चोरि तँ भेबे कएल। ओना परिस्थितिवश अनेको खण्डन-मण्डन अछि मुदा से अखन नहि। ‘बहिरा नाचे अपने ताले’ जीबछक संग रूपलाल गप-सप्प करै छला आ अधिकलाल भाय मने-मन अपन जिनगीक इतिहासक पन्ना उनैट रहल छला।

उनटैत-उनटैत एकटा ओहन जगह आबि गेलैन, जैठाम अधिकलाल भाइक मन फुटि पड़लैन। फुटिते आँखिमे नोर लबालब भरि गेलैन। जे रूपलालो, जीबछो आ परिवारक आनो-आनो देखए लगला। देवालयक देव जकाँ अधिकलाल भाइक सुरता मुरत बनि गेलैन। टकटकी लगा सभ अधिकलाल भायकेँ देखए लगला।

समयक अवसर पाबि अधिकलाल भाइक विचार मनकेँ उद्वेलित केलकैन। उद्वेलित होइते मनमे उठलैन- डारिक चुकल बानर आ अवसरक चुकल मनुख, दुनू बरबैर! कमसँ कम अखन एते तँ हेबे करत जे पाँच बर्खक बच्चा माने ओहन बाल-बोध जेकर बुधि अखन अँकुरिये रहल छै, आ अस्सी बर्ख आगूक जिनगी नेने ठाढ़ अछि, तैठामसँ लऽ कऽ सियान धरिक बीच जँ अपन इतिहास नइ लिख लेब तँ परिवारक इतिहास केना गढ़ल जाएत। के एहेन दाता-दिनानाथ छैथ जे हमरो सन लोककेँ ऐ धरतीपर देखता।

पचासी बर्खक अधिकलाल भाय सत्तैर बर्खक पिसियौत भाएकेँ कहलखिन-

“रूपलाल, तोरा ऐठाम बीस बरख हरवाहि केने छी।”

अधिकलाल भाइक बात मुहसँ खसिते सौन-भादोक बदरियाएल मेघ जकाँ वातावरण बनि गेल। रूपलालक मनमे अधिकलाल भाइक बात विस्तारसँ बुझैक जिज्ञासा जगलैन।

जिज्ञासु रूपलाल बाजल-

“से की भाय?”

‘से की’ सुनिते अधिकलाल भाइक दुनू आँखिसँ दुखक ओ नोर जे सुखि कऽ सुखिया-सुखिया पचासी बर्खक नयन-कोणसँ टघरैत प्रेमिल धार बनि निच्चाँ उतरए लगलैन।

ओना बचपनक देखल रूपलालो भायकेँ छेलैन्हे, मुदा ऐठाम तँ परिवारक निच्चासँ ऊपरक खाढ़ीक नजैर नजरा देलकैन, तँए अपनो ओही रूपकेँ पकड़ैत रूपलाल पुछलखिन-

“से कहिया भाय साहैब?”

‘से कहिया’ सुनिते अधिकलाल भाइक मनमे एकाएक ओ समए छड़ैप कऽ आबि गेलैन जइ समए दस बर्खक बच्चा छला, मन पड़लैन-पिताक तीनू भाँइक भैयारीमे भिनौजी भऽ चुकल छल। नबे बर्खक रही तहिये बाबू मरि गेला। ओही बेर पूबसँ कोसीक पलाड़ी आ पच्छिमसँ कमलाक पलाड़ी आबि रघुनाथपुर सहित केतेको गामकेँ बाढ़िक इलाका बना देलक। एक जोड़ बरद आ सात बीघा खेत अपन हिस्सामे छल। माए बच्चेसँ मेहनती छेली।

ओना, भार पड़ने कोढ़ियोकेँ पानि चढ़िये जाइ छै मुदा से नहि, छेहा किसानक बेटी छेली, तँए किसानी जिनगीक सभ अनुभव छेलैन। माल-जाल पोसैसँ लऽ कऽ खेती-पथारीक सभ लूरि सीखनौं छेली आ करितो छेली। पिताकेँ मुइला पछाइत माए कहलक- ‘अधिकलाल, किछु भेलौं तँ हम जनिजातिये ने भेलौं। हर जोतब तँ लोक हँसबो करत आ खिदहाँसो करत। आब तँ तोहूँ गोठगो भेलह। अपन काज छी, नइ एक दिने तँ दू दिने चाहे तीन दिने कए तँ सकबे करै छह। बाँकी सभ काज हम सम्हारि लेब।’ नबे-दस बर्खक रहबे करी, हरवाहि करब शुरू केलौं...।

अपन जिनगीक अनुभवकेँ हथियार बना अधिकलाल भाय बजला-

“भाय, तहिया हम बारह बर्खक छेलौं, गाममे छहमसिया बाढ़ि पकैड़ लेलक। माने शुरू जेठसँ कातिक तक बाढ़िक पानिसँ गाम डुमए लगल, जइसँ छह मासक खेतीए दहा गेल। माए कहलक- ‘बौआ, अपना लूरि छह, दीदीए ऐठाम जा हरवाहि करह।’ अपनो नीक बुझि पड़ल, किए तँ बाढ़िक पानि लगने गाछी-कलम तँ सुखिये गेल जे गामक उजार सेहो शुरू भऽ गेल। ओइ समए कमला धार गामसँ कोस भरि पच्छिम आ कोसी तीन कोस पूबमे बहैत रहइ।”

ओना रूपलालकेँ माए सेहो सभ बात कहने रहथिन, बुझले रहैन। मुदा ऐठाम तँ मात्रिकोक परिवार आ कुटुमो परिवारक लोक सभ छैथ, जिनका सभकेँ नइ बुझल छैन, जँ बुझलो हेतैन तँ मनसँ हटने बिसैर गेल हेता, तँए सभकेँ बुझब जरूरी बुझि रूपलाल पुछलखिन-

“भाय, जखन गामसँ माने रघुनाथपुरसँ दुनू धार हटले छल तखन केना..?”

रूपलालक बात सुनि अधिकलाल भायकेँ जेना मन पड़लैन तहिना बजला-

“भाय, गाम केना उपटल से पछाइत कहबह। पहिने ओइसँ पैछला सुनि लएह। शुरूहे जेठमे जखन धार फुलाएब शुरू होइ, तखने जोड़ो भरि बरद नेने तोरा गाम–सोहनपुर–चलि जाइ छेलौं।”

बिच्चेमे रूपलाल पुछलकैन-

“सोहनपुर जाइमे केते समए लगए?”

अधिकलाल भायकेँ बुझले बात रहैन। बजला-

“रातियेमे माए रोटी-तरकारी बना कऽ रखि लिअए आ जखने तीन बजे भोरमे चिड़ै डकए लगै आकि उठा दिअए। उठिते दुनू बरदोकेँ खाइले दऽ दिऐ आ अपनो मुँह-हाथ धोइ कऽ खा ली। जखन रस्ता-पेरा सुझह लागए माने देखए लगिऐ कि संग केने माए तीन कोस आगू रसियारी तक टपा घुमि जाए आ हम भरि दिने तोरा ऐठाम पहुँची।”

बिच्चेमे रूपलाल पुछलकैन-

“रस्ता-पेरामे बरद हरानो करैत रहए?”

एकाएक जेना अधिकलाल भाइक मन अपन सत्तैर-बहत्तैर बर्ख पूर्व कएल काजपर पहुँच गेलैन। पहुँचबो केना ने करितैन। अधला काज थोड़े छी जे पनचैतीक पंचो सभ कहैत जे अखनसँ बिसैर जाउ। जे जिनगीक जीवंन्त इतिहास छी ओकरा केना लोक बिसैर जाएत। अधिकलाल भाय बजला-

“भाय, जइ बरदक संग चौबीस घन्टाक सम्बन्ध रहै छल ओ रस्ता-पेरामे हरान किए करैत, कोनो कि मनुख छल जे सभ किछुकेँ बिसैर पॉकैटमारी कैये लइत। पशु तँ पशु होइए किने।”

गप-सप्पक वृहद रूप देख रूपलाल भाय जीबछकेँ कहलखिन-

“बौआ, तोहर बेटीक बिआह छिअह, हम अनतैक भेलौं आ भाय बहीरे छैथ, दुनू निकम्मे भेलौं तँए मड़बाक तैयारी तँ तोरे करह पड़तह।”

रूपलालक विचार जीबछ जेना बुझि गेल तहिना बाजल-

“हँ काका, कौल्हुको कएटा काज पछुआएले अछि!”

जीबछकेँ एकाएक उजगुजाइत देख रूपलाल कहलखिन-

“पछुआएल अछि तँ की हेतै, बिआहक प्रकरणो तँ अखन

पछुआएले छह, आ साँझ तक ओरियान-बात करैक समैयो छहे। सभ समांग हाथे-पाथे लगि जाह, लगले काज समटा जेतह।”

काज करैबला सभ काज दिस बढ़ला। खाली आठ-दसटा धिया-पुता आ अधिकलाल भाइक संग रूपलाल दरबज्जापर रहि गेला।

लोकक भीड़ हटिते अधिकलाल भाइक मनमे खुशी एलैन। खुशीक कारण भाइक मनमे जे रहल होनि मुदा अपना बुझि पड़ल जे जेहेन शान्त-चित्तसँ अपन जिनगीक बात अधिकलाल भाय करए चाहै छैथ ओहने शान्ति भेटलैन अछि। धिया-पुताकेँ दमसबैत अधिकलाल भाय बजला-

“चुपचाप शान्तसँ मनुखक बच्चा जकाँ बैस कऽ दुनू भैयारीक गप-सप्प सुनै जाइ जो नहि तँ जे जे कच्चर-कुच्चर करमे तेकरा कान पकैड़-पकैड़ भगेबौ।”

मुस्कियाइत अधिकलाल भाय रूपलाल दिस देखए लगला। ओना रूपलालो अपन बदलल जिनगीक विचारे अधिकलाल भाइक बदलल रूपकेँ देखिये रहल छला।

जइसँ अधिकलालो भाइक मनमे बिसवास जागिये गेल छेलैन। किए ने जगतैन, जिनगीमे बिसवास तखन जगबे करै छै किने जखन जिनगीक अनुरूप लोक समयक मुकाबला करैत चलैए। से तँ अधिकलाल भायकेँ छेलैन्हे।

जहिना मनक बिसवास जगिते लोक बताह जकाँ बड़बड़ाए लगैए तहिना बड़बड़ाइत अधिकलाल भाय बजला-

“भाय, आइ केहेन शोभा-सुन्दर अछि जे दुनू भाँइ एकठाम बैस घर-परिवारक यज्ञकृत्ति देख रहल छी!”

अधिकलाल भाइक कान ने बहीर भऽ गेल छैन मुदा जहिना मन

निरोग छैन तहिना देहो-दशा चाकर-चौरस छैन्हे।

रूपलाल बजला-

“भाय, आब तँ लोक तीस-चालीस बर्ख धरि केन्सर-सन रोगकेँ देहमे पचबैत जीब सकैए, अहाँ तँ सहजे सोल्होअना निरोग छी, तखन पचास बर्ख आरो किए ने जीब।”

ओना, कानक बहीर अधिकलाल भाय छैथ तँए सोल्होअना नै सुनि सकला मुदा इशारामे पनरहअना तँ बुझबे नहि मानबो केलैन। मानबो किए ने करता- कोन आन्हर अपनाकेँ आन्हर बुझैए आकि बहीरा बहीर बुझैए जे अधिकलाल भाय बुझितैथ। सभ जखन अपने ताले नाचैए तखन अधिकलाले भाय किएक नहि नचता।

नचैत अधिकलाल भाइक मुहसँ निकललैन-

“भाय की कहबह आ केते कहबह। हमरे सन अखज लोक अछि जे अखनो तक जीबैए।”

अधिकलाल भाइक बात जेना रूपलालक मनकेँ हिला देलकैन, मुदा अपनाकेँ सम्हारैत अधिकलाल भाइक कानमे मुँह सटा पुछलकैन-

“भाय साहैब, सोहनपुरमे हरवाहियेटा करै छेलिऐ आकि दोसरो-तेसरो काज?”

कानमे सटि कऽ कहने रूपलालक सोल्होअना बात अधिकलाल भाय सुनि बजला-

“भाय माइयक तेते दुलारू बेटा छेलौं जे हरवाहि छोड़ि ने दोसर-तेसर काजे करए दिअए आ ने सीखए देलक। सभ काज अपने करए।”

बजैत-बजैत अधिकलाल भाइक मुँह मुस्कियाए लगलैन।

भाइक मुस्की देख रूपलाल बजला-

“एतेटा जिनगी एक्के लुरिये जीब लेलिऐ।”

रूपलालक बात सुनि अधिकलाल भाय वेरागी जकाँ बजला-

“भाय, दुनियाँ किछु छी जे अनेरे हाय-हाय करितौं। एकोटा लूरिकेँ जँ बिसवासक संग, माने ओकरे वृहद ज्ञान बनबैत, जिनगीमे उतारि चलैत रही तँ जिनगी कटिते अछि।

ओना वृन्दावनक जंगल-झाड़, बाध-बोन, धार-धुर आ गाछ-बिरीछपर झुलैत रासमे रसियाइत हँसैत-खेलैत राधा-कृष्णक विराट जिनगीक क्रिया-रूप सबहक सोझमे अछिए।”

अधिकलाल भाइक मनक बुलन्दी देख रूपलाल बजला-

“भाय साहैब, जखन कोस भरि पच्छिम कमला-धार आ तीन कोस पूब कोसी-धार छल तखन गाम केना उजैर गेल?”

रूपलालक बात सुनि अधिकलाल भाय पाछू उनैट साठि-सत्तैर बर्ख पैछला धियान केलैन। धियानमे अबिते बजला-

“भाय, कोसीमे बान्ह बनल, कमला ओहिना छल, माने छहर नइ बनल रहै, उत्तरमे माने तोरा सभ दिस जमीन ऊँच अछि, ओम्हरेसँ धार अबैए। दुनू कातसँ ऊपरका पानि घेराइत अबैत बान्ह तोड़ि देलक आ पच्छिम दिस धारे खुनि देलक, जइसँ सन्मुख कोसी एकेबेर दू कोस पच्छिम घुसैक आएल। तहिना पच्छिमसँ कमला सेहो गाम आबि धार खुनि लेलक, जइसँ गामे उपैट गेल।”

बजैत-बजैत अधिकलाल भाइक मन महाभारतक अभिमन्युक मन जकाँ बेथित हुअ लगलैन। जखन अभिमन्यु चक्रव्यूहमे फँसल छला। जिनगीमे ओहन अनेको समए अबिते अछि जैठाम जीवन-मृत्यु करीब रहैए आ एहनो तँ ऐछे जैठाम दुनूक दूरीमे अन्तर सेहो रहिते

छइ।

अधिकलाल भाइक मन्हुआइत मुँह देख रूपलालक मनमे उठलैन जे कहिऐन- ‘भाय साहैब! नव घर आ नव घराड़ी सभकेँ ने नीक लगै छै, तइले अहाँ किए मन्हुआइ छी।’ मुदा बजला नहि।

◌

शब्द संख्या : 2784, तिथि : मजदूर दिवस 2017

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** ‘विदेह सम्मान’, ‘विदेह भाषा सम्मान’, ‘टैगोर लिटिरेचर एवार्ड’, ‘वैदेह सम्मान’, ‘यात्री सम्मान’, ‘विदेह बाल साहित्य पुरस्कार’ तथा ‘कौशिकी साहित्य सम्मान’सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह।○○○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-81-936422-4-5

कथा साहित्य

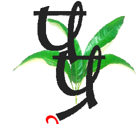
एगच्छा आमक गाछ

जगदीश प्रसाद मण्डल



एगच्छा आमक गाछ

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

एक दिस कोनो काजक मूर्तिरूप अछि
दोसर दिस खढ़-माटिसँ गढ़ल...
तैठाम देखिनिहारोकेँ तँ किछु दायित्व बनियेँ जाइ छै..!

ISBN : 978-93-87675-00-1

दाम : ₹ 251/-

तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

EGACHCHHA AAMAK GACHH
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

प्रीगर शत्रु

समाचार सुनिते लालबाबाक उड़ैत मन बाजल–

“हाय रे बा, ई की भेल? दुनियाँमे सभ किछु झूठे भऽ गेल!”

कोनो भाँजे समाचारक जड़ि भँजियेबे ने करैन। हिसाब बैसबैत जोड़ऽ लगैथ तँ ओतए मन ओझरा जाइन जेतए सभसँ प्रीगर सभसँ तीत केना भऽ गेल। मन पस्त भऽ जाइन...।

फेर अधमरू मुसरी जकाँ चारि बेर जखन ऊपर-निच्चाँ दम लैथ तखन कनी ऑक्सीजन भेटने जान-मे-जान अबैन। ऐबते फेर अपने विचारमे ओझरा कऽ खसि पड़ैथ। खैसते बकारे बन्न भऽ जाइन जे सोचै-विचारैले तँ बजौ-भुकौ ने पड़त, से की बाजब, एहेन बात कहियो सुननौं ने छेलिऐ, से भऽ गेल, जेकरे लग बाजब सएह नै बिसवास करत तँ बाजब केतए आ सुनत के, तखन अपन मनक मरजीकेँ अरजी केना बना पएब..?

मने-मन जेते लालबाबा विचार करैथ तेते मन पस्त भेल जाइन। ओना, चाइनपर पसेनाक आगमन भेने छोट-छोट स्वर्ण ज्योति जकाँ चमकैन। मुदा मन खापैड़क तीसी जकाँ चनचनाइन–

“कहू जे लोक केतए रहत? केना बसत!”

फेर जेना मनमे उठैन, कहू जे बनरहो मनुख रामधाम गेने

देवतुल्य भऽ गेल आ चिक्कन चुनमुन सोनाक चिड़ै सन मनुख एहेन..!

'एहेन'पर ऐबते मन अँटैक कऽ भनभनाए लगैन–

"कहू! ई केहेन भेल जे नहाइ-ले गेलौं आ पोखरिये घाटपर ओंघरा कऽ पानिमे डुमि गेलौं..! बाप रे अतहतह गाममे होइए!"

असगरे अपने मने लालबाबा बड़बड़ाइत-भनभनाइत रहैथ मुदा कियो ने सुननिहार आ ने संगे पुरनिहार। जेकरा कहबै तेकरा काने ने छै आ जेकरा कान छै तेकरा मुँहमे बोले ने छइ। कियो केकरो कहत जे भाग-भाग रे बिना पएरबला, नमहरका नाकबला अबै छौ..! तँ कियो खोंटत नमहरका नाकबला की भेल। तँ कियो खोंटत नवका नमहरका..! मुदा तँए कि बिना पएरबला[1] हारि मानि लेत? ओहो ने कहत जे तूँ केना बुझलेँ रे बिनु सिरबला[2]। तँए कि ओ उतारा नइ देत, देबे करत किने। ओ देत जे बिना जानबला कहैए। माने हाथीक देहपर जे घण्टी टनटनाइ छइ। तँए चेत रे बिना पएरबला, घण्टीक अवाज पकड़ नइ तँ घड़ी-घण्टा लैत रहमें...।

मुदा सुनत के? ओना, समए मधमासक मधमेश पहर रहइ, मुदा तैयो लालबाबाक चानिपर पसेना चमकैत रहैन। कखनो पंखा उठा पसेना सुखबए चाहैथ आकि पंखाक ठंढ हवा देहेकेँ सिहरबए लगैन। जइसँ पंखा रखि दैथ। मुदा लालबाबाक चाइनपर जे पसेना उगि रहल छैन ओ केना सूखत?

असगरे दलानपर बैसल लालबाबा कछमछाइत रहैथ।

आने दिन जकाँ गामोक हाल-चाल आ अपनो परिवारक हाल-चाल-बुझैले लालबाबा ऐठाम पहुँचलौं। ओना सब दिन एकठाम बैस सभ गप करै छी। यएह ने भेल एक परिवारजनकेँ दोसर परिवारजनक

[1] डोका
[2] काकोड़

सुख-दुखमे संग चलबक रस्ता। से तँ अछिए। गाममे नव घटना भऽ गेल, तँए अपन परिवारक काजसँ मन उछैट गेल रहए। असगर नीक नइ लगै छल तँए लालबाबा ऐठाम गेलौं। फरिकेसँ देखलयैन तँ बुझि पड़ल जे बाबा कछमछा रहला अछि। मनमे भेल जे नीक हएत हुनकापर नइ नजैर दैत अपन रस्ता धेने जाइ। चारूकात चकोना होइते छैथ जँ नजैर पड़तैन तँ मन असथिर भऽ जेतैन।

लालबाबाकेँ पएर छुबि प्रणाम करै छिऐन, जखन पएर छूब तखन ने मुहों खोलि कहबैन, 'बाबा गोड़ लगै छी।' तँए मुड़ी निच्चाँ केने लग पहुँचलो ने रही कि तइसँ पहिनहि बाबा चहैक उठला–

"घनश्याम बौआ, समाजमे अन्याय होइए! अतहतह होइए!"

ओना जे घटना घटल अछि ओ तँ गामे कि आनो-आनो गामक लोक सुनलक मुदा एते पैघ गामक घटना रहितो सही बात ने कियो बुझि रहल अछि आ ने सुनि बाजि रहल अछि। चुपचाप पएर छुबि कनियेँ जोरसँ कहलयैन–

"बाबा गोड़ लगै छी।"

मुदा बाबाक मन जेना गुम्हरैत रहैन।

गाममे गोपीलाल आ सिनुरलालक बीच दोस्ती। दोस्तीए किए कहबै, एके टोलमे दुनूक घरो आ जातियो एके। स्वजातीय सम्बन्ध, प्रगाढ़ता अनैमे किछु सहयोगी तत्व छीहे। जेना– दूजातिक दू दोस्तकेँ कोनो तेसर ऐठाम पहुँचलापर अपने झलकए लगैए। गोपीलाल आ सिनुरलाल दुनू, एक-तुरिया। बच्चेसँ एकठाम रहने संगियोँमे नमहर संगी माने लंगोटिया संगी जकाँ। ओना, लंगोटिया संगीक माने भेल जे लंगोटा पहीरि संग चलब। से मुदा दुनू गोरेक बीच कहियो ने भेल। भेल एतबे जे विद्यार्थी-जिनगीसँ लऽ कऽ अखन चालीस बरिसक जिनगी धरि बिनु हरहर-खटखटक संगी बनि दुनू संगे चलैत आबि

रहल अछि।

ओना, गोपीलाल आ सिनुरलालक बीच केतेको राजनीतिक चुनाव बीतल, गाम-समाजमे केतेको घटनो भेल, मुदा कनी-मनी कम-बेसी होइतो दुनूक सम्बन्ध पुरबते रहल। देखौआ सम्बन्धमे मिसियो भरि केतौ खोंच-खाँच नहि, मुदा दुनूक दू सोभाव तँए दुनू अपन-अपन उदेसक पाछू किछु विशेष सक्कत। दुनूक दू जिनगी, समाजक धारमे बहैत।

असीरवाद दैत बाबा बजला–

"घनश्याम, मन किछु भरियाएल बुझि पड़ैए, तँए पहिने एकबेर चाह पीबह।"

नाकर-नुकर तँ संगी-साथीमे होइ छै, बाबाक मन चाह पीबाक छैन, तखन मनाही करब नीक थोड़े हएत। बड़ बेसी तँ एतबे ने कऽ सकै छी जे, कनीकाल चाहक ठंढा कऽ पानि बना पीब। चाह पीबते रही कि झिंगुरलाल काका पहुँचला। चालू-पुरजा लोक छैथ। ओना, चालू-पुरजा बहुत रंगक होइ छै से नइ, गाम घरसँ कोट-कचहरी धरिक जानकार छैथ...। लालबाबा अपना मनकेँ कसिया कऽ बान्हि मुस्की मारैत झिंगुरलाल काकाकेँ कहलखिन–

"झिंगुर, आब की..?"

बजैत-बजैत लालबाबाक छाती चहैक कऽ तिलमिला गेलैन। तिलमिलाइते बकार-हरण भऽ गेलैन। झिंगुरलाल काका लालबाबाक दशा देख मनक मोइनमे डुबि गेला। मुदा कोनो घटनाक पूर्व अवस्था आ पाश्चात्य अवस्थामे अन्तर भेने सभ कथुमे अन्तर आबिये जाइ छइ। अखन जे स्थिति अछि, तही अनुकूल ने कियो सोचि-विचारि सकैए। लालबाबाक मनकेँ असथिर करैत झिंगुरलाल काकाकेँ कहलयैन–

"काका, अहाँ ते घर-बाहरसँ जुड़ल छी, तँए कोनो बातकेँ बेसी दूरसँ बुझहै छिऐ। काल्हिसँ अखैन तकमे जेते लोकसँ गप भेल अछि ओइमे पाँचो-टाक एक विचार नइ मीलि रहल अछि, कियो किछु तँ कियो किछु बजैए। अहाकेँ ते बेसी बात बुझल हएत, बाबाकेँ कने नीक जकाँ बुझा दियौन।"

अपन सबाल उठैत देख लालबाबाक मन फुलेलैन, मुदा ओइ फूलक ढेंसरे बना मनमे रखि लेलैन। हमर बात सुनि झिंगुरलाल कक्काक मनमे जेना करियाएल मेघ जकाँ चारू दिस अन्हार पसैर गेलैन। लालबाबाक आगूमे बैसल छी, जिनकर जिनगी अखन धरि गामक उत्थानक दिशामे क्रियाशील रहलैन अछि, गाममे जे गोपीलाल आ सिनुरलालक बीचक घटना भेल अछि, ओ के बुझत। मुदा जे बुझल अछि, जेते धरि कानसँ सुनलौं, सएह ने कहबैन। हमरा आँखिक सोझक घटना तँ छी नहि जे कहबैन हम चश्मदीद गवाह छी।

झिंगुरलाल बजला–

"लालबाबा, जे सुनलौं से कहै छी, काल्हि जे बड़का जलसा भेल रहै से तँ सुननहि हएब?"

लालबाबा तँ किछु ने बजला मुदा बिच्चेमे हम मुड़ी डोलबैत बजलौं–

"हँ।"

हमर 'हँ' सुनि झिंगुरलाल कक्काक मनमे जेना किछु बल जगलैन। बल जगिते सबल होइत बजला–

"जखन गोपीलालक हत्या भेल, ओ समए आ जलसाक समए एके छी।"

झिंगुरलाल कक्काक बात सुनि बजलौं–

“नइ बुझि पेलौं, काका।”

उताहुल मनकेँ रोकैत झिंगुरलाल काका बजला–

“बौआ, अखन टटका घटना अछि। कोनो घटना कि ओहिना होइए पहिने ओ रचल जाइए। तँए अखन एतबे रहए दहक। मास दू-मासमे अपने सभ बुझबहक।”

लालबाबाक मनमे पैछला चुनाव ठहकलैन। ठहैकते उठलैन। गाम राँइ-बाँइ भऽ गेल। के मरत आ के जिअत तेकर कोनो ठेकान नै रहतै..!

जहिना झिंगुरलाल काका लालबाबाक मुँहपर नजैर गड़ा किछु पढ़ि रहल छला, तहिना लालबाबा सेहो झिंगुरलाल कक्काक मुँहपर नजैर गड़ा पढ़ै छला। मुदा हम दुनूक मुँह बकर-बकर देखैत रहलौं।

◌

शब्द संख्या : 1087, तिथि : 26 दिसम्बर 2015

एगच्छा आमक गाछ

सुन्दरपुर गाममे सोनमा बाध अछि। ओना चारू बाधक बीचमे गाम अछि मुदा दछिनबरिया बाध माने गामक दच्छिन जे बाध अछि जइ बाधमे प्रवेश करिते दच्छिन मुँह डेग उठत, ओइ बाधमे एकटा आमक गाछ अछि जेकरा लोक एगच्छा सेहो कहैए।

ओना सोनमा बाध नमगर-चौड़गर अछि, नमगरे-चौड़गर नइ, ऊँचगर-नीचगर सेहो अछि। तेतबे किए, जहिना खेत-खेतक माटि एकरंगाहो अछि तहिना भटरंगाहो तँ ऐछे, तँए ने दसो-पनरह रंगक माटियो अछि आ नीचाँ-ऊपर रहने आड़ियो तँ सीढ़ी जकाँ बनले अछि किने। खएर जे अछि मुदा एते तँ ऐछे जे गाछक कमी नइ रहितो वृक्षक कमी तँ बाधमे ऐछे, माने खेती-पथारीक तँए ऊँचगर खेत रहितो अन्नेक खेती होइए जइमे गाछियो-बिरछी तँ भाइए जाइए। से गाछी-बिरछी नहि। डेढ़ कट्ठा परतीपर मात्र एकटा आमक गाछ अछि। एकर माने ईहो नइ जे गाछ-पात नइ अछि। अन्नोक गाछो होइते छै, पातो होइते छइ। तहूमे माटिक जे भटरंगीपन छै ओ तँ आरो बेसी रंगक गाछ-पात उगबैए। जँ एकरंगाह रहैत तँ किछु समटल कारोबार, माने माटिक अनुकूल उपजा रहितै, से नइ बेसी रंगक रहने बेसी रंगक होइते छइ। खएर जे छै, मुदा बाधमे एकटा आमक गाछ तँ अछिए। एकरा नकारलो नहियेँ जा सकैए।

बाधमे असगर एगच्छा आमक गाछ, खूब चतरलो अछि आ नम्हरो अछि। ओना ओ गाछ कियो रोपलक आकि अपने जनमल, से अखैन तक गौआँ नइ फरिछा सकल अछि। कियो कहै छै बाधक जे रखबार छल ओ रोपलक, मुदा ओ बुढ़बा तँ मरि गेल। रोपलाहा गाछे ने रहि गेल, मुदा से माननिहारो हुअए तब ने...।

किछु गोटे ईहो तँ कहिते अछि जे कौआ पाकल आम आनि गुद्दा खा लेलक आ आँठी-खोंइचा छोड़ि देलक, ओही आँठीक गाछ छी...।

मुदा लोकक मनमे जे होइत हौउ, ओ परतीपर जनमल तँ ऐछे, केकरो खास जमीनमे छै नहि, तँए सबहक छी, सबहक छीहे नइ सभ छाहैरमे छहरेबो करैए आ आमोकेँ चटनीसँ पाकल धरि खेबो करिते अछि। गाछो तँ सभ रंगक होइए मुदा से नइ, ओ आमक गाछ मनुखक केतेको पीढ़ी देखलक आ केते आगूओ देखत। ओना आगूक निसचित बिसवास नइ कएल जा सकैए, जेना पैछला अछि, मुदा बिसवास नहियोँ कएल जाए सेहो तँ उचित नहियेँ हएत।

ओना, जहिना सौंसे बाधमे एकटा गाछ रहने एगच्छा भेल, तहिना हजार बीघाक आमक गाछीमे एकटा बेलक गाछ सेहो तँ एगच्छा भेबे कएल। आमेक गाछी किए, तहिना फुलवाड़ियो सभमे होइते अछि...।

एगच्छा रहितो ओ आमक गाछ बुर्ड़ाक तँ अछिए। अपन चालि-बाइन धेनहि अछि। बुर्ड़ाक ई जे अनरनेबा आ धात्री जकाँ बिनु जोड़े[3] जीबैक आशो नहियेँ रखने अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। असगरे बाधमे अछि, फड़बो करैए, मोजरबो करैए, हरियेबो करैए, फतझड़ो होइए, मुदा जीबठ बान्हि जीबो तँ करिते अछि। नइ-ते

[3] प्राग क्रिया

असगरे जेना बाधमे अछि तेना अनरनेबा आकि धात्री जकाँ वंशो उपैट गेल रहितै। सभ बबाजीए बनि गेल रहितै। होइतो अहिना छै जे जे समैक मुकावला नइ करैए ओ मेटा जाइए। ओकर वंशक बाढ़ि रूकि जाइ छै, मटियामेट भऽ जाइ छइ। पंचतत्वमे विलीन भऽ जाइए।

द्वापर युगीन एकलव्य जकाँ ओ एगच्छा आमक गाछ अपनाकेँ बुझैत। जहिना शक्त-शील एकलव्य अपनाकेँ शक्तिवान बनबैले शक्तिशालिनीक आराधना केलैन तहिना ओहो आमक गाछ असगरे बाधक बीचला डेढ़-कट्ठबा परतीपर ठाढ़ भेल अपनाकेँ बुझैत। गाछो-बिरीछक दुनियाँ तँ अछिए। हजारो-लाखो रंगक गाछ-बिरीछक बोनाएल दुनियाँमे की सबहक वंशो आ वंशवृद्धियो एके रंगक थोड़े अछि। कोनो बीआसँ जनमैए तँ कोनो फूलसँ, कोनो पत्तासँ जनमैए तँ कोनो गाछक सीरसँ...। केकरो सिर माटिक तरमे रहै छै तँ केकरो पानिक तरमे। केकरो डारियेमे सिर होइ छै तँ केकरो फुनगीपर...।

वेचारा आमक गाछकेँ मन ठहिअए लगलै। ठहियाइते मनमे उठलै अनेरे दुनियाँक बोनमे मनकेँ वौआबै छी। तइसँ नीक जे अपन दिन-दुनियाँक बात बजबो करब, करबो करब आ जीबो करब। मन फेर ठमैक गेलइ। मुदा ठमैकते जेना तीन-बट्टीपर दिशांश लगितो छै, जइसँ पूब-पच्छिम भऽ जाइए आ पच्छिम पूब, तहिना दिशांश, छुटबो करै छै, जइसँ उत्तर-दच्छिनक बोध हुअ लगै छइ। जे केमहरसँ एलौं आ केमहर जाएब। तहिना आमोक भक्क कनी खुजल। खुजल ई जे अपनामे अनरनेबो आ धात्रियोसँ बेसी शक्ति तँ अछिए। ओकरा दुनूकेँ जे जोड़ नइ भेटतै तँ छेहा नंगा बबाजी जकाँ भऽ जाएत, वंशो रूकि जेतै आ दुनियोँ ओकरा बिसैर जेतइ। मुदा अपना तँ से नइ अछि, सभ किछु अछि...।

सभ किछु मनमे ऐबते एनामे जेना अपन मुँह अपने देखाइत

तहिना अपन शक्ति अपना शकलमे देखलक।

अपना धुनिमे गाछ धुनियाँक धुनकी जकाँ जिनगीक रूइयाकेँ धुनए लगल। हजारो-लाखो रंगो, भटरंगो आ चितकाबरो वंशक गाछ सभ तँ ऐछे, तहीमे ने हमहूँ एकटा भेलिऐ। जखन एकटा भेलिऐ, तखन एकेटा ने भेलिऐ। तखन दोसराइत जे ताकब से अपने दोसराइतमे किए ने इजोते-इजोत जाएब...।

जिनगीक ओ बटोही जे नमहर जिनगीक बाट टपि आबि असोथकित भऽ जाइत तहिना वेचारा आमक गाछक मन असोथकित होइत ठमकल। देहमे शके ने बुझि पड़ै जे ठाढ़ रहत। हब टुटु साइकिल जकाँ मनक चक्का ने आगूए घुसकै आ ने पाछूए ससरै। जेना आइ ओ जिनगीक हारि कबूल कऽ लेत। मुदा से भेल नइ, भेल ई जे हुब टुटू मन बाजल–

"आब, ई दुनियाँ देखब कठिन भऽ गेल।"

पजरेमे ठाढ़ हूब घटू बाजल–

"बुड़ि कहीं के रे! ब्रह्मा सन-सन केते ब्रह्माकेँ देखनिहार लोमस बाबा लोहिया ओढ़ि कऽ देखलैन आ तूँ एतबेमे धौना फेड़ै छेँ। एकटा पएरबला कनी नेंगरा कऽ चलत, मुदा चलत किए ने। कोनो कि लोथ छी।"

हूब घटूक आ हब टुटु विचारकेँ वेचारा आमक गाछ विचारणीय बुझि विचारए लगल। मनमे एलै– गाछ-बिरीछक बोनाएले दुनियाँमे एकटा हमहूँ छी। रंग-रंगक रूप, रंग-रंगक चालि-ढालिक जिनगी सभकेँ अपन-अपन छइ। कियो बीआसँ गाछ होइए, तँ कियो फूलसँ...।

'फूलोसँ गाछ' मनमे ऐबते एगच्छा आमक गाछ ठमैक गेल। ठमकल ई जे अपन वंशक रस्ता की अछि। एकटा भेल पाकल आमक

सक्कत आँठीसँ, दोसर भेटबे ने करइ। मनमे उठै जे हमर वंश कि एक भगगुए रहि गेल...। आगू-पाछू किछु भेटबे ने करइ। भेटबो केना करितै, अखन तकक नजैर बीये-बाइलिक देखल-सुनल छेलइ। मुदा नजैर जखन आगू बढ़लै तखन बुझि पड़लै जे नै हमरो उपैतक दोसरो रस्ता अछि। ओ अछि बच्चा गाछक छातीसँ कलशल डारि सटा देने नव गाछ बनि नव जीवन सेहो तँ अछिए। तखन जिनगीसँ निराश किए हएब। मुदा जिनगी लेल जे समए-शक्तिसँ मुकावला करए पड़ै छै ओकर अनेको रूपमे दूटा कारण प्रमुख अछि। एक अछि समए-शक्ति जइमे जिनगी निहीत अछि आ दोसर अछि दानब-मानब वृति...।

एका-एक ओइ एगच्छा आमक गाछक मन फुला गेल। फुलाइते बाजल–

"हम लाल छी।"

जुहियाइत जूही बाजल–

"जेहने सतरंगी रंग तेहने सतरंगी चालियो ने छौ। मरदक लाल जहिया बनमेँ, तहिया बुझबौ।"

मनमे उठैत खौंझकेँ रोकैत गाछ विचारए लगल। भाय सात अरब लोकमे केकरो एते फुरसैत छै, जे दोसरो दिस ताकत आकि देखत। जे बाप भरि दिन बेटा-ले पसेना चुवबैए ओकरा तँ एते फुरसैते ने छै जे अपना बेटाकेँ कम-सँ-कम अपनो वंशक इतिहास आ समाजिक सरोकार बुझा सकत आ अनका कोन मतलब छइ।

जहिना कोनो बिसरलहा बात, सोचै-विचारै काल जखन मन पड़ै छै, तखन अपनो मनमे फुलाइत हँसी उठै छै तहिना ओइ एगच्छा आमक गाछकेँ सेहो भेल। मन पड़लै अपन लगौनिहार रखबार, केना असकरे बाधमे ठाढ़ छी, जहिना सभ-ले अन्हर-विहाड़ि, झाँट-पाथर

छै तहिना ने हमरो-ले अछि...। एगच्छा आमक गाछक मन आगू घुसैक बुदबुदाएल–

"अपन सर्वांग जिनगीक रक्छा अपने करैक लूरि-बूधि हएत तखन ने रकछित रहि सकै छी।"

लगले दोसर मन टोकलक–

"मातृभूमि केकरा कहै छै, ओकर रकछक के छी?"

अनुत्तरित प्रश्न आमक गाछक मनमे उठए लगल। मुदा कलशक डारिक नव गाछक रोहानी देख मन रहैम गेलइ। रहैमते फुला गेलइ। फुलाइते उठलै–

"अदौसँ जीव-जन्तुक संग रमैत एलौं अछि आ आगूओ अहिना रमता जोगी बनि रमैत एगच्छा नइ सत्-गच्छा बनि इन्द्रधनुष जकाँ अकासमे फुलाएब।"

◌

शब्द संख्या : 1172, तिथि : 31 दिसम्बर 2015

माघ नहाइले जाएब

तिला-सकराँतिक एक दिन पहिने तीन बजे बेरुका उखराहा, दुखी काका दरबज्जेपर बैसल चाह पीबैत रहैथ। लंगोटिया संगी मुसन भैया ऐबते बजला–

"माघ नहाइले जाएब, बिसैर जैतौं तँए पहिने कहि देलौं।"

दुखी काका आ मुसन भैया जेहने उमेरगर एकतुरिया तेहने काजो-उदम आ गपो-सप्प। घन्टा–घन्टा दुनू गोरे एकठाम अपन जिनगीक मचकीक झूला लगा झुलिते छैथ। मुसन भैया बजैत-बजैत बैस गेला। पोखरिक पानि जकाँ दुखी कक्काक मन असथिर रहैन मुदा माटिक गोला आकि पाथरक टुकड़ा फेकलासँ जहिना पानि डोलए लगैए, माने पानिमे कम्पन आबि जाइत, तहिना मुसन भैयाक बात सुनि काकाकेँ भेलैन। मुदा चाह पीबैत रहैथ तँए आगूक काजकेँ अगुअबैत बजला–

"संगी, पहिने चाह पीबह तखन दुनियाँ-दारीक गप-सप्प हेतइ। ने दुनियाँ केतौ पड़ाएल जाइए आ ने अपने सभ मरैक बाटपर छी, तखन अनेरे औगताइ कथीक अछि जे हड़बड़ाएब।"

दुखी कक्काक बात मुसन भैयाकेँ नीक लगलैन। मुस्की भरैत बजला–

"संगी, से नइ बुझलिऐ..; जखने गप-सप्पक भाँजमे पड़ि जैतौं तखने अपन नियारल बात बिसैर जैतौं, तँए पहिने अपन विचारक हाजरी बना लेलौं।"

दुखी काका आ मुसन भैया एकतुरिया, करीब सत्तैर बरख पार केलहा दुनू संगी। ओना दुनू दू जातिक मुदा सम्बन्धमे एकजतिया छैथ। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, दू जातिक एक जाति ओ छैथ, जिनका बीच जिनगीक अनेको क्रियामे एकरूपता अछि, आ किछु एहनो अछि जइमे विविधता अछि। ओना दुखी काका हमर दियादी काका छैथ माने पित्ती छिआ तँए काका कहब उचित अछि। तहिना मुसन भैया ऐ दुआरे कहै छिऐन जे हिनकासँ समाजिक सम्बन्ध अछि। ओना गाम-समाजमे हमरा सन-सन उमेरक छौड़ा अखनो 'मुसन' भैयाकेँ मुसने कहै छैन, तँए उचित बुझैत भैया कहै छिऐन।

दुखी कक्काक चाहक आग्रहकेँ कटैत मुसन भैया कहलखिन–

"संगी, कोनो कि बाँटल छी, चाह पीबिये कऽ एलौं हेन। अहाँ पीब लिअ।"

हाँइ-हाँइ दुखी काका गिलासक चाह सठा बजला–

"संगी, काल्हि पाबैन छी, तखन तूँ की कहि देलह। आगूमे जखन अगुआएल पाबैन अछि, तखन पहिने कोन गप अगुआ देलहक।"

मुसन भैया जेहने बजैमे पीच्छर तेहने टोन मिलबैमे सेहो छैथे...। बजला–

"कौल्हुके बात तँ हमहूँ कहलौं। भेल एतबे जे सौंझुका गाड़ी पकैड़ सिमरिया मास करए जाएब, से पहिने कहा गेल। सेहो पहिने कहाँ कहाएल, जेकरे दिन तेकरे ने रातियो। कृष्णजी जकाँ थोड़े सभ अछि जे अपन जनम-टिप्पैन बारह बजै रौतका बनौत। ओ तँ दिनके

नामे ने टिपैन बनाएत।"

एक बेर-के दुखी कक्काक मुँह दिस देखी तँ एक बेर मुसन भैया दिस, गपक कोनो थाहे ने बुझिऐ। भाय गप तँ गप भेल, तखन ओइमे कोन आगू-पाछू हएत, आ जँ भाइए जएत तँ पछाइत सेरिया लेब। काज थोड़े छी जे नक्शे बदैल जाएत, कोनो कि लोहाक नट-बोल्ट छी जे एक-दोसरमे लगबे ने करत, चाहे कोनो अँटबे ने करत आकि कोनो ढिलढिले भऽ जाएत।

मनमे जेना कनी उकबात जगल, मुसन भैयाकेँ कहलयैन–

"भैया, अहूँ बड़ लटपटिया छी, झाड़ि कऽ बाजब से नइ। जे सोझराएल रहने हमहूँ बुझबै।"

मुसन भैया बजला–

"बौआ, अखन तूँ बाल-बोध छह, जखन बल बोध हुअ लगबह तखन अनेरे ने सभटा देखए-बुझह लगबहक।"

मुसन भैयाक उत्तर सुनि मन सोल्होअना उतैर गेल। उतैरते भेल जे अनेरे बिढ़नी-छत्तामे गोला फेक बिढ़नी उड़ा देहमे कटा लेलौं। फेर भेल जे औगताइये कोन अछि जे एते धड़फड़ाइ छी। भने दुनू संगी अपन गप-सप्प करता, अपने सुनब। जे नीक लागत तेकरा नीक कहबैन आ जे अधला लागत तेकरा अधला कहबैन...।

मुँह मारि चुप-चाप भऽ गेलौं। ओना मुसन भैयाक बात हमरा ने तीते लागलआ ने कसाइने, कहब जे मीठ लागल सेहो ने लागल। मीठोक तँ अगम लीला अछि, कियो कुशिआरेकेँ मीठक जड़ि कहि आन-आन मीठक मोजरेकेँ लाही जकाँ चाटि लइए, तँ कियो दुनियाँक सभ कथू अवस्था पेब मीठसन सिरैजते अछि, से बुझैए। ओना लोकक अपन लोकल हिसाब छै, कियो मीठ पानि, तँ कियो मीठ वाणि, तँ कियो मीठ कानि, तँ कियो मीठ हानि, तँ कियो मीठ फानि,

तँ कियो मीठ मानि जीबते अछि। ओना सच पुछी तँ मुसन भैयाक 'बल-बोधक' माने नै बुझलौं। मुसन भैया, सतसंगी लोक छैथ। वैष्णव छैथ, कबीर पंथसँ जुड़ल छैथ। जहिना ब्रह्मवेत्ता गुरु भेटने ब्रह्मज्ञानी होइए तहिना मुसन भैयाकेँ सेहो छैन्हे। माने ई जे कबीर पंथी रहने भाषाक डिक्टेटर-पंथी छथिए। माने ई जे कबीर साहित्य भाषाक ओहन समुद्र छी, जैठाम भाव जहिना अछि, तेकरा तहिना कहल गेल अछि। तेही पंथक ने मुसना भैया छैथ, तँए तामसो केना उठितए। जेहेन गुरु तेहने ने चेलो हएत। से मुसना भैया छथिए।

हमरापर जे मुसन भैया झपट मारलैन से दुखियो काका बुझि गेला। ओना दुखी कक्काक मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे मनमे किछु कचोट मुसन भैयाक बात सुनि भेलैन। भऽ सकैए जे एहेन बात मनमे उठि गेल हेतैन जे ऊँच लग ऊँच विचार बाजी आ नीच लग नीक विचार। मुदा नीक विचार नीक भाषाक संग चलत, से गड़बड़ भेलैन।

ओना दुखी कक्काक मन सोलहन्नी फ्रेश रहैन। लगले चाह पीनै छला। मनमे बिचैड़ गेल छेलैन जे अखन संगीक मन चढ़ंतपर अछि, तँए सवाले पुछब नीक हएत। अपने मन जखन बजैत-बजैत थकतैन, कि असथिर हेतैन...। दुखी काका बजला–

"संगी, की कहलहक माघ नहाइले जाएब?"

दुखी कक्काक जिज्ञासा[4] पेब मुसन भैयाक मन दलमलित भऽ गेलैन। दलमलाइत बजला–

"संगी, परसूसँ माघ चढ़त किने, गामक बुढ़-पुरान सभ माघ नहाइ-ले सिमरिया जा रहल छैथ, तिनके सबहक संग पत्नियोँ जेती। केतबो कहै छिऐन जे जखन हम जीबते छी तखन अनेरे केतए वौआएब। मुदा से नइ मानि रहली अछि।"

[4] नीकसँ बुझब

कहि मुसन भैया थकथका गेला। थकथकाइत देख दुखी काका पुछलखिन–

"संगी, तूँ ते कबीर पंथी छह, तखन..?"

ओना मुसन भैया 'मघ-स्नान' विचार क्षेत्रमे महंथजीक मुहेँ सुनितो अबै छला, मनो छैन आ बजबो करै छैथ मुदा पत्नी माघ नहाइले जेथीन तँए संगबेमे अपने नइ जाइथ से गड़बड़ लगै छेलैन। गड़बड़ ई लगै छेलैन जे जँ कहीं पत्नी गंगे लाभ भऽ गेलखिन तखन अपन गति की हेतैन, ई प्रश्न तँ आगूमे ठाढ़ रहबे करैन...।

मुदा सभ दिन एकठाम बैस दुनू संगी सभ रंगक गप-सप्प करैत आबि रहल छैथ तँए कोनो बात बजैमे संकोचे किए होइतैन...।

कनी पाछू घुसकैत मुसन भैया बजला–

"संगी, हम सभ की कोनो असलाहा कबीर पंथी छी।"

बाजि मुसन भैया किछु विचारए लगला। मुदा विचारमे साबेक जौड़ जकाँ खोंच-खरोंच भऽ गेलैन। खोंच ई भेलैन जे अपना मुहेँ केना बाजि गेलौं जे असलाहा कबीर पंथी नइ छी। कहुना-कहुना पचास बरख ऊपरेसँ वैष्णव छी। तइसँ पहिने जे खत्ता-खुत्ती उपैछ इचना-पोठी खेलौं, से सभ की पेटमे धाएले अछि। तखन असल कबीर पंथी केना नइ भेलौं...।

मुदा बिच्चेमे दुखी काका पुछि देलखिन–

"तखन कोन कबीर पंथी भेलह?"

ओना मुसन भैयाक मन बजै दिस सुढ़िया गेल रहैन, तँए विचार दिससँ बहटल रहबे करैथ, बिनु विचारने बजला–

"हम तँ भूत-कबीर भऽ गेलौं।"

'भुत-कबीर' सुनिते हमरो मन सुरखुराएल, मुदा हुअए जे मुसन

भैया मुँहफट छैथे जँ कहीं हमरा बातपर तामसे उठि जाइन आ खिसिया कऽ लगेसँ भगा दैथ। होइतो अहिना छै जे किछु विचार एहनो तँ ऐछे जे विचारैकाल बाल-बोधकेँ लोक लगसँ फरिक जाइले कहिते छैथ। मुदा जेना हमरा मनक बात दुखी काका बुझि गेला आकि अपने मनमे लगलैन, से तँ ओ जानैथ, पुछलखिन–

"संगी, भूत-कबीर की भेल?"

दुनू संगीकेँ आँखि-मे-आँखि तेना सटि गेलैन, जे हम अन्हरा गेलौं। माने दुनू गोरेक आँखिसँ ओझिल भऽ गेलौं। दुनू गोरेकेँ भेलैन जे ऐठाम कियो तेसर ऐछे नइ...।

मुस्की मारैत मुसन भैया कहलकैन–

"संगी, दुनियाँ केतौ उगौ-डुमौ, हमरा दुनू संगीकेँ कोन मतलब अछि। सत्तैर-पचहत्तैर बर्खसँ ऊपरे भऽ गेल हएत, दू-चारि बरख-ले मुँह फुला-फुली कऽ लेब, से केहेन हएत। प्रेमचन्दो काका कहता जे भरिसक दुनू संगीक संगपना बौलक ढेरीपर जनमल छल जे हवाक सिहकीमे खसि पड़ल! से कथीले।"

दुखी काका बुझि गेला जे मुसन अपन हारि कबुल कऽ रहला अछि। मुदा एते तँ मानियेँ रहल छैथ जे आगूओ संगपना बनल रहए। तैबीच अपने किए औगता कऽ कोनो एहेन उझट बात बाजि जाइ जइसँ सम्बन्धे विघटित

भऽ जाए। सभ अपन देहा-देहीक ने जवाबदेह अछि। ओना परिवारो कि कुटुमो-परिवार आकि सगो-सम्बन्धीक गल्तीक फला-फलाक जवाबदेह सेहो अछि, मुदा मनुख तँ मनुख छी, पशु नइ छी जे ओकरा बान्हि कऽ राखल जाएत। हँ एते तँ जरूर ऐछे जे मनुख विचार-विवेकशील प्राणी छी तँए ओकरा विचारक बान्हमे तँ रखले जा सकैए...।

सामंजस करैत दुखी काका बजला–

"संगी, भूत-कबीर की कहलहक?"

दुखी कक्काक प्रश्न सुनि मुसन भैयाक मन मिसियो भरि नै सिहरलैन, जेना किछु खुशीए भेलैन। होइतो अहिना छै, जे मुँहपर केकरो अवाच् काजक चर्च भेने, अवाच-वक्ताकेँ भारी-सँ-भारी कीमत किए ने चुकबए पड़ै मुदा मन तँ उत्साहित रहबे करै छै जे सत्यक अन्वेषणक जँ कियो प्रहरी अछि तँ हमहूँ छी। मुदा से सभ नै भेल, मुस्कुराइत मुसन भैया बजला–

"संगी, भूत-कबीर ओ भेल जे सार्वजनिक मञ्चपर किछु बाजल, माने सोहनगर बात बाजल आ घर-परिवारमे ओकरे माने सोहंतगर काजक विचारकेँ, उनटा कऽ बजबो कएल आ करबो केलक।"

मुसन भैयाक विचारमे ओना हमरो मन हलैस गेल मुदा मुँह दबने रहलौं। मुँह ऐ दुआरे दबने रहलौं जे जँ कहीं हमरा मनक बात दुखीए काका अपना मुहेँ उझैल दैथ तँ से बेसी नीक हएत। कम-सँ-कम एते तँ हेबे करत जे उमेरक हिसाबे जे कम-बेसी अछि ओइमे कोनो बाधा नइ हएत। मुदा से भेल। दुखी काका पुछलखिन–

"संगी, नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं जे की कहलहक?"

बुझल बात आकि मनमे बड़कैत बात जँ कियो बुझऽ चाहै छै तँ बजनिहारकेँ अनभुआर बात बजैसँ बेसी मन परपन बजैकाल होइ छैन। मुसन भैयाकेँ सएह भेलैन। बजला–

"संगी, अपनो बुझै छी जे आत्माक बीच जे गंगा छैथ ओ पवित्र छैथ, हुनका पवित्र बना राखब देवत्व भेल। मुदा से...?"

'मुदा से' कहि मुसन भैया चुप भऽ गेला। अधखड़ुआ बात सुनि ओही विचारक खोंरनीसँ खोंरैत दुखी काका बजला–

"से की, से की संगी?"

दुखी कक्काक जिज्ञासा पेब मुसन भैया अपन पाशाकेँ कनी झुकबैत बजला–

"संगी, गामक जेते बुढ़-पुरान वा बुढ़-बुढ़ानुस छैथ, ओ सभ सिमरिया मास करए जाइ जेता हुनके सबहक देखा-देखी पत्नी जाइले उताहुल छैथ। जेबे करती। आब अहीं कहू जे असगरे ऐ उमेरमे जाए देब नीक हएत?"

दुखी कक्काक मन ठमैक गेलैन। ठमकलैन ई जे, जे विचार विचारवान आदमीकेँ धारण करक चाहिऐन सएह विचारहीन भऽ रहला अछि। तैठाम मुसन सन लोक केना ठाढ़ रहि सकैए..! विचारकेँ गहींरसँ ऊपर दिस माने गहराइसँ छिछलपन दिस मोड़ैत दुखी काका बजला–

"संगी, तोहूँ बड़ मायावी छह। आब ऐ उमेरमे घरवाली लऽ कऽ की करबह। भने गंगा लाभ भऽ जेथुन।"

दुखी कक्काक बात सुनि मुसन भैया भभा कऽ हँसला। कम विचारे हँसला आकि बेसी विचारे, से तँ ओ जानैथ मुदा हँसला ठहाका लगा कऽ।

मुसन भैयाक ठहाका देख हमरो मन बदैल गेल। बदैल ई गेल जे अखन मुसन भैयाक मनमे खुशी उपकल छैन, तँए तामस केम्हरो दोग-सान्हि धेने हेतैन, सनमुख नइ अछि, पुछलयैन–

"भैया, भूत-कबीर की कहलिऐ, नीक नहाँति नइ बुझि पेलौं?"

हमर बात मुसन भैयाकेँ गारा नइ लगलैन, माने कण्ठ लग नइ अँटकलैन। सोझे घोंटि मुस्कियाइत कहलैन–

"बौआ, अखन तूँ बाल-बोध छह, दुनियाँक छकल-बकल

लगले बुझि जेबहक। कोन गाम आ कोन समाज अछि जइमे लोक कम्मल ओढ़ि-ओढ़ि घी नइ पीबैए। मुदा, तोहूँ अखन विद्यार्थी छह पहिने नीक जकाँ पढ़ह।"

मुसन भैयाक बात हमरा ओते नीक नइ लगैत रहए तँए मन तँ कड़ुआइत तँ नै रहए मुदा मुँह जरूर बिजकैत रहए, जे बात मुसन भैया बजैक क्रममे बुझि गेला...।

बिजकल मुँह देख मुसन भैया फेर बजला–

"बौआ, अल्हुआ छह मास माटितर रहैए से औगतेबे ने करैए आ तूँ एकेटा विचारमे औगता गेलह। तोहर बात कि कोनो हमरा मनसँ हटि गेल अछि, ओ तँ अछिए। संगीक जवाब काल्हियो-परसुओ देबैन मुदा तोहर सवाल उधारी थोड़े राखब। तहूमे जेबीमे पाइ अछिए।"

मुसन भैयाक लहटगर बात सुनि मनक खुशी पोनैग गेल, बजा गेल–

"भैया, अहूँ बड़ पारखी छी।"

हमरा बाते हुनका कि भेटलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मुँह चिकनाइत बुझि पड़ल...। बजला–

"बौआ, मनुख रहह आकि गाछ-बिरीछ आ कि जर-जानवर सभकेँ रौदमे छाँह होइ छै, वएह छाँह ओकर भूत भेल, जे सिरखार तँ सभ रहै छै, मुदा अन्हार होइते हेरा जाइए।"

ओना नीक जकाँ मुसन भैयाक जवाब नइ बुझि पेलौं, मुदा अपने मन कहलक अधखड़ुओ तँ बुझलौं। दोहरा कऽ पुछब से नीक हएत तँए दुखिये काकाकेँ गप-सप्प करै दिऐन जे केते विचार बीचमे औत, तेकरा बुझैक अवसर तँ ऐछे सेहो बुझि लेब। सएह सोचि चुप भऽ गेलौं...। ओना दुखी काका मुसन भैयापर आँखि गड़ा भीतर-बाहर माने तर-ऊँपर देखैत रहैथ। मुदा बजैथ किछु ने। हमरा गपक

दुआरे नइ बजैत रहैथ कि अपन अभयंतरमे कोनो विचार उगैत-डुमैत रहैन से तँ ओ जानैथ। मुदा हमरा चुप देख दुखी कक्काक मन सुगबुगेलैन, ओना मुसन भैयाक मन आरो आगू बजैले लुसफुसाइत रहैन मुदा ओहो दुनू ठोरसँ मनक बातकेँ मनेमे रोकि लेलैन। चुपा-चुपी देख अपना विचारकेँ आगू मुहेँ ठेलैत दुखी काका मुसन भैयाक मुँह-पर-मुँह रखि बजला–

"संगी, हमर विचार अछि घरवालीकेँ समाजक संग असगरे जा दहुन..?"

आगूक बात बजैले दुखी कक्काक मनमे रहबे करैन कि बिच्चेमे मुसन भैया लपैक बजला–

"संगी, कोनो जनमक कनारि ओसलए चाहै छी?"

जेना आमक गाछपर फेंकल झटहासँ जँ आम नहियोँ टुटैए तैयो तँ डारि-पात झाँटि देबे करै छै तहिना भेलैन। माने ई जे दुखी कक्काक मनमे भेलैन जे मुसन सतसंगी[5] लोक छैथ तँए विचारमे जेते सक्कतपन औतैन जइसँ जिनगीक साधल क्षणक महत बुझता आ अपनाकेँ ओइमे लीन केने रहता। मुदा अबेवहारि मुसन भैयाक मनमे से विचार घर नइ कऽ सकलैन, तेकर कारण रहैन जे फकरीरिक परसाद बुझि गाँजो-भाँग पीबै छैथ आ जिनगीक ओतबे क्षण अपनाकेँ विचारक सिपाही, माने कबीर पंथक चलनिहार बुझै छैथ। तँए विचारमे दूरी सोभाविक अछि, जे छेलैन...।

बिहुँसैत मुसन भैया बजला–

"संगी, संगीक काज ई उचित नइ भेल जे गंगा नहाइक बाटमे बाधा ठाढ़ कऽ बाधक बनि जाइ। जँ एहेन करब तँ हमरा जे अधरम

[5] कबीर विचारसँ जुड़ल

हएत तेकर भागी अहूँ हेबइ।"

मुसन भैयाक बात सुनि दुखी काका ठमैक गेला। ठमैक ऐ दुआरे गेला जे मनमे उठि गेलैन जे हमर बात मुसन नइ बुझि पेब रहल छैथ। नीक हएत जे भूतलग्गू जकाँ किए ने बकाबी...। दुखी काका बजला–

"धरम-अधरम की कहलहक, संगी?"

एक तँ ओहुना धरमक विचार व्यक्त करब धर्म भेल, तैपर मुसन भैया गंगा नहाइक बाटक डोरीमे बन्हा गेल छैथ, तँए कँवरिया जकाँ मनमे बुबकी रहबे करैन...।

बजला–

"संगी, जखन पशुक नाङैर पकैड़ लोक वेतरणी पार होइए तैठाम जँ पत्नी गंगा लाभ हेती तँ हमहूँ किए ने हुनके टाँग पकैड़ पार हएब। जँ हनुमानी नाङैर रहितैन तँ सहए पकैड़ लइतौं।"

एक तँ ओहुना संगतिया लोक पीछराह होइते छैथ तैपर मञ्चक चौखड़ीपर बैसनिहार तँ आरो बेसी होइते छैथ दुखी कक्काक मन मुड़िया गेलैन। जहिना कोनो लत्तीक मुड़ीकेँ आगू बाट नइ भेटने उनैट कऽ मुड़िया जाइए तहिना दुखी कक्काक मन मुड़िया गेलैन। मुड़ियाइते फुरलैन– नीक हएत जे एकेटा प्रश्न बाजी, बजला–

"से की?"

'से की' सुनिते मुसन भैयाक मन आरो बेसी फुरफुरेलैन। मन ऐ दुआरे फुरफुरेलैन जे मञ्चपर ठाढ़ भऽ जखन मुसन भैया कबीरक विचार व्यक्त करए लगै छैथ तँ पहिनहि पुछि लइ छथिन जे किनको जँ कोनो प्रश्न हुअए तँ पहिनहि बाजि जाउ...। ऐठाम तँ दुखी काका सन श्रोता पौलैन। बजला–

"संगी, माघ मास जखन माघ महीना नइ बनल छल, माने जखन नक्षत्रे छल, जे सत्ताइसटा अछि, ओकरा छोट करि कऽ बारहटा मास बनौल गेल, तखन माघ मघ-असरेस नक्षत्र छल, तइमे साले-साल कि केता साल नहा-नहा खेती-पथारी केने छी, मुदा तँए माघ मासो सएह भेल, से उचित हएत।"

मुसन भैयाक बात सुनि दुखी काका असमंजसमे पड़ि गेला जे जेकरे डरे भीन भेलौं, सएह पड़ल बखरा। हम मुसनसँ पुछए चाहै छिऐ आ ओ हमरे पुछि देलक...। आमक गाछक सील-लकड़ीकेँ जहिना बाँसक टोनसँ गर उनटौल जाइ छै तहिना दुखी काका गर उनटबैत बजला–

"पैछला बात नइ बुझलौं, संगी?"

पैछला सुनिते मुसन भैयाक विचार सेहो पछुआ कऽ बदैल गेलैन। बदैल ई गेलैन जे माघक जाड़ हार तोड़ैए जइसँ देहक शक्ति क्षीण होइए, तँए एकर जे छीनपना छै तेकरा अहाँ केना बँचा पएब...।

औगताइत मुसन भैया बजला–

"संगी, जँ माघ खेपि ओमहरसँ घुमब तखन तँ सभ बात कहबे करब नइ तँ गंगा लाभे बुझब।"

आस-निरासक बीच पड़ल मुसन भैयाक मनकेँ देख पुछलयैन–

"भैया, ऐठाम तँ विचार आ बेवहारमे..?"

अपन बात पुरलो ने छल कि बिच्चेमे लपैक मुसन भैया कहलैन–

"बौआ, कहलियऽ ने अपने गुनी बनि गुनि-गुनि चलिहह। नइ ते दुनियाँमे तेहेन छकल-बकल अछि जे ने घरक आ ने घाटक रहबह।"

पुछलयैन–

"से की भैया?"

हँसैत मुसन भैया बजला–

"बौआ, तूँ ते सहाएब[6] सभकेँ जनिते छह, ओ सभ पचीस दिसम्बरकेँ 'बड़ा दिन' घोषित कऽ देलक। ओहिना केलक आकि मकड़ रेखाक हिसाब जोड़ि कऽ केलक से तँ ओ जानए। तहिना अपनो सभ तिला-सकराँतिक दिनसँ सूर्यकेँ उत्तरायण बुझै छी, जे आब उतैर रहला अछि, कियो केम्हरोसँ कहता जे गेल माघ उनतीस दिन बाँकी मुदा तोहूँ नवजुबक छह, साले-साल देखते आबि रहलह अछि जे माघक जाड़ केहेन होइए। एकरे झुझब-जानब ने भेल माघ नहाएब...। अच्छा, घुमि कऽ आएब तखन आगूक बात आगू होइत रहत।"

◌

शब्द संख्या : 2616, तिथि : 04 जनवरी 2016

[6] अंग्रेज

एक घोंट पानि

बहत्तैर बर्खक वयसमे विलास बाबू अपन पैंतीस बर्खक संसदीय जिनगीक संग पचपन बर्खक राजनीतिक जिनगीकेँ तिलांजलि दैत, बिना किछु केकरो कहने घरसँ निकैल गेला। जेना गाम-घरमे होइए जे कोनो बाते दुनू परानीमे झगड़ा भेने एक परानी नैहरक बाट पकैड़ नैहर दिस विदा ई सोचि भऽ जाइ छैथ जे भीखो-दुख मांगि माइयो-बापक सेवा करब, मुदा एहेन घर आ घरबलाक मुँह नइ देखब। ओना विलास बाबूकेँ से नइ भेलैन, मुदा एते तँ भेबे केलैन जे एतेटा दुनियाँ अछि, तइमे एते बड़का-बड़का समुद्र अछि, पानिक भण्डार अछि तखन हमरा एक घोंट पानि नइ भेटत जे मरि जाएब, तखन अनेरे किए एहेन जिनगी बनौने जा रहल छी जे जैठाम मनुखक सेवाक उदेससँ कौलेजक जिनगीमे राजनीतिक जिनगीक बीच पएर रोपलौं, जे अबैत-अबैत आइ ने लगमे एकोटा लोक बिसवास पात्र अछि आ ने लोके आकि परिवारेक बिसवास पात्र अपने बनल रहलौं..!

यएह सभ विचार विलास बाबूक मनकेँ तेना ने ममोरि देलकैन जे एक घोंट पानिक आशा करैत वेरागी-सन्यासी जकाँ घरसँ निकैल गेला।

ओना, ने केकरो–समाजसँ लऽ कऽ राजनीतिक संगी तककेँ ऐ

बातक जानकारीए देलखिन आ ने केकरोसँ विचारबे केलैन। तइसँ कियो किए बुझत जे विलास बाबू पैछला जिनगीक सभ किछु छोड़ि नव जिनगीक खोजमे घरसँ निकैल गेला। तँए अपना मनमे नव विचारक नव दशा-दिशा रहितो आन लेल–माने अखन धरिक संगियोँ-साथी आ कुटुमो-परिवार–ओहिना छैथ जहिना अखन धरिक जिनगी अङेजने आबि रहल छला...।

घरसँ निकलला पछाइत विलास बाबूक मनमे एलैन जे जखन पैछला जिनगीक सभ किछु छोड़ि देब तखन केकरो ऐठाम जाएब उचित नहि। ओना, जिनगी जेहेन हुअए मुदा खाइ-पीबैले अन्न-पानि, रहैले घर, पहिरैले वस्त्र चाहबे करी, से तँ सभठाम राखल नइ अछि, जे जेतै मन फुरत तेतै रहि जाउ आ सभ किछु आगूमे मौजूद रहत। ओना दुनियाँ अही सभसँ भरल अछि मुदा तैयो तँ अपना-ले सभकेँ अपन-अपन ठौर-ठेकान बनबैए पड़ै छइ।

घरसँ निकैल रस्ता टपैत विलास बाबूक मनमे उठलैन– जखन सभ किछु छोड़ि एक घोंट पानिक आधार बना जीबैले ठानि लेलौं, तखन अनेरे किए छिछिआएल घुमब। से नइ तँ भने पीपरक गाछ रस्तापर ऐछे, ऑक्सीजनक भण्डार छीहे, एतै किए ने चैनसँ अरामो करब आ रस्तो ताकब...।

ई तँ गुण रहलैन जे ने रस्ताकातक माइल-स्टोनपर नजैर गेलैन आ ने मोबाइले-घड़ी संगमे रहैन जे तइसँ मिला माइलिक अन्दाज कऽ लितैथ। फेर अपने मन कहलकैन–

“धुर बतहा! वौआइत-वौआइत सौंसे दुनियाँ वौआ एमे, मुदा दुनियाँ देखबे ने करबीही।”

विलास बाबूक पहिल मनक विचार दोसर-तेसर मन सेहो मानि लेलकैन।

आगूमे पीपरक चतरल गाछ, हवा तँ नइ बहैत रहै मुदा अपने फुरने पीपरक पात हिलैत-डोलैत रहइ। नमगर-पातर डण्टी रहने आकि की, मुदा हिलैत-डोलैत जरूर रहइ। ऑक्सीजन-पर-ऑक्सीजनक बिलहा-बाँट होइते रहइ। ऑक्सीजन पबिते विलास बाबूक नजैर ऑक्सीजनक जड़ि दिस बढ़लैन। गाछ-बिरीछ अपन साँस ऑक्सीजन छोड़ैए...। फेर अपने मन पुछलकैन–

“की पीपरे गाछटा ऑक्सीजन छोड़ैए आकि आरो-आरो गाछ छोड़ैए?”

एक आ एकसँ अधिकक बात उठिते रंग-रंगक विचार विलास बाबूक मनमे उठए लगलैन। दोसर मन बिच्चेमे तराक-दे बाजल–

“आमोक गाछ तँ ऑक्सीजन छोड़ते अछि, तैसंग खाइले आमो तँ दइते अछि। आ तेतबे किए, मरि गेलापर सेहो अपन लकड़ीक हबन करैत माघक जाड़ोक रक्छा आ खेबा-पीबाक ओरियानोक संगी तँ ऐछे, मुदा पीपर तँ से नइ अछि। सुगरक गोबर जकाँ ने नीपै-जोकर आ ने पोतै जोकर।”

मनक बतकटौबैलमे विलास बाबूक मन ओझरा गेलैन। ओझराइते एकटा मन भनभनेलैन–

“जेकरे डरे भीन भेलौं सएह पड़ल बखरा। भाय, जखन घरसँ निकैल गेलौं तखन अनेरे घुरमुरियामे घुरिआइ छी।”

मनक धिक्कारसँ दोसर तेसर मन ठमकलैन। ठमैकते पहिल मन विचार देलकैन–

“भाय, दुनियाँकेँ एना नइ ने चीनबीही। ओकरा तँ ऐनामे रखि, चेहरा देखने ने चीनबीही।”

मनमे उठिते विलास बाबू गाछ-बिरीछकेँ धड़ियाबए लगला। धड़ियेलैन ई जे केते रंगक गाछ-बिरीछ अछि जे ऑक्सीजन दइए।

तइ धारीमे तुलसी, पीपर, बड़, पाखैरक संग नीमो नजैर पड़लैन। नीमपर नजैर पड़िते मन फेर भिनभिनेलैन–

“ई केना भेल! तीतहा गाछमे मीठ फल केना लगि गेल?”

कोनो गरे जे हिसाब विलास बाबू जोड़ैथ से हिसाबे ने मिलैन। अकैछ कऽ मन अकछा गेलैन मुदा हिसाब नइ सोझरेलैन। कखनो पात दिस नजैर बढ़ैन तँ पीपर, बड़, पाखैरक पात छह-छह करैत आँगन जकाँ चिक्कन बुझि पड़ैन, तँ लगले नीमपर नजैर पड़िते होइन जे ई केना भेल। टुकड़ी-टुकड़ी पात जहिना कटल अछि, तहिना सौंसे देहक सिर झकझक करै छइ। मुदा लगले मन आगू घुसैक कऽ सिरपर पड़लैन। नीमक सिर मुसरा बनि माटिक बीच अपन माटिक ऊपरक चढ़ल गाछक समतूल भार उठौने अछि, जखन कि एकरा सभकेँ माने बड़, पीपर आ पाखैरकेँ मुसरा-सिर होइते ने अछि। जल्ला सिर होइए, जइसँ घरतीक ऊपरके भागमे घुरियाएल घुमैए। कनियेँ हवा-विहाड़ि उठने अर्ड़ा-अर्ड़ा खसैए। भलेँ मने-मन गुड़-चाउर किए ने फाँकह जे माटिकेँ माइट कहह जे अकासमे उठल गाछक डारियोमे हमर सिर जनमैए...। विलास बाबू जेते गाछक ऑक्सीजनक विचार करै छला तेते अपन ऑक्सीजन घटित होइत गेलैन। घटैत-घटैत एकटा आड़ि धऽ अँटकलैन। अँटैकते मनमे उठलैन–

“एना नै फड़ियाइत, तँए कोन-कोन गाछ-बिरीछ अछि जे ऑक्सीजनो दइए आ आनो-आन साधनसँ मनुखकेँ वा अन्यकेँ जीबैक उपाय करैए।”

मनमे ऐबते विलास बाबूक मन शान्त भेलैन। ओना, एक तँ रस्ताकातक पीपरक गाछ, तैतर असगरे विलास बाबू बैस मने-मन अपन शेष जिनगीकेँ चलबैक बाट ताकि रहला अछि। मुदा गाछक ऑक्सीजनेमे तेना ओझरा गेला जे सोचै-विचारैक ने सस चलैन आ ने

कोनो बसक बासे होइन...।

मुदा किछु छी, छी तँ पीपरक गाछ किने, जेकरा पचांगम सेहो कहल जाइ छइ। जेकर जड़िसँ लऽ कऽ छीप धरिक सभ किछु शिवमय अछि...।

लगले फेर विलास बाबूक मन चाणक्य जकाँ चनकलैन। चनैकते भेलैन जे समस्या जँ मनकेँ खा गेल, माने मनक विचारकेँ समस्या पछाड़ि देत तखन मन उठि कऽ चलत केना? समस्या तँ पनचानबे-छियानबे प्रतिशत मनुखे निर्मित छी, बाँकी परोछ सत्ताक छी। जेकरा दैवी सेहो कहल जाइ छै...।

फेर भेलैन जे किछु समस्या एहनो अछि जेकर सामना नइ कएल जा सकैए, मुदा अपन आक्रान्त जिनगीकेँ पुनर्निमित तँ कएले जा सकैए। आ तेतबे किए, ओकर अध्ययन करैत ओकर समाधानक हल्लुक-सँ-हल्लुक उपायक बाटो तँ तकले जा सकैए...।

हृदयक साँस जेना विलास बाबूक छुटलैन। छुटिते मन हल्लुक भेलैन, हल्लुक होइते, जाड़मे शीताएल फूल कहियौ आकि पानिमे नहाएल चिड़ै जहिना एक पाँइख आ दोसर पंखुड़ी फड़फड़बए लगैए तहिना विलास बाबूक मन सेहो फड़फड़ेलैन। फड़फड़ाइते चाणक्यक कुश-उखारपर नजैर पड़लैन आकि फुलाइत विलास बाबूक मन फलैक उठलैन–

“चाणक्यो बड़ रगड़ी छला।”

दोसर मन आगू बढ़ि सह देलकैन–

“तइसँ की कम झगड़ी छला।”

तेसर बाजल–

“रगड़ी-झगड़ी बिना बनने कियो पगड़ी बान्हि लेत।”

चारिम बाजल–

“रगड़ी, झगड़ी पगड़ीक भाँजमे अनेरे पड़ै छह, सभ संगे-संग रहबो करह आ दिवसो गुदस करह।”

बेथाएल विलास बाबूक बेथित मनमे विचड़लैन। विचैड़ते उठलैन–

“गाछ-बिरीछक ऑक्सीजन।”

ऑक्सीजन ऐबते मन गुम्हरलैन। गुम्हरलैन ई जे अनेरे कोन महजालक भाँजमे पड़ए चाहै छी, दसे-बीसटा गाछ-बिरीछ थोड़े अछि जे ओकरा ठिकिया कऽ बुझबै जे फल्लाँ-फल्लाँ बेसी आक्सीजन दइए आ फल्लाँ नीक फल आ फल्लाँ ऑक्सीजनक बदला ऑक्सीजनेकेँ विगाड़ैए तँ फल्लाँ ऑक्सीजन लैये कऽ मेघ दिस पड़ाइए। ओह! अनेरे मनकेँ वौआबै छी...।

विलास बाबूकेँ मन पड़लैन अपन संकल्प। जखन एक घोंट पानिक आशापर सभ किछु छोड़लौं तखन अनेरे गाछ-बिरीछक ओझरीमे पड़ै छी। जेते फल खाएब आकि ऑक्सीजन लेब, तेतबेक खगता ने अछि। तइले अनेरे दुनियाँक बोन-झाड़मे मनकेँ वौआबै छी...।

मनमे चैन एलैन। चैन ऐबते मन चनयेलैन। चनियाइते चनचनेलैन–

“असगरे केना जीब।”

‘असगरे केना जीब’ मनमे ऐबते विलास बाबू उठि कऽ ठाढ़ भेला। मुदा ठाढ़ हएब आ चलैत ठाढ़ रहब, दुनू दू भेल। मनमे ऐबते विलास बाबू दोसर संगी संग चलबाक विचार जगलैन। मुदा जखन पैछला जेते संगी-साथी छल, से छोड़ि ने घरसँ निकललौं! जखन संकल्पक संग निकैल गेलौं, तखन घुमि कऽ ओमहर नइ ताकब...।

उत्प्रेरित करैत मन विचार दऽ देलकैन–

“संगियोँ भेटब की असान अछि! एक संगी ओहन होइए जे सून-बिसुन पेब घरोवालीकेँ लऽ भगैए आ एक एहनो तँ होइते अछि जे रणभूमिमे रक्तक धार बनि रहैए...।”

मन मानि गेलैन जे से तँ अछिए। तखन? तखन तँ यएह ने जे संगीक संगपनाक जेते खगता अछि तइले संगी चाही मुदा ओहन उट्ठा संगी जखन भेटत तखने ने समैक हिसाबसँ संग पुरब...।

मन पत्नीपर गेलैन। दू समाज मिलि संगीक हाथ पकड़ा संग धरा देलैन, मुदा से बनाइन कहाँ भेल? कहियो मनक तृप्ति कहाँ भेल? जँ से होइत तँ दोसर बिआह करैक जरूरते होइत। कहू जे ई केहेन भेल जे अपने पत्नी आ बाल-बच्चा कपार फोड़ैपर लागल अछि..!

मन थकथका गेलैन। पीपरक गाछक निच्चाँमे ठाढ़ विलास बाबूक पएर आगू बढ़ैले तैयारे ने होइन। असकताएल जकाँ पएरक शक्ति, आगू उठैले तैयारे ने होइन। असकताइत पएरकेँ रपैट कऽ वीणाक वाणी कहलकैन–

“एहने पग, जेकरा डण्डिये ने! बिना पगडण्डिये बाट बनै छै आ चलनिहार चलैए?”

विलास बाबूक दोसर मन कनखरलैन। कनखैरते उठलैन–

“जहिना भक्तक पाछू भगवान वेहाल तहिना ने भगवानक पाछू भक्तो वेहाल रहैए। जे धरतीकेँ अपन बुझि छाती लगौत तेकरे ने धरतियो अपन बुझि छातीक दूध पिऔत।”

मनमे नव उत्साहक संग नव जिनगीक उत्प्रेरित विचार सेहो जगलैन। बिनु संगीक संग भेने जीवियो तँ नहियेँ सकै छी। ओना संगियोँ केतेको रूपमे संग पुड़ैए। गुरु बिनु चेला आ चेला बिनु गुरु जहिना असम्भव अछि तहिना दिनक संगी राति आ रातिक संगी दिन

नइ अछि, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तखन दूध-पानि बेराएब जटिल तँ अछिए। बिनु पानियेँ दूध बनबे केना करत, जे ओइमे पानि फेटि पाइ बना लेब...।

विलास बाबूक ठाढ़ मन ठेहिया गेलैन। संगी बिनु बनत नइ आ संगी सभकेँ छोड़ैक संकल्प मनमे बान्हि लेलौं..! फेर भेलैन जे जइ जिनगीक संगी ओ सभ छला, ओ जिनगी जखन बदलैए चाहै छी, तखन तँ नीक हएत जे ओहो सभ अपन जिनगी बदैल फेर संगी भऽ जाए। मुदा मनक ऐना झलकलैन। झलकलैन ई जे अपन केहेन जिनगी ठाढ़ भेल से तँ मनेमे अछि, आ संगी बदैल संग औता से सोचि रहल छी। एकरे ने लोक बचपना कहै छै...।

लगले दोसर मन रपटैत कहलकैन–

“यएह छी बतहपनी। दिन-राति बड़बड़ाइत रहब आ करनी चलोले ने हएत, तखन केहेन घर आ घरनी पाएब, से तँ धुनियाँक धुनैबेर ने बुझब।”

विलास बाबूक मन ओहन धरतीपर पहुँच गेलैन जेतए कोनो बाटे ने सुझैन। ठाढ़सँ बैस गेला। बैसते चित्त चेतबैत कहलकैन–

“संगी दू रंगक होइए, एकटा होइए भेटुआ आ दोसर होइए गढ़ुआ। गढ़ुआक माने भेल जे संग-संग जीवन गढ़ैए। आ भेटुआ ओ भेल जे केतौ जाइ छी, रस्तामे जे भेट कऽ संग भऽ गेला। मुदा दुनूक फलाफल दू रंगक अछि। भेटुआ जँ हेरा गेल तँ ओते मन नइ दुखाइए जेते गढ़ुआकेँ हेरेने दुखाइए।”

गुम-सुम विलास बाबू पीपरक गाछक निच्चाँमे बैसल अपन काल्हि धरिक जिनगीकेँ सौरखी-करहरक गाछ जकाँ पानिक ऊपरक पातकेँ पकैड़ नाल पकड़ैत जड़िमे पहुँच हँथोरि फड़ कियो देखैए, तहिना हौंथरैत अपन जिनगीकेँ विलासो बाबू देखलैन। देखलैन ई जे

जखन कौलेजमे पढ़ैत रही, सड़कपर चलैत कौलेजेक छात्रा संग छेड़खानी भेल, जेकरा विरोधमे जे छात्र आन्दोलन भेल, जइमे जेल गेल रही। जेल गेनिहार तँ दर्जनो संगी भेला, जइमे विकासक संग जे अपनत्व बनल, ओहन दोसरक संग नइ बनल। मुदा कौलेजक पछाइत जे दुनू गोरे अपन दुख-धंधामे लगलौं से बीचक जिनगीकेँ खाली बना देलक। तँए नीक हएत जे पहिने विकास ऐठाम जाइ...।

विकास कुमार आ विलास कुमार दुनू सी.एम. कौलेज दरभंगामे आइ.ए.सँ लऽ कऽ एम.ए. तकक संगी।

उन्नैस सए सरसैठक राजनीतिक हवामे दुनूक बीच उभार एलैन। ओना दुनू राजनीति शास्त्रसँ एम.ए. केने रहैथ। मुदा एम.ए. आकि बी.ए.मे जँ एक दिस निचला श्रेणीक अपेक्षा विषय-वस्तु कमैए तँ दोसर दिस ईहो तँ होइते अछि जे समटले विषयमे छिड़ियाएलो विषय रहिते अछि। ओइ छिड़ियाएल विषयमे विलास कुमारक जे विषय रहैन तइसँ भिन्न विकास कुमारक रहैन। मुदा दुनू गोरेक विषयमे किछु एहेन विषय रहैन जे मन-लग्गु रहैन आ किछु एहेन रहैन जे मन-घिच्चु रहैन आ किछु एहनो रहैन जे मन-छिप्पू सेहो रहैन। तहीमे दुनूक मन दू दिस भऽ गेलैन।

जे विषय विलास कुमारक मन-लग्गू से विकास कुमारक मन-छिप्पू आ जे विषय विलास कुमारक मन-छिप्पू ओ विकास कुमारक मन-लग्गू। तइसँ किलासमे दुनूक पहचान तँ बनल मुदा दू शिक्षकक बीच। जइसँ एक-दोसरक संगियोँ-साथी बिलैग गेल। ओना, किछु छात्र संगी विकास कुमारकेँ चिन्तू भाय कहैन। चिन्तू भाय ऐ दुआरे कहैन जे किलासमे केता दिन प्रोफेसर पढ़बैक क्रममे बजै छला जे जे चिन्तन (Though) सन कठिन विषयक पकड़ विकासक अछि, ओ अद्भुत अछि। छात्रक बीच परीक्षण, ट्यूटोरियल क्लासमे सभकेँ सभ

देखबे करै छला।

ओना, बिहारेटा नइ, सौंसे देशमे शासनक विरूद्ध हवा उठल। मुदा ओ हवा कोनो एकरंगक नइ रहइ। गजपट हवा, जइसँ सत्ता पार्टीकेँ तँ धक्का लगबै कएल, मुदा धक्का देनिहार बीचक पार्टीमे वैचारिक समरसता नइ। ओना सभ राज्यक अपन-अपन समस्यो रहै आ विचारो रहै, मुदा रहै तँ सभठाम सत्ताक विरोधेमे।

बिहारी हवामे विलासो आ विकासो कुमारक उभार आएल। सरसैठक चुनावमे सत्ता बदलल।

1972 इस्वीक चुनावमे विलास कुमार विधान सभा पहुँच गेला जखन कि विकास कुमार परिवारसँ लऽ कऽ समाजक बीच जे कुसंस्कारी-बेवहारक जाल पसरल अछि, ओइ जालमे ओझरा गेला। जइसँ ई भेल जे परिवारक संग-संग गामे नीक-अधलाक बीच ओझरा गेल। जेकरा विकास कुमार शुभ संकेत बुझि अपनाकेँ ओइ ओझरीकेँ सोझरबैमे लगि गेला। मुदा अखनो धरि वएह निष्ठा आ समर्पण छैन, जे शुरूक जिनगीमे छेलैन। मुदा हवा-विहाड़िमे उड़ि-उड़ि विलास कुमार सत्तामे सटले रहला, भलेँ दर्जनो बेर किए ने पार्टी बदललैन...।

पीपरक गाछतर बैसल विलास बाबूक मनमे उठलैन– संगी तँ सस्तामे अपने भेटबो करैए आ छुटबो करैए मुदा केकरो ऐठाम नइ जाएब, निर्णय करब अनुचित अछि। जँ केकरो ऐठाम नइ जाएब तखन संगी के हएत, बिनु संगीक चलि केना सकै छी। जखन चलिये ने सकै छी तखन अथबल बनि जीवियै कऽ की करब। तँए केतौ-ने-केतौ तँ जिनगीकेँ अड़ियाबै पड़त, बिनु अड़ियेने चलब शुरू केतएसँ करब। तहूमे दुनियाँक कतियाएल बीचमे ठाढ़ छी...।

मन ओझरा गेलैन। ओझराइते नजैरपर एलैन अपन जिनगी। अपन जिनगी नजैरमे ऐबते जेना मनमे नव वस्तु भेटलैन। भेटते

कौलेजक गढ़ुआ संगी विकास कुमारपर नजैर गेलैन। जाइते मन पड़लैन जे दुनू गोरे जहलमे विचारने रही जे संगी बनि दुनू गोरे संग-संग जिनगी बिताएब। मुदा ओ तँ छूटि गेला..!

लगलेमे विलास बाबूक मन आगू बढ़ि जहल जाइक कारणपर गेलैन। छात्राक ऊपर भेल छेड़खानीक विरोधमे दुनू संगी बनि जहल गेल रही। नारी अत्याचारक विरोधमे।

मुदा अपने जे अछैते पत्नियेँ बिआह कऽ लेलौं, की ई नारी अत्याचार नइ भेल? अपनो परिवार अछि, जइमे पत्नी आ बाल-बच्चा सभ अछि तखन..?

अनुचित भेल। मुदा उपाय?

लगले विलास बाबूक मन अनुचितसँ आगाँ बढ़ि उचितपर चलि गेलैन। आइ जेकरा मन अनुचित मानि रहल अछि ओ ओइ दिन किए ने बुझलौं। एम.ए. पास तँ तहू दिनमे रही। चूक केतए भेल..?

बोनमे वौआइत बटोही जकाँ विलास बाबूक मन अपन जिनगीक उचित-अनुचित रस्ताकेँ पकैड़ जखैन पैछला जिनगीमे किछु डेग आगू बढ़ला, तखन देखलैन जे समैयक हवाक धारमे भँसिया गेलौं। भँसिया ई गेलौं जे अपनासँ पछुआएल लोकक जिनगीकेँ अपना छातीमे नइ सटाएब तखन अपन प्रगतिशीलते की रहल। मुदा के केकरा छाती लगाबए ईहो तँ एकटा जटिल प्रश्न अछिए। जँ अपना पत्नी, बाल-बच्चा नइ रहैत तखन जँ पछुआएलकेँ उठा छाती लगैबतौं तखन अपनो मन कहैत आ आनो कहैत जे एकटा गिरल (खसल) परिवारकेँ उठैक अवसर भेटल। मुदा से कहाँ भेल। तखन की भेल? मुदा, अखनो अपन मन ई कहाँ चाहैए जे अनुचित भेल। किछु लोक तँ नीक कहिते छैथ...।

थकिआइत विलास बाबूक मन थथमारि अपन जिनगीक विचार

करए लगला। भकुआएल लोककेँ जहिना भक्क खुजिते करियाएल दुनियाँ फरिच देखैमे आबए लगै छै तहिना भेलैन। फरिच होइते मन कहलकैन–

“हर मनुखकेँ जिनगी चाही, तैबीच खाँच-खरोंच किछु-ने-किछु अधिकांशकेँ ऐछे, जइसँ अतीतक पतीतमे पहुँच गेल अछि, जँ ओकरा भैरसक पवित्रक ढंग धरौल जाए तँ निसचित कल्याण हेबे करत।”

मुहसँ निकैलते विलास बाबू नमहर साँस छोड़लैन। साँस छुटिते मनमे एलैन जे सही-गलतीक बीचक रस्तासँ जिनगी चलैए। जेते सही तागैतवर अछि तइसँ कनियेँ कम माने लंकाक उनचास हाथ जकाँ गलतियो तँ तागैतवर अछि, तहूमे हवाक जे झोंक उठै छै, ओ मनुखक कोन बात जे देशक-देशकेँ कखनो सही दिशामे तँ कखनो विपरीत दिशामे तेना ठेल दइए जेकरा भरपाइ करैमे पीढ़ियो समाप्त भऽ जाइए। तखन?

अपन कृत्य तँ आइयो जीवित अछि जे ओहन छेड़खानी आजुक कौलेज-जिनगीमे नइ अछि। विकास भाय हमर बाल संगी छैथ, जँ हुनका ओतए जाएब तँ जरूर ओ छाती लगा एक घोंट पानिक आग्रह करबे करता...।

मनमे ऐबते विलास बाबू उतकण्ठित होइत उठि कऽ ठाढ़ भेला। ठाढ़ होइते बुझि पड़लैन जे भरिसक जिनगीक पहिल शुभ दिन छी...।

◌

शब्द संख्या : 2516, तिथि : 10 जनवरी 2016

एते दिन अपना-ले आब अनका-ले

सात सालक पछाइत परदेशसँ गाम एलौं। सेहो ओहिना नइ एलौं, अमेरिकामे एकटा संगी रहै छैथ, वएह अपन बेटाक उपनैन करता, ओही निमंत्रणमे एलौं। ओना बेटाक जन्म अमेरिकेमे भेलैन, जइसँ ओ ओतुका जन्मगत नागरिक भऽ गेल, मुदा बाप-दादाक देल सुकृत्यो आ विचारो सोल्होअना मरि गेल सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए, ओहो तँ जीवित अछिए। ओना मनमे एहेन बात उठि गेल रहए जे जैठाम बच्चाक जन्म हुअए, नागरिक जीवनक अधिकार भेट जाए तैठामक जँ संस्कार-संस्कृति भेटत तँ ओ अनुकूलता पेब अधिक पुष्पित-फलित हएत। मुदा अनेरे मनकेँ खींच-तानसँ परहेज केलौं आ बीस बर्खक विद्यालयक संगीक बेटाक उपनैनमे गाम आबि गेलौं...।

ओना, गाम अबैक दोसरो कारण भेल जे मनमे उठि गेल– जखन गाममे कोनो लज्जतिये ने अछि तखन लाज केतए जनमत आ लज्जैत केतए औत। तँए परदेशसँ दूरदेशपर नजैर ई चलि गेल जे जखन लज्जैत विहीन गाम छोड़ि देलौं, तखैन जेतए लज्जैतगर देखबै तेतए ने रहब। तँए जँ संगीक जोगारसँ अमेरिकेमे गोड़ा बैस जाए तँ किए ने अमेरिके चलि जाएब। ओना, संगी ओइठामक शिक्षा-विभागमे पैघ अधिकारीक पदपर छैथ।

...हँ तँ कहै छेलौं जे गाममे लज्जतिये ने अछि तखन लाज

केतए जनमत आ लाजबन्त बनि लजबन्ती बनब तँ ओहने ने हएत जे 'सुती खढ़पर आ सपना देखी नअ लाखक।' जहिना गामक अधिकांश मनुखो, मालो-जाल आ गाछो-बिरीछक जिनगी गामक माटिपर ठाढ़ अछि, तहिना कि ओकर रक्छो भऽ रहल अछि जे ओ ओहन तगतगर भऽ जाए जइसँ लहलहाइत रंग ओकरा ऊपर सदिकाल नचैत रहइ, से कहाँ अछि..? मरि गेल माटि आ मरि गेल अछि माटिक उपज! खेतीए-पथारी आकि किसाने-बोनिहारक की लज्जैत अछि ओ केकरा आँखिसँ हटल अछि। आ खेतीए-पथारी किए, आनो-आन साधनक ओहन गति की नइ अछि। जे भूमि समुद्र-पहाड़ सभसँ सुरक्षित अछि ओ भूमि मरनासन्न भऽ जाए, तँ की ओ मरणदाता नइ बनत..? खएर जे से...।

परसू उपनैनो समाप्त भेल आ संगियोँ चलि गेला, खाली घरक पछुआरमे मेघडम्बर टाँगल रहि गेल छैन। भरि दिन काल्हि सुतबे केलौं। घर-दुआर तँ ढनमनाइये गेल छल। ढनमनेबो केना ने करैत, एक तँ खढ़-भीतक घर, जे बाढ़ियो देखलक आ झाँट-पानि सेहो खेलक मुदा एते तँ दूर दृष्ट भाइये गेल अछि ने जे पोलीथिनेक घर, पोलीथिनेक ओछाइन-बिछाइन...। खाली झोरामे रखि लिअ आ पिकनीक मनबए गाम चलि आउ। मोबाइलमे दुनियाँक सभ फिल्मो आ गीतो ऐछे जे देखैत-सुनैत सप्ताह भरि गाममे रहि जाउ, फेर बोरिया-विस्तर समेट झोरामे लऽ चलि आउ...।

तेसर दिन अपन खेत-पथारपर नजैर गेल। छह बीघा खेत छल, पुर्वजक अर्जल, हमरासँ पूब धरिक पीढ़ीक वएह जीविकाक आधार रहल। कोसी नहैर गाम होइत बनल। तीन बीघा जोतसीम जमीन नहरक पेटमे पड़ि गेने चलि गेल। एक बीघा गाछी-कलम ऐछे, दू बीघा जे जोतसीम बँचल ओ मनकेँ मिसियो भरि नइ टुटए देलक। मनमे यहए नचैत रहल जे कोसी नहैरसँ सालो भरि खेतकेँ पानि भेटतै,

सालो भरि खेतमे जजात लहलहाइत रहत तँ दू बीघा छह बीघाक मुकाबला करत। तैसंग ईहो जे सालो भरिक कारोबार रहने, परिवारमे कहियो बेरोजगारी आकि भुखमरी नइ औत। मुदा भेल ई जे नहरमे पानि नइ आएल, नहर चालूए ने भेल। हमरा सन-सन केतेको किसानक मूल पूँजी हाथसँ कटि गेल..!

ओना, हमर गाम नमहर अछि, खेतक रकबो बेसी अछि। सभ जातिक गाम छी। ओना बुढ़-पुरान जे छैथ हुनको सबहक एकमत नइ छैन, कियो 'बरह-वरना' गाम कहै छथिन तँ कियो 'छतीस-वरना', मुदा गाममे तइसँ बेसी जातिक बास ऐछे...। उत्तरबरिया आ दछिनबरिया बाध मध्यम ऊँचाइ जमीनक अछि, तँए नीक उपजाउ अछि आ पछबरिया बाध नीचरस अछि, जइमे बेसी बरखा भेने आकि बाढ़ि एने केचली-केशौर उपजैए। गामक पुवरिया भाग ऊँच अछि, जइसँ सौंसे बाध गाछीए-कलम आ बाँस अछि। सबेरे करीब आठ बजे भिनसरमे जलखै खा बाधक खेत देखैक विचारसँ विदा भेलौं। दछिनबरिया आ पछबरिया बाधमे अपन खेत नइ रहने ओमहर नजरिये ने गेल। बँचल पुबरिया बाधक गाछी-कलम आ उत्तरबरिया बाधक जोतसीम जमीन। जोतसीम जमीन बँटेदारक हाथ चलि गेल अछि आ गाछी-कलम बगवारक हाथ। तँए मनमे उठि गेल जे चीज[7] भलेँ अपने किए ने छी, मुदा करै-धड़ैले तँ चलि गेल अछि दोसरेक हाथ, तँए हुनका संग करब बेसी नीक हएत। संगमे रहता तखन ने नीक देख नीक कहबैन आ अधला देख अधला कहबैन...।

गाछीक बगवार दियादीए परिवारक छैथ। वगवारिक हिस्सेदारीक रूपमे ने देने छिऐन आ ने ओहो बुझै छैथ। ओना, जेठ भैयारी पितियौत रहितो गरीब छैथ, मुदा ओहो गाछीक उपजाक

[7] जमीन

हिस्सा हिस्सेदारक रूपमे नहियेँ दइ छैथ, मुदा समांग जकाँ गाछीक रक्छा तँ करिते छैथ...।

विदा होइते, भातीजक नाओं लैत बजलौं–

"राधेश्याम छह हौ?"

राधेश्याम आँगनमे नइ रहए, सुखी भाय दरबज्जेपर सँ बजला–

"गौरी, एम्हरे आबह। राधेश्याम झंझारपुर गेल अछि। अपने अखन तेहेन काज करै छी जे हाथ-पएर दुनू बन्हाएल अछि।"

अखन धरि दुनू गोरेक गप-सप्प परोछे-परोछी होइ छल मुदा हाथ-पएर काजमे बान्हल छैन, तँए उठिये ने हेतैन, एहेन कोन काज छी से मनमे देखैक उत्कण्ठा जगल। जहिना शिवराति ऐबते सिंहेश्वर बाबाक दर्शनक डोरी मनमे लगैए तहिना गप-सप्पक डोरि पकड़ने आगू बढ़ैत बजलौं–

"भैया, गामक की हाल-चाल अछि?"

'हाल-चाल' सुनिते हाथमे खड़ौआ जौड़क खोंचा नेने पएरक औंठा गतानल–माने जौड़क पैछला भाग औंठामे तीन भत्ता बान्हल– दुनू हाथ उठा जे कपार ठोकए लगला जइसँ साबेक जड़ि आँखियेमे गड़ि गेलैन। मुदा दुनू हाथक खोंचा निच्चाँमे रखि दुनू हाथे आँखि मिड़ैत सुखी भाय बजला–

"जान बँचल। जाने की बँचत बौआ, सर्वनाश भऽ गेल!"

'सर्वनाश' सुनि मन आरो विचलित भऽ गेल। की सर्वनाश भऽ गेलैन? ताबे सोझहा-सोझही भऽ गेलौं। सुखी भैयाक उतरल चेहराक रंग-रूप देख बुझि पड़ल जेना केते मोन दुखक भार दबने छैन, केते नइ..!

हमरा देखिते बजला–

“गौरी, गामक गाछी-कलम उपैट गेल। तोरो जानकारी नइ देलियह। अनेरे किए गामक दुखसँ तोरो मनकेँ दुखैबतिअ।”

कहि सुखी भाय चुप भऽ गेला। एक संग अनेको प्रश्न उठि कऽ मनमे ठाढ़ भऽ गेल। एहेन बात सुखी भाय किए बजला जे अपन गामक दुखसँ तोरो दुखैबतिअ। की हमर गाम नइ छी, जँ छी तँ दुखमे केते भागीदारी अछि, सेहो तँ मनमे ठहैकते अछि...।

मनक सभ बेथाकेँ एक्केबेर विचारक कलमसँ खरड़ैत कहलयैन–

“भैया, अनेरे कोन माया-जालक भभटपनमे पड़ल छी, दुनियाँमे केतौ किछु छै, जहिना सभ आएल तहिना कियो नाङैर नेने तँ कियो सुर्ड़ाइत नाङैर नेने जेबे करत। तइले अनेरे किए चिन्ता करै छी।”

हमर बात सुखी भैयाकेँ नीक लगलैन, बजला–

“बेस कहलह। मुदा जखन तूँ गामसँ अपन गाछी-कलम सुमझा गेल छेलह, तखन पहिने वएह ने कहबह। मुदा तेहेन मनुखो आ मनुखगमो सभ भऽ गेल अछि जे पुस-पुसतानिक कनारि चुकबैपर लागल अछि।”

सुखी भाय की बाजए चाहै छला से बुझिये ने पेब रहल छैलौं। पुछलयैन–

“से की, भैया?”

बजला–

“अपना गामक सभ गाछी-कलम पुबरिया बाधमे अछि। तइसँ सटले पुबरिया गामक पछबरिया सीमा छइ। सीमाक जे बान्ह अछि ओ सड़कनुमा चाकर अछि। पुबरिया गामबला अपन सीमाकेँ ऊँचगर सड़क बना देलक। गामक बहावक पानियेँ रूकि गेल। चारू-भागसँ घेराएल बाध बाढ़िक पानिसँ घेरा गेल। चौरीए जकाँ चारि मास पानि

लागल रहल, अदहासँ बेसी गाछी-कलम सुखि गेल।”

मुहसँ खसि पड़ल–

“अपनक की दशा अछि।”

जहिना जुआन बेटा, धेनुगर गाए, पकाएल चास आकि फलाएल गाछ नाश भेने लोककेँ जेते दुख होइ छै, तइसँ बेसी दुख सुखी भाइक चेहरापर झलकैत रहैन। रोगाएल-पीड़ाएल सुखी भाइक छातीक हार जहिना झक-झक करैत रहैन तहिना मनक पीड़ाक हार सेहो झकझकाइत रहैन। बजला–

“बौआ, अपन सोलहन्नी सुइख गेल। ओहिना मुइल मुरदा जकाँ गाछीमे गाछ ठाढ़ छह!”

सुखी भाइक समाचार सुनि मन कलैप गेल। मुदा उपए..?

कहलयैन–

“भैया, जखन गाम आएल छी, तखन कनी गामक खेत-पथार सेहो देख लेब।”

सुखी भाय चुपे रहला, मनमे भेल जे आब हुनका कहबे की करबैन। बिना किछु बजने-भुकने उत्तरबरिया बाध दिस विदा भेलौं। कनियेँ जखन आगू बढ़लौं कि पाछूसँ सुखी भैया बजला–

“गौरी, घुमैकाल जँ मन हुअ तँ गाछियो देखने अबिहह।”

सुखी भैयाक इमानदारी मनमे ठहकल। ठहकल ई जे भैया अपन सभ जानकारी गाछीक दैत कहलैन जे देखैक मन हुअ तँ ओहो देखने अबिहह। यहए ने भेल उच्च कोटिक इमानदारी जे अपन पसरल काजकेँ अपना नजरिये सुमझा देलैन। केकरो अनका घरक जुति-भाँति फुरबैमे जेते मन लगै छै तेते जँ ओकरा पुड़बैमे लगैत तँ दुनियाँक रंग-रूप बदलैत बढ़ैत...।

सुखी भैयाक विचारसँ जेना अपन विचार बदैल गेल। बदैल ई गेल जे जइ गाममे खेतीक संग खेतीक अभिकरणो मरनासन्न भऽ गेल अछि, जिनगी जीबैक कोनो लज्जैत नइ अछि, तैठाम जँ सुखी भैया सन लोक अपन माटि-पानि, कुटुम-परिवार, सर-समाजक बीच साधक बनि अपन-अपन मातृभूमिक संग पितृभूमिक साधनामे लगल छैथ, तेतए तँ वएह असमसानी ने शिव कहौता..!

मनमे ऐबते जेना सुखी भाय नाचि उठला। चलैत-चलैत कहलयैन–

“भैया, आइ भरि गाममे छी, काल्हि भोरे चलि जाएब। तखन तँ अहीं सबहक ने सभ किछ रहत। जे गाममे रहत सएह ने गामवासी भेला, हम सब तँ ओहन भेलौं जे गामवाली गाम लेती दाइ जेती छुछे।”

ओना अपना मने सुखी भायकेँ सुख-सुखबैक रहैन मुदा से भेल नइ। हुनका हमर बात नीक नइ लगलैन। बजला–

“गौरी..!”

‘गौरी’ कहि सुखी भाय चुप भऽ गेला। कहलैन किछु ने। मनमे रंग-रंगक बात ठहकल। मुदा सभ बातकेँ तहियबए लगलौं। ‘गौरी’ कहि चुप भऽ गेला, जे बात कोनो भाँजेपर ने चढ़ल..!

मनमे उठल– किए गौरी कहि चुप भऽ गेला? कहीं एहेन तँ ने मनमे उठल छैन जे कोनो गाम तखने उठत जखन खुट्टा रूपमे गौआँ ठाढ़ हएत। तैठाम जँ गामे छोड़ि गौआँ चलि जाएत तखन ओइ गामक गति की हएत..?

मुदा भरमे-सरम अपन मनो आ मनक विचारोकेँ समेट कहलयैन–

“भाय सहाएब, साँझू पहर निचेनसँ दुनू भाँइ गप-सप्प करब।

अखैन कनी बाध घुमने अबै छी।”

कहि आगू बढ़ि गेलौं। उत्तरबरिया बाध गामक सभसँ पैघ बाध अछि। तेकर कारण ईहो अछि जे दोसर-तेसर गामो हटल छइ। बाधमे प्रवेश करिते मनमे भेल जे बाधक तँ रखबार होइए। जे बाधक देख-भाल करैए। तँए अनका सीमामे ने आब आबि गेल छी। नीक हएत जे पहिने बाधक रखबार लग जाइ। मुदा नमहर बाध रहने आठ-नअटा रखबार अछि। आठो-नबो अपन-अपन हिस्सामे रहैले खोपड़ी बनौने अछि। सभकेँ अपन अपन क्षेत्रक हिसाबे खेत बाँटल छै, जेकरा ओगरबो करैए आ ओगरवाहिक रखवारि सेहो लइए। मुदा अपन रखबार आ अपन खेत चिन्हैमे कोनो भांगठ नहियेँ भेल। किएक तँ जाबे गाममे रही ताबे खेतीए करैत रही, तँए चिनहरबे खेत आ चिनहरबे रखबार...।

अपन खेतसँ कनियेँ हटि रखबारक खोपड़ी, कट्ठा डेढ़ेक एकटा ऊँचगर परतीपर अछि। चारि-पाँचटा अशोभक गाछ ओइ परतीमे रखबार लगौने अछि। जे सौंसे परतीकेँ छहरौने रहैए। निरधन रखबार ओही गाछक निच्चाँमे बैस बाँसक कैमचीकेँ टौहकी बनबैत रहए। आगूमे सौंस बाँस, बाँसक टुकड़ियो आ चीरलो-फाड़ल रहबे करइ। आ लगमे एकटा धरगर पगहरिया सेहो रहइ। देखते निरधन बाजल–

“भाय सहाएब, अहाँ सभ ते गाम बिसरिये गेलिऐ। पौरुका साल हमहूँ कण्ठी बान्हि वैष्णव भऽ गेलौं।”

माथमे चानन कएल सेहो देखलिऐ। ओना, निरधनक घर अपना घरसँ कनियेँ हटल, मुदा टोल एके छी तँए बच्चेसँ चिन्हबे करै छिऐ। आइसँ तीस बर्ख पहिने जखन गामक नव-युवक अपन गामक उत्थान-ले एकत्रित भेला तखन निरधनकेँ हमहीं कहने रहिऐ–

“निरधन, गामक गरीब जाबे जागत नइ ताबे ओकर गरीबी नइ

हटतै, तोरा सन-सन लोककेँ एकजुट भऽ जेबा चाही।”

मानि गेल निरधन हमर बात। राजी-खुशीसँ कहने रहए–

“भैया, हमरा तँ कोनो अबगैत नइ अछि, तखन तोहीं जेना-जेना सिखेबह तेना-तेना करैत सीखब।”

निरधनक बात सुनि मन भरि गेल रहए। भरि ई गेल जे जहिना भक्त अपन समरपित भावसँ भगवानमे लीन होइते ने भगवानो नोकर जकाँ सोर पाड़िते खेनाइ-पीनाइ छोड़ि दौगल आबि रक्छा करै छैथ। तहिना ने निरधन सन दीनानाथ हमरो भेटल...। कहलिऐ–

“निरधन, तूँ हमरा सबहक नेता भेलह, आब तोरा नेतागिरी करए पड़तह।”

कहलक–

“हमरा केकरो डर नै होइए। एकटा दिनकरे दिनानाथ-टाक डर होइए।”

मनमे उठल– मर्द के? जेकरामे मर्दगानी छै, आ जेकरामे मर्दागानीक बास हेतइ सएह ने जीनगानीक गीत गौत...।

कहलिऐ–

“परसू, जुलुस निकलत तइमे चलैक छह?”

निरधन कहलक–

“एवमस्त।”

जुलुस जखन झंझारपुर थाना लग गेल तखन निरधन अपन एरेस्टिंग सभसँ पहिने दइले आगू बढ़ल रहए...।

मनमे ठहैक गेल जे निरधन ठीके कहलक ने जे भैया गाम तँ बिसरिये ने गेलिऐ। मुदा निरधन सन इमानदार, कर्मनिष्ट आ सज्जन लोक लग मुहोँ छिपाएब उचित नहि। कहलिऐ–

“निरधन भाय, तोरासँ कोनो बात छिपल छह, आकि जाबे संग-संग गाममे रहलौं ताबे कहियो किछु छिपौलियह?”

धियानसँ जेना निरधन हमर बात सुनलक तहिना मुड़ी डोलबैत बिच्चेमे बाजल–

“भैया, ओहूँ कहियो निरधनमा मुहेँ कोनो अबलट बात सुनलौं हेन?”

निरधनक बात सुनि मनमे सब्रक गाछ जनमए लगल। जनैमते मन सिहकल, सिहैकते मुहसँ निकलल–

“निरधन भाय, यएह ने कोसी नहैर छी जेकरा बनबैले थानापर गेल रहह।”

जहिना जिनगीक सुकृत्तिक स्मृतिमे सभ हेरा आह्लादित होइए तहिना अपन कएल कृत्यमे निरधन विह्वल भऽ गेल। बाजल–

“भैया, तोहर तँ सोना कटोरा सन खेत चलि गेलह, तेकर बिपैत परलह तँए गामसँ गेलह, मुदा हम तँ गामक फकीर छी, हमरो बाधक तेते खेत नोकसान भेल जे सालक तीन मासक बुतातक घाटा लगि गेल।”

पोखैरक पानि जकाँ समगम होइत निरधनकेँ देख मनमे भेल जे जखन भरिये दिन गाममे छी, तखन किए ने एतै आरो समए हँसी-खुशीसँ बिताबी। पचास-पचपनक बीच उमेरक निरधन। शरीरसँ अंग विद्रूप भेने अलबटाह जकाँ चालि-ढालि। जहिना चलैमे झखाइत तहिना बोलियो सुपुट नइ निकलैत। नमहर मुँहक आकारमे नमहर-नमहर दाँत, सदिकाल मुँह बबले रहैत। मुदा ओहन इमानदारीक जीवन-यापन करैबला निरधन बाधक रखवारिक संग-संग बाँसक छिट्टा, पथिया, टौहकी, पहटा सेहो बनबैत। गामेमे बाँसो भेट जाइ आ वस्तुक विकरियो भऽ जाइ। तँए ने जिनगीमे कहियो छल-प्रपंच एलै

आ ने बोलीए-चालीमे प्रवेश केलकै।

निरधनक भीतर-बाहर देख मन खुशीसँ नाचि उठल...।

बजलौं–

“निरधन, माथमे चाननो देखै छिअ?”

ओना, हमर इशारा रहए जे काजसँ टौहकी बनबैए आ माथमे उजरा चानन सेहो जमगरसँ लगौने अछि। मुदा चाननक नाओं सुनिते जेना निरधनक चानि चनैक गेलै तहिना चनचनाएल–

“भैया, पैछला साल कण्ठी लऽ गुरु मंत्र लऽ लेलौं।”

ओना, निरधनक काज आ रूप देख अकास-पतालक अन्तर बुझि पड़ए। माने काजे टौहकी बनबैए आ बोलीए वैष्णव अछि। मुदा तेकरा निरधन मस्तीमे मुस्कुराइत कऽ रहल अछि, से छगुन्ता लगए। ईहो छगुन्ता लगए जे माछसँ परहेज केने अछि जे ने माछ छूब आ ने खाएब। मुदा टौहकी तँ ओकरे मारैले ने बनबैए, से किए ने काजो छोड़ैए...।

मुदा फेर हुअए जे नेतासँ निरधन बाबाजी बनल अछि, जँ मिलानोसँ पुछबै आ ओ फटहा बबाजी जकाँ कहीं उनटा फटकन लगा दिअए, तखन तँ अनेरे जेहो एकरत्ती गाममे सिनेह पेलौं सेहो धारक पानिक बेगमे अपने धुआ जाएत! तइसँ नीक जे किए ने निरधनक बात निरधनेक मुहेँ सुनी। मुदा मनमे

ईहो हुअए जे आन परदेशिया जखन गाम अबैए तखन अपन मालिक-मलिकानिक संग देश-कोसक तेते भूमिका बान्हि बजैए जेना गामक समाजो शहरी भऽ गेल हुअए..! मुदा की कैरतौं! मनक नागकेँ जमुना धारमे नाथि जमुनिया रंग चढ़बैत कहलिऐ–

“निरधन, केते दिन वैष्णव भेना भेलह?”

ओना अपन मन कहैत रहए जे निरधन तँ दूधा वैष्णव अछि, माने जे जिनगीमे ने कहियो झूठ बाजल आ ने छल-प्रपंच केलक, सभ दिन अपन जीवन-यापन अपन श्रम-शक्तिक बले केलक, ओकरा की कहल जाए। रहल बात किछु खाइ-पीबैक परहेज करब, तइले कण्ठीक कोन प्रयोजन छइ। समाजक अस्सी-सँ-नबे प्रतिशत ओहन परिवार अछि जेकरा माछ-मौस सन वस्तु कीनैक तागत नै छै, ओ परहेजे की करत। मुदा तैयो निरधनक मन टोबैत रही जे एहेन तँ ने मनमे छै जे जहिना मछुआरा काज करैबला गाए-महींस पोसब दिस नइ तकैए तहिना ने गाए-महींस पोसनिहार सेहो मछुआरा दिस नइ तकैए। मुदा जेना अपन तीस बरख पहिलुका जिनगीक स्मृतिमे निरधन वौआइत रहए...।

बाजल–

“भाय सहाएब, जहिना अपना सभ कण्ठ फाड़ि-फाड़ि अपन बेथा-कथा गाम-गामक लोककेँ कहैत सरकारोकेँ कहै छेलिऐ, मुदा सुननिहार केहेन बहीर रहए से मन छह आकि बिसैर गेलहक?”

निरधनक बात कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। जे बात भाँजेपर ने चढ़ल तइमे की बुझलौं, की नइ बुझलौं तइ झमेलसँ अपनाकेँ कात करैत पुछलिऐ–

“निरधन, मन रमै छह किने?”

‘मन रमै छह किने’ सुनि निरधन रमता जोगी जकाँ बाजल–

“भाय सहाएब, तीन साल गुरुमंत्र नेना भेल हेन, तइमे केतेको अमैयो भनडारा पुरलौं आ केतेको कतिको, एक-पर-एक दाता दुनियाँमे भरल अछि।”

मनक गदगरीसँ बुझि पड़ल जे भरिसक निरधनकेँ मनलग्गू काजसँ भेँट भऽ गेलइ। कहलिऐ–

“अपनो भनडारा करै छह कि खाली अनके कैतका खीर आ अमरस्साक मालदह पबै छहक।”

हमर बात जेना निरधनक मनमे मोहैन चला देने होइ तहिना मोहित होइत बाजल–

“भाय सहाएब, आसीन मासमे जखन बरखा तोड़ाइए, धानमे जीह पड़ै छै तहियेसँ बाधमे आबि बसै छी।”

निरधनक बात सुनि मनमे भेल जे भरिसक साधु सबहक संग जेना आत्म चेतना जगि गेलइ, तँए अपन बात अपने मुहेँ निरधन व्यान नै करए चाहैए। ओना अपनो देखल अछि जे आसीन-कातिकसँ उत्तरबरिया बाधक ओगरवाहि निरधन करिते आबि रहल अछि। मुदा एना भऽ कऽ नइ बुझै छेलौं...।

पुछलिऐ–

“एना जे झाँपि-तोपि बजै छह से नइ, कनी खोलि-खोलि बाजह।”

शिवालयमे जहिना शिवदर्शन-ले भक्त उताहुल रहैए जे कखन शिवजीक पट खुजतैन जे दर्शन करब, तहिना रही। जीवने-दर्शन ने उच्च कोटिक दर्शन छी...।

निरधनक पट खुजल–

“भाय सहाएब, हमरा माथमे चानन आ हाथसँ टौहकी बनबैत देख जरूर तोहर मन हँसैत हेतह, मुदा...।”

निरधनक बात सुनि मन सहैम गेल। सहैम ई गल जे मनक बात निरधन केना बुझि गेल। किछु फुरबे ने करए जे आगू किछु पुछि कऽ बुझी आकि ओ अपने फुरने बाजत। भरिसक मनोक अपन बाट-घाट छै, जैठाम मन मनसँ मिलबो करैए आ छुटबो करैए।

कहलिऐ–

“निरधन भाय, जखन संगी सबहक बीच सत्संगमे जाइ छह तखन तँ काजो ने..?”

हमर बातक इशारासँ निरधन गम्भीर भऽ गेल। मुहसँ अनायास फुटलै–

“भाय सहाएब!”

‘भाय सहाएब’ सुनि अपना मनमे भेल जे भरिसक वेचाराकेँ जिनगीमे धक्का लगि रहल अछि। नजैर पाछू घुसकल, जे निरधन बुझि गेल। बाजल–

“भाय सहाएब, बाँसक चारियेटा वौस बनाएल होइए। छिट्टा-पथिया आ टौहकी-पहटा। जँ टौहकी बनाएब छोड़ि देब तँ अपनो आसीन-कातिकक आमदनी मरि जाएत। ओना टौहकी बना बेचबो करै छेलौं आ अपनो बाधक पानिक बहावक कटारिमे लगा मछवारियो करै छेलौं। मछवारिक आमदनीकेँ तँ अपने छोड़ि देलिऐ मुदा जे साँकठ अछि, जेकरा टौहकीक खगता छै, ओ केतएसँ आनत। गाममे हमहींटा बनबै छी।”

मुड़ी डोलबैत निरधनक सुकृत्यकेँ स्वीकृत करैत बजलौं–

“तखन तँ...।”

हमर स्वीकृत पेब निरधनक मन जेना फुलाए लगलै तहिना फुलाइत बाजल–

“भाय सहाएब, एते दिन अपना-ले केलौं आब अनका-ले करै छी।”

मन मानि गेल जे निरधन समाजक जरूरतमन्द लोक छी, जेकरापर समाजक कारोबार ठाढ़ अछि। जुड़ाएल मन बिहुँसि उठल,

पुछलिऐ–

“निरधन, परिवारमे के सभ छह?”

‘परिवार’ सुनिते निरधन रौदाएल फुल जकाँ कुम्हला गेल। बाजल–

“भाय सहाएब, तीन भाँइक भैयारीमे छी। लुल्ह-नाँगर बुझि दुनू भाए भीन कऽ देलक। तेही दिन बुझि गेलिऐ जे दुनियाँमे केकरो कियो ने छइ। छातीमे मुक्का मारि जिनगीक खेलौना हाथमे लेलौं। अपनो गामक लोक सभ आ आनो गामक लोक सभ भदवारिमे पटुआ काटै, धान रोपैले आ छठिक परात कातिकमे धान काटैले मोरंग जाइ छला। हमहूँ हुनके सभ सेने दू साल ओतए खटलौं। हमरा बुते भानस कएल नइ हुअए मुदा टहल-टिकोरा तँ करबे करिऐ।”

बजैत-बजैत निरधन अगिला बाते बिसैर गेल। अपने मने मुँह बन्न भऽ गेलइ। एकाएक बोलती बन्न होइत देख मनमे भेल जे या तँ तेल-पेट्रौल सठि गेलै वा कोनो खच्चामे लसैक गेल। हर बहैत बरदक नाङैर पकैड़ जहिना हरवाह टीटकारी दइए तहिना बजलौं–

“निरधन भाय, राज मोरंगक बात अखन तक कहियो कहाँ बजलह?”

मोरंगक बात सुनिते निरधनक मनक वीणा गुनगुनाएल–

“देखबै शकतिया हम गंगा महरानी-के...। ऐह! चुहरो ठीके चुहरे रहइ। चुहरा रहै कि चुहरखोर रहै से ते ओ जानए, मुदा रहै धरि छतिगर लोक।”

बीचमे रोकैत निरधनकेँ कहलिऐ–

“आइए तक गाममे छी, ओते समए नइ अछि। परिवारक जे बात कहए लगलह से खाली कहि दैह।”

हमर बात सुनिते निरधन पाछू उनैट-उनैट ताकए लगल। समाजमे बेसी लोक ओहन अछि जे माए-बाप छोड़ि अपन धिया-पुता आ पत्नी धरिकेँ परिवार बुझैए तँ एहनो तँ ऐछे जे धियो-पुतो छोड़ि अपन अपन पत्नियेँटा केँ परिवार बुझैए। मुदा जे असगरे अछि, तखन परिवार की भेल...।

निरधनकेँ सकदम देख बुझि पड़ल परिवारकेँ बिसैर ने तँ गेल अछि। मन पाड़ैत बजलौं–

“मोरंग जे धान काटए जाइ छेलहक से कमेबो करै छेलहक कि तनडेली करए जाइ छेलहक?”

निरधनक मन मोरंगक डोरकेँ पकड़ने ओइ परिवार लग पहुँच गेल, जइ परिवारमे, जनिजाति सभकेँ बाँसक छिट्टा-पथिया-ढकिया इत्यादि बनबैत देखने। मन पड़लै सिजिने-सिजिने मोरंग जा कऽ धानो काटै छेलौं आ ओइ परिवारमे जा-जा देखबो करै छेलौं। ओही परिवारमे ने बाँसक सभ चीज बनेनाइ सीखलौं आ ओम्हरेसँ एकटा खुखड़ी कीनने आबि मोरंग जाएब छोड़ि गाममेमे बाँसक कारोबार केलौं। ओना बाँसक हजारो रंगक कारोबार अछि, मुदा से नइ छिट्टा-पथिया इत्यादि-इत्यादि बनाएब शुरू केलौं...।

ओना समाजमे बेसी लोक, बेसी लोकक जिनगीक बाट रोकैये पाछू लागल अछि, मुदा एकरो नकारल तँ नइ जा सकैए जे आगू दिस बढ़ौनिहार नइ अछि। परिवारसँ समाज धरि एहेन संस्कार बनि गेल अछि जे माइयो-बाप ओही बेटा-बेटीकेँ कोनो काज अढ़बैत जे दौड़-दौड़ करैत आ जे से नइ करैत तेकरा अढ़ाएबो छोड़ि दइत। रचनोक क्षेत्र लिअ। अहाँ कविता लिखै छी तँ सइयो-हजारो रचनाकार शुभ बात कहबे करता जे अहाँक पेनी कलम अछि, जँ कथो आ उपन्यासो दिस बढ़ैत तँ समाजमे धमगज्जर भऽ जाइत। दोहरबैत बजलौं–

“निरधन, परिवारक बात नइ बजलह?”

समगम होइत निरधन बाजल–

“भाय सहाएब, की कहब..!”

निरधन चुप भऽ गेल। अगुताइत बजलौं–

“निरधन भाय, जाइ छी। आब फेर कहिया भेँट हएब कहिया नइ। आकि नहियेँ हएब तेकरो ठेकान नहियेँ अछि, मुदा हमर बात बाँकीए रहि गेल।”

‘बाँकीए रहि गेल’ सुनि निरधन बाजल–

“भाय सहाएब, की कहब अपन आ की समाजेक कहब। लुल्ह-पांगुर बुझि दुनू भाँइ कात कऽ देलक मुदा समाजमे कियो किछ ने बाजल आ ने भाइए भाए बुझलक। असगरक पेट बेसी भारियो ने अछि, कोनो कि हाथी-घोड़ाक छी, लऽ दऽ कऽ एक बीतक अछि, अपन भार अपने उठा अखनो जीबै छी...।”

बिच्चेमे मुहसँ निकैल गेल–

“तखन तँ देशक एकटा परिवारक भार असगरे उठौने छह।”

हँसैत निरधन बाजल–

“इन्दिरो अवासक घर ऐ दुआरे ने भेल जे सभ कहलक ओ बबाजी आदमी छी, घर लऽ कऽ की करत।”

◌

शब्द संख्या : 3371, तिथि : 16 जनवरी 2016

माइक वचन

पिताजीक श्राद्ध-कर्म सम्पन्न भेला पछाइत परसू पहिल छाया छिऐन। पिताजीक निविते कमसँ कम एकटा नतहारी रहबे करता, अहीक ओरियानमे माए कहली–

“बौआ, आब दोसर हाट नइ पकड़ाएत, तँए आइये तीमन-तरकारी लऽ आबह।”

माइक बात सुनि चुपे रहलौं। हाटक बेर हएत तखन ने जाएब। माइयो कहि कऽ दोसर काजे चलि गेली। ओहो किए दोहरैबतैथ। बुझले छैन जे गामसँ सटले दोसर गाममे बेरू-पहरमे हाट लगैए। वेर खसैत तीन-चारि बजे शुरू होइए आ दोसैर साँझ अबैत-अबैत उसैर जाइए...। ओना माए कहि आगू बढ़ि गेली मुदा छाया सुनि मन ठकुआ गेल। ठकुआइते पिताजीक छाया मनमे नाचए लगल। पाछू उनैट तकलौं तँ श्राद्ध-कर्म मनमे आबि गेल। बाबा धरिक ‘श्राद्ध-कर्म’ तीस दिनमे सम्पन्न होइत आबि रहल छल, जे तेरह दिनमे आबि अँटैक गेल। जहिना तीस दिनक कर्म तेरह दिनमे अँटैक गेल तहिना ईहो अँटैक गेल जे तीस-दिना श्राद्ध-कर्म भेने तँ बेसी कर्म-क्रिया हएत, तैठाम जँ तेरह दिनक भऽ गेल तखन ओते कर्म तेरह दिनमे पूरत केना। तखन तँ ओइमे कटौती करए पड़त। जखने कर्ममे कटौती हएत, तखने उद्धारोमे कटौती हेबे करत। ई नीक भेल की अधला..?

किछु फुरबे ने करए। पुछबो केकरा करबै, जिनका तीस दिनपर श्राद्ध-कर्म होइ छैन, सेहो समाजमे छैथे आ जिनकर अठारह दिनपर होइ छैन सेहो छैथ, आ जिनकर अर्द्धमासी होइ छैन सेहो तँ छैथे आ जिनकर तेरह दिनपर होइ छैन सेहो छैथे आ जे नहियोँ करै छैथ सेहो तँ छैथे, तखन पुछबो किनकासँ करबैन, तइसँ नीक चुपे रहब। मुहकेँ नीक जकाँ बन्नो ने केने रही कि दोसर दिससँ दोसर विचार हुलकी देलक। हुलकी पबिते अपनो मन बिचड़ए लगल। बिचैड़ते उचड़ल–

“हाइ रे बा! ई की भेल? हम तँ केतौ ने रहलौं, बाबाक तीस दिनक क्रिया-कर्म, पिताजीक तेरह दिनपर आबि गेल, से तँ बाबासँ पुछि नइ केलौं। आ जखन नइ केलौं तखन जँ ओ खिसिया कऽ किछु कहि दैथ तखन की हएत। एते तँ पछड़ा पड़बे करत किने जे तीस-दिनाकेँ छोड़ि तेरह-दिना दिस आएब। आ जँ तेरह-दिनो संगी संगे नइ रहैथ तखन की करब?”

मुदा लगले नजैर आगू घुसैक पिताजीपर आबि अँटैक गेल। अँटैकते मनमे उठल– मृत्युसँ पूर्व धरिक पिताजीक संग जे जीवित सम्बन्ध छल ओ दाह-कर्मसँ क्रिया-कर्म होइत पहिल छायापर पहुँच रहल अछि, पछाइत बरखी होइत-होइत सालक-साल बिसराइत जेता..! बिसराइत जेता..! मनकेँ पकैड़ लेलक।

बेर खैसते हाट जाइले तैयार भेलौं। गमैये हाट छी, उजैहिया उठत तँ लगले निपत्ता भऽ जाएत। तँए जखन काज अछि तँ ओकरा करैले तैयारो ने रहए पड़त। सएह केलौं। निसचित समैपर तैयार भैलौं। एकटा झोरा आ पाइ नेने माए लगमे आबि कहली–

“हाटक बेर भऽ गेल। जे काज करैले रहए ओकरा सबेर-सकाल समैपर कऽ लेब नीक छी।”

माइक विचार नीक लगल। अपनो मन पहिनेसँ नीक रहबे

करए, माने हाट जाइले तैयार रहबे करी। आन दिन जकाँ माए पाइ जोड़ि कऽ नइ देली। अन्दाजे अहगरसँ देली। मुदा एते कहि देली जे फल्लाँ-फल्लाँ वौस एते-एते लऽ लिहह। विदा भेलौं।

माइक उतरलो आ चढ़लो चेहरा मनमे झलकए लगल। मनमे भेल जे भरिसक पिताकेँ मुइने माए पुरुख विहीन परिवारमे अपनाकेँ असुरक्षित तँ ने बुझि रहली अछि! सोभाविको अछि...।

..ओना, परिवारक रंग-रूप भ्यौन जकाँ भाइये गेल रहए। हेबो केना ने करैत, एतेटा परिवार रहितो, माने हमरासँ दू भाँइ जेठ छैथ, तइमे एककेँ तीन सन्तान आ दोसरकेँ दू सन्तान छैन, तैपर चारि प्राणी अपनो दुनू गोरे भेला, हम भेलौं, माए भेली, एगारह गोरे तैयो भेलौं, मुदा तइमे दुइये गोरे छी। अपने तँ माइयक भरोसे छी, तहूमे बेर-बेर कहने छैथ–

“बौआ, डर-भर कथुक नइ करब। हम घरक बरेड़ी-बला खुट्टा जकाँ जखन ठाढ़ छी तखन अहाँकेँ भीरे की अछि।”

मुदा अपने डरा रहली अछि...।

ओना श्राद्धक तीन दिनक पछाइत जखन दीपको भैया आ ज्योतियो भैया अपन परिवारक संग जाइ छला तखन माएकेँ कहने रहथिन–

“माए, पिताजीक पहिल छाया गाममे निमाहि दरभंगे चलि ऐहें।”

भैयाक विचार माए मने-मन मानि नेने रहैथ, भरिसक पिताक सिनेह बेटा दिस ससैर गेल रहैन। ओना जेबाकाल दुनू भाँइ हमरो असीरवाद दैत कहने छला–

“प्रकाश बौआ, माइयक टहल-टिकोरा करैत रहियौन।”

भैयाक असीरवाद नीक लागल। लोक माए-बापक टहल-टिकोरा नइ करत तँ करत केकर। तहूमे दुनू भैयो अपन-अपन भार देलैन।

छाया भेला पछाइत दोसर दिन दरभंगा जेबाक समए सबहक बीच बनल। ज्योति भैया समदिया दिया समाद माएकेँ पठेलखिन–

“निरमली-दरभंगा जे छोटकी गाड़ी जाइ-अबैए तेहीसँ चलि आएब। पुतोहु स्टेशनक गेँटपर ठाढ़ रहती, संग लगौने डेरा औती।”

समदियाक समाद हमहूँ सुनलौं। ओ बगले गामक कौलेजक एकटा विद्यार्थी रहैथ। ओना दरभंगा हम अखन तक कहियो ने गेल छी मुदा जे समदिया मुहेँ सुनलौं तइसँ केतौ हेराइ-भोथियाइक सम्भवने ने बुझि पड़ल, तँए मनमे एहेन कोनो शंके ने रहल। दरभंगा नइ गेल छी मुदा निरमली आ झंझारपुर तँ बिना टिकटोक गाड़ीसँ टहलै-बुलैले कहियो-काल जाइते छी किने। गाड़ीमे चढ़ै-उतरैक भाँज-भूँज बुझले अछि। दरभंगे तक गाड़ियो जाइए तँए चढ़ैयो-उतरैक हड़बड़ीक झमेल नहियेँ रहत। दरभंगा नहियोँ गेल छी तँ नइ गेल छी, हराइयोक सम्भवना तँ नहियेँ अछि।

भिनसुरके गाड़ी तमुरियामे पकैड़ दुनू माइ-पुत दरभंगा स्टेशनपर उतरलौं। परदेशियाकेँ समाने केते रहै छइ। लऽ दऽ कऽ दूटा झोरा। दुनू झोरा दुनू हाथमे लटकौने गेँट पार भेलौं। मुसाफिरखानामे झोरा रखि माएकेँ कहलयैन–

“अपना नजरिये हमहूँ भौजीकेँ तकै छिऐन आ तोहू अपना आँखियेँ पुतोहुकेँ तकहुन। करमान लगल लोक अछि, कोनो दोग-सान्हिमे हेथुन। तहूमे छोट खुटीक छथिये, केतौ ढेरबे कन्या जकाँ ने लगैत हेती।”

ओना माइक ने मुँह बिजकल आ ने आँखिमे नोरक कोनो

सिरखारे जगल, मुदा रूखिसँ गमगीन बुझि पड़ैथ। माइक गमगीन सुरैत देख अपन सुरता जगल। सुरता जगिते मनमे भेल जे घरसँ निकलैक पीड़ा तँ ने भऽ रहल छैन। मुदा ऐठाम तँ यात्रामे छी, यात्री जकाँ बनि यंत्रणा करैक अछि। माए बजली–

“बौआ परकाश, कहाँ केतौ कनियाँ नजैर पड़ि रहल छैथ?”

तोषसँ तोषित करैत माएकेँ कहलयैन–

“माए, कनियेँ-कालमे यात्री छैँट जाएत। ओहो अपने सभकेँ ने तकैत हेथुन।”

पनरह मिनटमे लोक छैँट गेल, मुदा भौजी नइ भेटली। भौजी नइ भेटने मनो झुरझुरए लगल आ पियासो लगि गेल। कोनो ऑफीस आकि कौलेज-स्कूल तँ छी नइ, छी तँ डेरा। जैठाम जाइ खातिर कोनो रिक्शोबला आकि टमटमोबला केँ की कहबै। कहियो आएल नइ छी। अपने जकाँ माइयो छैथ, ओहो ने कहियो आएल-गेल छैथ। ओना शहर-बजारक जे रूप-रंग बनल जा रहल छै ओइमे देखेनिहारक अपेक्षा भुतलेनिहारे बेसी अछि। माने ई जे पाँच-साल, दस-साल पहिने जे बजारकेँ जेना देखलैन, ओ ओते बदैल गेल अछि जे देखनिहारो अपनाकेँ अनाड़ी बुझि भुतलेनिहारे बनि रहला अछि। हम तँ सहजे दुनू सिरे चौपटे छी...।

ओतेटा मुसाफिरखानामे दुइये गोरे ठाढ़ भेल चारूकात चकोना होइत रही, मुदा किछु देख नइ पबैत रही। भाय, दुनियाँमे केतबो लोक अछि तँए कि अपन चिनहरबो हेरा जाएत। ओ तँ अरब के कहए जे खरबोक बीच ताकि लेत। अकासक चान तलावक कुमुदिनीकेँ ताकि केना आँखि मिलौने रहैए।

संयोग नीक बनल। ज्योति भैया अपने पहुँच गेला। ओना लोक हुनका मतिछिन्नू सेहो कहै छैन, मुदा हम केना कहबैन। जाइ छला

कौलेज आ रस्तामे मन पड़ि गेलिऐन हम सभ, तखन जँ ओ कौलेज जाएब छोड़ि चलि एला, से अपने मने ने एला। ओना नीक होइतैन जे भौजीकेँ चरिया कऽ पठा देने रहितैथ तँ एहेन नौबत नइ होइत। मुदा एहनो तँ भाइये सकैए जे काजमे लागल रहने दोसर काजपर सँ नजैर हटि गेल होइन...।

ज्योति भैया ऐबते माएकेँ प्रणाम करैत एकटा झोरा अपना हाथमे लैत दोसर झोरा हमरा लइले कहि, आगू-आगू विदा भेला। रस्तापर आबि टेम्पू भाड़ा केलैन, तीनू गोरे डेरा पहुँचलौं।

दुनू भाँइ एके डेरामे रहै छैथ, भाड़ाक डेरा छिऐन। सात-आठ कोठरीक मकान, अइल-फइल अग्नेय आगूमे गुँम्बजनुमा ओसार बनल अछि। तइ आगूमे गमलामे फूल सबहक गाछ सेहो पतियानीमे लगल अछि। ओना एक फूलक पतियानी तँ नइ मुदा रहै तँ पतियानीएमे...।

अँगनाक ओसारक कोठरीमे माएकेँ आ मकानसँ बाहर जे गाड़ी रखैबला घर अछि, जइमे एक भागक कोठरी गाड़ी-ले आ दोसर भागक कोठरी डरेवर-ले बनल अछि, तइमे हमरा रहैक बेवस्था भेल। दरभंगेक डरेवर, अपने ऐठाम रहैए। एकटा झोरा माइकेँ सुमझा, दोसर अपन नेने डरेवरबला कोठरीमे शरण लेलौं। ओना कोठरी रहै जोकर जरूर अछि, मुदा मकानसँ अलग तँ अछिए। माइयक जे ओसारक कोठरी रहैन सेहो बेसी अइल-फइल नै रहैन मुदा आगूक ओसरो आ अँगनो तँ रहबे करैन।

तीन भाँइक भैयारी अछि। बहिन नइ अछि। सभसँ पैघ–माने जेठ–दीपक भैया छैथ माने दीपक कुमार। माझिल ज्योति भैया छैथ, माने ज्योति कुमार। आ तेसर अपने छी- प्रकाश कुमार। दीपक भैया जिलाक अफसर छैथ। ज्योति भैया प्रोफेसर छैथ, अपने दसमामे पढ़ै

छी।

गामसँ दरभंगा एला पछाइत जेतबो पढ़ैक सुविधा गाममे छल तेतबो नइ रहल, तँए दिनो-दिन भुसकौल होइत गेलौं। ओना स्कूलक पढ़ाइमे भुसकौल होइत गेलौं, मुदा बजारक काज, डॉक्टर ऐठामक काज इत्यादि

परिवारिक काजमे तेजे भेलौं।

समए आगू बढ़ल। बीस नम्बर ग्रेस पाबि थर्ड डिविजनसँ मैट्रिक जखन पास केलौं, तखन तीनू गोरे, माने माइयो आ दुनू भैयो असिरवाद देलैन...।

माए बजली–

“शुरूहेसँ परकशबाक बुइध मोट छै!”

दीपक भैया बजला–

“भरि दिन मटरगस्ती करैए, सिगरेट-गुटका खाइ-पीबैए तँ पढ़त कथी!”

ज्योति भैयाक महत परिवारोमे कम छैन। आ हमहूँ बुझै छी जे ओ भंगतराह लोक छैथ, कखन कि बजता तेकर ठेकान नै रहै छैन। लगले एक बेर एकटा बात बजता आ लगले ओकरा काटि दोसर बजता। कौलेजोक शिक्षको आ बेवस्थापको सहए बुझै छैन। कहियो अपन क्लास लइले समए बिता कऽ पहुँचै छथिन तँ कहियो दू घन्टा पहिनहि पहुँच जाइ छथिन। मुदा सरकारी कौलेजक सरकारी बेवस्था छी। शिक्षकक तौल-भजार तँ विद्यार्थीक रिजल्टेसँ ने हएत, तइमे ज्योति भैयाक जश सभसँ बेसी छैन। पढ़ैबला विद्यार्थियोक नजैरमे आ शिक्षकोक नजैरमे ज्योति भैया नीक प्रतिष्ठित छथिए। विद्वान प्रोफेसरक रूपमे जानले जाइ छैथ। पढ़बे-पढ़ाएबक जिनगी अखन धरिक छैन।

ज्योति भैया जखन बुझलैन जे प्रकाश ग्रेससँ थर्ड डिविजन केलक अछि, तखन हुनका मनमे कोनो दुरभावना तँ नइ जगलैन मुदा तमतमी तँ आबिये गेलैन। तेकर कारण जे साधारण लोक पिताजी जे हमरा दुनू भाँइकेँ एते तक पहुँचा देलैन, मुदा हमरा दुनू भाँइ सन पढ़ल-लिखल परिवारमे प्रकाश मलिन भेल किने। ओ चपरासी छोड़ि बनियेँ की सकैए। तमतमाएल आबि तँ कहबे केलैन–

“तूँ पढ़ैक मर्म नइ बुझै छेँ। काल्हि जखन कौलेज जाए लगब तखन संगे चलिहेँ, नाओं लिखा देबौ।”

आइ.ए.क विद्यार्थी हम भऽ गेलौं। परिवारक पक्का सेवक बुझू आकि नौकर सेहो तँ बनियेँ गेल छी। मने-मन परिवारक सभपर खौंझ उठबे करैए। मुदा मनमे ईहो बिसवास तँ बनले अछि किने जे दीपक भैया अफसरे छैथ। ज्योति भैया प्रोफेसरे छैथ, नोकरी भेटबे करत। बड़ हएत तँ यएह ने हएत जे हाकिम नइ बनब, प्रोफेसर नइ बनब। मुदा जँ कनियेँ दुनू भाँइ मन देथिन तँ किरानी नइ तँ चपरासी तँ अपनो लूरिये-बुधिये बनियेँ सकै छी। तइले अनेरे किए किनको किछु कहिऐन। मुदा मनमे जे सन्ताप अछि ओ तँ उठि कऽ ठाढ़ होइते अछि। कहू जे ई केहेन भेल जे ज्योति भैया अपन दरमाहाक आधासँ बेसी पाइ किताबे कीनैमे खर्च करै छैथ, तैपर कौलेजक पुस्तकालयसँ आनि-आनि सेहो पढ़ै छैथ, तैयो मन नइ भरै छैन। मुदा हमर किताब कीनै-बेर आँखि नइ उठै छैन! परिवारक काजे भरि दिन दौड़-बरहा करैत रहै छी, यएह सोचि ने जे परिवार अपन छी, सभ अपने छी, तँए कोनो तरहक असोकर्ज परिवारमे नइ हुअए। मुदा हमरा संगे माइयो आ भाइयो-भौजाइक की बेवहार अछि, सेहो तँ परिवारे लोककेँ ने देखए-बुझए पड़तैन। ने पढ़ै-लिखैक समुचित बेवस्था आ ने समुचित समए, तखन जँ भुसकौल नइ बनब, तँ बनब कहिया। मुदा से बुझनिहार ने दीपक भैया आ ने माए। माए अखनो माए छैथ, मुदा रूप

बदैल रहल छैन। जे सुविधा पिताजीक अमलदारीमे दुनू भैयाकेँ भेटलैन, सएह हमरो भेट रहल अछि? कहियो कोनो दिक्कत दुनू भाँइकेँ पिताजी नइ हुअ देलखिन, की ई माए नइ देखै छेली..? मुदा आइ ओ मुँह किए बन्न केने छैथ? हम हुनकर बेटा नइ छिऐन..?

अपन जिनगीक बाटक बन्धन देख मन चिहैक गेल। चिहैक ई गेल जे

जैठाम परिवारक बीच, एते पैघ अनियाय होइए तैठाम दोसर-तेसरक बीच हएब कोन बड़का बात भेल। पिताजी ओना पचास बर्खसँ ऊपर भेला पछाइत मुइला। ओइ दुनू भाँइकेँ जीवैतिक सुखो देलखिन आ नीक पढ़ाइक सुविधा सेहो, जइसँ एक भाँइ प्रशासनिक अफसर छैथ आ दोसर कौलेजक विद्वान प्रोफेसर, मुदा अपने चपरासीसँ बेसी ओकाइत कहाँ बना पेब रहल छी? भोरे जे दूध अनैसँ काज शुरू होइए से गोटे दिन डॉक्टर ऐठामसँ अबैत-अबैत एक-डेढ़ राति बजि जाइए। माइयो ई बात किए ने बुझि रहली अछि जे जेठका बेटाकेँ पतितुल्य माने घरक खर्च उठौनिहार, बुझि रहली अछि आ हमरा बेटो नइ नोकर बना भैयारीक सेवा करा रहली अछि। एहेन दू रंगक नजैर किए छैन। जँ छैन तँ रहौन, आइसँ प्रकाश अपना-ले सोचत। भरि दिन सुतबे करब। सुतबे ऐ दुआरे करब जे जँ काज करए बाहर निकलब, तँ दोसराक खगता हेबे करत, तैठाम तँ सभ कहबे ने करता जे ‘जखन गारजन बनि घरमे हम छियौ, तखन तूँ किए अनका ऐठाम गेलेँ?’

..तँए भरि दिन सुतबे करत।

पएरसँ माथ धरि चद्दैर ओढ़ि दच्छिन मुहेँ सुति रहलौं। उत्तर-मुहेँ सुतब बेवहारिक रूपमे वर्जित अछि। मुदा आँखि चद्दैर तरोमे झँपाएल नइ टक-टक तकिते रहए। जिनगीक उमकी मनमे उमैक रहल छल।

रंग-रंगक बात बर्खा-पानिक बुलबुला जकाँ मनमे उठैत रहए, चमकैत रहए, कोनो कनी दूर तक पानिक वेगमे बहबो करए आ कोनो लगले फुटि जाइ छेलए। मुदा तैयो अपन मनमे किछु संकल्प रोपए चाहि रहल छेलौं। मगर पएरे भँसिया जाइत रहए। वएह ने थीर भऽ पाबि रहल छेलए। धीरे-धीरे मन असथिर होइत अपनापर आबि अँटैक जाइत रहए। जखन घरक भार माए उठौने छैथ तँ कि भैया सभकेँ जहिना सभ किछु जुमौलखिन तहिना किए ने जुमा रहली अछि? डेढ़ बर्खसँ दुइयेटा पेन्ट आ एकेटा शर्ट अछि, कहैले कौलेजमे पढ़ै छी, मुदा किताव-कॉपीक कोनो ठेकान नइ अछि। तेतबे किए, कौलेज जाएब छोड़ि

दइ छी आ भतीजा-भतीजीकेँ नेने डॉक्टर ऐठाम जाइ छी। दिन-राति खटनीमे समए बीत जाइए आ उनटे सभ दोखी बनबै छैथ जे परकशबा भुसकौल अछि। ठीके ने ज्योति भैया कहलैन जे पढ़ैक मर्म नइ बुझै छीही। पढ़ैक मर्म बुझैक कोनो उमेरक ठेकान अछि, ओ तँ कहियो आ कखनो खुजि जाइए। जँ से नइ खुजैए तँ सुखदेव केना व्यासजीकेँ पेटेसँ हूँहकारी भरलकैन...।

व्यासजी लग ऐबते मन अँटैक गेल। अँटैकते मनमे उठल, माए जँ माए छैथ, तँ हुनका किए ने कहबैन जे जखन तीनू बेटा अहींक छी, तखन दुनू जेठकेँ जे अनुकूल सुविधा पढ़ै-लिखैक जिनगीमे देलिऐन से हमरा किए ने दइ छी..?

लगले मन आगू बढ़ि मझिला भैयापर गेल। राति-दिन किताबे पढ़ै छैथ, मुदा एतबो नइ बुझै छथिन जे हमरा खगता केते अछि। काज ओतबेकेँ ओतबे करै छैथ, जेते सभ दिन करैत एला, तखन जँ ओ अपने कितावक पाछू पाइ खर्च कऽ लइ छैथ तखन हमरा केतएसँ देता। परिवारक भारसँ अपनाकेँ कात केने छैथ मुदा पत्नीक हथौटी तँ

खर्च चलिते छैन। अपन खगताक सूची बना महिनो दिनक खर्च पत्नीकेँ दऽ देने छथिन जइसँ अपना कोनो असोकर्ज नइ होइ छैन, मुदा हम छोट भाए छिऐन, से किए बिसैर गेल छैथ। की ओ नइ बुझि पेब रहला अछि जे अखन प्रकाश विद्यार्थी छी, अखन ओकरा पढ़ैले समैयो आ खरचोक खगता छइ। मुदा ओहो बड़के भैयापर ओङ्गठल छैथ...।

‘बड़का भैया’ मनमे ऐबते नजैर दीपक कुमारपर पहुँच गेल। जइ गतिये क्रोध परिवारमे चढ़ि रहल छल ओ रसे-रसे उग्र भऽ गेल। उग्र होइते मनमे उठल– परिवारमे पिताक परोछ भेने तँ वएह- माए, भाए आ भौजाइ- ने श्रेष्ठ भेला, पढ़ल-लिखल छथिए। मुदा हुनकर जे बेवहार परिवारमे छैन, की ओ सोहंतगर छैन? अपना भलेँ सोहौन लगौन मुदा हम नइ मानबैन। की यएह होइ जे अपन पत्नी आ अपन बाल-बच्चाक संग जेहेन मधुर बोली-चाली रखने छैथ, तेहने हमरो सेने रखने छैथ? मलेटरी-कमाण्डर जकाँ बरताव करै छैथ। की हम हुनकर सन्तान तुल्य छोट भाए नइ छिऐन। अपनोसँ बीस दुनू भाँइक पत्नी छैन, बड़का हाकीम जकाँ सात लगा फरिक्केसँ माइक माध्यमसँ हुकुम चलबैत रहै छैथ! माइयो केहेन जे ओ जेना-जेना कहै छथिन, तेना-तेना अढ़बै छैथ..!

मन आरो उग्र भऽ गेल। मनमे रोपि लेलौं, जे कियो उठबैले औता आकि किछु अढ़बैले औता, पहिने हुनकेसँ अपन सवाल पुछबैन।

भिनसुरका समए छिऐहे। समैमे ने बेसी गरमी आ ने बेसी ठण्ढी छइ। मुदा समगमो नहियेँ अछि। तैपर झिहीर-झिहीर पूरबा हवा आरो सोहौन बना देने छै...।

चद्दैर ओढ़ल मनमे उठल- यएह ओ बेला छी जइमे लोक

राजवेलाक फुलवाड़ीसँ लऽ कऽ बेल वगिया होइत बेलीक फुलवाड़ी होइत जूही-चमेलीक फुलवाड़ी धरि फूल लोढ़ए जाइए। जिनगीक उठैक बेर, माने भोर होइत सभ अपन-अपन दुख-धंधाक पाछू जगि जाइए...।

हमरो जगैबेर अछि। आइ हम जागब। जे कियो उठबए औता आ कि किछु अढ़बए औता तिनकासँ अपन जिनगीक बात पुछबैन। से चाहे माए आबैथ आकि भाए-भौजाइ। अपना विषयमे स्वयं सोचए पड़त जे केहेन जिनगीमे छी आ केहेनमे परिवारक आन सभ छैथ, से देखैत अपन मन कि चाहि रहल अछि...।

सभकेँ अपन-अपन मन छै मनक विचार छै विचारक काज छै आ काजक जिनगी छइ। जँ कियो केकरो हाट-बजारमे कोनो बौस किना दइ छै तँ ओकरा दुनू गोरे मानि लइए, जे फल्लाँ जिनगीक काजमे संग देने छैथ, माने बेरपर काज देने छैथ वा उपकार केने छैथ। मुदा जँ कियो अपन जिनगीमे दोसरकेँ देखबैत ओइ काजकेँ करै छैथ, जइसँ देखनिहारकेँ ओते बोध भऽ जाइ छैन, जँ ओहन काज ओ अपने कऽ लिअए जइसँ दोसराक उपकारक जरूरते ने पड़इ, तँ की ओ सेवा नइ भेल? ओना ऊपरे-ऊपर देखलापर बेकतीगत जिनगीक काज भेल, दोसरकेँ कोनो हानि-लाभ नइ भेल, मुदा जिनगीक सच्चाइकेँ पकड़निहारक उपकार नइ भेल, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। सभ देखै छी अज्ञानमे मनुखकेँ जेना होइ छै, पछाइत ज्ञानक बाट पकैड़ ज्ञानी होइत ज्ञानवान बनि ज्ञानदाताक रूपमे अपन जिनगी जीबए चाहै छैथ, तइमे जँ केतौ कोनो राहु-केतु अछि तँ ओकरा बुझए पड़त।

मनक बुलबुला बुबुक-बुबुक समूह बनि सटि एक-दोसरमे किछु मीलियो गेल आ किछु पजरवाहिमे सटि सतरंगी रूप बना चमकौ लगैए। जइसँ लोक अपन चेहरो देखए लगैए।

माएसँ पुछबै–

“माए, जखन दुनियाँक सभ किछु आगू-मुहेँ माने नीक दिस बढ़ि रहल अछि, तैठाम तँ अहाँ जीवित माए छी, दीपक भैया आ ज्योति भैया, जेठ छला तँए हुनका दुनू गोरेकेँ जेठौंस देलिऐन, मुदा परकशबाकेँ की दऽ रहल छिऐ? की अहाँकेँ एतबो बेटाकेँ कहैक इमान नइ अछि जे अपनो जिनगी मन पाड़ि प्रकाशोकेँ ओहन बाटपर चलैक उपाय कऽ दिऐ।”

माए नइ आबि मझिला भैया- ज्योति कुमार- दतमैन करैत टहलए निकैल हमरा कोठरी लग पहुँचला। केबाड़ बन्न खिड़की खुजल देख ज्योति भैया हुलकी मारि जखन देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे भरिसक किछु होइ छै...।

परिवारोमे आ समाजोमे तँ एहेन होइते अछि जे खुशी मनक देह आ बेथाएल मनक देहक क्रियामे अन्तर आबिये जाइ छइ। ओही किरियामे ने संकल्पो-व्रत छिपल अछि, जेकरा लोक किरिया खाएब कहै छइ।

असथिरेसँ ज्योति भैया हमरा सोर पाड़ैत बजला–

“बौआ, प्रकाश?”

एक तँ पहिनहिसँ मन तरङल रहबे करए, तैपर मधुर बोल सुनि मन आरो तरैंग गेल। ओना ज्योति भैयाक बोली-चाली मधुर छैन्हे, मुदा दुनू भाइक बीच गप-सप्प पावनियेँ-तिहार होइए, तँए अपने ज्योति भाइक बोलकेँ ठीकसँ नइ अङेजने छेलौं। पहिने मने-मन विचारलौं जे बजबे ने करब, बुझता जे गाढ़ नीनमे सूतल अछि। जखन दोहरा कऽ बजता तखन अपने ने बोली मधुर बनतैन आकि मौध...।

ज्योति भैया गाढ़ नीन देख मने-मन विचारलैन, नीक हएत जे

वेचाराक नीनकेँ नइ तोड़बै। यएह ने छी चिन्तन-क्षण। ‘मन हरखित तँ गाबी गीत आ मन मुदित तँ सुती निसचित।’

सोचैत-विचारैत ज्योति भैया ससैर गेला। सुनसान देख मनमे उठल–

“ओह! शिकार छुटि गेल। छोट भाए होइक नाते तँ पुछिये सकै छेलयैन ने जे ‘भैया, पिताजी अहाँ सभकेँ विद्वान प्रोफेसर बनौलैन, अफसर बनौलैन जिनका परोछ भेने हमरा अहाँ दुनू भाँइ कि बना रहल छी?”

◌

शब्द संख्या : 2999, तिथि : 21 जनवरी 2016

पान

पान अपन चिन्हारए जहिया देलक तहियेसँ मिथिलाक जीवनक संगी बनि गेल। अदौसँ जहिना मिथिलाक ऋषि-मुनि साग-सतूसँ सटि जिनगी बितबैत एला अछि, तहिना मिथिलाक पानो ने अदौसँ बिनु फूल-फड़क अपन जिनगी हवन-यज्ञसँ लऽ कऽ कृत्ति-यज्ञ तक अरपित-समरपित केने आबि रहल अछि। जहिना माटि-पानिसँ सटल मनुख तहिना ने पानो अछिए। पानेटा किए कहबै, मखानो, माछो तँ अछिए। माटि-पानिक बीच बास करैबला तीनू, जहिना पानिमे रहि माछ-मखान माटि धेने रहैए तहिना माटिपर रहितो ने पान कहै छै–

“धान पान नित स्नान...।”

कृत्ति-यज्ञमे बैसल पानक खिल्लीकेँ पान खेनिहार देख-देख हँसैत रहए। ओना पानक प्रशस्तियेटा आब रहि गेल, खेनिहार दुबरा गेला अछि। किछु गोरे माछ-मासु चिबवैबला ओ तँए अपन दाँत बँचबै दुआरे खाएब छोड़ि देने छैथ, तँ किछु गोरे गुटके दिस बोहिया गेला अछि, मुदा तँए कि रमेशो-दिनेश तेहने भऽ जेता से बात नहि। स्पष्ट बुझै छैथ जे पानक रस बिनु पान खेनिहार केना बुझता। कखन पान फुला कऽ हँसैए आ कखन रस भरैए से बिनु पान चिबेनिहार बुझबे केना करता। कोड़ियो साहित्य प्रेमीक बीच पानक खिल्ली, सुपारीक टूक, जर्दाक डिब्बा, चुनक चुनौटी सभसँ सजल पानक डाली

अछि...।

हजारो-लाखो लोकक बीच प्रेमी जहिना अपन प्रेमिकाकेँ परेख अपन आँखि गड़ौने रहैए तहिना रमेशो-दिनेश अपन, डालीमे रखल पानक खिल्लीपर नजैर अँटकौने। ने कियो कार्यक्रमक आगू भऽ छुबैले पानकेँ तैयार आ ने कियो ई कहनिहार जे, पानक डालीकेँ माथ नै दुखाइ छै जे बीचमे पड़ल अछि।

जहिना रमेश पानक खिल्लियोपर उठी-बैसी नजैर दैत आ जर्दाक डिब्बो देखैत, तहिना दिनेशो। मुदा एते लोकक बीच आगूओ हएब तँ बाधित अछिए। बाधित ई जे नीक रहितो अधला छीहे। ओना दुनू गोरे माने रमेशो आ दिनेशो साहित्य प्रेमी, मुदा दुनू दू डारिक। रमेश विद्वान रहितो हास्य प्रेमी भेने अपन गम्भीरता गमा नेने मुदा से दिनेश अपन बँचौने छैथ। ओना दुनू दू दिशामे बैसल मुदा दुनूक नजैर चारूकात घुमि-फीरि पानक खिल्लीपर आबि अँटैक जाइन। मने-मन कछमछी दुनूकेँ रहैन मुदा दिनेश अपन मनक कछमछीकेँ दाबि कऽ रहि नै सकला, मुँह खुजि गेलैन–

"अपने लोकैन पानक गुहारि किए ने करै छिऐन? वेचारा बीचमे बैसल मत्थाहाथ देने अछि!"

रमेशक बात जिनका जेते नीक लगल होइन, मुदा दिनेशकेँ मननुकूल लगबे कएल। कौव्वालीक मेल-फिमेल जकाँ रमेशक विचारकेँ विचड़ित करैत दिनेशो बजला–

"रमेश भाय, अहाँ ते भगैत गबिते छी, भाउ खेलैमे देरीए केते लागत। हौउ, पहिल गुहारिक गुहरिया अहींक भेल।"

सह पेब रमेश पानक डालीसँ पानक एकटा बीड़ा उठा मुँहमे लेलैन। रमेशकेँ देखते दिनेशोक मन गवाही देलकैन जे जखन एक खेबैया खेबि आगू बढ़ला तखन अनेरे ने मनकेँ रोकने छी। ओहो

पानक एकटा बीड़ा उठा मुँहमे लेलैन...।

एका-एकी आनो केते गोरे उठा-उठा मुँहमे लेलैन...।

पीअर रंगक खिल्ली देख पहिने रमेश झुझुएला, दर्जनो खिल्लीक बीच पहिने हरिआएल रंग दिस आँखि टोहिओलकैन, मुदा से नइ पेब, पकुऐल बुझि खुशी-खुशीसँ मुँहमे लेलैन। मुदा जहिना दुनूक बीच रस-रभस शुरू भेलैन तहिना मुँह आ पानक बीच मधुआएल मन कड़ुआए लगलैन। कड़ुआइते फुटलैन–

"अनाड़ी हाथ पड़ि जहिना बुधिमती मंथराकेँ भेलैन तहिना वेचारे बुधिमत पानकेँ सेहो दुरगैत भेल अछि! कहू..!"

मुदा से मनसँ निकैल मुहेँमे बन्न रहलैन।

जहिना झाँस पड़ल आँखि कड़ुआ कऽ नोराए लगैत तहिना पानक झाँससँ रमेशक आँखि नोरा गेल रहैन। जे दिनेश परेख लेलैन। खग जाने खगक भाषा। अपने फुरने मन बिदकैत रहैन–

"कहू! कियो ई तँ घरवारीकेँ नइ कहने छेलैन जे हमरा-ले पानक ओरियान केने रहब..! जे पानक प्रेमी छैथ ओ अपन प्रेमिकाक जिनगीक उपाय सेहो ने संगे रहै छैथ। या तँ जेतेकालक कार्यक्रम अछि तेतेकाल बिनु पान खेनौं एक-रसमे रहता वा अपन जोगार अपने रखने हेता। कियो बेल खाइए अपना मुँहक भरोसे। लस्सा लगतै आकि गुद्दा भेटतै से तँ ओ जानए।"

दिनेशक आँखि रमेशक आँखि लग जा बाजल–

"भाय, ऐ जिनगीसँ मरने नीक।"

माला जकाँ चारूकात बैसल लोककेँ खिड़ैत रमेशक नैन दिनेशकेँ कहलक–

"अपन सभ जोगार पानक रखने छी मुदा तैयो मरै छी..!"

ओना आन-आन खेबैया[8] जे रहैथ तइमे दू धड़िया भऽ गेल छला, एक धड़िया जे पानक प्रेमी रहैथ तिनका सबहक मन कड़ुआ गेल रहैन, तँए करूआइर पकड़ैले तैयार। मुदा दोसर जे रहैथ ओ कियो स्वागतक सत्कार बुझि मने-मन खुशी रहैथ तँ कियो दस गोरेमे अपनाकेँ पनखौकक परिचय दिअ चाहैथ।

रमेशक मन विचड़ए लगलैन। कहू! जे काज[9] पुस-पुसताइनसँ चलि आबि रहल अछि तहूमे अनाड़ी बनि जाएब केहेन भेल? अइले कोन बड़का भारी ज्यामितिक फर्मूला रटैक जरूरत छै! भेल तँ पानक पात, चुन, खाएर, सुपारीक जोगक क्रिया। पानक पीठ चुन लगत। चुने ने पानक धार छी। यएह ने अपनासँ सबैया खाएर पीब अपन रंगो बनौत आ रसो भरत। जँ चुनक सबाइ लगा खाएर नइ देब तँ ओ अपन ताल-मात्रा करैत जीहकेँ छिलबे करत किने...।

ओह! भरिसक पान लगौनिहार चुने ने तँ बिसैर गेला। जँ चुन पड़ल रहैत तँ पानक पात जे पिरौंछ अछि ओकरा नइ हरियरीक सुआद तँ कम-सँ-कम हरयरीक समगमपर जरूर अनैत। से तँ मुँहमे ओहिना कहैए–

"हमर तँ गुणे कड़ुआएल छी।"

ठीके कहैए किने। पहिने पानक सत्कार करबै, माने समुचित ढंगसँ लगेबै, तखने ने ओहो अपन सखी-सहेलीक संग फुलौत-फड़ौत। जैठाम ओकरो कुभेला हेतै तैठाम जे ओहो कुभेला करत तँ ओकरे कोन दोख...।

रमेशक नजैर मुँहक पानक संग जर्दापर पड़ल। सुपारी तँ टूके-टूक अछि तँए ओकर कोनो दोखे नइ, मुदा जरदो तँ अपन करामात

[8] पान खेबैया
[9] पान लगाएब

नहियेँ देखबैए! ओ किए ने देखबैए? जखन कि हरि शंकर जर्दाक संग तुलसियो अछि। तखनो कोनो चहल-पहल मुँहमे नइ देखै छी! से एना किए भेल..?

..आगू डालीमे राखल जर्दाक डिब्बाकेँ हाथमे लैत रमेश तजबीज करए लगला जे बेसी दिन भेने जाकड़ी तँ ने भऽ गेल अछि। मुदा सेहो नइ अछि, पीठपर स्पष्ट लिखल छै दू मास पहिलुका पेकिंगक तारीख।

फेर तुलसीक पौंचकेँ उठा देखलैन तँ ओहो ओहिना, माने दू मास पहिलुका तारीख। तखन एना किए भेल! मने ने तँ गड़बड़ अछि..?

अपना मने मनमे रमेशकेँ शंका भेलैन। जखन मने गड़बड़ तखन तँ दुनियाँक सभ किछु गड़बड़ लगबे करत। मुदा रमेशक मन अपन गड़बड़ी मानैले तैयारे ने भेल। फेर रमेश दोहरा कऽ चाहलक जे पानक खिल्लीकेँ खोलि कऽ देखिऐ जे चुन-खाएर जोगानुकूल पड़ल छै की नहि। जखन पान-चुन-खाएर-सुपारीक जोग क्रिया मीलि जाएत तखने ने जर्दाक गुण-अवगुण बुझब। तहूमे जरदा तँ अनेरे ऊपरसँ आबि अपन चालि पानकेँ पकड़बै छइ। जँ से नइ अछि तँ किए पान खेबैया अपन बचकानी अवस्थामे बिनु जर्देक पान खाइए। पछाइत मनकेँ मन्दिरक घण्टी जकाँ जे रसे-रसे घन्टा बनि सिंह दुहारिपर ठाढ़ भऽ जाइए, तहिना ने पानो खेनिहार पान खुऔनिहारकेँ पुछि लइ छैथ जे काली पत्ती कोन छी, पान सए नम्बर पत्ती अछि किने, तुलसी तँ ने डुप्लीकेट कम्पनीबला रखने छी...। ओना आब तुलसीए किए कहबै, एके कम्पनीक एक सीख-लिखक डिब्बामे एकटा अक्षर घुमा दइए आ डुप्लीकेट दुनियाँक बजारमे अपन डुप्लीकेट समान बेच लइए...।

रमेशकेँ किछु फुरबे ने करइ। केतबो मनकेँ पाछूसँ उधूक्का मारि

जगाबै जे कड़ुआएब छोड़ि मधुआ जाइ, जे ई साहित्यिक कार्यक्रम छी, ऐठाम मधुरस कलशक बँटवारा हएत...। फेर मनमे होइ जे जानियैं कऽ ने तँ हम अन्हरजालमे पड़ि गेलौं। पान खाइ छी, अपन रखने छी, अपना मने नबाबी खिल्ली खाएब आकि गुलाबी खिल्ली, से तँ अपने मने ने करब। ओह! अनेरे पानक लोभमे मनकेँ दुइर कऽ लेलौं...।

अपने विचारमे रमेश पेशोपेश हुअ लगला। दिनेशक मन बिचड़ैत जे पान तँ अपनो संगमे अछि, मुदा जैठाम एते उच्च कोटिक मञ्च अछि, तैठाम एहेन निम्न कोटिक सु-सुआगत-विन्यास होइ, ई तँ उचित नहि। जखन सभ बुझै छी, पानक पात आ चुनक जोगसँ पानक बीड़ा बनि जाइए, ओना पानेकेँ के कहए जे पानक डण्टियो अपन महत ओतबे रखने अछि। माने ई जे कियो पानमे खाएर नइ खाइ छैथ, तँ कियो सुपारी नइ, कियो सुपारी खाइ छैथ तँ कियो जरदा नइ। मात्र चुने-पानेक संयोगसँ ने पान बनि जाइए। ई दीगर भेल जे पूर्वांचल- जेना असाममे कँचका आधा फाँक सुपारी आ पानक पातक खिल्ली बनैए। ओइठाम लोक खाएरक कोन बात जे चुनोक परहेज करै छैथ। मुदा ओइठाम खाली असमिया सुपारी अपन संग पानकेँ करैत, चुन, खाएर, जरदा सभ किछुकेँ त्यागितो पान सुपारियोकेँ पाने कहा लैत...।

असामक कँचका सुपारीक पान दिनेशक मनमे ऐबते नाचि उठल- भाय! मिथिलाक पानक ने चर्च अछि। मिथिलाक ओ पान जे जानु मुनि उपजबै छैथ, जेकर अपन रूप छै, रंग छै, रस छै, सुआद छै...।

मनमे ऐबते दिनेशकेँ बुधन भाय मन पड़लैन। झंझारपुर बजारसँ अबैकाल, किरिण डुबि गेल रहए। पहिल साँझो बीत गेल

रहए, आधापर दोसर साँझ आबि गेल रहइ। घर-अँगनामे डिबिया-लालटेन टिमटिमए लगल रहए। ओना अन्हरिया राति रहने अकासोमे लोकक माथक केश जकाँ छोट-पैघ लग-दूरक तरेगनो सभ जगि-जगि तकए लगल रहए। पुरना साइकिलपर चढ़ल बुधन भाय सेहो पान बेच घुमल रहैथ। नव सेनरेले साइकिल, तँए दिनेश बेसी रेशमे चलबैत रहैथ। कड़कड़ाइत-खड़खड़ाइत साइकिलपर चढ़ल बुधन भाय लागल-लागल घर दिस अबैत रहैथ। ओना पहिने हम साइकिलक खड़खड़ाएब परेखलौं। मुदा साइकिलपर सवार बुधन भायकेँ नइ पहचानि सकलयैन। मुदा साइकिलमे साइकिलक धक्का नइ लगि जाए ई सोचि जखन अपने दहिन होइत टपए लगलौं, तखन सोझा-सोझी पड़िते बुधनो भाय तकलैन। दुनू गोरे दुनू गोरेकेँ गामक संगी बलियारिक एगच्छा लग पेलौं। हमरा किछु बजैसँ पहिनहि बुधन भाय बजला–

“बौआ, एते रेश साइकिल अन्हारमे किए चलबै छी?”

बुधन भाइक विचारक उत्तर नहि दैत पाशा बदैल कहने रहिऐन–

“एते अबेर केतए भऽ गेल बुधन भाय?”

अपन काजक बात बजैक अवसर पबिते बुधन भाइक मनमे खुशी एलैन, खुशी ऐबते बजला–

“बौआ, अहाँ अपन साइकिल अगुआ लिअ, पाछू-पाछू हम चलबो करब आ कहबो करब।”

बुधन भाइक बात सुनि कहने रहिऐन–

“चौड़गर रस्ता छइहे, तहूमे जे केतबो टुटल छै तैयो तँ प्रधाने मंत्रीक योजनाक सड़क छिऐ किने, चौड़गर तँ छइहे। भने नीक हएत जे सोझा-सोझी रहब तँ गप करैमे बेसी नीक हएत। ”

तैपर बुधन भाय बजला–

“अपन-अपन मेगर धेने चलू।”

बुधन भाइक बात सुनि मुस्की मारि खाली मुस्किया लेलौं, बजलौं किछु ने। जे सभ दिन सभ क्षण होइतो अछि आ होइतो आबि रहल अछि जे लोक अपन करेज फाड़ि अपन कर्मज्ञान दान करए चाहितो छैथ आ चाहितो आबि रहल छैथ। यएह छी दानक प्रवृत्ति जे आइये नइ अदौसँ आबि रहल अछि। मुदा अही ज्ञान-दानक प्रवृत्तिमे अज्ञान सेहो तेना घोसियाइयो जाइए आ घोंसियाइत सेहो आबिये रहल अछि। जैठाम पवित्रताक सीमित सूत्र अछि तैठाम अपवित्रताक असीम सूत्र सेहो अछि। कोनो नीक काजकेँ नीक केनिहार बुझिनिहार एक भेला, मुदा अभावक कारणे वा अविचारक कारणे कनी-कनी कमैत असंख्य बनि जाइए। जइसँ सुवृत्ति कुवृत्तिक रूपमे जाल जकाँ पसैर गेल अछि।

हमर मुस्की बुधन भाय अन्हार दुआरे नइ देख पेला मुदा मुँह बन्न देख मन कलैश गेल रहैन। कलैशते जेना हृदैमे बिनबिनी उठए लगलैन। तरेतर तेना बिनबिनाए लगला जे...। भेल जेना अपन छाती फाड़ि-फाड़ि कऽ बुधन भाय हमरा ओढ़ा देता। लोक की लऽ कऽ आएल अछि आ की लऽ कऽ जाएत, मुदा जँ अपन काजक लूरि केकरो दऽ दइ छिऐ आ जँ ओ ओइ लुइरिक बले ठाढ़ चलैत रहल तँ ओ लूरि लूरिहारक मन पाड़बे करत किने...।

बुधन भाइक मनमे हिलकोर मारए लगलैन जे हमर जिनगीक लीला हुनकासँ हटल अछि। मुदा समाजो तँ समाज छिया। समाजक बेथा-कथा समाज नइ बुझै, तखन समाज ठाढ़ भऽ चलत केना? ओना समाजक ढाँचागत रूप नइ अछि, विचारगत अछि, जे काजगत भऽ जिनगीक संग चलैत रहैए, तहिना बेकता-बेकतीगत सेहो अछि जे

विचार-गतिये सम्बन्ध बनबैत चलैत रहैए। घुमैत-फिरैत बुधन भाइक नजैर हमरा प्रश्नपर पहुँचलैन– ‘एते अबेर केतए भऽ गेल।’

बुधन भाइक मन जेना फेर नचलैन, अबेर ने अबेर छी आ ने सबेर। एकक शुरू एकक अन्त...।

..मुदा दिनेशो तँ पढ़ल-लिखल नवजुबकक समाजमे छैथ, जे बात पुछलैन तेकर उत्तर नइ देबैन सेहो केहेन हएत। मुदा बातक पाछू सिरक संग सोरो तँ नमहर अछिए। पुछलैन जे अबेर केतए भऽ गेल। मुदा अबेर भेल कहाँ अछि। सभ दिन किरिण लहसैत पानक ढोली लऽ कऽ झंझारपुर बजार जाइ छी, पानक दोकानदारकेँ ढोली-ढोली दैत सौदा अन्त करै छी, बीचमे झंझारपुर स्टेशनपर चाह पीबै छी, जलखै करै छी, दोकानदारसँ पाइ असुलैत जेतएसँ काज शुरू केने रहलौं, तेतै आबि अन्त होइए। अपन परिवारक चीज-वौस कीनै छी, आठ-साढ़े आठ बजे धरि गामपर पहुँचै छी। खाइ-पीबै छी, सुतै छी, फेर भोरेसँ अपन दुख-धन्धामे लगि जाइ छी। सभ दिनेक ने कारोबार छी...।

थोड़ेकालक पछाइत बुधन भाय बाजल छला–

“बाउ दिनेश, कहैले बहुत बात मनमे लुसफुसाइ-ए, मुदा आब तँ दुनू गोरेकेँ रस्ता एके पाँतर कटैले अछि, तँए अधखड़ुआ बातसँ नीक जे ओकरा छोड़िये दिऐ।”

कहलयैन–

“छोट-छोट गप कहियौ जे, कमो समैमे बेसी हएत।”

बुधन भाइक मनमे उठलैन। पान बेच कऽ जा रहल छी एतबे कहलासँ पानक जड़ि थोड़े बुझता, तँए पान केना उपजैए से पहिने कहि देब नीक हएत...।

बजला–

"बाउ, पानक रोप[10] बारहो मासक दू मौसममे होइए, एक चैती आ दोसर अखाढ़ी, माने एक गरमी मौसममे आ दोसर बरसात मौसममे। मुदा दुनूक बीच अकास-पतालक अन्तर छइ। ओ अन्तर भऽ जाइ छै कठिन श्रम आ साधारण श्रममे। माने ई जे चैती रोपक पानकेँ दिनमे तीन बेर बड़का लोइटसँ पटौल जाइए जे भारिये नइ बहुत भारी होइए। जखन कि बरसाती रोपमे पटौनीक बचत होइए। खेतीले पानिक विशेष खगता होइते छइ। मुदा चैती रोप पान सालक भीतरे फड़ियो जाइए आ बरसाती रोप बरसातमे लगि तँ जाइए मुदा हाले-बेहाल भऽ खिद-खिद करैत जाड़मे पकड़ा जाइए, जइसँ अगिला सालमे ओकर बाढ़ि होइ छै आ फड़ैए।"

नमहर साँस छोड़ैत कहने रहिऐन–

"बुधन भाय, अगिला मोरपर सँ अहूँ अपन घर दिसक रस्ता पकड़ब आ हमहूँ फूटि कऽ अपन घर दिसक रस्ता धड़ब। एकटा बात कहू तँ अपन जिनगीकेँ सवुरिया गाछ बनौने छी किने?"

'सवुरिया गाछ सन जिनगी' सुनिते बुधन भाइक मन जेना पाकल गौरिया केरा जकाँ पघिल गेलैन तहिना मधुआइत बजला–

"बाउ दिनेश, जखन मनमे कखनो छल-प्रपंचक विचार नइ उठैए तखन सवुर किए ने रहत। तहूमे ओहन वृत्ति-चक्रमे जिनगी चलैए जेकर पाते फूलक संग फूल-पात आ प्रसादक संग पान-परसादक रूपमे हँसैत रहैए।"

गामक मोड़ लग पहुँचते बुधन भायकेँ कहने रहिऐन–

"भाय साहैब, अहाँ भने बामा भागक मेगर धेने अबै छी, मौड़ैमे हमरो कोनो बाधा नइ हएत, सोझे बढ़ैत रहब।"

[10] खेतीक शुरूआत

जैठामसँ दुनू गोरे दू दिस फुटब तैठाम साइकिल ठाढ़ करैत बुधन भाय कहलैन–

"बाउ दिनेश, एते-कालक गप ते पानक जड़िये-छीपमे चलि गेल, मुदा अबै छी जेतएसँ से तँ छुटिये गेल।"

'छुटब' सुनि हमहूँ साइकिल ठाढ़ करैत कहलयैन–

"भाय साहैब, आब ते घर लग आबि गेलौं, साइकिल गुड़कबैत पएरो जा सकै छी, मुदा जे पुछने छेलौं आ ओ जँ बाँकी रहि जाएत, तखन दुनू गोरेक मन घबाह भेल रहत। अहूँकेँ मनमे रहत जे अपन विचार मनेमे रहि गेल, आ हमरो मनमे रहत जे फल्लाँ बात नइ बुझलौं। तँए ओ बात कहिये दिअ।"

जहिना घाओक जखन खिलक अन्तिम अंश निकलए लगै छै तखन दुख अपने सुख बनए लगै छै तहिना बुधन भाइक मनमे भेलैन। बजला–

"बाउ दिनेश, जे काज करि कऽ घुमल अबै छी, ओ दिनो-देखार भऽ सकै छल, घरसँ बहराक काज दिने-देखार करब उचितो छी आ नीको अछि।"

बुधन भाइक बात सुनि चौकन्ना भऽ गेल रही। चौकैक कारण रहए अपने बुझैत गल्ती करब। मुदा से सोझे केना पुछितिऐन, तँए एतबे कहलयैन–

"से की भाय?"

हमर बढ़ैत जिज्ञासा देख बुधन भाय कहने छला–

"बौआ, बीच रस्तापर दुनू गोरे ठाढ़ भऽ गप करब नीक नइ, अन्हार ऐछे कियो साइकिलबला धड़फड़ाएल आबि ठोकर लगा देत, जइसँ अपनो जान गमाएत आ अपनो सबहक जान लेत।"

बुधन भाइक विचार सोहंतगर लगल, कहने रहिऐन–

"बेस कहलौं भाय, अपना रस्ता दिस घुमा अहाँ अपन साइकिल ठाढ़ कऽ दियौ आ हमहूँ अपना दिस कतबाहि लगा अपनो साइकिल ठाढ़ कऽ दइ छिऐ।"

दुनू गोरे अपना-अपना रस्ता दिस साइकिल ठाढ़ कऽ एकठाम आबि पहिने बैसलौं आ बैसते कहने रहिऐन–

"भाय साहैब, जखन पानक खेतियो अपने करै छी आ बजार जा बेचबो अपने करै छी, हमरा बुझने काजक नमती बेसी अछि।"

हमरा बातकेँ लोकैत बुधन भाय बजला–

"बाउ, से ते अपनो बुझै छी, मुदा समए संग चलैले लोकोक किरदानी कम नइ ने बाधक अछि।"

अपना मनमे उठल ऐमे लोकक की किरदानी! कियो अपन काज करैए, तइमे आनक की नोकसान होइ छै जे बीचमे बाधक बनत..?

पुछलयैन–

"से की भाय?"

अपन मनक बात निकालि बुधन भाय बाजल छला–

"बौआ, आन वौस जकाँ अमेरिका-इंग्लैण्डक दलाल थोड़े पानक वेपारी छी। ओना पानक वेपारो होइते अछि। माने ई जे पान उपजेनिहारसँ वेपारी अपन बजारेक दोकानदार सबहक बीच बेच अपन समए आ पूजीसँ लाभ लऽ जँ वेपार करैए तँ ओ काज संचालनक एक प्रक्रिया भेल, मुदा से नइ ने करैए, झूठ-फूस बाजि गाम-घरक लोककेँ ठकि लइए, तैसंग उधारी कारोबार करैत सालक-साल पूजीकेँ डुमा सेहो दइए।"

बुधन भाइक विचारकेँ मानैत बाजल रही–

"हूँ, ई तँ सम्भव अछि।"

'सम्भव' सुनि बुधन भाय बाजल छला–

"बाउ, अपन जिनगीकेँ ठूठ गाछ जकाँ पाङि नेने छी। जेतबे सम्हरैए तेतबेटा काजक जिनगी बना नेने छी।"

इम्हर रमेशक मन तरे-तरे तेते कड़ुआ गेलैन जे कातमे जा पानकेँ थुकैर दिनेश लग आबि ई सोचि बैसला जे पनखौक जेहने अपने छी, तेहने दिनेशो छैथ, दुनू गोरे लखनौआ नबाबी खिल्ली खेनिहार छीहे। खेनिहारे नइ छी, अपन सभ जोगारो रखिते छी। मुदा समूहक बीच जखन पानक डाली राखल अछि, तैठाम जँ अपन पान निकालि खाएब तँ चारूकातक लोक छक्का मारबे करता किने। छक्काक अनुकूल परिस्थितियो छइहे। माने जखन बेवस्थापक दिससँ बेवस्था ऐछे तखन अहाँ पानक बड़ सियारवी छी आकि बेवस्थापकेँ बेइज्जत करए चाहै छिऐन। एक तँ अहुना अपनो अनुकूलकेँ के कहए जे प्रतिकूलो स्थितिमे सदिकाल छक्केक प्रयोग करै छी तैठाम अपनो ने छक्कामे पड़ब। मुदा दिनेश लग रहलासँ से नइ हएत। दू गोरे रहब हमहीं अगुआ कऽ बाजब–

"पानक सत्कार केने छी आकि मजाक केने छी, जँ पान लगबैक लूरि नइ अछि, तँ डालीमे ओहिना पानक पात, चुनौटी, खाएर, सुपारी आ जर्दा रखि दैतिऐ, जिनका जे सोहंतगर लगितैन, तइ हिसाबे से अपन-अपन लगा-लगा खइतैथ।"

जेहने घोर मन रमेशक तेहने दिनेशोक। मुदा दुनू गोरेकेँ एकठाम भेने पनखौक समाजक रूप तँ बनिये गेल। जखने समाज बनत तखने ने समाजीकरण बनैमे किछु-ने-किछु समस्या औत।

ओना, कोनो बेकतीगत ओहन जिनिस सेहो अछि जे सोलहन्नी

अपना हाथे उपजा ओकर उपभोगे अपने करै छी, तैठाम समाजिक समस्या नहियोँ आबि सकैए, मुदा जैठाम एकक उत्पादन माने एक गोरेक उपजौल, दोसरक उपभोगक वस्तु बनत, तैठाम तँ समाजक बीच एक-सूत्रता लेल समस्याक समाधानक उपए तँ करए पड़ै छइ। अपन जइ जगहपर- माने साहित्यिक कार्यक्रममे क्रियान्वित हुअए आएल छी तैठाम जँ मने मलिन भऽ जाए सेहो तँ नीक नहियेँ छी। नीको केना रहत, भाय सब कियो दुनियाँक रंगमञ्च पर अभिनय करए आएल छी, तैठाम जँ किछु अभिनव नइ कऽ सकलौं, तखन अपन समैकेँ के कहए जे अनको समए खेलिऐन किने! मुदा उपए...?

दिनेशक मनमे उठलैन- अपने मनसँ जानी, दोसरोक मनक हाल। मुदा तइले तँ पौआही, कनमासँ नइ हेतै, ओइले तँ मनगर मन चाही किने। आ सएह जखन भङैठ गेल, तखन मरियाएल आकि सरियाएल मने थोड़े हएत। ओइले चिकनाएल मन चाही।

आँखिक इशारासँ दिनेश रमेशकेँ कहलकैन–

“पेशावक बहाने दू गोरेकेँ उठब वर्जित बुझल जाइ छै, तँए कोनो एहेन भवगर नजैर बना लिअ, जइसँ वक्ता बुझता जे हमर वक्तव्यक विचार करए दुनू गोरे उठला। लूटमे चरखा नफ्फा जहिना होइ छै तहिना अपनो सभ अपना मनक मान मानि पान खा लेब।”

ओना रमेशक मन बेसी कड़ुआ गेल रहैन, तेकर कारण रहैन जे वेचारे आन व्यसनक कोन बात जे पानक संगी चाहोकेँ लाभरे-जीभर चाहै छैथ, तैठाम पतिव्रता जकाँ लऽ दऽ कऽ पानेटा मे अपन सर्वश्व निछावर केने छैथ, तँए कड़ुआएल क्रोध तँ मनमे रहबे करैन।

..दुनू गोरे सझिया-साझ करैत, पानक झोरीसँ डगडगाएल हरियर पात निकालि एक टुकड़ीकेँ दू टुकड़ी बना दुनू गोरे, सौंसे पीठ पहिने चुनौठलैन, खाएरक रंग चढ़बैत मुँहमे लेलैन, पछाइत पान सए

नम्बर पत्ती अहगरसँ मुँहमे लइते रमेशक मन फुला गेलैन। बजला–

“भने अखन दुइए गोरे छी, कहू जे एम.ए. पास संस्कृतसँ केने छी, कए गोरे हमरा जकाँ विद्यालयक रठान कऽ पढ़ने छैथ, हमरा सेने तँ समाजक बेवहार व्यास बाबा जकाँ ने होएत, से छक्का मारैक लूरि भेल आ छक्का मारैत-मारैत अपने छका गेलौं। जैठाम कियो कोनो मञ्चपर ठाढ़ होइसँ पहिनहि, सुनैले हँसैत मन बना लइ छैथ, तैठाम की करब?”

दिनेश बजला–

“अनेरे, सभकेँ शंका हेतैन...।”

दुनू गोरे कार्यक्रममे फेरसँ सहभागी भेला।”

◌

शब्द संख्या : 3115, तिथि : 26 जनवरी 2016

आजुक जिनगीक आइ परीक्षा

जिनगीक संग परीक्षा कोनो आइये नइ सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि, आगूओ होइत रहत। मुदा से नइ, पचपन बर्खक श्याम सुनर बाबू, जिनका किछु गोरे श्याम बाबू सेहो कहै छैन, जे सत्ताक उच्चासीन छैथ, हुनके हाथे परसू साहित्यकारक सम्मान प्रसारित हएत...।

दोसैर साँझ शुरू होइते श्याम सुनर बाबू अपन बैठकीमे घुमि-फिर कऽ आबि चाह पीबिते रहैथ कि धक्-दे मन पड़लैन। मन पड़िते आलमारीसँ फाइल निकालि टेबुलपर अनलैन। कपक बँचल चाह पीब पान खेलैन। फाइलपर हाथ दइते मन धकधकए लगलैन। मोबाइलिक घण्टी जेना मनमे टनटनए लगलैन। सैकड़ो साहित्यकारक सैकड़ो पैरवी मनमे नाचए लगलैन। सभकेँ तँ यएह ने कहने छिऐन जे समए एलापर देखल जाएत। मुदा कि देखल जाएत? मोबाइलोक पैरवीकार कि कोनो एके रंगक छैथ। रंग-रंगक तँ ओहो छथिए। किछु गुरुजन छैथ तँ किछु संगी-साथी, किछु हितो-अपेक्षित तँ छैथिये। तैठाम की देखब..?

लगले श्याम बाबूक मनमे दोसैर साँझक शाम समाए लगलैन। समाइते मन फुरफुरेलैन। फुरफुरेलैन ई जे अड़तीस सालक राजनीतिक जिनगीमे जे कौलेज छोड़ि राजनीतिमे आएल रही, अही संकल्प संग

ने जे समाजक उत्थानमे सहयोगी बनब, जइसँ देशक उत्थान हएत, देश उठि कऽ आगू बढ़त। जइसँ समाजो उठि-उठि आगू बढ़त। अहीले ने जयप्रकाश बाबूक आन्दोलनमे जहल गेल रही। ओहो ने सम्पूर्णताक माने सम्पूर्ण क्रान्तिक डाक भरने रहैथ। तइ दिन तँ एतबे ने मनमे रहए जे समाजक अंग बनि समाज-सेवा करब। वएह ने राजनीति भेल। जखन कि अनुकूल समए भेटल, आइ राज्यक श्रेष्ठ सम्मान पुरस्कार दइक भार ऊपरमे अछि...।

श्याम बाबूक मन ठमकलैन। ठमकलाक किछु कालक पछाइत श्याम बाबूक मन अपन जिनगीक राजनीतिक खेल खेलाए लगलैन। अखन धरि जहिना अनका संग अपने छह-पाँच केलौं, तहिना ने अपनो संग आनो कम नहियेँ केलक। जे आनो बुझैए आ अपनो मन कहिते अछि...।

मुदा किछु भेल, एकरो तँ नकारल नहियेँ जा सकैए जे चाहे कोसी-गंगाक स्वच्छ पानिक घाट हौउ, आकि कमला-बलानक धोर-मट्ठा भेल पानिक घाट, चाहे लिढ़ाएल-समाढ़ाएल कोनो पोखरियेक घाट हौउ, आकि सड़ल-गनहाएल डबराक घाट, आकि मैल-कुचैल चिक्कन करैबला धोबिये-घाट हौउ.., अड़तीस बर्खक राजनीतिक बढ़ैत जिनगीक संग रंग-रंगक टपानो टपैट ऐठाम आबि उच्चासीन भेले छी..! ‘उच्चासीन’ मनमे ऐबते श्याम बाबूक मन चौंकलैन। ऊहि जेना जगलैन। भवितव्य गाछक फल बँटैक बेर छी! भविसक संग जिनगी सटैक धार छी। जइ धारक घाट टपैक प्रश्न अछि...।

श्याम बाबूक हृदए धकधकेलैन, धकधकाइते बोल निकललैन–

“पवित्र पावन मनसँ विचार करक अछि।”

टेबुलपर राखल फाइल खोललैन। सैयो साहित्यकारक सूची अछि! अखन एते कम समैमे केना नीक-बेजाएकेँ बेड़ा सकब..?

ठमकल मन श्याम बाबूकेँ, ने आगूक कोनो बाट सुझैन आ ने पाछूए हटने बनैबला। सरकारी काज छी। आगू-पाछूक बीच सीमापर श्याम बाबूक मन ओहिना ओझरा गेलैन, जहिना धरती-अकासक बीच क्षितिजपर कोनो हवाइ-जहाज फँसि जाइए। साहित्य अकादेमीसँ फोन एलैन–

"परसू दस बजे समारोह छी, मात्र काल्हि भरिक समए अछि, अहीमे कार्यालयक सभ काज सम्हारि पुरस्कार पौनिहारक हाथमे आमंत्रणक चिट्ठी थमा देब अछि, तँए..?"

आगूमे राखल फाइलिक कागजात, चारूकात पसारि कऽ मने-मन विचार करैक विचार उठिते ई+मन[11] विचार उठौलक–

"अखन तक साहित्य क्षेत्रमे जे अछि, ओ तँ कौलेजेसँ देखैत आबि रहल छी, मुदा..?"

'मुदा' लग ऐबते श्याम बाबूक मन ओहन अन्हारमे ओतऽ अन्हारा गेलैन, जेतए लोक बुझैए जे आब खसब छोड़ि कोनो सहारा नइ अछि...। लगले मनमे उठलैन–

"धरती-अकासक बीच क्षितिजपर तँ अखन अपने छी, तखन..?"

श्याम बाबूक मन तेना अन्हारा गेलैन जे ने आगू किछु देखैथ आ ने पाछू...।

ओही अन्हारमे अन्हराएल मन टोकलकैन–

"इतिहासो तँ आगूमे बैसले अछि। अखन तँ जीबै छी, मुइला पछाइतो केतेको लोक ओहन भेला, जिनकर एगारह-एगारह बेर साड़ासँ निकालि पोस्ट-मार्टम भेल। आ केते कि भेल से इतिहास

[11] इमान

बुझनिहार जानैथ...।"

मनक टोनसँ श्याम बाबूक मनमे टंकार जगलैन। केकरो रोटीपर नोन नइ, केकरो बोड़ा-बोड़ा! स्पष्ट धारा बनि रहल अछि जे किछु परिवार, जाइत नहि, सत्ताक परिवार बनि गेल अछि आ बहुसंख्य कात लागल अछि! ओकरा के देखत? मुदा अखन तँ सत्ताक ओइ घाटपर तँ अपने ने आसीन छिऐ...। 'सत्ताक घाटपर अपने' मनमे ऐबते श्याम बाबूक विचार आगू घुसैक गेलैन। घुसैकते असथिर चित्त करैक विचार दोसर मन देलकैन। विचार जगिते जेना सभ किछु बिसैर गेला तहिना श्याम बाबूक मन फरिछा गेलैन। फरीच होइते चाह पीबैक इच्छा भेलैन। अपन की चाह अछि, एकरे तँ परीक्षा छी आ यएह छी आजुक जिनगीक औझुका परीक्षा। जाबे तक कियो कोनो विचारकेँ संकल्प सद्दश्य नहि पकड़त ताबे तक जिनगी ढुलमुल बनल रहत। मुदा सत्तो तँ सत्ता छी, शासन छी, जे बिना अनुशासित भेने नइ चलै छै...। बिच्चेमे पत्नी चाह नेने आबि श्याम बाबूकेँ टोकलकैन–

"मन बड़ खसल देखै छी?"

एक घोंट चाह पीब श्याम बाबू बजला–

"मन की खसल रहत, बेठेकान भऽ गेल अछि।"

पत्नी–

"केहेन फाइल अछि जे मने बेठेकान भऽ गेल अछि?"

श्याम बाबू–

"बुड़िबकहाक फाइल रहैत तखन तँ गहुमक भूसी जकाँ बोड़ामे कसि कऽ रंगसँ ऊपरमे टीप दैतिऐ, मुदा से नइ ने छी कविलाहाक फाइल छी, जँ एकोरत्ती एनए-ओनए हेतै तँ सभ कबलैती घोंसाइर देत।"

'कविलाहा' सुनिते सुचिताक मनमे सुचिन्त्यनाथ[12] नाचि उठलैन। उठिते पतिकेँ मन पाड़ए चाहली, मुदा तइ बिच्चेमे मोबाइलिक घण्टी टनटनेलैन–

"सर, परसुए समारोह छिऐ, अपने कहने रही जे समए एलापर मन

पाड़ि देब...।"

'समए एलापर मन पाड़ि देब' सुनिते श्याम बाबू थकथका गेला।

'बाप रे! की जवाब देबइ..!'

मुदा तैयो श्याम बाबू अपना मनकेँ बाटीक पानि जकाँ रसे-रसे थीर केलैन। थीर होइते बजला–

"नाम बजिते ने छी आ छुछे ओहिना मन पाड़ै छी, अखन ओते समए अछि जे खिस्सा-पिहानी सुनब। अहू सभकेँ ई आदत लगि गेल अछि जे छोटो-छीन बात-ले घन्टा भरि भूमिके बन्है छी!"

मोबाइलमे फेर घण्टी बाजल। श्याम बाबू पहिल लाइनकेँ काटि दोसर गोरेसँ गप-सप्प शुरू केलैन...।

एकटा संगी अपन समांगक सम्बन्धमे मुहाँ-मुहीं गप-सप्प केने रहैन। गप-सप्पक क्रममे श्याम बाबू कहि देने रहथिन–

"जे काज अपना हाथक अछि, ओ करैमे थोड़े हिचकिचाएब। समए एलापर बुझल जेतइ।"

समैक ताकमे सभ अपन-अपन घाटपर बंशी पाथने। ओना मोबाइलमे नाओं आबि गेल रहैन, मुदा तैयो श्याम बाबू पुछलखिन–

"के बजै छी?"

[12] पतिक पुरान संगी

"किशोर छी, भाय साहैब अपने संगे जे साहित्य सम्मानक सम्बन्धमे चर्च भेल छल, वएह..?"

श्याम बाबू सकपका गेला। की जवाब देब। मुदा तैयो मनकेँ दबैत-दबैत असथिर केलैन। असथिर होइते बजला–

"अखन निर्णयपर नइ पहुँच पेलौं अछि, तँए जे किछ कहैक हुअए, झब-दे कहू।"

'झब-दे कहू' सुनि किशोरक मनमे भेल जे भरिसक हमरा काजकेँ गम्भीरतासँ नइ लिअ चाहै छैथ। मुदा काजो तँ हुनके हाथक छी, दोसर उपाइयो तँ नहियेँ अछि। बाजल–

"भाय साहैब, जिनका सम्बन्धमे अपने लग अर्जी पहुँचेलौं अछि, ओ जानल-मानल साहित्यकार छैथ। साहित्य सेवा छोड़ि जिनगीमे दोसर काज नइ केलैन। ओना दर्जनो रचना केने छैथ मुदा किछुमे उपसंहार लिखै दुआरे शेष छैन, तँ किछु अधखड्डुआ छैन। मुदा बीस बर्खसँ युनिभर्सिटीक आलमारीमे पाँचटा पोथी छपैले तैयार राखल छैन।"

बिच्चेमे मोबाइलिक घण्टी फेर टनटनाएल। अकादेमीक फोन रहैन–

"राइतिक बारह बाजि रहल अछि।"

'बारह' सुनिते श्याम बाबूक मन तरैंग गेलैन। तरैंग ई गेलैन जे विचार करैमे अपने परेशान छी, तैपरसँ...। मुदा तमसेबो केकरापर करता। तैयो अनखनाएले मने अकादेमी-कार्यालयकेँ उत्तर देलखिन–

"भाय, पटनासँ छह घन्टाक दूरी राज्यक कोना-कोना भऽ गेल अछि, तखन सूचना पहुँचेबाक एते धड़फड़ी किए अछि।"

जवाब नीक जकाँ समाप्तो ने भेल छेलैन कि मोबाइलमे फेर

घण्टी भेलैन। नम्बर देखते श्याम बाबू चौंक उठला जे ई तँ गुरुदेवक फोन छी- विलास बाबूक। जिनकासँ कौलेजमे पढ़ने छी! कौलेजक शिक्षक..!

मोबाइल हाथमे नेने श्याम बाबू रिसिभ नइ कऽ रहल छैथ। जेना मनमे महाभारत शुरू भऽ गेलैन। एक दिस गुरुजन, सर-सम्बन्धीक संग कुटुम-परिवार अछि आ दोसर दिस मनकेँ अर्जुन रोग चारू दिससँ घेर नेने अछि! एहेन घड़ीमे की करब नीक हएत?

दुबिधामे पड़ल श्याम बाबूकेँ किछु फुरिये ने रहल छेलैन। बिच्चेमे फेर मोबाइलमे घण्टी टनटनेलैन। मनमे उठलैन जे नीक हएत पत्नीकेँ हाथमे मोबाइल दऽ दिऐन आ कहबा दिऐन जे अखन सूतल छैथ। अधो घन्टा ने सुतना भेलैन अछि, केना उठेबैन..!

मुदा लगले श्याम बाबूकेँ मन धिक्कारलकैन। धिक्कारलकैन ई जे संकल्पित जीवन बना जीब सबहक नैतिक जिम्मेवारी होइए। तैबीच अनेको रंगक बाधा उपस्थित होइते छइ। गुरुदेव की कहि रहला अछि से बिनु सुनने केना बुझब...। फोन रिसिभ करैत श्याम बाबू बजला–

“प्रणाम गुरुदेव! जे आदेश होइ...।”

विलास बाबू बजला–

“अपने भातीज सेहो छैथ, भैयारियो भेलखुन। हुनका ऐ सालक साहित्य सम्मान दऽ दहुन।”

विलास बाबूक आदेश सुनि श्याम बाबू गुम भऽ गेला। गुम ई भऽ गेला जे अपन आत्माराम की चाहि रहल अछि आ चारू दिससँ की भऽ रहल अछि! श्याम बाबूक मन आ छाती तरेतर छहोँ-छित हुअ लगलैन...। छहोँ-छित भेल छातीकेँ समटैत बजला–

“श्रीमान, अखन पुरस्कार पत्रक पूर्व पीठिका नइ लिखलौं अछि। वएह लिखैले बैसल छी।”

‘बड़ बेस बड़ बेस’ कहैत विलास बाबू आगू बजला–

“बौआ भवेश जे छैथ ओ अपने मुँह खोलि बजला अछि जे जँ ऐ सालक साहित्य सम्मान भेटत तँ आगू हमहूँ रचना करब। तँए जे मनक मनसूबा छैन ओकरा भंग करब नीक हएत?”

विलास देव बाबूक विचार सुनि श्याम बाबूक मन विचलित भऽ गेलैन। ‘बुझल जेतइ’ कहि मोबाइल हाथमे दैत पत्नीकेँ कहलखिन–

“ऐठामसँ मोबाइल लऽ जाउ, स्विच-अफ कऽ-के नइ राखब तेकर भिन्न फझैत, आ ओन कऽ कऽ राखब तेकर भिन्न हएत। एक दिस समए निकैल रहल अछि, दोसर दिस काजक ओझरी बढ़ि रहल अछि।”

हाथमे मोबाइल लैत कुरसीपर सँ उठैत सुचिता बजली–

“सदिकाल सुचिन्त्य नाथक चर्च करैत रहै छी जे ओ कौलेजेक संगीए नइ, कौलेज छोड़ि देश सेवाक व्रत लैत संगे जहलो गेल रही।”

सुचिन्त्य नाथक नाओं सुनिते श्याम बाबू चौंक गेला। जेना अखन धरिक सभ बिसरल बात मन पड़ए लगलैन। जहलमे दुनू गोरे एक-दोसरकेँ गवाही रखैत क्रान्तिकारी समूहक बीच सम्पूर्ण क्रान्तिक शपथ नेने रही, जे ‘अन्याय-अत्याचारक विरोधमे पूर्ण जिनगी ठाढ़ रहब...।’ आनकेँ मन होइ वा नइ होइ मुदा अपन मन तँ कहिते अछि। अड़तीस सालक राजनीतिक जिनगीमे जहिना अन्हर-बिहारि[13]मे जन्म भेल तहिना ने अहूबेर ओहिना भेल। यएह जिनगी ने भेल तूफानी जिनगी, मुदा कि अखनो तूफानमे ठाढ़ होइक साहस भऽ रहल अछि?

शासनक उच्च कोटिक सम्मान समारोह छी। ओना रचनाकारक रचने अपन सम्मानक गीत गबैए, मुदा शासनो-सूत्र तँ महत रखिते

[13] क्रान्तिक हवा

अछि। समाजसँ सरोकार रखैबला जे रचनाकार होइथ, आकि आनो-आनो जिनगीक कीर्ति रखैबला होइथ, समाजक तँ सभ सम्मानित भेबे केला। ओना रचनाकार समाज साहित्यक बीच जिनगीक पथ-प्रदर्शित करैबला छथिये, तँए समाजक संग-संग शासनोक सम्मानित भेबे केला। मुदा जैठाम निर्धारित सीमा अछि तैठाम तँ ओही अनुकूल ने क्रियान्वित हएत।

अनायास श्यामबाबूक मन सुचिन्त्य नाथक चौबगली घुमए लगलैन। कौलेज छोड़ि हम राजनीतिक मंचपर एलौं आ ओ[14] राजनीतिक मंचपर एलो पछाइत छोड़ि कऽ फेर कौलेजेकेँ धेलक। नीक रिजल्टो भेलै आ रचनाकारक रूपमे सेहो जागल। कौलेजक नोकरीक बीच, परिवारक गाड़ी चलबैत साहित्य जगतमे सेहो जेते सम्भव भेलै तेते सेवा तँ केनहि अछि। जँ एहेन-एहेन संकल्पित चरित्रकेँ दरकिनार कएल जाइए तँ इतिहास एकरा कहियो स्वर्णाक्षरमे नइ लिखत..?

◌

शब्द संख्या : 1676, तिथि : 01 फरवरी 2016

[14] सुचिन्त्य नाथ

कथा लेखन क्रम

1. भैंटक लावा- शब्द संख्या : 3100, 2. बिसाँढ़- शब्द संख्या : 2516, 3. पीरारक फड़- शब्द संख्या : 2064, 4. अनेरुआ बेटा- शब्द संख्या : 3369, 5. दूटा पाइ- शब्द संख्या : 3294, 6. बोनिहारिन मरनी- शब्द संख्या : 3412, 7. हारि◌-जीत- शब्द संख्या : 2373, 8. ठेलाबला- शब्द संख्या : 2572, 9. जीविका- शब्द संख्या : 3655, 10. रिक्साबला- शब्द संख्या : 3963, 11. चुनवाली- शब्द संख्या : 2452,

12. डीहक बटबारा- शब्द संख्या : 4789, 13. भैयारी- शब्द संख्या : 4026, 14. बहिन- शब्द संख्या : 2688,15. घरदेखिया- शब्द संख्या : 4021, 16. पछताबा- शब्द संख्या : 2663, 17. डाक्टर हेमन्त- शब्द संख्या : 4407, 18. बाबी- शब्द संख्या : 2167 19. कामिनी- शब्द संख्या : 2289, 20. स्रष्टाक समग्र रचना- शब्द संख्या : 137, 21. प्रतिभा- शब्द संख्या : 154, 22. मर्म- शब्द संख्या : 142, 23. अधखरूआ- शब्द संख्या : 255, 24. समैयक बेरबादी- शब्द संख्या : 213, 25. पहिने तप तखनि ढलिहेँ- शब्द संख्या : 084, 26. खलीफा उमरक सिनेह- शब्द संख्या : 165, 27. जखने जागी तखने परात- शब्द संख्या : 103, 28. अस्तित्वक समाप्ति- शब्द संख्या : 218, 29. खजाना- शब्द संख्या : 388, 30. उग्रघारा- शब्द संख्या : 328, 31 बेवहारिक- शब्द संख्या : 218, 32. समर्पण- शब्द संख्या : 149, 33 उत्थान-पतन- शब्द संख्या : 138, 34. देवता- शब्द संख्या : 232, 35. पाप आ पुण्य- शब्द संख्या : 218, 36. परख- शब्द संख्या : 129, 37. आलसी- शब्द संख्या : 136, 38. प्रेम- शब्द संख्या : 293, 39. हैरियट स्टो- शब्द संख्या : 137, 40. बुझैक ढंग- शब्द संख्या : 142, 41. श्रमिकक इज्जत- शब्द संख्या : 093, 42. वंश- शब्द संख्या : 074, 43. तियाग- शब्द संख्या : 145, 44. सद्विचार- शब्द संख्या : 184, 45. साहस- शब्द संख्या : 103, 46. बरदास- शब्द संख्या : 133, 47. भूल- शब्द संख्या : 139, 48. धैर्य- शब्द संख्या : 099, 49. मनुखक मूल्य- शब्द संख्या : 099, 50. मदति नै चाही- शब्द संख्या : 209, 51. मेहनतिक दरद-

शब्द संख्या : 281, 52. मैक्सिम गोर्की- शब्द संख्या : 146, 53. मूलधन- शब्द संख्या : 174, 54. कपटी मित- शब्द संख्या : 281, 55. भीख- शब्द संख्या : 118, 56. भगवान- शब्द संख्या : 098, 57. एकाग्रचित- शब्द संख्या : 261, 58. सीखैक जिज्ञासा- शब्द संख्या : 101, 59. अनुभव- शब्द संख्या : 092, 60. आसिरवादक विरोध- शब्द संख्या : 088, 61. धर्मक असल रूप- शब्द संख्या : 197, 62. सौन्दर्य- शब्द संख्या : 138, 63. स्तब्ध- शब्द संख्या : 257, 64. एकता- शब्द संख्या : 236, 65. विधवा बिआह- शब्द संख्या : 176, 66. देश सेवाक व्रत- शब्द संख्या : 134, 67. आत्मबल- 1- शब्द संख्या : 110, 68. स्वाभिमान- शब्द संख्या : 121, 69. कलंक- शब्द संख्या : 429, 70. बुलकी- शब्द संख्या : 211, 71. भद्रपुरुष- शब्द संख्या : 173, 72. झूठ नै बाजब- शब्द संख्या : 103, 73. आर्दश माए- शब्द संख्या : 097, 74. नारी सम्मान- शब्द संख्या : 100, 75. अनुशासन- शब्द संख्या : 190, 76. सादा जिनगी- शब्द संख्या : 127, 77. विचारक उदय- शब्द संख्या : 072, 78. पुष्ट इकाइसँ समर्थराष्ट बनैत- शब्द संख्या : 102, 79. डर नै करी- शब्द संख्या : 119, 80. आसिरवाद उलैट गेल- शब्द संख्या : 223, 81. रत्न गमेवाक दुख- शब्द संख्या : 226, 82. निशाँ- शब्द संख्या : 194, 83. सामना- शब्द संख्या : 124, 84. शिष्टाचार- शब्द संख्या : 171, 85. ठक- शब्द संख्या : 115, 86. पत्नीक अधिकार- शब्द संख्या : 128, 87. शिनीची सिनेह- शब्द संख्या : 211, 88. सिखबैक उपय- शब्द संख्या : 171, 89. कर्तव्यपरायन सुगा- शब्द संख्या : 171, 90. तस्वीर- शब्द संख्या : 134, 91. मितक प्रयोजन- शब्द संख्या : 359, 92. स्वार्थपूर्ण विचार- शब्द संख्या : 121, 93. संगीक महत- शब्द संख्या : 130, 94. उपहास- शब्द संख्या : 196, 95. महादान- शब्द संख्या : 176, 96. भाग्यवाद- शब्द संख्या : 171, 97. सद्वृति- शब्द संख्या : 150, 98. आश्रम नहि सोभाव बदली- शब्द संख्या : 281, 99. पुरुषार्थ- शब्द संख्या : 255, 100. नैष्ठिक सुधन्वा- शब्द संख्या : 274, 101. सद्गृहस्त- शब्द संख्या : 195, 102. सद्भाव- शब्द संख्या : 134, 103. आलस्य वनाम पिशाच- शब्द संख्या : 302, 104. स्वर्ग आ नर्क- शब्द संख्या : 265, 105. यथार्थक बोध- शब्द संख्या : 115, 106. विद्वताक मद- शब्द संख्या : 165, 107. अनन्त- शब्द संख्या : 128, 108. हँसैत लहास- शब्द संख्या : 184, 109. अनगढ़ चेतना- शब्द संख्या : 162, 110. सत्य विद्या- शब्द संख्या : 108, 111. समता- शब्द संख्या : 165, 112. जेते चोट तेते सक्कत- शब्द संख्या : 116, 113. परिष्कार- शब्द संख्या : 198, 114. कथनी नै करनी- शब्द संख्या : 176, 115. शालीनता- शब्द संख्या : 157, 116. मजूरी- शब्द संख्या : 140, 117. जीवन यात्रा- शब्द संख्या : 145, 118. ज्योति- शब्द संख्या : 081, 119. पवनक विवेक- शब्द संख्या : 180, 120. आत्मबल-2- शब्द संख्या : 105, 121. खुदीराम बोस- शब्द संख्या : 172, 122. शिष्यकेँ शिक्षेटा नै परीक्षो- शब्द संख्या : 187, 123. लौह पुरुष-

शब्द संख्या : 124, 124. जंग लगल- शब्द संख्या : 150, 125. जीवकक परीछा- शब्द संख्या : 117, 126. तप- शब्द संख्या : 162, 127. उल्टा अर्थ- शब्द संख्या : 203, 128. जाति नहि पानि- शब्द संख्या : 142, 129. ऊँच-नीच- शब्द संख्या : 206, 130. पागलखाना- शब्द संख्या : 223, 131. दोहरी मारि- शब्द संख्या : 1368, 132. केना जीब? - शब्द संख्या : 1039, 133. नवान- शब्द संख्या : 2306, 134. तिलासंक्रान्तिक लाइ- शब्द संख्या : 2056, 135. भाइक सिनेह- शब्द संख्या : 1201, 136. प्रेमी- शब्द संख्या : 2526, 137. बपौती सम्पैत- शब्द संख्या : 2350, 138. डंका- शब्द संख्या : 2401, 139. संगी- शब्द संख्या : 1849, 140. ठकहरबा- शब्द संख्या : 2349, 141. अतहतह- शब्द संख्या : 2486, 142. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या : 3057, 143. ऑपरेशन- शब्द संख्या : 1616, 144. धर्मनाथ- शब्द संख्या : 1968, 145. सरोजनी- शब्द संख्या : 1810, 146. सुभद्रा- शब्द संख्या : 1922, 147. सोनमाकाका- शब्द संख्या : 1572, 148. दोती बिआह- शब्द संख्या : 1822, 149. पड़ाइन- शब्द संख्या : 1970, 150. केतौ नै- शब्द संख्या : 1203, 151. बिहरन- शब्द संख्या : 3300, 152. मायराम- शब्द संख्या : 2095, 153. गोहिक शिकार- शब्द संख्या : 2152, 154. मातृभूमि- शब्द संख्या : 1048, 155. भबडाह- शब्द संख्या : 2105, 156. परिवारक प्रतिष्ठा- शब्द संख्या : 1974, 157. फॉगु- शब्द संख्या : 2134, 158. लफ साग- शब्द संख्या : 1203, 159. तिलकोरक तरुआ- शब्द संख्या : 1835, 160. एकोटा ने- शब्द संख्या : 1149, 161. धोतीक मान- शब्द संख्या : 480, 162. साझी- शब्द संख्या : 998, 163. सतभैंया पोखैर- शब्द संख्या : 2999, 164. न्याय चाही- शब्द संख्या : 1311, 165. पनियाहा दूध- शब्द संख्या : 2152, 166. कर्ज- शब्द संख्या : 2949, 167. परदेशी बेटी- शब्द संख्या : 2515, 168. मान- शब्द संख्या : 648, 169. मनोरथ- शब्द संख्या : 1161, 170. कियो ने- शब्द संख्या : 3780, 171. सूदि भरना- शब्द संख्या : 922, 172. जन्मतिथि- शब्द संख्या : 2370, 173. इमानदार घूसखोर- शब्द संख्या : 2267, 174. पटियाबला- शब्द संख्या : 2395, 175. सनेस- शब्द संख्या : 1284, 176. उलबा चाउर- शब्द संख्या : 2630, 177. बलजोर- शब्द संख्या : 2410, 178. बेटी हम अपराधी छी- शब्द संख्या : 3341, 179. बगबाइर- शब्द संख्या : 1900, 180. मुइलो बिसेबैन- शब्द संख्या : 4288, 181. सड़ल दारीम- शब्द संख्या : 2577, 182. चुप्पा पाल- शब्द संख्या : 2572, 183. मइटुग्गर- शब्द संख्या : 9811, 184. शम्भुदास- शब्द संख्या : 9674, 185. फाँसी- शब्द संख्या : 10487, 186. कचोट- शब्द संख्या : 315, 187. काँच सूत- शब्द संख्या : 384, 188. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 267, 189. खिलतोड़- शब्द संख्या : 395, 190. मुँह-कान- शब्द संख्या : 213, 191. अनदिना- शब्द संख्या : 307, 192. अपन काज- शब्द संख्या : 367, 193. दूरी- शब्द संख्या : 265, 194. पुरनी भौजी- शब्द संख्या : 117, 195.

छुटि गेल- शब्द संख्या : 111, 196. काल्हि दिन- शब्द संख्या : 151, 197. अप्पन हारि- शब्द संख्या : 286, 198. कनफुसकी- शब्द संख्या : 132, 199. मुँहक बात मुहेँमे- शब्द संख्या : 134, 200. कनीटा बात- शब्द संख्या : 101, 201. गति-गुद्दा- शब्द संख्या : 250, 202. बिसवास- शब्द संख्या : 316, 203. कचहरिया भाय- शब्द संख्या : 270, 204. गोहाइर- शब्द संख्या : 432, 205. शिवजीक डाक-बाक्- शब्द संख्या : 070, 206. सोग- शब्द संख्या : 341, 207. पनचैती- शब्द संख्या : 195, 208. कनमन- शब्द संख्या : 323, 209. अजाति- शब्द संख्या : 090, 210. पटोर- शब्द संख्या : 409, 211. फुसियाह- शब्द संख्या : 311, 212. गति-मुक्ति- शब्द संख्या : 238, 213. चौकीदारी- शब्द संख्या : 442, 214. झगड़ाउ-झोटैला- शब्द संख्या : 243, 215. घबाह ट्यूशन- शब्द संख्या : 244, 216. दादी-माँ- शब्द संख्या : 411, 217. पटोतन- शब्द संख्या : 350, 218. मुसाइ पण्डित- शब्द संख्या : 568, 219. भरमे-सरम- शब्द संख्या : 233, 220. देखल दिन- शब्द संख्या : 441, 221. फज्झैत- शब्द संख्या : 401, 222. अकास दीप- शब्द संख्या : 235, 223. बुधि-बधिया- शब्द संख्या : 267, 224. पहाड़क बेथा- शब्द संख्या : 216, 225. उमकी- शब्द संख्या : 321, 226. बजन्ता-बुझन्ता- शब्द संख्या : 147, 227. चर्मरोग- शब्द संख्या : 571, 228. शंका- शब्द संख्या : 325, 229. ओसार- शब्द संख्या : 210, 230. छोटका काका- शब्द संख्या : 398, 231. सीमा-सरहद- शब्द संख्या : 200, 232. रमैत जोगी बोहैत पानि- शब्द संख्या : 253, 233. गंजन- शब्द संख्या : 178, 234. सजए- शब्द संख्या : 090, 235. घटक बाबा- शब्द संख्या : 335, 236. आने जकाँ- शब्द संख्या : 046, 237. दान-दछिना- शब्द संख्या : 151, 238. उड़हैड़- शब्द संख्या : 504, 239. मत्हानि- शब्द संख्या : 258, 240. मेकचो- शब्द संख्या : 216, 241. झुटका विदाइ- शब्द संख्या : 359, 242. मुँहक खतियान- शब्द संख्या : 278, 243. कोसलिया- शब्द संख्या : 234, 244. हूसि गेल- शब्द संख्या : 204, 245. पोखला कटहर- शब्द संख्या : 154, 246. सरही सौबजा- शब्द संख्या : 269, 247. तेरहो करम- शब्द संख्या : 322, 248. डुमैत जिनगी- शब्द संख्या : 286, 249. चोर-सिपाही- शब्द संख्या : 202, 250. दूधबला- शब्द संख्या : 275, 251. टाइपिस्ट- शब्द संख्या : 263, 252. समदाही- शब्द संख्या : 295, 253. बुढ़िया दादी- शब्द संख्या : 332, 254. एक धाप जमीन- शब्द संख्या : 2505, 255. ओझरी- शब्द संख्या : 1970, 256. मुसहैन- शब्द संख्या : 2742, 257. केलवाड़ी- शब्द संख्या : 2685, 258. स्वरोजगार- शब्द संख्या : 2388, 259. घूर- शब्द संख्या : 2812, 260. कनियाँ-पुतरा- शब्द संख्या : 2335, 261. वारंट- शब्द संख्या : 1638, 262. गामक मुँह फेर देखब- शब्द संख्या : 3073, 263. पेटगनाह- शब्द संख्या : 236, 264. जनक हाथे खेती- शब्द संख्या : 238,

265. पाइक मोल- शब्द संख्या : 2412, तिथि : 22 दिसम्बर 2013
266. चोरुक्का झगड़ा- शब्द संख्या : 538, तिथि : 24 दिसम्बर 2013
267. अपसोच- शब्द संख्या : 548, तिथि : 26 दिसम्बर 2013
268. पतझाड़- शब्द संख्या : 2587, तिथि : 31 दिसम्बर 2013
269. झीसीक मजा- शब्द संख्या : 453, तिथि : 1 जनवरी 2014
270. मति-गति- शब्द संख्या : 1807, तिथि : 07 जनवरी 2014
271. अपन सन मुँह- शब्द संख्या : 5696, तिथि : 25 जनवरी 2014
272. रिजल्ट- शब्द संख्या : 2343, तिथि : 16 जनवरी 2014
273. सुमति- शब्द संख्या : 3072, तिथि : 30 जनवरी 2014
274. फेर पुछबैन- शब्द संख्या : 346, तिथि : 31 जनवरी 2014
275. माघक घूर- शब्द संख्या : 1683, तिथि : 06 फरवरी 2014
276. खर्च- शब्द संख्या : 330, तिथि : 07 फरवरी 2014
277. अखरा-दोखरा- शब्द संख्या : 342, तिथि : 10 फरवरी 2014
278. पेटगनाह- शब्द संख्या : 593, तिथि : 14 फरवरी 2014
279. बड़की माता- शब्द संख्या : 1224, तिथि : 18 फरवरी 2014
280. धरती-अकास- शब्द संख्या : 184 , तिथि : 19 फरवरी 2014
281. बकठाँइ- शब्द संख्या : 883, तिथि : 24 फरवरी 2014
282. चैन-बेचैन- शब्द संख्या : 936, तिथि : 09 मार्च 2014
283. हथियाएल खुरपी- शब्द संख्या : 645 , तिथि : 11 मार्च 2014
284. अलपुरिया बरी- शब्द संख्या : 287, तिथि : 12 मार्च 2014
285. नीक बोल- शब्द संख्या : 565, तिथि : 13 मार्च 2014
286. सुआद- शब्द संख्या : 624, तिथि : 14 मार्च 2014
287. गंगा नहेलौं- शब्द संख्या : 690, तिथि : 19 मार्च 2014
288. भौंटक गहमी- शब्द संख्या : 508, तिथि : 24 मार्च 2014
289. भँसैत नाह- शब्द संख्या : 597, तिथि : 26 मार्च 2014
290. पान पराग- शब्द संख्या : 1692, तिथि : 29 मार्च 2014
291. सिरमा- शब्द संख्या : 760, तिथि : 31 मार्च 2014
292. नौमीक हकार- शब्द संख्या : 1119, तिथि : 03 अप्रैल 2014

293. फोंक मकड़- शब्द संख्या : 1744, तिथि : 10 अप्रैल 2014
294. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1252, तिथि : 14 अप्रैल 2014
295. अभिनव अनुभव- शब्द संख्या : 326, तिथि : 16 अप्रैल 2014
296. खोंटकर्मा- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 19 अप्रैल 2014
297. किछु ने- शब्द संख्या : 503, तिथि : 22 अप्रैल 2014
298. झकास- शब्द संख्या : 1589, तिथि : 26 अप्रैल 2014
299. अप्पन-बीरान- शब्द संख्या : 2919, तिथि : 01 मई 2014
300. सजमनियाँ आम- शब्द संख्या : 611, तिथि : 04 मई 2014
301. अर्जुन रोग- शब्द संख्या : 1003, तिथि : 7 मई 2014
302. गरदैन कट्टा बेटा- शब्द संख्या : 575, तिथि : 10 मई 2014
303. नैहराक धाड़- शब्द संख्या : 885, तिथि : 14 मई 2014
304. अवाक- शब्द संख्या : 1041, तिथि : 17 मई 2014
305. पोखरिक सैरात- शब्द संख्या : 923, तिथि : 20 मई 2014
306. दनियाँ डाबा- शब्द संख्या : 409, तिथि : 22 मई 2014
307. धरम काँट- शब्द संख्या : 395, तिथि : 23 मई 2014
308. पल भरि- शब्द संख्या : 1116, तिथि : 24 मई 2014
309. किरदानी- शब्द संख्या : 5309, तिथि : 14 जुन 2014
310. सगहा- शब्द संख्या : 2860, तिथि : 22 जुन 2014
311. अकाल- शब्द संख्या : 1238, तिथि : 24 जुन 2014
312. उझट बात- शब्द संख्या : 1152, तिथि : 26 जुन 2014
313. कर्जखौक- शब्द संख्या : 1175, तिथि : 2 जुलाई 2014
314. उनटन- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 6 जुलाई 2014
315. रेहना चाची- शब्द संख्या : 1307, तिथि : 9 जुलाई 2014
316. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 1256, तिथि : 11 जुलाई 2014
317. अउतरित प्रश्न- शब्द संख्या : 1229, तिथि : 14 जुलाई 2014
318. हारि- शब्द संख्या : 1240, तिथि : 16 जुलाई 2014
319. सोनाक सुइत- शब्द संख्या : 1135, तिथि : 17 जुलाई 2014
320. मरूभूमि- शब्द संख्या : 1214, तिथि : 20 जुलाई 2014

321. असगरे- शब्द संख्या : 1557, तिथि : 24 जुलाई 2014
322. पुरनी नानी- शब्द संख्या : 1304, तिथि : 27 जुलाई 2014
323. कटा-कटी- शब्द संख्या : 1140, तिथि : 30 जुलाई 2014
324. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1206, तिथि : 3 अगस्त 2014
325. गलती अपने भेल- शब्द संख्या :3386, तिथि : 06 अगस्त 2014
326. चोरक चोरबती- शब्द संख्या : 884, तिथि : 6 अगस्त 2014
327. घर तोड़ि देलिऐ- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 10 अगस्त 2014
328. सजल स्मृति- शब्द संख्या : 2363, तिथि : 14 अगस्त 2014
329. सनेस- शब्द संख्या : 2654, तिथि : 16 अगस्त 2014
330. सए कच्छे- शब्द संख्या : 488, तिथि : 19 अगस्त 2014
331. एक मुठी घास- शब्द संख्या : 411, तिथि : 21 अगस्त 2014
332. करिछौंह मुँह- शब्द संख्या : 318, तिथि : 24 अगस्त 2014
333. पुरस्कार- शब्द संख्या : 2414, तिथि : 24 अगस्त 2014
334. गावीस मोइस- शब्द संख्या : 687, तिथि : 29 अगस्त 2014
335. मनकमना- शब्द संख्या : 6110, तिथि : 19 सितम्बर 2014
336. घरवास- शब्द संख्या : 4879, तिथि : 26 सितम्बर 2014
337. समधीन- शब्द संख्या : 6098, तिथि : 04 अक्टुबर 2014
338. चापाकलक पाइप- शब्द संख्या : 1616, तिथि : 7 अक्टुबर 2014
339. कलम हानि कऽ- शब्द संख्या : 2226, तिथि : 10 अक्टुबर 2014
340. लतियाएल जिनगी- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 14 अक्टुबर 2014
341. गामक शकल-सूरत- शब्द संख्या : 2596, तिथि : 20 अक्टुबर 2014
342. जितिया पाबैन- शब्द संख्या : 3706, तिथि : 24 अक्टुबर 2014
343. सुखाएल सूरत- शब्द संख्या : 3690, तिथि : 30 अक्टुबर 2014
344. भैयारी हक- शब्द संख्या : 3131, तिथि : 4 नवम्बर 2014
345. ठकुआएल भुसवा- शब्द संख्या : 3335, तिथि : 13 नवम्बर 2014
346. खुदियाएल- शब्द संख्या : 2887, तिथि : 17 नवम्बर 2014
347. खटहा आम- शब्द संख्या : 3515, तिथि : 22 नवम्बर 2014
348. ढकरपेँच- शब्द संख्या : 3759, तिथि : 30 नवम्बर 2014

349. असहाज- शब्द संख्या : 2865, तिथि : 04 दिसम्बर 2014
350. समरथाइक भूत- शब्द संख्या : 3853, तिथि : 07 दिसम्बर 2014
351. विदाइ- शब्द संख्या : 5131, तिथि : 17 दिसम्बर 2014
352. खलओदार- शब्द संख्या : 735, तिथि : 19 दिसम्बर 2014
353. मनुखदेवा- शब्द संख्या : 1027, तिथि : 22 दिसम्बर 2014
354. उमेद- शब्द संख्या : 3643, तिथि : 31 दिसम्बर 2014
355. गलगर भैंस- शब्द संख्या : 3392, तिथि : 4 जनवरी 2015
356. जाड़ फाटि गेल- शब्द संख्या : 3328, तिथि : 9 जनवरी 2015
357. सुरता- शब्द संख्या : 3304, तिथि : 15 जनवरी 2015
358. असुध मन- शब्द संख्या : 2353, तिथि : 19 जनवरी 2015
359. धरमूदासक अखड़ाहा- शब्द संख्या : 1410, तिथि : 21 जनवरी 2015
360. ठोररंगू- शब्द संख्या : 1531, तिथि : 23 जनवरी 2015
361. लगबे ने कएल- शब्द संख्या : 1449, तिथि : 25 जनवरी 2015
362. उकडू समय- शब्द संख्या : 1467, तिथि : 27 जनवरी 2015
363. चास-बास दुनू गेल- शब्द संख्या : 1615, तिथि : 29 जनवरी 2015
364. चौरचनक दही- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 31 जनवरी 2015
365. अपन मन अपन धन- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 3 फरवरी 2015
366. टुटली मरैया- शब्द संख्या : 1951, तिथि : 7 फरवरी 2015
367. हकार- तिथि : 11 फरवरी 2015, शब्द संख्या : 1911
368. दहेजुआ गाए- शब्द संख्या : 1908, तिथि : 15 फरवरी 2015
369. मेटाइत जिनगी- शब्द संख्या : 2129, तिथि : 20 फरवरी 2015
370. धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!- शब्द संख्या:1996, तिथि : 23 फरवरी 2015
371. लेहाज- शब्द संख्या : 1906, तिथि : 26 फरवरी 2015
372. विचार हेरा गेल- शब्द संख्या : 1917, तिथि : 1 मार्च 2015
373. ओ दिन- शब्द संख्या : 1782, तिथि : 4 मार्च 2015
374. उरीन- शब्द संख्या : 3235, तिथि : 8 मार्च 2015
375. नहरकन्हा- शब्द संख्या : 1209, तिथि : 11 मार्च 2015
376. बटखौक- शब्द संख्या : 1272, तिथि : 14 मार्च 2015

377. पसेनाक धरम- शब्द संख्या : 1263, तिथि : 16 मार्च 2015
378. जेठुआ गरदा- शब्द संख्या : 1103, तिथि : 18 मार्च 2015
379. हँसीएमे उड़ि गेलौं- शब्द संख्या : 1243, तिथि : 20 मार्च 2015
380. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक- शब्द संख्या : 1234, तिथि : 23 मार्च 2015
381. हमर बाइनिक विचार- शब्द संख्या : 1207, तिथि : 26 मार्च 2015
382. नोकरिहारा- शब्द संख्या : 1146, तिथि : 26 मार्च 2015
383. घसवाहि- शब्द संख्या : 1213, तिथि : 28 मार्च 2015
384. तेतर भाइक कविता- शब्द संख्या : 1319, तिथि : 1 अप्रैल 2015
385. छूआ- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 6 अप्रैल 2015
386. दोसराइत- शब्द संख्या : 1270, तिथि : 9 अप्रैल 2015
387. लछनमान- शब्द संख्या : 1173, तिथि : 13 अप्रैल 2015
388. हमर कोन दोख- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 17 अप्रैल 2015
389. मौसी- शब्द संख्या : 1393, तिथि : 21 अप्रैल 2015
390. नटकिया गति- शब्द संख्या : 1313 24 अप्रैल 2015
391. खाए चाहैए- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 27 अप्रैल 2015
392. मधुमाछी- शब्द संख्या : 1892, तिथि : 07 मई 2015
393. दनगर घास- शब्द संख्या : 2775, तिथि : 13 मई 2015
394. सझिया खेती- शब्द संख्या : 3135, तिथि : 23 मई 2015
395. मुफतिया माल- शब्द संख्या : 3231, तिथि : 29 मई 2015
396. मथाहाथ- शब्द संख्या : 2923, तिथि : 02 जून 2015
397. पहपैट- शब्द संख्या : 1369, तिथि : 05 जून 2015
398. इजोरिया राति- शब्द संख्या : 1512, तिथि : 07 जून 2015
399. तीन जुगिया भाय- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 12 जून 2015
400. अँगनेमे हेरा गेलौं- शब्द संख्या : 605, तिथि : 14 जून 2015
401. डकरा हाल- शब्द संख्या : 2529, तिथि : 17 जून 2015
402. जेतए जे हौउ- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 21 जून 2015
403. गठूलाक गारि- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 25 जून 2015
404. कनी हमरो सुनू- शब्द संख्या : 1983, तिथि : 29 जून 2015

405. गामक बान्ह- शब्द संख्या : 2437, तिथि : 03 जुलाई 2015
406. गुड़ा खुद्दीक रोटी- शब्द संख्या : 2443, तिथि : 08 जुलाई 2015
407. सीरक गाछ- शब्द संख्या : 3071, तिथि : 13 जुलाई 2015
408. हरदीक हरदा- शब्द संख्या : 2924, तिथि : 19 जुलाई 2015
409. जाम- शब्द संख्या : 3355, तिथि : 29 जुलाई 2015
410. गण्डा- शब्द संख्या : 2304, तिथि : 5 अगस्त 2015
411. हाथी आ मूस- शब्द संख्या : 3016, तिथि : 11 अगस्त 2015
412. मुसरी आ घोड़ा- शब्द संख्या : 3625, तिथि : 17 अगस्त 2015
413. फलहार- शब्द संख्या : 2350, तिथि : 25 अगस्त 2015
414. भोरक झगड़ा- शब्द संख्या : 2697, तिथि : 31 अगस्त 2015
415. क्रियाशील- शब्द संख्या : 3395, तिथि : 13 सितम्बर 2015
416. आइ एम शॉरी- शब्द संख्या : 2927, तिथि : 23 सितम्बर 2015
417. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल- शब्द संख्या : 1025, तिथि : 29 सितम्बर 2015
418. मीनी भ्रष्टाचार- शब्द संख्या : 825, तिथि : 5 अक्टूबर 2015
419. गजपट खेती- शब्द संख्या : 1171, तिथि : 8 अक्टूबर 2015
420. समुद्री विद्या- शब्द संख्या : 787, तिथि : 11 अक्टूबर 2015
421. राकशे रहि गेलौं- शब्द संख्या : 959, तिथि : 12 अक्टूबर 2015
422. निनिया देवीक आराधना- शब्द संख्या : 679, तिथि : 13 अक्टूबर 2015
423. बताहे बताह बनौलक- शब्द संख्या : 574, तिथि : 15 अक्टूबर 2015
424. धोखा- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 17 अक्टूबर 2015
425. खसैत गाछ- शब्द संख्या : 2234, तिथि : 22 अक्टूबर 2015
426. वैष्णवी भगवती- शब्द संख्या : 2099, तिथि : 01 नवम्बर 2015
427. प्रिगर शत्रु- शब्द संख्या : 1087, तिथि : 26 दिसम्बर 2015
428. एगच्छा आमक गाछ- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 31 दिसम्बर 2015
429. माघ नहाइले जाएब- शब्द संख्या : 2616, तिथि : 4 जनवरी 2016
430. एक घोंट पानि- शब्द संख्या : 2516, तिथि : 10 जनवरी 2016
431. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले- शब्द : 3371, तिथि : 16 जनवरी 2016
432. माइक वचन- शब्द संख्या : 2999, तिथि : 21 जनवरी 2016

433. पान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 26 जनवरी 2016
434. आजुक जिनगीक आइ परीछा- शब्द : 1676, तिथि : 01 फरवरी 2016
435. शुभचिन्तक- शब्द संख्या : 3947, तिथि : 08 फरवरी 2016
436. करिछौन लाली- शब्द संख्या : 3000, तिथि : 13 फरवरी 2016
437. मोहरा- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 15 फरवरी 2016
438. अपन पुरखाक डीह- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 17 फरवरी 2016
439. जेना हाथी रही- शब्द संख्या : 1245, तिथि : 20 फरवरी 2016
440. कठफल- शब्द संख्या : 1294, तिथि : 22 फरवरी 2016
441. गामे उपैट गेल- शब्द संख्या : 1680, तिथि : 25 फरवरी 2016
442. झूठे- शब्द संख्या : 1969, तिथि : 29 फरवरी 2016
443. लाही- शब्द संख्या : 2335, तिथि : 3 मार्च 2016
444. परतीहा खढ़- शब्द संख्या : 1667, तिथि : 6 मार्च 2016
445. उजगी- शब्द संख्या : 1079, तिथि : 9 मार्च 2016
446. हाथक जिनगी- शब्द संख्या : 983, तिथि : 14 मार्च 2016
447. गाछपर सँ खसला- शब्द संख्या : 2000, तिथि : 20 मार्च 2016
448. केतौ ने रहलौं- शब्द संख्या : 2103, तिथि : 25 मार्च 2016
449. अपने केलहा- शब्द संख्या : 2314, तिथि : 31 मार्च 2016
450. बत्तु- शब्द संख्या : 2244, तिथि : 10 अप्रैल 2016
451. कछमछी- शब्द संख्या : 2322, तिथि : 15 अप्रैल 2016
452. गैत-वीध- शब्द संख्या : 2424, तिथि : 21 अप्रैल 2016
453. दियरबा-भैंसुर- शब्द संख्या : 2089, तिथि : 29 अप्रैल 2016
454. एक दिन- शब्द संख्या : 2063, तिथि : 5 मई 2016
455. दुधियाएल बरखा- शब्द संख्या : 2059, तिथि : 11 मई 2016
456. गलफूलू- शब्द संख्या : 2117, तिथि : 14 मई 2016
457. बिटगरहा- शब्द संख्या : 1992, तिथि : 19 मई 2016
458. आब नइ आगि लगैए?- शब्द संख्या : 1962, तिथि : 23 मई 2016
459. कटौज- शब्द संख्या : 1977, तिथि : 28 मई 2016
460. बाल बोध- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 2 जून 2016

461. डभियाएल गाम- शब्द संख्या : 2483, तिथि : 6 जून 2016
462. एकबोलिया दादी- शब्द संख्या : 2189, तिथि : 11 जून 2016
463. मरियाएल मन- शब्द संख्या : 1921, तिथि : 17 जून 2016
464. त्राहि-कृष्ण- शब्द संख्या : 2900, तिथि : 23 जून 2016
465. कन्हा भँट्टा- शब्द संख्या : 2539, तिथि : 30 जून 2016
466. जिगेसा- शब्द संख्या : 3977, तिथि : 8 जुलाई 2016
467. गुलेती दास- शब्द संख्या : 5993, तिथि : 12 अगस्त 2016
468. भोलानाथ बाबा- शब्द संख्या : 2359, तिथि : 17 अगस्त 2016
469. दुरकाल- शब्द संख्या : 3189, तिथि : 22 अगस्त 2016
470. कलंक- शब्द संख्या : 2763, तिथि : 27 अगस्त 2016
471. अड़िकट्टा चोर- शब्द संख्या : 2077, तिथि : 31 अगस्त 2016
472. बगदल गाम- शब्द संख्या : 2405, तिथि : 6 सितम्बर 2016
473. बत्तीसोअना- शब्द संख्या : 890, तिथि : 8 सितम्बर 2016
474. कचहरिया रोग- शब्द संख्या : 1651, तिथि : 12 सितम्बर 2016
475. दिन घटि गेल- शब्द संख्या : 2425, तिथि : 5 अक्टुबर 2016
476. मुड़ियाएल घर- शब्द संख्या : 2352, तिथि : 11 अक्टुबर 2016
477. गामक सुरता- शब्द संख्या : 2265, तिथि : 19 अक्टुबर 2016
478. खतियाएल घर- शब्द संख्या : 2057, तिथि : 09 नवम्बर 2016
479. बात-कथा सुनौलक- शब्द संख्या : 1889, तिथि : 15 नवम्बर 2016
480. अनका बेर ओंघी- शब्द संख्या : 2233, तिथि : 20 नवम्बर 2016
481. देव उठान- शब्द संख्या : 2297, तिथि : 24 नवम्बर 2016
482. नमहर घरक चोरि- शब्द संख्या : 2397, तिथि : 28 नवम्बर 2016
483. भोरक सपना- शब्द संख्या : 1013, तिथि : 1 दिसम्बर 2016
484. बालमण्डली- शब्द संख्या : 1288, तिथि : 6 दिसम्बर 2016
485. धोखा केतए भेल- शब्द संख्या : 1053, तिथि : 09 दिसम्बर 2016
486. माघक चाह- शब्द संख्या : 1330, तिथि : 12 दिसम्बर 2016
487. भँसियाएल बाल-बोध- शब्द संख्या : 1306, तिथि : 15 दिसम्बर 2016
488. माघक घूर- शब्द संख्या : 1812, तिथि : 18 दिसम्बर 2016

489. पाही पट्टी- शब्द संख्या : 2370, तिथि : 25 दिसम्बर 2016
490. बीरांगना- शब्द संख्या : 1551, तिथि : 30 दिसम्बर 2016
491. स्मृति शेष- शब्द संख्या : 1941, तिथि : 6 जनवरी 2017
492. मनकेँ फुसलबै छी- शब्द संख्या : 1023, तिथि : 10 जनवरी 2017
493. चहकल विचार- शब्द संख्या : 4173, तिथि : 20 जनवरी 2017
494. विदाइ-दैछना- शब्द संख्या : 2312, तिथि : 25 जनवरी 2017
495. बीरांगना : 2- शब्द संख्या : 1992, 29 जनवरी 2017
496. पकिया चेला- शब्द संख्या : 1976, तिथि : 06 फरवरी 2017
497. कान फुटल कप- शब्द संख्या : 1595, तिथि : 09 फरवरी 2017
498. वर्थ डे- शब्द संख्या : 2535, तिथि : 16 फरवरी 2017
499. जानक मोल- शब्द संख्या : 2782, तिथि : 23 फरवरी 2017
500. गामक कटान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 01 मार्च 2017
501. कर्ज- शब्द संख्या : 3252, तिथि : 07 मार्च 2017
502. बेटीक लिलसा- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 11 मार्च 2017
503. अपन गारि अपन दुआरि- शब्द संख्या : 2546, तिथि : 17 मार्च 2017
504. बेटीक पैरुख- शब्द संख्या : 2735, तिथि : 26 मार्च 2017
505. बेटीक कुभेला- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 31 मार्च 2017
506. अपन रोपल गाछी भुताहि- शब्द संख्या : 2619, तिथि : 7 अप्रैल 2017
507. बलधकेल कटौज- शब्द संख्या : 2100, तिथि : 11 अप्रैल 2017
508. जारैनक दुख मेटा गेल- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 17 अप्रैल 2017
509. पढ़ल सुगा बौक- शब्द संख्या : 3775, तिथि : 26 अप्रैल 2017
510. हरवाहि- शब्द संख्या : 2784, तिथि : मजदूर दिवस (01 मई) 2017
511. क्रान्तियोग- शब्द संख्या : 3432, तिथि : 13 मई 2017
512. उचितवक्ता- शब्द संख्या : 3461, तिथि : 19 मई 2017
513. खेतक बँटवारा- शब्द संख्या : 3607, तिथि : 24 मई 2017
514. विघटन- शब्द संख्या : 3419, तिथि : 31 मई 2017
515. टुटल मनक जुटान- शब्द संख्या : 3456, तिथि : 06 जून 2017
516. बाबा बेलेश्वरनाथ- शब्द संख्या : 2420, तिथि : 11 जून 2017

517. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 23 जून 2017
518. मर्माहत- शब्द संख्या : 2509, तिथि : 29 जून 2017
519. गुणहीन- शब्द संख्या : 3138, तिथि : 6 जुलाई 2017
520. समझौता- शब्द संख्या : 2280, तिथि : 13 जुलाई 2017
521. जेकर चुन तेकर पुन- शब्द संख्या : 2696, तिथि : 19 जुलाई 2017
522. त्रिकालदर्शी- शब्द संख्या : 2841, तिथि : 25 जुलाई 2017
523. नमहर फेरा- शब्द संख्या : 2902, तिथि : 29 जुलाई 2017
524. आशापर पानि पड़ल- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 02 अगस्त 2017
525. कोढ़िया सरधुआ- शब्द संख्या : 2279, तिथि : 06 अगस्त 2017
526. बेटपन- शब्द संख्या : 3054, तिथि : 11 अगस्त 2017
527. छातीक हार- शब्द संख्या : 2291, तिथि : 16 अगस्त 2017
528. उमेरक लेहाज- शब्द संख्या : 2986, तिथि : 22 अगस्त 2017
529. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 05 सितम्बर 2017
530. पुरान साड़ी- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 2453, तिथि : 24 अक्टुबर 2017
531. गाम बिसैर गेल- शब्द संख्या : 2482, तिथि : 28 अक्टुबर 2017
532. ऐंठ साड़ी- शब्द संख्या : 2925, तिथि : 01 नवम्बर 2017
533. किछु ने फुरैए- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 12 नवम्बर 2017
534. महिरम- शब्द संख्या : 1984, तिथि : 20 नवम्बर 2017
535. बेर परहक भदवा- शब्द संख्या : 2726, तिथि : 29 नवम्बर 2017
536. सड़क-कातक खेत- शब्द संख्या : 2722, तिथि : 10 दिसम्बर 2017
537. दोहरी हाक- शब्द संख्या : 2700, तिथि : 21 दिसम्बर 2017
538. पाइक इज्जत- शब्द संख्या : 1999, तिथि : 05 जनवरी 2018
539. सेहन्ता- शब्द संख्या : 2014, तिथि : 11 जनवरी 2018
540. राक्षसक झड़- शब्द संख्या : 1649, तिथि : 15 जनवरी 2018
541. बेरपर- शब्द संख्या : 2585, तिथि : 19 जनवरी 2018
542. केकरा-ले केलौं- शब्द संख्या : 2649, तिथि : 23 जनवरी 2018
543. स्वाभिमानी जिनगी- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 28 जनवरी 2018
544. बाबाक बाग-बगिया- शब्द संख्या : 3089, तिथि : 3 फरवरी 2018

545. अब-तब- शब्द संख्या : 2076, तिथि : 7 फरवरी 2018
546. अगिलह- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 11 फरवरी 2018
547. कुकुरपन- शब्द संख्या : 2229, तिथि : 28 फरवरी 2018
548. हेराएल जिनगी- शब्द संख्या : 3107, तिथि : 5 मार्च 2018
549. आशापर पानि फेर गेल- शब्द संख्या : 2447, तिथि : 9 मार्च 2018
550. देखल दिन- शब्द संख्या : 2582, तिथि : 27 मार्च 2018
551. इज्जत उतैर गेल- शब्द संख्या : 1904, तिथि : 30 मार्च 2018
552. संकट- शब्द संख्या : 2593, तिथि : 4 अप्रैल 2018
553. एकतीस मार्च- शब्द संख्या : 2816, तिथि : 10 अप्रैल 2018
554. गेल माघ उनतीस दिन बाँकी- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 15 अप्रैल 2018
555. बापक चलैत- शब्द संख्या : 2606, तिथि : 20 अप्रैल 2018
556. बेटाक चलैत- शब्द संख्या : 2889, तिथि : 25 अप्रैल 2018
557. प्रवल इच्छा- (जारी...)

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742
मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकडू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-00-1

कथा साहित्य

गाछपर सँ खसला

जगदीश प्रसाद मण्डल



गाछपर सँ खसला

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

मढ़ि◌-मढ़ि मणि मनकेँ
प्रज्वलित करू तनकेँ
धुआ-काया पकैड़-पकैड़
दिव्यभूमिक चिन्हू धनकेँ
जखने मन मणि बनत
छिटकत ज्योति धरतीपर
अपन बाट अपने देखब
हँसैत चलब पृथ्वीपर



ISBN : 978-93-87675-01-8

दाम : ₹ 251/-

तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

GACHHPAR SAN KHASLA
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

हाथक जिनगी

सोहनपुर एकटा गाम अछि। आने गाम जकाँ रंग-रंगक जातिक वस्ती छी। ओना गामे आकि पंचाइतेक ई नाप नहियेँ अछि जे केते जातिक बास भेने गामे आकि पंचाइते हएत। एको जातिक बास भेने गामो बनैए आ पंचाइतो तँ बनिते अछि, एकर माने ईहो नइ भेल जे एके जातिक वस्ती भेने गामे आकि पंचाइते हएत, एकसँ बेसियो आ बहुत बेसियो जातिक वस्ती गामो आ पंचाइतो बनिते अछि। खाएर जे बनैए..; मुदा जहिना पोखैरक पानिसँ लऽ कऽ महार तक सीढ़ीनुमा घाट रहैए तहिना जातिक सेहो सीढ़ीनुमा गाम बनले अछि। ओना एक घाट एक बाट रहितो एते तँ अन्तर बनले अछि जे ऊपरसँ निच्चाँ हेट होइमे जे सुगमता अछि ओ निच्चासँ ऊपर होइमे नहियेँ अछि। बीचक परिस्थितियो तँ एहेन ऐछे जइमे निच्चाँक पानिकेँ ऊपर अबैमे जेते शक्तिक खपान अछि तेते ऊपरका पानिकेँ निच्चाँ उतारैमे नहियेँ पड़ैए। तेकर कारणो अछि जे ऊपरका माटिकेँ गेन जकाँ गोला बना गुड़केनौं पानिमे चलि जाइए आ हाथसँ उठा फेकनौं चलि जाइए मुदा से निच्चाँक पानि तँ नहियेँ भऽ सकैए। ओकरा-ले दढ़ बरतनक संग बरतन उठौनिहारोक जरूरत पड़िते अछि।

अनेको जातिक गामक बीच आने गाम जकाँ जातिक पानि चलैक रस्ता सेहो बनले अछि। ओना पानि असगरो चलैए आ अन्नक संग सेहो चलैए। ऐ हिसाबे सोहनपुरमे तीनटा मोटगर बान्हनुमा चौड़गर रस्ता ऐछे जइमे आने गाम जकाँ केतेको एकपेरिया केतेको खुरपेरिया सेहो बनले अछि।

महार परक पानि जहिना अपने झहैर-झहैर निच्चाँ मुहेँ तेजो गतिये आ मधिमो गतिये चलिये जाइए मुदा पोखैरक पानि महारपर केना औत? तहिना किछु जातिक अन्नो आ पानियोँ सौंसे गाम टहलान मारैत मुदा जेना-जेना घरक सीढ़ी निच्चाँ मुहेँ जाइत तेना-तेना रस्तामे रोक-राक सेहो गाड़ल अछिए। अही रोक लागल जातिक बीच शुभक दास नामक बेकती आइसँ बीस बर्ख पूर्ब छला जिनकर बेटा अशर्फी दास आइ सोहनपुर गाममे नीक किसान बनि अपन परिवारक भरण-पोषण कऽ रहला अछि।

शुभक दास अपन बाप-दादाक घराड़ी नइ रहने सासुरे माने सोहनपुरेमे घर जमाए बनि रहि गेला। समाजक एक परिवारक जमाए भेने समाजे जमाए जकाँ मानए लगलैन।

ओना बेवहारिक जिनगीक तँ नहि मुदा वैचारिक सम्बन्ध स्थापित शुभक दासक भाइये गेलैन। एहेन शुभके दासटा सोहनपुरमे छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सभ जातिक बीच अछि। तेकर अनेको कारण अछि जे जरूरतसँ लऽ कऽ गामक मुहोँ-कान अछि। गामक मुँह-कानक माने भेल समाजक चालि-ढालि। से तँ सोहनेपुरक लोकटा नइ बुझै छैथ दस-कोसीक चौबगली गामक लोक बुझबो करै छैथ, आ मानबो करिते छैथ। एक गामसँ दोसर गाम जा बसब कोनो आइये नइ सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि। एकर माने ईहो नइ जे सोहनपुरक लोक आन गाम जा नइ बसल छैथ। कियो नाना-नानीक दोखतरीपर, दोखतरीक माने भेल पुत्र विहीन माता-पिताक सम्पैतपर पुत्री-भात्रीक बसब। मुदा तेतबे नइ अछि, केतौ वैधव्य रूपमे, तँ केतौ

समाजक कुबेवहार भेने, तँ केतौ किछ केतौ किछु, अनेको कारण अछि।

शुभक दास अपन पैत्रिक गाम छोड़ि जखन सोहनपुर आबि बसला तखन बहुतो बेवहार छुटबो केलैन आ बहुतो लगबो केलैन। जैठाम अपना गाममे 'तू-ता' बेसी बजै छला से बदैल 'हौ-यौ'पर आबि गेलैन। ओना शुभक दासक सासुर एके दियादीक परिवार तँए पाँचे घर गाममे जइसँ अल्प-संख्यक जातिक कोटिमे छेलैन्हे। तैसंग अन-पानिक बान्ह तेना बन्हने जे सकपंच भेल परिवार रहैन।

ओना गाम-गामक अपन-अपन मुँह-कान आ नाँगैर होइ छै तँए ने कोनो गामकेँ नीक कहल जाइत आ ने अधला, नीको सभ अछि आ अधलो सभ अछि। गामेक बात छी, जहिना पोखैर आकि समुद्रमे इचना-सँ-रोहु आ डोका-सँ-काँकौर धरिक बास अछि तहिना ने गामो-समाज छी। सभ गाममे अपन-अपन पंचैतियाह तँ छैथे जे अपन-अपन पनचैती करै छैथ। मुदा गामक बिच्चेमे जातिक जे बान्ह अछि ओइसँ गामो नीक-अधला बनि गेल अछि। एक जातिक नीक गाम, दोसर जातिक अधला गाम भऽ जाइए। नैहर बसि शुभक दासक पत्नी- रीतिया, अपन पिताकेँ कहली»

"बाबू, जहिना सभकेँ अपन बाप-दादाक पगड़ी सम्हारि कऽ राखए पड़ै छै तहिना ने हमरो सासुरक परिवार अछि। भलेँ गरीब अछि, अपन घरो-घराड़ी नइ छै, ओ तँ सम्पैत भेल, मुदा कुल-खनदानक तँ अपन-अपन मान-मरजादा होइ छै किने।"

बेटीक बात सुनि पिता बजला»

"बेटी, दुनियाँमे सबकेँ अपन इज्जत-आवरू आ अपन जिनगी अपने हाथमे रहै छै, तँए बीचमे कियो किए केकरो बाधा बनत।"

ओना शुभक दासक मन अखनो तक झुझुआइते छेलैन जे

दुनियाँमे केतौ कमा कऽ खाइ आकि भीख मांगि, मुदा सासुर छोड़ि कऽ। मुदा जिनगियो तँ जिनगी छी, केकरा नइ प्रिय अछि, मुदा ओ प्रिय बनि चलत केना, यएह तँ ई दुनियाँक रंगमंच छी...। सासुरेक जिनगीक संग सुभक दासक जिनगी चलए लगलैन। जन्म-जात वैष्णव परिवार तँए अपने हाथे अपनो बेटा-बेटीकेँ तुलसी-माला पहिरा वैष्णव परिवारक गढ़ैनसँ परिवार गढ़लैन। जेठ बेटा दसरथ दास, जखन बारह बर्खक भेल तखन गौआँ सभ संगे पंजाब गेल। पंजाबमे जइ किसानक धन-कटिया सभ करैत ओही किसान लग दसरथोकेँ लऽ गेलखिन। सत्तैर-बहत्तैर बर्खक ओ किसान। दसरथ दासकेँ देखते पुछलखिन»

"बौआ, सब-दिना काज करबह?"

ई बात दसरथ दासकेँ बुझले जे तीन मासक पछाइत सभ गाम चलि जेता, मुदा जखन पंजाब आबि गेलौं आ काज भेट गेल तखन काजक लूरिये किए ने लऽ कऽ आपस होइ...।

दसरथ दास बाजल»

"हँ रहब।"

किसान»

"दरमाहा केते लेबहक?"

दसरथ दास»

"अपना मने एको पाइ ने, अहाँ जे जानब से देब।"

जिनगीक अनुभवी किसान, सात-दशकक धाँगल जिनगी। मनुखक कसौटीपर कसल मनुख दसरथ दास बुझि पड़लैन। एका-एक जेना ओइ किसानकेँ अपन जिनगीक लम्बाइ-चौड़ाइ आँखिक सोझमे झलकलैन। झलैकते पुछलखिन»

"बेटा, केते दिन रहबह?"

किसानक चेहरा देख बाल-बोध दसरथ दासक मनमे भेल- दू-चारि बरख जीबैबला बुढ़ छैथे तँए किए ने तेहेन बात कहि दिऐन जे मन खुशीसँ हल्लुक भऽ जेतैन...।

बाजल»

"जिनगी निमाहि देब।"

एक तँ चारिम अवस्थाक बहैत जिनगीक धार, तइमे दसरथ दासक बात सुनि, ओ किसान बीच धारमे भँसिया गेला। भँसियाइत दसरथ दासकेँ कहलखिन»

"जहिना बेटाक काज बापकेँ निमाहब छी तहिना ने बापोक काज बेटाकेँ निमाहब छी।"

जइ ढंगसँ बुड़हा किसान बजला ओ दसरथ दास नीक जकाँ नइ बुझि पएल। बाजल»

"दादा, नइ बुझि पेलौं।"

जहिना छोट बच्चाकेँ कोनो बोल सीखबैमे परिवार-जनकेँ आनन्द उठैत तहिना ओइ किसानक मनमे उठलैन। बजला»

"अखने कहि दइ छिअ। मरै बेरक भरोस नइ, जहिना तूँ जिनगी निमाहैले तैयार छह तहिना तोरो जिनगी निमाहि देबह।"

आठ बर्खक नोकरीक जिनगीमे ओ किसान दसरथ दासकेँ अपने सन किसान गढ़ि लेलैन। अपना जीबते सोहनपुर आबि, पाँच बीघाबला किसान परिवार दसरथ दासकेँ बना, गाम पहुँचबो ने केला, रस्तेमे गाड़ीएमे मृत्यु भऽ गेलैन।

◌

शब्द संख्या : 983, तिथि : 14 मार्च 2016

गाछपर सँ खसला

ओछाइनेपर रही, माने नीनसँ सूतल रही। ओना किरिण नइ फुटल रहै मुदा गामक लोक जगि गेल रहै, पोसर चरौनिहार महींसवार बाधसँ घुमि गेल रहए, गाछीक अखड़ाहापर कुश्ती समाप्त भऽ गेल रहै, मुदा चलती बेरक सवारी कसा-कसी होइते रहइ। पत्नियोँ आँगन-घर बहारि चुल्हि नीपैक सुर-सार करिते रहैथ कि पड़ोसिनी आबि कहलकैन»

"मनोज बाबा गाछपर सँ खैस पड़ला!"

कहि पुछाड़ि-भाड़क बेन जकाँ आगू बिल्हए बढ़ि गेली।

'गाछपर सँ खसब' सुनि जे पत्नी अवाक भेली से पड़ोसिनी परोछ भऽ गेलैन मुदा बकार नइ फुटलैन जे कनी आरो सेरिया कऽ बुझितैथ। घर-निप्पा चुल्हि लग रखि पत्नी सोझे लगमे आबि बजली»

"मनोज बाबा गाछपर सँ खैस पड़ला!"

ओना पहिनहि जगा देने छेली। जगला पछाइत कहलैन। मनोज बाबाकेँ गाछपर सँ खसब सुनि मनमे उड़ी-बीड़ी उठि गेल। मुदा तखन तँ पत्नियेँ सोझमे रहैथ, आन रहितैथ तँ आनो मने बाजल जा सकैए मुदा पत्नी लग से केना हएत। पति जकाँ ने बाजए पड़त। की करितौं सहए केलौं। तमसा कऽ तँ नइ मुदा गरमा कऽ बजलौं»

“कुकुर कटने छेलैन जे भोरे-भोर गाछपर चढ़ि गेला।”

ओना कहब जे अठबजिया ओछाइन छोड़निहारकेँ अहिना भकइजोते होइत रहै छै से बात नइ, छअ बजेसँ पहिनेक बात छी। उठै बेर हमरो भऽ गेल रहए मुदा उठल नइ रही। मनक खौंझक कारक दोसरो भेल। दोसर भेल जे जखन गाछेपर सँ खसला तखन केते जखम भेल हेतैन तेकर कोन ठेकान। तइमे तेलेक मालिशसँ नीक भऽ जेता आकि डॉक्टर ऐठाम जए पड़तैन आकि अक्सीजन-घर पहुँचबए पड़तैन, तेकर कोन ठीक अछि। तइले तँ तैयार भऽ कऽ ने निकलए पड़त, से तँ अखन ओछाइने छोड़लौं अछि। अखन नित्य-कर्मक संग पाइयो-कौड़ीक बेंत-बाँत ने करए पड़त। तहूमे जखन डॉक्टरे-इलाजक भाँजमे पड़ब तखन केते दिन लागत आ की सभ करए पड़त तेकरो की थाह अछि। अथाहक भरोसे केते...।

मुदा फेर भेल जे सोझे मने-मन नक्शे-खतियान बनबैत रहब तहूसँ तँ नहियेँ हएत। कोसी-नहैर जकाँ मने-मन नक्शा बना लेब आ खुनैकाल ई ठेकाने ने रहत जे पानिक बहान ऊपर-सँ-निच्चाँ दिस दौड़ैए, तैठाम जँ मुहेँपर निच्चाँ उतारि देबै आ आगूमे ऊँचका खेत रहतै तखन ओइ खेतकेँ पटैक केते आशा कएल जाएत, ई तँ इंजीनियरक काज भेल, सबहक तँ छी नइ। तहूमे अपन नक्शा-खतियान तँ अखन यहए ने हएत जे मुहसँ पत्नीकेँ घरक भार सुमझबैत, अपने मुँह-कानमे पानि लऽ ली आ जेते जल्दी बाबा लग पहुँच सकब ओते मुस्तैदी करी। जानक कोनो ठेकान अछि जे परान छुटि जाएत आकि...। चाह पीब विदा भेलौं। थोड़बे हटि कऽ टोलेमे दछिनवारी कात घर छैन। मनोज बाबा दरबज्जेपर भेटला। ओना गामक लोकक देखब पतरा गेल रहै मुदा गोटि-पँगरा आबा-जाही रहबे करइ।

गामक बातावरणमे पसैर गेल रहै जे फुलेक गाछपर सँ खसला,

फुलडाली नेनहि ठाढ़े खसला।

पुछलयैन»

“बाबा, किछु विशेष समाचार?”

अपने तँ लाभर-जीभर बजलौं मुदा सियाखी बाबा नीक जकाँ बुझि गेला। जएह बात गामक वातावरणमे पसरल तही टोनमे मनोज बाबा बजला»

“आने दिन जकाँ अपन नियमसँ फूलक बेर फूल तोड़ए गेलौं। कनैल फुलक फड़ी[1]क मास छीहे सएह ठिकिया कऽ चढ़लौं, थोड़बे ऊपर गेलौं कि पएर पीछैड़ गेल, हाथमे फुलडाली लटकौनहि निच्चाँ-मुहेँ ससरैत ठाढ़े खसलौं।”

गपक आभाससँ बुझि पड़ल जे बाबा अपन बेथाकेँ छिपा कऽ बाजि रहला अछि जँ से नइ अछि तँ बोलीमे किए अवरोध भऽ रहल छैन।

मुदा अपनो तँ हुनके बेथा मेटबैले ने जिज्ञासा करए आएल छी, तखन जँ जोतले-चौकियाएल खेत भेट गेल तँ बीये छिटैमे किए देरी करब।

कहलयैन»

“फुलडाली मजगूत छल किने?”

ओना बाबा बोली परेख लेलैन, मुदा बाउक भाउ जेना दुनू अछि- पितोकेँ आ पुत्रकेँ सेहो ‘बाउ’ कहल जाइ छै, तहिना मुस्की दैत बजला»

“एह! फुलडाली तँ फुलडालीए अछि, ओना छी पितरिया मुदा

[1] फड़ी-क माने भेल जहिना पानक पात पानक फड़ी कहबैए तहिना फूलक सघन पैदावार फूलक सघन फड़ी भेल।

रंग-रूपसँ सोने जकाँ झलकैए।”

घन्टा भरि पहिलुका चोटपर मनोज बाबा केतबो झाँपन दैथ तैयो ओछ धोती-साड़ी जकाँ एक-भाग उघारे भऽ जाइन। अपनो मन गवाही दिअए- भाय! कियो कनबैत-कनबैत हँसबैए, कियो हँसबैत-हँसबैत कनबैए, मुदा जीवन-धार तँ से नइ छी, ई तँ हँसैत-खेलैत बहैत धारा छी। तैठाम मनोज बाबा अपने जे नुका रहला अछि तखन कनी किए ने एकटा ओढ़ना आरो ओढ़ा दिऐन। सहए करैत पुछलयैन»

“बाबा, साँप जकाँ जे गाछपर सँ ससैर कऽ निच्चाँमे उतैर ठाढ़े रहलिऐ, एकर तँ कोनो मानैयेँ ने भेल?”

पारखी मनोज बाबा धाँइ-दे बात परेख लेलैन। बजला»

“बेसी-सँ-बेसी तूँ यएह ने कहबह जे गाछपर सँ साँपे ससैर कऽ निच्चाँ अबैए आकि गनगुआरिये?”

बिच्चेमे बजा गेल»

“हँ, एकटा टाँगक झोंझबला आ दोसर बिनु टाँगबला।”

बातकेँ सम्हारि बाबा बजला»

“थोड़बे ऊपर चढ़ल रही, जेते ऊपरसँ धिया-पुतामे कुदनाइ सीखने रही तँए ससरलौं नइ पीछड़ए लगलौं आकि कुदि गेलौं।”

‘कुदब’ सुनि चपाड़ा भरैत कहलयैन»

“अपने कहुना भेलिऐ ते पुरान हाड़-काठक ने भेलिऐ, मुदा हड्डीक जोड़क जे पएरमे छिटकिल्ली अछि ओ ने ते ससरल।”

एकेबेर नीपैत-पोतैत बाबा बजला»

“यएह बुझह जे जहिना पहिने फ्रेश रही तहिना अखनो छी।”

कहलयैन»

“बाबा, जखन पूजा करै छी, फूलक जरूरत होइए तखन एहेन-

एहेन जे बड़का फूलक गाछ लगौने छी, जैपर चढ़ि कऽ तोड़ए पड़ैए तइसँ नीक ने जे फुलवाड़ी लगा छोट-छोट गाछक फूलसँ बेगरता सम्हारि लेब।”

ई बात जेना मनोज बाबाकेँ मनमे गड़ि गेलैन तहिना तिलमिलाइत बजला»

“बौआ, तोरासँ लाथ की करब। साठि बर्खक उमेर भऽ गेल, चालीस बरख सँ पूजा करै छी, जखन जुआनी छल आ घरसँ खेत धरि कर्मभूमि बनौने छेलौं, सभ किछु सोझेमे नचै छल, आब ओ हूबा अछि जे ओते मनसूबा करब, मुदा...।”

हरमुनियाँक अन्तिम पटरी जकाँ अवाज बदलैत रहैन मुदा केकरा कहथीन आ कहने हेतैन की तँए ऐठाम आबि बाबाक बोली पलटैत रहैन।

मनमे भेल जे ई तँ केकर दिनक परि भऽ गेल, जे गेलौं करहर उखाड़ए आ आगूमे चलि आएल केशोर! माने भेल जे करहरो आ केशौरो पनिगर माटिमे होइए, मुदा होइए दुनू दू परिस्थितिमे। जखन पानि रहै छै तखन करहर होइए आ जखन पानि सुखि माटि सकताइए तखन केशौर होइए जे हाथसँ नइ खुरपीसँ उखाड़ल जाइए, तइले खुरपीक प्रयोजन पड़ै छइ। ऐठाम सएह भऽ गेल, मनसूबा बना आएल छेलौं जे बाबाक कुशल-छेमक पछाइत, चाहे साइकिलेसँ आकि टेम्पूएसँ डॉक्टर ऐठाम जाएब, दादीकेँ सेहो संग कऽ लेब, बर-बेमारीमे पत्नियेँ ने अर्द्धांगिनी बनि आधा दुख बँटतैन। मुदा से तँ बाबा गाछ परहक खसब बिसैर अपन जिनगीक खसब दिस बढ़ि रहला अछि..!

पुछलयैन»

“की कर्मभूमि कहलिऐ बाबा?”

एक तँ ओहिना बैसारी मनोज बाबा, भरि दिन विचारेक परसादी बँटिते रहै छैथ, तैपर कर्मभूमि सन शब्द भेट गेलैन, भेटते जेना मनसूबा जगलैन। बजला»

“बौआ, यएह देह छी जे हट्ठामे बैशाख-जेठ मास सन दिनमे हर-बरदक संग बारह बजे तक कोदरबाहि करै छेलौं मुदा थाकैनसँ मिसियो भरि मुँहो मलिन नइ होइ छल, जइक चलैत घर-अँगनासँ लऽ कऽ खेतो-पथार धरि हँसैत रहै छल मुदा आइ..!”

‘आइ’क पछाइत सभ कानि रहल छी, से मुहेँमे रहि गेलैन।

बाबाक बन्न होइत बकार देख अपनो बकार बन्न हुअ लगल। मुदा संजोग नीक रहल। दादी सेहो लगमे आबि गेली। जहिना बाल-बोधकेँ अगुआ पुतोहु वा परपुतोहु अपन जेठजन[2]केँ अपन समाद पठबै छैथ तहिना समदिया भेट गेल। मुदा दादी-आगू बाबाकेँ अपन बेथा व्यक्त कराएब मन नइ मानलक। ओना लग्गासँ मरखाहो मालकेँ घास खुआैल जाइए से तँ मनमे रहबे करए। बजलौं»

“बाबा, अखनो अहाँक जे हड़गर-कठगर देह अछि ओ जुआनी-जवानीमे केहेन रहल हएत।”

पत्नीकेँ आगूमे देख आकि की से तँ बाबा जानैथ मुदा बुझि पड़ल जे बाँहिक कुरता समेट-समेट गट्टासँ बाँहि दिस लऽ जा रहला अछि। ओना नजैर पत्नीपर नइ हमरेपर रहैन, बजला»

“बौआ, कर्मभूमियेँ धर्मभूमियोँ छी जे सातो दुनियाँमे अछि। चाहे ओ भावभूमिक कर्मभूमि हुअए आकि जन्म भेल जगहकेँ जन्मभूमि-मातृभमि कहि कर्मभूमि बुझियौ.., अहिना सभ माने- सातो दुनियाँमे अछि, आ सभ दुनियाँक अपन कर्मभूमियोँ छै आ मर्मभूमियोँ

[2] ससुर, ददिया-ससुरकेँ

छइ।”

अपना झोंकमे बाबा बजैत रहला, बजैत रहला जे सून-अनसून दुनू हुअ लगल। तँए नीक जकाँ बाबाक बात नइ बुझि पाबी। मुदा गुरु ने एक भेला, चेलाक कोन ठेकान अछि। एको भऽ सकैए, एकसँ बेसी दोसरो-तेसरो भऽ सकैए आ एकोमे उत्थरसँ गहींरगर भऽ सकैए। बजलौं»

“बाबा, एक दिनक बेरा पार करैमे जे एना लाख कोसक रस्ता देखए लगबै तहूसँ तँ काज नहियेँ चलत। जरूरत तँ एतबे ने अछि जे काल्हि जे कौल्हुका सूर्जक उदए हएत ओ सीमा भेल आ अस्त धरिक कर्म आ कर्मक सीमा- जिनगी भेल। तेतबे जँ ठेकानसँ ठेकाइन ठेकनबैत चली सएह ने?”

ओना दादी अखैन तक ठाढ़े छेली, मुदा कड़चीक साँगह परक लत्ती जहिना हवामे डोलैत रहैए तहिना दादीक देह अखनो तक डोलिये रहल छेलैन। डोलबो केना ने करितैन, बेटा-पुतोहुक कोनो अशे ने छैन, लऽ दऽ कऽ साठि बर्खक खाली पतिक छैन, सेहो भोरे-भोर तेहेन अन्हरगरेमे गाछपर सँ खसला जे अन्हरगरे केना चलि जइतैथ, तेकर कोनो ठीक छेलैन। जँ बाबाक पेटे-पाँजर टुटि गेल रहितैन तँ दादीक गति की होइतैन...। मनमे भेल जे अछैते बेटा-पुतोहु कष्टमे किए छैथ? दादीकेँ पुछलयैन»

“दादी, अछैते बेटा-पुतोहु जे एना कष्टमे छी से नीक लगैए?”

हमर बात सुनिते दादी तँ सहैम गेली मुदा मनोज बाबाक मनक फुनफुनी ओहिना जगलैन जहिना रणभूमिमे रणाकेँ जगैए। बजला»

“बौआ, जइ पुरुखकेँ आइन-अपगराइन नइ अछि, ओहो कोनो पुरुखे भेल।”

बाबाक मजगूत विचार सुनि मनमे भेल जे भरिसक मनमे कोनो

दमगर व्रत छैन, जे पुरबै पाछू अपन सभ किछु बलिदान करैले तैयार छैथ। मुदा से तँ सुनला पछाइते ने बुझब। ओना मनोज बाबाक परिवारक सभ भाँजो तँ नइ भाँजल अछि मुदा दुनू बापूतक बीचक बात नइ बुझल अछि सेहो तँ नहियेँ अछि। कहब जे जखन बुझले अछि तखन सएह ने किए कहलयैन। समाजक बीचमे ने बसल छी, समाजक बीच बहुत एहेन बातो आ काजो अछि जे सीमाबद्ध अछि। जे सीमाबद्ध अछि ओकर अतिक्रमणो तँ अतक्रमणे भेल, तँए। बजलौं»

“बाबा, अहाँ ते तेहेन उमकीमे उमैक कऽ बाजि देलिऐ जे बुझबे ने केलौं?”

बाबाकेँ जेना सह भेटलैन, मुदा दादीकेँ कठाइन लगलैन से ठोरक बिजकीसँ बुझि पड़ल, मुदा बातो-विचारक तँ अपन क्रम होइ छै, ई तँ नइ जे आमक गाछे रोपैकाल चूड़ा कीन कऽ लऽ आनी जे आम सेने खाएब। एक तँ परिवारक विवाद छी तहूमे बाप-बेटाक बीचक जे करखनो नाहपर गाड़ी जकाँ आ करखनो गाड़ीपर नाह जकाँ चलि अपन जिनगीक बाट-घाट पार होइए। तेहेन विवादकेँ तँ, जहिना गोहि अपन मुँह खोलैत-खोलैत शिकार लग पहुँच पकड़ैए, तहिना करब ने जरूरी अछि।

मनोज बाबा बजला»

“तोहीं कहह जे बेटाक ई उचित भेल जे कोन-कहाँ देशमे जा कऽ बिआह कऽ लेलक।”

ओना किछु लोकमे एहेन बजैक आदत होइए जे अपन विचारक बातकेँ टुकड़ी-पुरजी बना, एक-एकटा कहैत बीचमे पुछैत रहत जे की हेबा चाही। मुदा नीक अधला दुनू पक्ष अछि, से सभ बात बुझला पछाइते ने कियो उचित निर्णायक मोड़पर आबि सकैए। तैबीच

जे टुकड़ी-टुकड़ीक निर्णय कऽ नेने रहब तखन तँ अपने निर्णये ओझरा जाएत तँए बजलौं»

“बाबा, अपने कनीकाल मुँह बन्न रखियौ, दादियो कोनो ऐसँ फराक नहियेँ छैथ तँए हिनको बाजए दियौन।”

जेना हमर बात बाबाकेँ काँट जकाँ मनमे गड़लैन तहिना बिसबिसाइत दुनू ठोर बिदकलैन। ओना मुँह बन्न केने रहैथ। भऽ सकैए जे मनमे ईहो आबि गेल होइन जे तीन गोरेमे एक बजनिहार दू सुननिहार ने होइए, तैठाम बिनु सुननिहारक बाजबे की हएत। ओना, दादीक मनमे अपन बेटा-पुतोहुक सिनेह अखनो मनक धारे-धार चलिये आबि रहल छेलैन, तैठाम समाजक रूपमे हमरा देख आरो गतिमान भऽ गेलैन जे आक्रोशित होइत बजली»

“सोल्हैनी दोख हिनके छैन!”

दादीक बात सुनिते बाबाक नरसिंह तेज भेलैन, जे मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल। मनमे भेल जे कहीं दादीपर हाथ ने उठि जाइन। मुदा तइसँ पहिने बीचक जे समए अछि जँ ओकरा अनुकूल बना लेब, तखन रूप बदैल सकैए।

दादीपर सँ नजैर हटा बाबाक आँखिपर गाड़लौं। जहिना गहुमन साँप आकि बाध-सिंह आँखि-पर-आँखि पड़िते ठकुआ जाइए तहिना भेल। मनोज बाबा ठकुएला। बजलौं»

“दादी, जड़िसँ कहियौ।”

‘जड़ि’ सुनिते मनोज बाबाक मन पिनपिनेलैन। मुदा तैपर दादी मिसियो भरि धियान नइ दऽ बाजए लगली»

“बौआ, तोरो बुझल हेतह आ गामोक लोककेँ बुझल छैन जे एकटा बेटा अछि। कौलेजसँ पढ़ि नोकरी करए कलकत्ता गेल। ओइठाम बिआह कऽ लेलक।”

बिच्चेमे टोनि देलिऐन»

“हँ, ओ तँ अहाँ दुनू बेकतीक बड़का भार उतारि देलक किने।”

बजैले दादी लुसफुसाइते रहैथ कि बीचेमे मनोज बाबा बजला»

“गामसँ जाइकाल बेटाकेँ एना बुझा कऽ कहलिऐ जे बौआ, कामरूप कहाँ-दन ओम्हरे छै, जैठाम पुरुखकेँ जहुरी मौगी सभ गदहा-घोड़ा बना बाधमे चरैले ठोकि दइ छै, तइ सभपर नजैर रखिहह।”

बाबा तेना टोनमे बजला जे हँसी लगि गेल, हँसए लगलौं जइमे बाबाक बातो उधिया गेलैन। बिच्चेमे दादी फेर बाजए लगली»

“बौआ, जहिना अपना सबहक गाम-घरक लोक अछि तहिना कनियाँक छीछा-बीछा सेहो छैन, तखन बीचमे कोन काँट अछि जे बुड़हाक आँखिमे गड़ि गेलैन जे कहलखिन- जाबे जीब ताबे तोहर ने कमाइ खेबौ आ ने मुँह देखबौ।”

एकाएक मनक विचारमे उलट-फेर हुअ लगल मुदा जइ परिवारक समस्या छी ओ परिवार केना समस्याकेँ बुझि रहला अछि ओ ने...।

बजलौं»

“बेटा की उत्तर देलकैन?”

बेटाक पक्षमे दादी उत्तेजित होइत बजली»

“बेटो ते कहिये कऽ गेल छैन जे- भेले जाइ छी।”

◌

शब्द संख्या : 2000, तिथि : 20 मार्च 2016

केतौ ने रहलौं

काल्हि देवसुनर कक्काक तिरसैठम साल गिरह छिऐन, भोज-भात हएत, नाच-तमाशा हएत, दीर्घायुक असिरवाद समाज सेहो देबे करतैन। ओना देवसुनर कक्काक ऊपरका[3] हरियरी लहलहाइते रहैन मुदा मन तरे-तर पानि-पानि होइत रहैन। मन एतबे घुमि-फिर कहैन»

“केतौ ने रहलौं।”

मुदा एहेन उत्सवी माहौलमे एहेन विचार बजबो केतए करता! भादवक आठ अन्हार जकाँ अट्ठा-बज्जर एके बेर हरहरा कऽ अपना संग परिवारो आ समाजोमे खसबे करत। तँए मुँह बन्न राखबे नीक बुझि रखने रहला। एक तँ सघन गाम तइमे देवसुनर कक्काक दियादी परिवार, गामक आन दियाद-वादसँ झमटगर छैन्हे। तहूमे देवसुनर काका अपने ओहन आँड़िपर ठाढ़ छैथ जइसँ ऊपरक[4] जे छथिन ओ एते नमहर डिग्रीधारी कियो नइ, आ जे छैथ ओ उमेरक निच्चाँ छैथ, जइसँ सर्वोपरि हेबाक सौभाग्य तँ देवसुनर काकाकेँ छैन्हे। दियाद-वाद ऐ खुशीमे छैथ जे दियादी-परिवारमे पहिल पुरुख प्रोफेसर देवसुनर काका छैथ। तँए नवतुरिया सभ साल गिरह धुमधामसँ मनेबाक विचार कैये नेने छथिन।

[3] देखौआ

[4] दियादमे बेसी उमेरक

समाजोमे चपचपी छैन्हे जे भरि दिन चाह-पान आ जलखै-भोजनक संग रंग-रंगक वादनक संग रंग-रंगक कलाकार सबहक कार्यक्रम देखबो करता आ सुनबो करता।

समाजो तँ समाज छी, एकठाम रहितो सबहक अपन-अपन दिनचर्यो आ विचारो सबहक अपन-अपन। समाजक वृद्धजन जे उम्रसँ तँ साठि बर्ख पार नइ केने छला मुदा चेहराक सुरखी अस्सी बर्खक परिचए दइए रहल छैन। हुनका सबहक मुहसँ यएह असीरवाद निकलैन»

“भाग्यशाली देवसुनर बाबू छैथ जे साठिसँ तीन साल ऊपर तकक जिनगी हँसैत-खेलैत बितौलैन।”

दोसर दिन भोरेसँ जुड़शीतल पाबैन जकाँ ‘जय शिव’, ‘जय शिव’, देवसुनर कक्काक घर-अँगनामे पसरए लगलैन। सात दिनक तैयारीक पछाइत समियाना सजल।

समाजमे अखनो देवसुनर कक्काक परिवार सम्पन्न मानल जाइ छैन। ओना बाप-दादाक देल तेतेक सम्पैत छैन जे बेचियो-बेचियो खेता तैयो केतेको पुश्त चलतैन। ओना अपन कमाइ नइ भेने परिवारक स्थिति निच्चे उतरलैन, मुदा टुटलो हथिसार तैयो नअ घर साँगह। पहिने जे सम्पन्न परिवार बुझल जाइत रहलैन ओ भूमिक सम्पदा रूपमे, जे आइक समैमे तँ बहुत बेसी मूल्यवान भऽ गेल अछि।

तीन भाँइक भैयारीमे देवसुनर काका सभसँ जेठो छैथे। तहूमे पिताकेँ मुइला पछाइत छोट दुनू भाँइ, जे सरकारी नोकरीमे बाहर रहै छैथ, ओ दुनू अपन-अपन बाल-बच्चाक संग बाहरे रहै छैथ, सेहो सभ परिवार आएल छैन। देवसुनर काकाकेँ पिते जकाँ अखनो मानै छैन। अखुनका नवतुरिया जकाँ नहि जे नीक-अधलाक विचारे ने करब आ अपनाकेँ, भलेँ केतबो अधला आवरणसँ किए ने सजल होइ, तेकरा

नीक आ दोसरकेँ अधला मानि बेवहार करब। से दुनू भाँइमे मिसियो भरि विचार मनमे नइ समाएल छैन। तेकर कारण अछि जे बन्हौटा माल-जालकेँ जहिना समैपर खुआ-पीआ, समयानुकूल बेवहार कएल जाइए तहिना दुनू भाँइकेँ सेहो भेलैन। भेलैन ई जे कौलेज तक माने एम.ए. धरि परिवारक विद्यार्थी जकाँ पढ़ब काज छेलैन। आ ओइ अनुकूल बना कऽ राखब परिवारक जिम्मा छेलैन, जइमे कहियो कोनो कोताही नइ भेलैन। कौलेज छोड़ला पछाइत नोकरीमे गेला, जे बान्हल दरमाहापर जिनगी ठाढ़ कऽ लेलैन। तैबीच मातो-पिता जीबते रहैन जे स्वेच्छासँ दुनू भाँइकेँ कहि देने रहथिन»

“बौआ! अपन कमाइ जखन करए लगलह तखन अपना कमाइपर अपन परिवारिक जिनगी ठाढ़ कऽ लैह, जइसँ सभ दिन फुलाइत-फड़ैत रहबह। हमरा खगते की अछि। जेठ बेटा-पुतोहुक संग पोता-पोती रहबे करत तँए तूँ दुनू भाँइ देह झाड़ि कऽ जीबह।”

तहियेसँ माने जहियेसँ नोकरीक जिनगी शुरू केलैन, अपना-अपना भरे दुनू भाँइ चलैत आबि रहल अछि।

भैयारीक जेठ भाइक तिरसैठम साल-गिरह छिऐन, तँए दुनू भाँइ मने-मन खुशी छैथ जे भैयारीमे कियो दादा होथि। दुनू भाँइक पत्नियोँ आ बालो-बच्चा सभ खुशीसँ मगन। बिऔहुआ बर-कनियाँ जकाँ जे सभ विध-बेवहार तँ ओकरे हेतै मुदा भार कोनो ने ऊपरमे रहै छै, तहिना देवसुनर काकाकेँ सेहो छैन्हे। विध-बेवहारक समैपर विधकरी अगुआ कऽ विध करबै छइ। जेना-जेना विधक समए अबै छै तेना-तेना विधकरी विध-विधान करबै छइ। समियानासँ दरबज्जा आ दरबज्जासँ आँगन देवसुनर काका टहैल-टहैल देखैत रहैथ जे केतए कोन जोगारसँ काज चैल रहल अछि। आँगन पहुँचते पत्नीपर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते पत्नीक खिलल चेहरा देख मन लटि कऽ लटुअए

लगलैन। लटुआइक कारण भेलैन जे अपन मन मने-मन अपन बेथा देख औँढ़ मारए लगलैन। मुदा बजबो केतए करता आ कहबो केकरा करथिन। डर दुनू दिस रहैन। डर ई रहैन जे जँ सत् बात सोझहामे ठाढ़ हएत तँ अनेरे टहटहौआ सूर्यक रौद एकाएक छोट-छीन मेघक (माने वादलक) टुकड़ीसँ विशाल धरतियोसँ विशाल सुर्ज झँपा छाँहसँ छहरा जाइए तहिना हएत। एक दिस घोड़सँ घोराएल मन घोड़छान तोड़ऽ बमैछ रहल छैन तँ दोसर दिस विचार-पर-विचार माने सही विचारपर छाँहदार विचार, घटिया विचार, घबाह विचार, नव-नव रूपमे ठाढ़ भऽ भऽ मनकेँ दबैत रहैन। देवस्थानमे यात्री जहिना देव दर्शन-ले उताहुल होइत रहैए जे कखन दर्शन हएत तहिना देवसुनर काकाकेँ देखबो-ले आ बजबो-ले अपन पत्नीक संग परिवारो-जन आ समाजो-जन अपन-अपन विचारे उताहुल रहबे करए। मुदा देवसुनर काका अपन तिरसैठम साल गिरहक उत्सव देख पहाड़ आ पहाड़-कातक गहींर समुद्रक बीच कण्ठ लग अँटकल रहैन जे झाँपल-तोपल मरल जिनगी देख कुहैर-कुहैर कानि रहल छैन, तँ दोसर ओही झाँपल-तोपल लहासक मधुर फलक गाछ बुझि कियो पूजैले उताहुल तँ कियो कर-कमठौन करै-ले...।

प्रोफेसर देवसुनर काका दर्शन शास्त्रक प्रोफेसरक जिनगी गुदस करैत तिरसैठम बर्खक अन्तिम दिनक उत्सवक बीच अपनाकेँ देख तँ रहला अछि मुदा लगक पत्नी, माने अर्द्धांगिनियोँ ऐ बातकेँ नइ बुझै छेली। तेकर कारण छल जे देवसुनर काका एको दिन ई चरचा पत्नियोँ लग नइ केने छला। ओना ओइ बातकेँ बुझै जोकर जँ पत्नियोँ रहितथिन तँ अपनो बुधि-विचारे बुझि-विचारि सकै छेली, मुदा तइसँ निम्न रहने नइ बुझि पेब रहल छैथ। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे दुनू परानीक बीच जे रंगीन दुनियाँक रंगीन रूप मनमे बनि गेल छैन ओ अधिक बेसी लहैठ गेल अछि। लहठैक माने भेल- लहठगर, एक दिस

समाजक बीच पहिल पुरुख महाविद्यालयक शिक्षक भेला, भलेँ आन शिक्षक महाविद्यालयकेँ घन्टा किए ने बेकतीगत बुझैत, जे निमूधन समाज थोड़े बुझत? ओ थोड़े बुझत जे फल्लाँ फल्लाँ जातिक आ फल्लाँ दियादीक छैथ। ओ तँ मुनल आँखि खुजिते देखबे करत किने जे फल्लाँ महाविद्यालयक शिक्षक छैथ। जिनकर आँखिमे समाजक बास अछि। परिवारक बास भूमि घर-अँगनाक भूमि भेल मुदा समाजक बास तँ समाजेक नजैरिक दिशामे बास करैए। जेहेन समाजक नजैर तेहेन बास, चाहे ओ अवध, जनकपुर मिथिलो भऽ सकैए आ रावणक लंका आ कबीरक मग्गह सेहो तँ भाइये सकैए।

मचकीक आसमे जहिना एक डारिक संग गाछक आनो डारि झुलए-झुमए लगैए तहिना परिवारसँ समाज-जन धरि झुमितए। तइमे पत्नी तँ सभसँ लगक भेली, जिनका सभसँ बेसी आस सोभाविके अछि। जहिना अपन जिनगीक आस भरल नोकरीक अन्तिम दिन ओ रूपमे देवसुनर काका की देख रहला अछि जे समाजमे सभसँ अगुआ कऽ एम.ए. तक पढ़लौं। अही आशा-ले ने जे समाज देखो-देखी चलैए आ ओकरा कखनो आगूक जुआमे गरदैन लगा घीचलो जाइए आ कखनो पाछूसँ धक्का दैत ठेललो जाइए। से की भेल? आइ हम ओइ सीमापर ठाढ़ छी, जेतए 'प्रोफेसर'क रूपमे विद्यार्थी पढ़बैक नसीब कम भेल!

मुदा लगले मनमे तरैप एलैन- दरमहो तँ जिनगीमे नहियेँ पेलौं, बिनु बोइनिक काजे केहेन होइ छै, तइमे कमी केते अछि, सेहो तँ नहियेँ अछि।

हँ-निहँसमे देवसुनर कक्काक मन ठमकलैन। ठमैकते पत्नी दिस झुकलैन। झुकिते हूबा जगलैन। हूबा जगिते मनमे विचार उठलैन- अपन जिनगीक आजुक दिन की अछि से पत्नीकेँ कहि दिऐन। उठैत

जिनगी हुअए आकि ठमकल, आकि खसैत हुअए, अर्द्धांगिनी तँ वएह भेली। ई चूक तँ जरूर भेल अछि जे हुनकोसँ बहुत बात छिपौने छी। आइ जँ हुनका बुझल रहितैन तखन केहेन रूप होइतैन?

..'रूप' मनमे अबिते अपन विद्रूप होइत चेहरा नेने देवसुनर काका पत्नीक समीप पहुँचला। ओना, अँगना-घर लोकक महमहीसँ भरल। तैबीच तिरसैठ बर्खक देवसुनर काका पत्नीसँ किछु कहता आ पत्नीक बात सुनता, ईहो तँ समाजक बीच लोक-लाज अछिए। जहिना बाल-बोध वृद्ध माता-पितासँ धखाइए तहिना ने बाल-बोधक बीच मातो-पिता अपन सीमावद्ध रूप बिगाड़ैसँ धखाइ छैथ। मुदा से काकी थोड़े बुझली। पतिकेँ सोझमे अबिते बजली»

"एना रूप लटुआएल किए अछि?"

पत्नीक प्रश्नपर बिनु किछु विचार केने प्रतिवाद करैत देवसुनर काका बजला»

"अहाँ लहटगर छी किने?"

'लहटगर' सुनि बुधनी काकी आरो लहैठ गेली, जइसँ औरो गप-सप्प करैक मन फुरफुरेलैन।

पत्नीक बेथाएल बात सुनि देवसुनर कक्काक साहस टुटए लगलैन जइसँ आगूमे ठाढ़ होइक शक्तिये क्षीण हुअ लगलैन! मन तिलमिलए लगलैन! तिलमिलाइत नजैर पत्नीक रूपपर सँ निच्चाँ धरतीपर खसलैन। जहिना शिकारीक वाणसँ बेधित पक्षी धरतीपर खसैए तहिना देवसुनर काकाकेँ बुझि पड़लैन। मनमे उपकलैन जे पत्नी मनक बात ने तँ बुझि गेली! जँ से नइ बुझली तँ एहेन वाण किए फेकलैन?

जेना-जेना मन मथन करैन तेना-तेना मनमे अपनाकेँ अपराधी जकाँ बुझि पड़ए लगलैन। मुदा उत्सवी माहौल तेहेन अछि जे पत्नीक मनक विचार मनमे गुम्हैर कऽ रहि जेतैन, धरतीपर ओ केना आबि

पौत। किएक तँ तेहेन अवरोधी टाट आगूमे ठाढ़ अछि जे मोरध्वजक पहरासँ कम नइ अछि। लगक हनुमाने किए ने होथि मुदा दरबज्जासँ भीतर प्रवेश करब तँ कठिन अछिए। मुदा ई विचार देवसुनर काकाकेँ अपन दर्शनक उठल विचार छेलैन, नइ कि पत्नीक बाजबसँ।

पत्नीक मनमे एहेन मिसियो भरि विचार किए जगितैन। जे अर्द्धांगिनी बनि बगुर-बोनीसँ लऽ कऽ चनन-बोनी तक संग-संग बाम रूपमे चलैले अपन जिनगी पतिक हाथमे थमा देने छैथ तिनका मनमे एहेन विचार केना उठतैन? विचारोक तँ अपन दुनियाँ छै, बेविचार जँ अपना वाणे ओइ दुनियाँ[5]केँ बेधए चाहत तँ की बेधा सकैए, मुदा बाम-दहीनक बीचक जे सीमा अछि, ओइ सीमापर तँ ठेला-ठेली भाइये सकैए।

दर्शन शास्त्रक दिशा देखनिहार प्रोफेसर देवसुनर कक्काक मन मानि गेलैन, तँए अपन मन पत्नीक संग बँटैत बजला»

"आश भरल जिनगी..?"

कहि आगू विचारैत-विचारैत मन एते मलिन भऽ लटुआ गेलैन जे जीवित आन पातसँ अपनाकेँ रूप-विहीन रूप देखए लगला। आगूमे जीवित आ लटुआएलक बीचक दूरी- अन्हार पसैर गेलैन।

मध्यम श्रेष्ठ किसान परिवारक देवसुनर काका आइसँ उनचालीस बर्ख पूर्ब माने जहिया अठारह बर्खक अवस्थामे रहैथ तहिये दर्शन शास्त्रसँ एम.ए. केलैन। गामक पहिल स्नात्तकोत्तर-डिग्री अर्जन केनिहार। जहिना निड़ाएल चैतक बेली फूल जेना-जेना साँझ ढलैए तेना-तेना अपन सुगन्ध पसारैए तहिना देवसुनर कक्काक सुगन्ध सेहो समाजमे पसरलैन। ओना पढ़ल-लिखल लोककेँ नोकरी चाही नइ तँ गामक लोक खिल्ली उड़ेबे करता,

[5] सुविचारक दुनियाँकेँ

जे फल्लाँ ओहन बौक सुग्गा भऽ गेल जेकरा रामो-राम ने कहल होइ छै! आ जखन रामो-राम ने कहल हेतै तखन आत्माराम केना कहत! नोकरीक कटमटी जहिना आइ अछि तहिना तहियो छल। तँए बेरोजगारी रहबे करइ। रहबो केना ने करैत...। ओना पेट-जरूआ बेरोजगार जकाँ देवसुनर काका नइ छला मुदा नहियोँ छला सेहो केना कहल जाएत। पेट-जरूआ पढ़ल-लिखल तँ नहियेँ छला जे नइ प्रोफेसर तँ हाइये स्कूलक शिक्षक, नइ हाइ स्कूल तँ मिडिले स्कूलक शिक्षक, जँ सेहो नइ तँ ऑफिसक किरानीए, आ जँ सेहो नइ तँ चपरासियो बनैले तँ तैयार होइते अछि, मुदा से देवसुनर काकाकेँ नइ छेलैन। हुनका ऑफिसक किरानी आकि स्कूलक शिक्षक बनब पसिन नइ छेलैन। तँए पाँच बर्ख बिना काम-धामक बैसले रहि गेला।

समए आगू ससरल नव रूपमे किछु कौलेजक जन्म भेल। गामक बगलेक गाममे कौलेज खुजल, देवसुनर काका ओही कौलेजमे प्रोफेसर बनला। कौलेजक मकान बनल, पास-पड़ोसक शिक्षक सभ बहाली भेला। विधिवत कौलेज शुरू भेल, मुदा विद्यार्थीक उपस्थिति भेबे ने कएल। कागजेक बीच शिक्षको सभ रहि गेला आ कौलेजो रहि गेल। ओना ओ शिक्षक सभ ऐ आशमे अखनो छैथे जे देवसुनर काकासँ उमेरमे कम छैथ।

ओना देवसुनर कक्काक मनमे आशक घटबी चारि बर्ख पहिनहि उपकलैन, मुदा सरकार जे प्रोफेसरक कार्यकालमे तीन बर्ख बढ़ोत्तरी केलक माने साठिसँ तिरसैठ केलक ओ देवसुनर कक्काक मनक आशक घटबीकेँ थामि देलकैन। थमैक कारण भेलैन जे जँ सेवो निवृत्तिक बीच सरकारक हाथ चलि जाएब तैयो तँ खुशहाली जिनगीमे आबिये जाएब। अही आशमे तीन बर्ख आरो देवसुनर कक्काक समए गुजैर गेलैन। हँ, हैया, आब भेल, तब भेल...। अही हो-हामे तीन बरख बीचक समए ससैर गेलैन। मुदा साल भरि पहिनहि, जहिया

बासैठम साल समाप्त भेलैन आ तिरसैठम साल शुरू भेलैन।

ओना अखनो जे कानमे ध्वनि अबै छैन ओ आश पुरणे छैन, मुदा मन तँ तिलमिलाइत रहबे कएल छैन। सालक साल बीत गेल। आशक भगन नइ भेल! मुदा आब तँ सहजे साल कटि कऽ मासमे चलि आएल आ मास कटि दिनमे पहुँच जाएत, एक दिन सेवा निवृत्तिक अवस्थामे पहुँच जाएत, हाथक काजक जे आशा छल ओ छीना जाएत, लुल्हा हाथसँ जिनगी चलत? जे काज करैक लूरि अछि, ओ छीना जाए आ जे काज अछि ओकरा करैक लूरिये ने रहए तखन ओहन हाथकेँ की कहल जाए?

अपना परिवारपर सँ माने बाल-बच्चा सहित पत्नीपर सँ नजैर उठि अपन भैयारी-परिवारपर गेलैन। भैयारी-परिवारमे पहुँचते देवसुनर काका देखलैन जे पैतृक सम्पैत तँ सबहक छी, जरूरत भेलापर बेचबो केना करब? आ जँ बेचौ चाहब तँ समाजक लोक सम्मिलात[6] कीनत किए। तखन तँ बँटैक स्थिति बनत!

बँटैक स्थिति मनमे अबिते देवसुनर कक्काक मन चिहैक गेलैन। चिहैक ई गेलैन जे तीन भाँइक भैयारीमे हमहींटा ने एहेन छी जे अपना कमाइक भरे ठाढ़ नइ छी। छोट दुनू भाँइ आइ तक पितातुल्य बुझि रहल अछि, तैठाम जँ बटीदार बनि फटीदार बनि जाइ, तखन हम दर्शन की पढ़लौं आ दर्शन की कऽ रहल छी!

अनायास देवसुनर कक्काक मनमे वेचैनी आबए लगलैन। जे गीत कर्णप्रिय छेलैन, माने उत्सवी माहौलक वातावरणमे, से जेना कानकेँ काटए लगलैन। मन बेकाबू हुअ लगलैन। बेकाबू भेल पत्नी लग पहुँच बजला»

"केतौ ने रहलौं!"

[6] सबहक हिस्सा

पतिक बात सुनि बुधनी काकी मने-मन विचारए लगली जे पति एना किए बजला?

मुदा जइ समुद्रक घाटपर बैस देवसुनर काका समुद्री-झिलहोरि देख रहला अछि, ओ थोड़े पत्नी बुझली। ओ तँ उत्सवी माहौलमे बौराइत पतियोक विचारकेँ बौराएबे बुझलैन जे खुशीसँ बड़-बड़ा रहल छैथ। प्रेम बेसी उमैड़ गेल छैन। पतिकेँ अनुकूल बना राखब जहिना पत्नीक पहिल कर्तव्य छी तहिना तँ पतियोक छीहे। तइमे बुधनी तँ बुधनीए थिकीह...।

बजली»

"दुनियाँमे केकर ठेकान छै जे ठेकानसँ रहब।"

पत्नीक साधल वाण जेना दार्शनिक देवसुनर कक्काक मनकेँ बेध देलकैन। बजला किछु ने मुदा पत्नीक ओ रूप टटोलए लगला जे जीवन संगिनीक होइ छइ।

◌

शब्द संख्या : 2103, तिथि : 25 मार्च 2016

अपने केलहा

साइठ सालक जियालाल बाबाकेँ ओछाइनपर पड़ल अपन सिकुड़ैत जिनगीक देहक-गाछ देख मनमे विचार जगलैन। तीन बट्टीपर पड़ल जिनगीकेँ देख ने अक् चलैन आ ने बक्। केकरा कहबै, सभ तँ अपने पाछू बेहाल अछि, केकरो नीक हाल देखिऐ तखन ने ओकरे हाले अपनो हाल सिरैज लेब। जूरशीतल सन पाबैनक दिन छी, जखन जुआनी-जवानी छल तखन चारि बजे भोरेसँ गाछ-बिरीछक जड़िकेँ नीरसँ नीड़बै-जुड़बै आ सितबै छेलौं, जइसँ बागे-बगिया आकि चासे-बास सिरजै छल। सबहक पाबैनक पाबन चुकबै छेलौं आ आइ अपने भोरूए पहरसँ मेघमे तरेगन गनै छी। जिनगियोक तँ तीन अवस्था होइते अछि, एक- चढ़ैत-मढ़ैत, दोसर- ठहरल-ठमकल आ तेसर- टुटैत-झड़ैत-खसैत...।

जहिना अमीन जमीनक नाप-जोख गुनियाँ-परकालसँ करै छैथ तहिना जियालाल बाबा अपन जिनगीक नाप-जोख करए लगला। जहिना अमीन पहिने नाप-जोख करैबला खेतकेँ ठेकनबैए तहिना ठेकनबए लगला। जखन मरद साठेपर पाठे बनैए तखन हम किए चालीसेपर घपचालीस भऽ रहल छी..! जड़ियाएल जिनगीक जड़ि हहरने मुसराक कोनो भाँजे ने लगैन जे कहिया मुसरा सिर बनि जिनगीक गाछकेँ लहलहबै-लहकबै छल आ आइ अपने किए लहैक

लटलटाइए..! लाख कोशिश जियालाल बाबा मने-मन करैथ मुदा जड़िक बात मनमे घोंसिएबे ने करैन। अन्तो-अन्त नहियेँ घोंसिएलैन। मुदा मनमे जखन जार लगै छै तखन ओ अपन देखौआ रूप जँ नहियोँ बना पबैए, तैयो गुड़क पस जहिना ऊपर निकलैक मुँह बनबए लगैए तहिना ने जरपाद[7] बनि निकलतै अछि। मन कखनो अपनापर तँ लगले कखनो गाम समाज दिस ससैर जाइन। कहू जे एतेटा गाममे छी, एते लोकक बीच गप-सप्प करैत रहबो केलौं आ करितो छी, मुदा कियो किए ने बेथाएल मनकेँ कथियबैए..?

फेर मन अपना दिस ससरलैन। ससैरते बुदबुदेला»

“गाममे रही आकि समाजमे, ने कियो केकरो देहक दुख बाँटि लइ छै आ ने कियो केकरो संगे मरैकाल जाइ छै, से तँ अपने ने अपन बुझब। सुपक-गोपी फल जकाँ तँ नहि मुदा जहिना फलो आ फड़ो गोटे-गोटे एक-कोशिया भऽ कनहा-कोतरा बनि एक भाग सुभर फल जकाँ आ दोसर भाग सुखैत-टटाइत-जरैत-मरैत रूपमे रहैत। मुदा जे होश सम्हारि होशगर छैथ वएह ने जेते सुपक-गोपी जकाँ रहल ओकरा ओरिया कऽ निकालि-निकालि फलभोग तँ करिते छैथ।”

मनसँ निकलल विचारकेँ जियालाल बाबा फलभोग बुझि नीक जकाँ नइ पकैड़ सकला। मुदा जहिना कोनो धड़फड़ाएल बटोही खुजैत नाहपर कुदि ऐगला माँगि पकैड़ निधंग ठाढ़ भऽ जाइए, तहिना जीयालाल बाबाक धड़फड़ाइत विचार मनक नाहपर कुदलैन»

“अपने केलहा छी!”

पड़ले-पड़ल ओछाइनपर जियालाल बाबाक बुधिकेँ विवेक धकियौलकैन। धकियौलकैन ई जे जखन अपने केलहाक भोग भोगै छी, तखन अनेरे जे दुनियाँमे वौआइले जाएब, से कथीले। अनेरे कोन

[7] ज्वर-पद

जरूरत अछि जे मोटका-मोटका किताब पढ़ि अपन मन मोटा लेब। कोन जरूरी अछि जे बेकतीक कोला-कोली खेत नपैले आन गामक चौहद्दी लगक सीमापर सँ नापि खेतक आड़ि कायम करैक फेरमे पड़ब, जखन अपने केलहा छी तखन जिनगीक डायरीक पन्नामे तँ हेबे करत। मिडिले स्कूलसँ सुति उठला लगसँ सुतै बेर तकक सभ किछु लिखिते आबि रहल छी, तखन किए ने अपने दिलक, अपने हृदयक डायरी खोलि हीरकेँ देखी। हीर अन्नक ओ अंश छी जैठाम ओकर जीवनी-शक्ति बसै छै, माने जीवन-दाता कहियौ आकि जीवन-दानी, बनैए। ओहिना मनुखोक हृदयक हीरसँ ज्ञान-कर्म-जीवनक विचार जगने, ज्ञानी-कर्मी-जीवनीक जन्म होइ छइ। जइसँ काजोक जीवनदाता आ ज्ञानोक जीवनदानी बनैए। अपन जिनगीक हृदयक डायरी खोलि देखैले जियालाल बाबा उठि कऽ बैसला। अलमारीपर नजैर देलैन तँ मन पड़लैन, डायरीबला अलमारी। घरमे अलमारीक कमी नहियेँ छैन, पतिआनी लगल अनेको छैन्हे। रहबो केना ने करितैन, चालीस बर्ख पहिने एम.ए. केने छला।

जियालाल बाबा गाममे पहिल-पहिल एम.ए. छैथ। जखन एम.ए. तकक शिक्षा ग्रहण केलैन, आ मन ब्रह्मचारी जकाँ निश्चल-निर्मल छेलैन तहियै अपन सेवा वृत्तिकेँ समाजक अंग बना बेकतीगत जिनगीकेँ ओइ साँचामे ढालैक उदेस बना लेलैन, जइ साँचाक सच्च छी जे मातृभमि हौउ आकि पितृभूमि जाबे धरतीपर पएर रोपि सेवा नइ करब ताबे बीचमे केतबो मधुर स्वरमे गुन-गुनाइत रहब, ओकर कोनो महत नइ रहि जाइ छै..। एहने विचार जियालाल बाबाकेँ ओही अवस्थामे उग्र भऽ गेलैन जहिया कौलेज छोड़नहि रहैथ। गामेमे जीवन-यापनक संकल्पक संग रहि गेला।

ओना जखन जियालाल बाबा मिडिल स्कूलसँ हाइ स्कूलमे नाओं लिखौलैन आ अठमा वर्गक समाज अध्ययनमे पढ़लैन जे मनुख

समाजिक प्राणी छी, तँए समाजक संग समाजपर जीवन-मरण निर्भर करै छै..। समाज भेल मेह आ लोक भेल कराममे बान्हल बरद..। मेहक धूरीमे करामक संग लोक चक्कर लगबै छैथ..।

ओना जियालाल बाबाक मन जहिया अठमेमे पढ़ैत रहैथ तहियेसँ समाज आ मनुखक बीचक सम्बन्ध मनमे चक्कर कटैत रहैन, मुदा पढ़ाइयोक तँ अपन क्रम छइ। क्रम छै प्राथमिक विद्यालयक पछाइत मध्य विद्यालय आ मध्य विद्यालयमे मिडिल स्कूलक संग हाइ स्कूल सेहो अछि, तेकर पछाइत ने कौलेज अछि। विद्या आ विद्यार्थीक बाढ़ि तँ अही क्रममे ने चलैए। जे जिनगीक विकास-यात्राक कड़ी छी। तँए बाल मनमे गड़ल जियालाल बाबाक विचार अनउत्तरित प्रश्न जकाँ गड़ले रहलैन, तेकर कारणो भेलैन जे साले-सालक नव विषयक संग परीक्षा सेहो जुड़ल रहलैन।

कौलेज जिनगीक पछाइत अपन परिवार सिरजैक मोड़पर अबिते जियालाल बाबाक मनमे उठलैन»

“अखन धरिक जे अपन परिवारिक जिनगी अछि, ओ गामक उच्च कोटिक मध्यम परिवारक रहल अछि। जेकर करता-धरता अपने छी।”

जिनगीक प्रति मनमे आशाक किरण जगलैन। जइ गाममे ओहनो लोकक आकि परिवारक कमी नइ अछि, जेकरा ने खाइ-पीबैक ठेकान अछि, आ ने पढ़ै-लिखै आकि रहैक ठेकान अछि। तैपर जाति-जातिक बीच, पंथ-पंथक बीच, टोल-टोलक बीच आ गाम-गामक बीच जे एते आपसी कलह अछि! एहेन समाजमे जीब लेब बाल-बोधक खेल नइ छी।

..अखन धरिक छात्र-समुदायक बीच जे जिनगी जियालाल बाबाक बीतल छेलैन आ समाजक बीच जे आगूक जीवन चलतैन,

तइमे सेहो बहुत दूरी बुझि पड़लैन। जैठाम सभ जातिक आ सभ धरमक संगी मिलि संगे खाइत-पीबैत आबि रहल छी, ओ समाजिक निअमसँ विपरीत अछि! छुआ-छुत अखनो लोकक मनमे कूटि-कूटि कऽ भरल छै! एक-दोसराक बीच खाइ-पीबैक कोन बात जे एकठाम बैसबोक बेवहार नै अछि!

तरे-तर जियालाल बाबाक मन गहरए लगलैन। जेते गहराइमे डुबि कऽ डुबकुनिया काटैथ तेते रंग-रंगक जीव-जन्तुसँ भेँट-मुलाकात सेहो होइत रहैन। चारू दिस जहिना जीव-जन्तुक बोन तहिना एक-दोसर एकठाम बैस बात-विचार नइ कऽ सकैए, खा-पीब नइ सकैए, पूजा-पाठ नइ कऽ सकैए, एते तक कि सरस्वती भवन हौउ आकि लछमीक महल, ओहो तेना घेराएल अछि जे दर्शनक कोन बात जे पहुँचियो ने सकै छी! पहुँचबो तँ असान नहियेँ अछि जे महादेव बाबाक नाँगैर पकैड़ पार उतरए चाहब ओ अपने बोकियाइत-बोकियाइत अछूत भेल छैथ! तखन हमरा-अहाँकेँ जे मनमे गड़ल अछि से तँ कनी विचाराए पड़त किने?

जियालाल बाबाक मन ठमकलैन। ने आगू दिस देख पबैथ आ ने पाछू दिस ढुलकए चाहैथ। अनेको रंगक संकल्प मनमे उठैन तँ मुदा विकल्प भेटबे ने करैन। गाम दिस तकैथ तँ देखैथ जे जैठाम पोखैरक घाट चाहे तँ बँटाएल अछि आ नइ तँ लोहाक मोटका सिकड़ी-कड़ीसँ घेराएल अछि, तेतबे नइ जैठाम पीबैक इनारक पानि घेराएल अछि, देवता बँटाएल छैथ, देवालय बँटाएल अछि, तैठाम बास करब असान अछि?

‘असान’ लग अबिते जीयालाल बाबाकेँ एक-बट्टीसँ दू-बट्टी मोड़ भेटलैन। ओना दू-बट्टीक माने ईहो होइए जे एके बाटसँ डारि फुटि निकलैए। तँए कि ई नइ होइए जे एकटा उत्तरसँ दच्छिन आ दोसर

पूबसँ पच्छिम जाइक जे मिलान अछि, की ओ दू-बट्टी नइ भेल? हँ, ओकरा चौबट्टी सेहो कहि सकै छिऐ मुदा यात्राक जे यात्री एक बाटसँ अबैत रहत आ दोसर बाट पकैड़ आगू बढ़ि नइ जाएत, ओकरा-ले तँ दू-बट्टीए भेल किने...।

मुदा चौबट्टीपर अबिते जियालाल बाबाक मनक भक्क जेना खुजलैन। खुजिते भकमोड़ सभपर नजैर गेलैन। चौबगली भकमोड़े-भकमोड़ अछि! केना जिनगीक गाड़ीकेँ आगू-मुहेँ बढ़ाएब? जैठाम आगूमे बेठेकान भविस अछि तेम्हरे जेबाको अछि। जइमे खाधिये-खाधि सौंसे बनल अछि। एक दिस धन-धानक तँ दोसर दिस धने-धानक धैन, धने किए, जनो-मन तँ अछिए।

कजराएल-करियाएल अन्हरिया-राति जकाँ अन्हारे-अन्हारमे जिया-लाल बाबा अपनाकेँ देखए लगला। की एहेन अन्हारमे अन्हरा कऽ आन्हर बनि अन्हराएल रहब, ई केते उचित? जखन जीवन भेटल, तखन ओकरा जीव बनि जीब अछि।

अनायास जीयालाल बाबाक मनमे उठलैन। बेकतीक संग परिवारो आ समाजो रोगसँ रोगग्रस्त भऽ रोगाएल ऐछे, मुदा मरि गेल अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। किछु भेल अछि तैयो तँ एते लोकक मनमे समाजिकता ऐछे जे केतौ आगि लगै छै तँ मिझबऽ जाइते छइ। अनका घरमे लगतै तँ हमहूँ मिझबऽ जेबै आ हमरोमे लागत तँ समाजक लोक मिझबए औत, ई बिसवास तँ मनमे छैन्हे। एतबे किए मुर्दाक बरियाती हौउ कि बिआहक, समाजक लोक समाजक संग जाइते छइ। एकर माने ईहो नइ जे छल-प्रपंच आकि चोरी-छिनरपन-बेइमानी-शैतानी नइ अछि। चाहे ओ बात-विचारक हुअए आकि धन-सम्पैतक, दुनूमे तँ अछिए। मुदा किछ अछि तैयो तँ शान्त गाम अपन अछिए। आइ धरि ने एकोटा केस-फौदारी भेल

अछि, आ ने कोनो झंझटक निपटान नइ भेल हौउ, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। भलेँ नीक भेल हौउ कि अधला, सभ दिनसँ होइत आबिये रहल अछि आ शान्त भेल समाजो तँ चलैत आबिये रहल छैथ। समाजसँ उतैर जीयालाल बाबाक मन अपन परिवारपर पड़लैन। समाजक बीच तँ छीहे, सभसँ सम्बन्ध ऐछे, चाहे ओ खण्डित हुअए वा नगण्य हुअए मुदा से तँ सभसँ अछिए। समाजक जे जातिक सीढ़ी बनल अछि तइमे बीचमे छी। दुनू दिस दुनू घाट अछि। माने निच्चाँ मुहेँ पानि तक आ ऊपर मुहेँ अकास तक। विद्यालय हौउ कि देवालय सभठाम निच्चाँमे बैस जेबाक अधिकार अछिए। भलेँ ऊपरका जोकर नइ हुअए...।

मनमे उठिते जीयालाल बाबाक मन जीबैक आशा देख सवुरा लगलैन। सवुराइते मुहसँ निकललैन»

“जाबे लोकक मनमे लोकक प्रति नीक धारणा नइ बनत ताबे नीक समाजे कि परिवारे आकि लोके नीक केना बनत? अही संग आगू चलब सएह ने हएत, मुदा तइमे अपन सेवाक[8] की हक-हिस्सा अछि?”

मुहसँ निकैलते जीयालाल बाबा अपन सेवाक विचार करए लगला। अपन सेवा अपना-ले केहेन हेबा चाही?

विचार तँ मनमे उठि गेलैन मुदा केतएसँ सेवाक आरम्भ हुअए, ई सोझरेबे-सुढ़िएबे ने करैन। अन्हार घर साँपे-साँप। आगू गहुमन अछि आ पाछू नाग!

फेर मनमे जगलैन- एते तँ ऐछे किने जे विषधर होइ कि नाग, सपहरिया ओकरा दूध-लाबा खुआ बीखे हरि लइ छै जइसँ ओ हर-हरा जकाँ विषहारा बनि पूज्य भऽ जाइते अछि। समुद्रमे स्नान करए गेलौं आ समुद्रक कोन बात जे ऊपरके लहैरिक डरसँ ओइमे पैसबे ने करब

[8] कर्तव्यक

तखन, नहाएब केना? बिनु नहेने मनमे अर्पण-पर्पण केना हएत? हमरो देहे छी किने! ओना नहेला पछाइत, चाहे जेहेन नहान हुअए, सभ हनुमान चलीसा पढ़िते छैथ, मुदा जीयालाल बाबा बिनु नहेनहि विचार मंत्र पढ़ए लगला। ठमकल समाज आकि परिवार आगूओ सँ खिंचल जा सकैए आ पाछुओसँ धक्का मारि आगू ठेलल जा सकैए, माने आगूक विचारक बीचमे समाज भेला आ पाछू भेल सेवा।

..जीयालाल बाबा कौलेज-जिनगीक पछाइत समाजमे यएह, माने पाछूसँ धक्का दऽ ठेलबकेँ, हथियार बना समाज रूपी समुद्रमे कुदि गेला।

चालीस बर्खक अवस्थामे अपना संग परिवारो आ समाजोक बाग-बगिया फुलवाड़ी जकाँ केना फुलाएल? मुदा फुलेबो केना ने करत, जखने समाजक अंग बुझि अपन समाजिक अंगकेँ अंगीकार करब तखने ने विकास-प्रक्रिया संचालित हएत, से भेल। जैठाम खेतक आशा पानि जगबैए तैठाम पानियोँक महत तँ खेते जकाँ अछि। जे सोलहन्नी अन्ना-गाहिंस अछि। एकोटा कृत्रिम साधन नइ छल, पोखैर-इनार चैतक पछाइत सुखए लगै छल, तैठाम खेतक अनुपातमे कृत्रिम बेवस्था बोरिंगक भेल। मुदा समुचित ढंगसँ नइ भेल। तेकर कारण भेल- केतौ दियादी डाह तँ केतौ जतियारे डाह बाधा भेल। जइसँ केतौ बेसी पानिक सुविधा रहने बोरिंग चलब कमल, तँ दोसर दिस बाधक आन भागमे पानिक पहुँचे ने भेल। मुदा किछु भेल एते तँ भेबे कएल जे चारू दिशामे समाज बढ़ला।

हगनार जमीनमे घर बनल, भाँग-धुथुर बाड़ी-चौमास बनल, पौआही गाए[9] दूध दइवाली तीन-मसिया गाइक जगहपर बरहमसिया पसेरियाही दूध दइवाली गाए मलकारक खुट्टापर फुलेलैन। आन-आन

[9] पा भरि दूध देइवाली गाए

गामक छोट-छोट तीमन-तरकारी बेचैवालीक बजार गाम बनल। पढ़ै-लिखै दिस झूकान भेने साहित्यिक-सांस्कृतिक काज दिस समाज बढ़ला।

बीस बर्खक समाजिक जिनगीक पछाइत जीयालाल बाबाक जिनगीमे मोड़ एलैन। जइ नजरिये उत्थानक दिशा देखै छैथ तइमे धक्का लगलैन। गामोक रूखि मोड़ाएल। जातीय-पंथीय उन्माद बढ़ल। समाजिक सम्बन्धमे विघटन भेल। जइसँ मतभेद बढ़ल। मतभेद भेने लाभक जगह हानिक सम्भावना होइते छइ। ओना, मतभेदो केतेको रंगक होइए जे नीको अछि, अधलो अछि।

प्रश्न उठैत जे नीक केकरा कहबै आ अधला केकरा कहबै। एकर तँ एकेटा ने उपाय अछि जे ओ बरहीन अछि कि घटहीन तेकरा जानब। मुदा जे कोनो गाम अछि ओ आन-आन गामक बीच अछि। जेना-जेना ओ आगू ससरैत जाएत तेना-तेना बढ़ैत जाएत। आइ तँ सहजे दुनियाँ समटाएल जा रहल अछि, जइमे वैचारिक विघटन सेहो सिरैज रहल अछि। जइसँ भविस दिशाहीन भेल जा रहल अछि। एहेन स्थितिकेँ तँ आँकए पड़त...।

बीस बर्खक पछाइत माने चालीससँ बीस बर्ख आगू, माने साठि बर्खक जीयालाल बाबा अपन जिनगीक सर्वेक्षण कऽ रहला अछि। करैत-करैत फेर ओहीठाम पहुँच गेला जेतए अपने केलहाक फल ने कियो पबैए, से भेटै छइ। मुदा लगले मन आगू कुदलैन। कुदिते मुहसँ फुटलैन»

“की समाजमे कियो आँगुर बता कहि सकै छैथ जे जीयालालक किरतबे..?”

मुदा लगले मन पाछू दिस मुड़ि गेलैन। मुड़िते उठलैन, तखन फेर एना भेल किए जे आँखि उठा तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे उन्नति

संगठित समाजक रूपमे सम्भव अछि ओ छिड़िया-बीतिया गेने केना हएत? मुदा लगले फेर भेलैन जे जखने पशुसँ आगू बढ़ि विवेकी मनुख छैथ, तखन हुनका डोरी-पगहा आकि करामोमे तँ बान्हि कऽ नहियेँ राखल-जोतल जा सकैए। हँ, से तँ नहियेँ कएल जा सकैए। मुदा जखन सरयू नदीमे कियो नहा अवधिया बनि रामक संग जनकपुर पहुँच स्वयंवर रचता तखने ने मिथिलाक मिथि-मालिनि जनकपुरक जानकीक जीवन-गाथा गढ़ती..!

जेते जीयालाल बाबाक मनमे अपन जिनगी नचैत जाइन तेते मन कखनो घोर-घोर तँ कखनो मट्ठा-मट्ठा होइत रहैन। तैसंग दुनू मिलि घोर-मट्ठा सेहो बनि जाइन। चापाकलक पानि हौउ आकि इनारक, जाबे ओ घोर-मट्ठासँ फरिछ नइ होइए ताबे पीबाक परपन नइ होइ छै, तेहने सन जीयालाल बाबाक मनमे होइत रहैन।

ओछाइनपर पड़ल-पड़ल जहिना जीयालाल बाबाक मन खुरछाँही कटैत रहैन तहिना कखनो-कखनो देहो डोलैत कटए लगलैन। तही बीच सवरी दादी पहुँचली। खुरछाइत पतिकेँ देख बजली»

“एना किए मन बिरहाइ-बौआइए?”

दादीक मुहसँ खसिते जीयालाल बाबा अपन जवाबदेही[10] निमाहैत बजला»

“अपने केलहा मन पड़ैए!”

तैपर दादी टोनली»

“आगूक कि पाछूक?”

पत्नीक विचार सुनि जीयालाल बाबा ठमकला, मुदा तैयो

[10] जवाबदेहीक माने भेल सहयोगीक विचार-मथन मिलाएब

जवाबदेही निमाहैत बजला»

“पाछूक।”

मुस्की दैत दादी बजली»

“बुढ़ भऽ गेलौं आ अखनो तक नइ बुझलिऐ जे लाखो-करोड़ो बरख पाछूक हुअए आकि आगूक, मुदा हमर अहाँक ओतबे भेल जेते..?”

सवरी दादीक विचारक वाण जीयालाल बाबाकेँ जेना छातीमे लगलैन तहिना तिलमिलाइत बजला»

“से की?”

पतिक तिलमिली देख सवरी दादीक मन तुललैन। तुलिते बजली»

“पहिने उठि कऽ बैसू। चाह बनौने अबै छी, दुनू गोरे पीबो करब आ गपो-सप्प करब।”

सवरी दादीक मीठौंसो बात जीयालाल बाबाकेँ मीठ-कठाइन[11] लगलैन। जइसँ तेतैरक खट-मधुर पानि तँ जीहमे नइ टपकलैन, मुदा मीठ-कठ जरूर खसलैन।

दादी बुझि गेली जे अखन हिनका पेटक भूखसँ मनक भूख बेसी लगल छैन। तँए दुखाइत मनकेँ आरो दुखाएब नीक नइ बुझि, बजली»

“अपन मन की कहैए?”

दादीक बात सुनि जीयालाल बाबा सकदम भऽ गेला। पतिकेँ सकदम देख सवरी दादी बजली»

[11] मीठ-कठाइन सुआद छी जे किछु फलमे पएल जाइए

“जहिया आँखि तकलौं आ जहिया मुनब सएह भेलौं हम-अहाँ, तँए अपने करनीसँ कियो धरणी बनैए आ कियो मरणी बनैए।”

जीयालाल बाबाक आँखिमे तुष्टिसँ संतुष्टि भरए लगलैन। दादी मुस्की दैत पतिक नयन-ज्योति देखए लगली।

◌

शब्द संख्या : 2314, तिथि : 31 मार्च 2016

बत्तु

तिला-सकराँति, छुट्टीक दिन। दुनू साढ़ू माने रामोचन्द्र आ गौरियोकान्त रेडियो स्टेशनमे काज करै छैथ। ओना दुनूक पत्नी सहोदर बहिन छथिन मुदा अपने दुनू साढ़ूमे रामचन्द्र मिथिलाक छैथ आ गौरीकान्त झारखण्डक। कहब जे तिला-सकराँति-पाबैन तँ सभठाम होइए, तखन? होइ तँ ऐछे मुदा से सभ रंगक। जैठाम मिथिलामे खिच्चैर-घी-पापड़-अँचारक भोज होइए तैठाम झारखण्डमे चूड़ा-दही-चीनी-अँचारक। मुदा अँचारकेँ सझिया रहितो मोजर केना हएत? अँचारकेँ कोनो विचार छै, जेकरा विचारे ने छै, ओकर मद्दीए केतेक। तँए खिच्चैर, घी, पापड़ भेल आ चूड़ा-दही चीनी भेल...।

रामचन्द्रकेँ रेडियो स्टेशनमे सभ खोंटकर्मा बुझै छैन तँए हिनकर बेसी विचारकेँ संगी सभ खोंटि-खाँटि कऽ फेक दइ छैन आ गोटे-गोटेकेँ मानि कऽ सीखबो करै छैथ मुदा ऐठाम माने तिला-सकराँतिक पाबैनमे स्पष्टवादी छैथ जे सत्-नारायण भगवानक परसाद भेल चूड़ा-दही-चीनी, मुदा तिला-सकराँति तँ से नइ छी, सबहक छी, तँए खिच्चैर नीक भेल। ओना, कबीर-पंथी भाते-दालि-सागे-तरकारीकेँ परसाद मानै छैथ, मुदा ओ हुनकर विचार भेल।

ओना, तिला-सकराँति-पाबैनक जे फलक अछि, ओइ हिसाबे दिन-महीना गड़बड़ अछि। कहब की गड़बड़ अछि, जे पाबैनमे

खिच्चैरसँ लऽ कऽ तरूआ-भुजुआ, पापड़-अँचार भेल, तैसंग चूड़ा-मुरहीसँ लऽ कऽ लाइ-चूड़लाइ, तीललाइ भेल आ ततबे किए, दूध-दहीक संग घीओ भेल..! आब कहू जे एते वृहत् पाबैन-ले जे पूस मास चुनि माने पूसक दिन फुइस, आ तहूमे सकराँतिक दिन तँ आरो सीमा परहक भेल, जे दू देशक सीमाक बीच जे 'दस गज्जा' होइ छै तहीमे दस गज चलि जाएत, तखन तँ आरो छोट भेल। तेहेन दिन-ले अंग-छिपू पाबैन केना नीक हएत, तैठाम तँ अंग-भंग ने नीक भेल माने उचित भेल। उचित तँ ई ने हएत जे जेठ मासक पाबैन होएत, जेकर दिन दू-तीन घन्टा नमहर होइ छै, जइमे लोक ऐल-फैलसँ पाबैन मनबैत।

काल्हि भोरे गौरीकान्तकेँ राधाक संग माने दुनू परानीक बीच पाबैनमे खाइये-पीबैले झगड़ा भऽ गेलैन। झगड़ाक कारण रहैन राधाक विचार, जे मिथिला भूमिमे छी, मिथिलानी सेहो छी, तखन मैथिल-विचारसँ ने पाबैन करब। माने, खिच्चैर, घी, पापड़, अँचारक संग आरो विहीत करब। जखन कि झारखण्डी- पति-गौरीकान्तक विचार रहैन जे पैछला पुरखा जेना पाबैन मनबैत एला तेना मनाएब तखन भेल संस्कृतिक रकछा। तँए चूड़ा-दही-चीनीक पाबैन करब...।

..अन्तो-अन्त ने दुनू परानीक बीच कोनो सहमत भेलैन आ ने तेखा-तेखीक झगड़ा। दुनू गुमे-गुम, सुमे-सुम रहि गेल छला। मनमे कनी-मनी दुनूकेँ तामस बिनबिनाइते रहैन, गौरीकान्त ड्यूटीसँ दू घन्टा पहिनहि डेरा छोड़ि निकैल गेला। छोटकी बहिन माने गौरीकान्तक पत्नी- राधा, अपन जेठकी बहिनकेँ माने रामचन्द्रक पत्नी-मीराकेँ फोनसँ कहि देलखिन»

"सभ दिन खैहिहह पबनी ललैहिह।"

राधाक बात सुनि मीरा मने-मन गुम्हरए-गम्हरए लगली जे जँ

पाबैन दिन दुनू परानीक बीच आ बेटीक बिआह दिन फटेदारक बीच जँ झगड़ा भेल तखन जेहने गति पाबैनक हेतै, तेहने ने बिआहोक हेतइ।

सोचैत-विचारैत मीरा पतिकेँ कहली»

"पाबैन छी, साढ़ूओ दुनू गोरेकेँ बजा लिऔन। जेते परिवार मीलि एकठाम पाबैन मनाएब तेते ने पाबन भेल।"

पत्नीक पेंच तँ रामचन्द्र नइ बुझि पेला, मुदा 'सभ परिवार मीलि एकठाम बैस खाएब-पीब' मनमे जँचि गेलैन। बजला»

"आइये साढ़ूकेँ कहि देबैन जे तिला-सँकरातिक ब्रह्म-मुहूर्तक स्नान तीन बजे भोरे होइ छै, से भेला पछाइत दुनू बेकती अपने ओतऽ आबि जाइ, तेकर नौत-हकार अखने सुनि लिअ।"

घरक अकछाएल मन गौरीकान्तकेँ रहबे करैन, तैसंग साढ़ूक संगे रसगर सम्बन्धक गप-सप्प होइते छैन। बिनु आगू-पाछू देखने स्वीकारैत बजला»

"ऐ परिवार ओइ परिवारमे भेदे कथी अछि, जेहने ऐठाम तेहने ओइठाम।"

ओना पारखी रामचन्द्र, तँए ऐठाम-ओइठाम मनमे खटकलैन। मुदा गणेशजी जकाँ ढुलमुलिया बिसवासू तँ छैथे, तँए जे कानसँ सुनता आ मनमे जँचतैन तेकरे सत् मानैक आदत छैन्ह, जे पत्नीसँ लऽ कऽ साढ़ू-सढ़ुआनि-सारि होइत रेड़ियो स्टेशनक संगियोँ-साथी बुझै छैन, तँए मुँहक चुह-चुही देख ओहने बत-बत्तु विचार बना अपन काज सम्हारि-ससारि लइ छैथ।

ओना, रामचन्द्र अपन मनक राजासँ परजा धरि अपने छैथ, तँए दोसर-तेसर रजो आ परजोकेँ परदेशियेक परमात्मा बुझै छैथ मुदा दुनियाँक लम्बाइयो-चौड़ाइ देखैत अपन दुनियाँमे बास करबे छैन

किने, तँए जेकर अन-पानि खाइ छैथ तेकर तिला-सकराँतिक तीलो बहैले तैयारे रहै छैथ...।

ऐठाम-ओइठामक बीच जे रामचन्द्र मने-मन विचारए लगला से मुँहक रूखिसँ, गौरीकान्त बुझि गेलखिन। अपन विचारकेँ बतियबैत बजला»

"साढ़ू, जहिना दुनू गोरे साढ़ू छी तहिना ने दुनू भाँइयोँ भेलौं, भैयारीमे जँ लोक एते सोच-विचार करत तखन भैयारी चलतै। भैयारी तँ भेल भयक आड़ी।"

ओना गौरीकान्तक विचारमे रामचन्द्रकेँ फेर भकमोड़ भेलैन, भकमोड़ ई जे साढ़ूआरए केना भैयारी हएत? दुनू दू वंश-वृक्षक ने भेलौं? मुदा लगले मनकेँ गौरीकान्तक भैयारी-बात उठि तोपि देलकैन। बजला»

"भिनसुरका चाह दुनू गोरे संगे पीब।"

रामचन्द्रक अग्रहित बात सुनि गौरीकान्त धकमकए लगला। धकमकाइक कारण भेलैन- टटके दुनू परानीक झागड़ा। अनका काजे अपन मान-मरजादा गमाएब बेकूफी भेल। ओना बेकूफ तँ छीहे, मुदा एते बेकूफो तँ नहियेँ ने छी जे भिनसुरका झगड़ा दुपहरियेमे बिसैर जाएब। कमसँ-कम भरियो दिन निमाहब तखन ने पाबैनक फालतू खरचो बँचा पएब...।

गौरीकान्तक ततमताइत मनकेँ रामचन्द्र बुझि गेला। ओना अखन तक सारि-साढ़ूक झगड़ाक प्रति रामचन्द्र झलअन्हारेमे छला मुदा नौत-पिहानमे ततमताएबो तँ किछु विचार रखिते अछि। तँए जखन विचार अँकुरैक अवस्था अबै छै तखन जँ ओइमे नीक बीज अँकुराएल जाए तँ नीक फलो आ फूलो हेबे करतै...। मुदा तैयो गौरीकान्त कनी पाछू हटि भरपाइक टोनमे बजला»

"सारि गप-सप्प करैले फोन केने छेली, से गप भेबो कएल।"

ओना रामचन्द्रक मनमे खटकलैन जे सभ दिन एकेठाम काजो करै छी आ रहबो करै छी तखन एहेन कोन धड़फड़ी फुटा कऽ भेलैन?

तैबीच गौरीकान्त हाँइ-हाँइ कऽ पत्नीक मोबालिक नम्बर मिला 'हेलौ-हेलौ' करैत पत्नीसँ बजबा लेलैन। सभ बातकेँ झँपैत-तोपैत रामचन्द्र बजला»

"साढ़ूओकेँ कहि देलिऐन अछि आ अहूँकेँ कहि दइ छी कौल्हुका ब्रह्ममुहूर्तक चाह अहींक बनाएल पीब।"

ओना राधा जवाब दइमे वौआए लगली। वौआए ई लगली जे ऐठाम कि ओइठाम। अपने उपकैर कऽ बजै छैथ, एक-सूराह छैथ जँ कहीं ओछाइनेपर पड़ल रही आ साँढ़-बत्तु जकाँ ढेकरैत जँ अन्हरगरे पहुँच गेला, तखन तँ भारी पहपैटमे पड़ि जाएब। एक तँ पाबैनक दिन रहत तइमे दुनू परानी बीचक वैचारिक झगड़ा अछि।

ओना राधा सेहो रामचन्द्रकेँ अँकनहि छैन, तँए धोख-निधोखक कोनो विचारे ने रहैन।

राधा बजली»

"भोरका चाह ओहिना होइ छै, आकि चाहो-चीनी-दूधक ओरियान करए पड़ै छै!"

विचारवान रामचन्द्रक मन सुकुमारि सारिक बात सुनि चिहैक गेलैन। मुदा अपना बातकेँ फरिछबैत बजला»

"साढ़ूओकेँ कहि देलिऐन अछि आ अहूँकेँ कहि दइ छी जे दुनू गोरे सबेर-सकाल आबि जाएब।"

दुलरैत-मलरैत राधा बजली»

"हम अहीं संगे जाएब।"

“तइले मनाही करै छी। तँए ने कहने छेलौं जे अहीं हाथक चाह पीब।” -पोचारा दैत रामचन्द्र उत्तर देलखिन।

मोबाइल बन्न करैत रामचन्द्र गौरीकान्तकेँ कहलखिन»

“साढ़ू, अखनेसँ लागब तखन ने पाबैन सम्हारमे औत। झोरा-झपटा सभ संगे अनने छी, तँए कनी पहिने चलि जाएब।”

रामचन्द्रक भार गौरीकान्तकेँ मिसियो भरि भारी नहियेँ लगलैन। अहिना होइते छै, एक-दोसराक सहयोगेसँ सभ किछ चलैए।

साढ़ूकेँ आश्वस्त करैत गौरीकान्त बजला»

“हाजरी बना लिअ आ चलि जाउ। हम छीहे।”

रेडियो स्टेशनक गेट तक गौरीकान्त रामचन्द्रकेँ अरिआतैत पछुएने एला। गेटसँ निकलैत रामचन्द्र पाछू उनैट दोहरबैत बजला»

“समैयेपर दुनू गोरे पहुँच जाएब।”

तरे-तर गौरीकान्तक मन हल्लुक भेलैन। भने तिला-सकराँति सन पाबैनक माथक भार उतरल। अनकर केलहा-धेलहा खाइमे लगबे की करत।

ओना गौरीकान्त साँझ दवा कऽ बजारेमे खेनाइ-खा डेरा पहुँचला। तैबीच राधा किए अनशन करितैथ। अपने हाथमे भण्डार घर छैन तखन अन-पानिसँ झगड़े किए करितैथ। तँए अपने निचेनीक अवस्थामे अपन पलंग पकैड़ पड़ल छेली।

..डेरा पहुँचते गौरीकान्त एकबेर घरवालीक खिड़की लग जा जरूर हुलकी मारलैन, मुदा कोनो चहल-पहल नइ देख अपनो सबेर-सकाल पलंग पकैड़ पड़ि रहला। मुदा दुनूक आँखिक नीन निपत्ता। ने गौरीकान्तक आँखिमे नीन आ ने राधाक आँखिमे नीन! मुदा मन तँ दुनूक कछमछाइते...। एक तँ जाड़-मासक राति जे दिनकेँ धकिया

छोट बनौने अछि तैपर आँखिक नीन निपत्ता! दुनूक मन अपना-अपना मने वौआएल..!

मुदा मात्र एक दिनक बात अछि, तहूमे रातिये भरिक, दिनमे ने लोक भरि दिन खाइते रहैए, रातिकेँ तँ एकबेर सबेर-सकाल खा कऽ नीनसँ सुतैए। उपासे की? ऐठाम आबि दुनूक मन असथिर भऽ जाइन। ओना रौतुका भोजनक गर दुनू अपन-अपन लगा नेने, किएक तँ अरारियो तँ अरारिये छी। तहूमे दुनू परानीक दू बेवहारक बीच। लगले सोझराएबो-सुढ़ियाएब तँ असान नहियेँ अछि। अपन समैपर दुनू गोरे माने गौरियोकान्त आ रधो पहुँचैक विचार केलैन। कोनो बेसी हटल डेरो नहियेँ छैन। पएरेक रस्ता अछि। समैसँ पहिने उठि गौरीकान्त पर-पैखानासँ निवृत भऽ कलपर नहेला। ऐठाम कि कोनो सगर-घाट आकि धर-घट्टा छी आकि पोखैरक घाट छी जे एकोबेर मे अनेको गोरे नहा सकैए। ऐठाम तँ कलक घाट छी, बेरा-बेरी नहाइये पड़त। तँए दुनू गोरेक बीच नहेबाकाल रगड़ो-रगड़ी किए होएत।

राधा पहुँचते बहिनकेँ गोड़ लगि, उन्टे पएरे बहिनोइक कोठरीक खिड़की लग जा देखली जे दुनू साढ़ू की कऽ रहला अछि। पाहुन[12] कहने छला जे भोरका चाह अहीं हाथक पीब, से तँ आबिये गेल छी, मुदा ई तँ देख लेब जरूरी ने अछि जे जे अपन मेहमान भेला, हुनकर रूखि केहेन छैन। तैसंग ईहो ने देखए पड़त जे एक तँ पाबैनक दिन, तैपर पाहुनकेँ परिवारसँ लऽ कऽ संगी-साथी धरि खोंटकर्मा बुझिते छैन। तेहने गुणो छैन्हे, तेना कोनो गपकेँ पकैड़ खोंट-खाँट करै छैथ जे झूठकेँ राड़ी-फूल जकाँ अकासमे उड़िया दइ छथिन, आ दूभिक पातो आ फूलोकेँ देव-सिर चढ़ा दइ छथिन।

रामचन्द्र पानोक सिनेही छैथे। से बत्तु कहए डरसँ आकि पानक

[12] बहनोइ

मान-समान देख कऽ से तँ ओ जानैथ, मुदा पानक जड़िसँ छीप धरिक हिसाब गुनि गनि ठोरेपर रखने छैथ। जे पाते फूलो भेल आ फलो भेल। माने पानक पातेकेँ पान-फूल सेहो कहल जाइ छै आ पातेकेँ पानक फड़ी सेहो कहल जाइ छइ। तेकर जिनगियो ने तेहने घरमे बीतै छइ। माने बरैबमे...।

..एक ताले रामचन्द्र गौरीकान्तकेँ झाड़ैत»

“पान मिथिलाक धरोहर छी मुदा ओकर उपयोगे ने करबै, माने दाँत टुटैक डरसँ आकि कारी होइक डरसँ खेबे ने करबै तखन ओ धरोहरे की भेल। ओहन मालाकेँ जपैसँ की भेटत?”

ओना गौरीकान्त तिलकोरे जकाँ बजैमे फड़कोर छैथ, मुदा पत्नीक झगड़ा माथक बोझ बनल रहने चुपे रहब नीक बुझलैन। मनमे शंका रहबे करैन जे जहिना कोटक चपरासी हाकिमकेँ हाथमे चाह दैत अपन बात कहैक साहस करैए तहिना जँ कहीं राधा साढ़ूक हाथमे चाहक कप पकड़बैत कौल्हुका झगड़ाक बात चालि दैथ, आ ओइपर साढ़ूक नजैर चलि जाइन तखन माथमे एकोटा टीक थोड़े रहए देता। एक तँ ओहिना टीककेँ केश बुझि बाबरी बनौने छी, तैपर जँ पाबैनक झगड़ा सन मुद्दा सारिक मुहेँ सुनता, तखन कोनो दुरगैत बाँकी थोड़े रहए देता। तँए सुक-पाक मने रामचन्द्रक विचारकेँ हँ-मे-हँ मिलबैत गौरीकान्त बजला»

“हँ से तँ ठीके।”

खिड़की लगसँ राधा बहनोइक विचारकेँ सुनि मने-मन विचारली। चाहक ओहन तबधल मन रामचन्द्रकेँ अखन नइ छैन, भऽ सकैए ओ मने-मन ईहो बुझैत होथि जे भरिसक अखन तक राधा नइ पहुँचल हुअए। अपन काजक प्रति राधाक मनमे संतोष भेलैन। माने मनमे तुष्टि एलैन। तैसंग मनमे ईहो भेलैन जे अखन पानेक चर्चमे

लगल छैथ, केते-काले ओरेतैन तेकरो ठेकान नहियेँ अछि। चाहक पछाइत ने पान होइए, मुदा विचारक क्रममे तँ दुनू होइए। नख-शिखक वर्णन सेहो होइए शिख-नखक वर्णन सेहो होइते अछि...। राधाक मनमे तुष्टि अबैक कारण ईहो रहबे करैन जे चाह-ले जखन मन तबधल रहत तखन छुछे इनहोरो पानि चाहसँ नीक लगै छै आ जखन भरल रहल तखन चाहो पत्तीक गुण-अवगुण बुझि आ दूधोक गुण-अवगुण बुझि नीको चाहकेँ अधले लोक बुझैए। मुदा से नइ, पूस मासक सकराँतिक भोर छी, तँए केहेन चाह हेबा चाही, से राधा मने-मन विचार केली।

चाह चलल। पहिने मीरा गौरीकान्तक आगू नइ आबए चाहैथ, मुदा ई तँ भेल गाम-घरक चलैन, जे चलियो सकैए आ चलितो अछि, मुदा गामसँ बाहरमे- माने प्रदेशमे तँ थोड़े बाधक ऐछे, जैठाम ने समाजक सधनता अछि आ ने परिवारक। ओना जहिना एक दिस रामचन्द्र अपन परिवारक अभिभावक भेला, तहिना राधा करबारी। तीनू गोरे–मीरा, राधा आ गौरीकान्त–रामचन्द्रकेँ भीतरसँ जनिते छैथ जे कखन कोन बातक विचार करैमे उनैट जेता आ कखन सुनैट जेता तेकरो कोनो ठीक नहियेँ अछि...। मुदा ई तँ अनका मने रामचन्द्र छला, अपना मने तँ एक-डरिया मानि एक-चलिया छैथे तँए बाघ-बकरीमे कोनो अन्तर मानबे ने करै छैथ। दुनूकेँ जीब बुझि दुनूक जीवनक ताकमे लागल रहै छैथ। चाह पीला पछाइत पानक खिल्ली मोड़ैत राधा रामचन्द्रकेँ कहली»

“ई कोन पाबैन भेल, जे चारि गोरेमे दू गोरे ओरियान करू आ दू गोरे सुआदि-सुआदि खाउ! ई उचित भेल?”

ओना राधाक बातोसँ आ परिवारमे वर्चस्वो देख गौरीकान्त मने-मन विचारैथ जे साढ़ू तेहेन अभिभावक छैथ जे जेना-जेना साइर

नचौतैन, तेना-तेना नचता। ऐठाम अपन मोजरे केते हएत, तँए अनेरे मुहथोथैर करब नीक नहि, चुपे रहब भलमनसाहत हएत। तैबीचेमे रामचन्द्र राधाकेँ कहलखिन»

“हमर कोन बात जे आनो कियो एकरा उचित नहि कहत।”

अपना दिस सोझराइत-सूढ़ियाइत पाहुन-रामचन्द्रकेँ देख राधा बजली»

“जखन पाबैन छी, तखन किए ने सभ भनसे-घर चली आ ओतै बैस सभ-कियो मीलि बनेबो-सोनेबो करब खेबो करब आ गपो-सप्प करब।”

राधाक बात मानि रामचन्द्र गौरीकान्तकेँ कहलखिन»

“साढ़ू, आइ पाबैन दिन छी, सभ मीलि ओरियेबो करब आ खेबो करब। यएह ने भेल पाबैनक पाबन पौना।”

एक तँ जेठ-सासु आ जेठ-साढ़ूक बीच गौरीकान्त अपनाकेँ देखैथ, पत्नीकेँ मुद्दै बुझि कौल्हुका झगड़ा देखैथ, तँए अपनाकेँ तेसर बुझि पमरिया जकाँ हँ-मे-हँ मिलबैत बजला»

“कोनो हर्ज नहि। ई कि कोनो रेडियो स्टेशन छिऐ, ई तँ परिवार छी।”

भनसा-घरमे बैसते रामचन्द्रकेँ पत्नी कहलकैन»

“लिखैकाल, बजैकाल गोलका भाँटाक बड़ाइ करै छी आ खाइकाल जे रंग-विहीन भँट्टाकेँ बजारसँ उठा अनलौं अछि, से पाबैन सन भेल?”

ओना मीरा अपन पड़ोसी ऐठाम जेहेन गोल-गोल-लाल-लाल भाँटा, खिच्चा बोड़ा, पाकल-पाकल टमाटर, दुधिया कोबी इत्यादि देखने छेली, तइ हिसाबे अपन तरकारी झूस बुझि पड़ैन, तँए कड़ैक

कऽ बजली। सकदम भेल रामचन्द्र मने-मन विचारैथ- साढ़ू कोनो लोके ने छिया, खाइपर बिकाइबला लोक छैथ, तहूमे अखन खेबेक वौसक तकरार छी, जेहने नताएल साढ़ू छैथ तेहने साइरो छैथे। घरवालीक शिकाइत छी, केतए जाएब। कियो आगूसँ तँ कियो पाछूसँ बतुआइत बत्तु बना-बना बोकिएबे करता। मुदा तैयो अचताइत-पचताइत रामचन्द्र अपन सफाइमे बजला»

“भलेँ अहाँ सभ भाँटाक रंग-रूप देख झुझुआ गेल छी, मुदा हमरो मन नइ मानैए जे ई नीक भँटा नइ छी?”

पंच बनि राधा बजली»

“सोझे नीक कहने नीक थोड़े हएत!”

राधाक बात सुनि रामचन्द्रकेँ जान-मे-जान एलैन। बजला»

“परसूओ प्रसारणमे कहने रहिऐ जे जाबे प्रदूषित वस्तुसँ अपनाकेँ सुरक्षित नइ राखब, ताबे प्रदूषणक प्रभावसँ बँचि नइ सकै छी। केतए केते प्रदूषण अछि, ओ अखन नइ कहल जा सकैए। समैक अँटावेश नइए, तँए अखन एतबे जे हम ओहन किसानक भँट्टा कीनि कऽ अनने छी, जे अपना ढंगे उपजौने छैथ, तँए केमिकलक चकचकी-प्रभाव आ पुष्ट फल नइ बुझि पड़ैए। मुदा अनाड़ी जकाँ कीनि अनने छी, सेहो बात नहियेँ अछि।”

तैबीच एक-घानी तड़ूआ लोहियासँ निकैल गेल छल, गौरीकान्त बजला»

“साढ़ू, जेहने भूजल चूड़ा-मुरही अछि तेहने कड़कड़ाएल तड़ूओ अछि, तँए दुनूक संयोगक अपन सुआद छइ।”

◌

शब्द संख्या : 2244, तिथि : 10 अप्रैल 2016

कछमछी

ओछाइनपर पड़ले रही, रवि दिन रहने मनमे कोनो काजक धड़फड़ियो ने रहए, दोसर ईहो भेल जे रातिमे देरीसँ नीन भेल तँए देह भरियाएल सेहो रहए। आँगन बहारि पत्नी जखन दरबज्जाक ओसारपर बहारए पहुँचली, कि बिच्चेमे दरबज्जाक पछुआरमे, रस्तापर गल्ल-गूल होइत सुनलैन। बाढ़ैन ओसारेपर रखि रस्ता दिस बढ़ली। नजैरपर पड़िते श्याम कहलकैन»

“भौजी, भूदानी बाबाकेँ कछमछी आबि गेलैन, जे दिन जे पहर छैथ, सएह!”

कहि श्याम आगू बढ़ि गेला आ पत्नियोँक मनमे कोनो शंके ने उठलैन जे दोहरा कऽ श्यामकेँ किछु पुछितैन। रस्तापर सँ चोटे घुमि पत्नी केबाड़ ढकढकौलैन। जगले रही, मुदा पड़ल रही। पड़ले-पड़ल बजलौं»

“किए केबाड़ ढकढकबै छी, जगले छी मुदा देह कनी असकताएल बुझि पड़ैए।”

पत्नीकेँ जेना समाजक सुपारी भेट गेल होइन तहिना दाबीमे रहैथ। केना माइनती। बोलीमे कनी टाँस आबिये गेल रहैन। बजली»

“केबाड़ खोलू, एकटा समाचार कहब।”

समाचारो तँ समाचार छी, अकाससँ लऽ कऽ पताल तक, सुखसँ लऽ कऽ दुख तकक आ पानिसँ लऽ कऽ पाथर आ पाथरसँ लऽ कऽ हवा तकक होइए। एहेन स्थितिमे नहियोँ सुनब सेहो बात नहियेँ। ओना, जेते देह भरिआ कऽ असकताइत रहए तइसँ बेसी मन असकताइत रहए। असकताइक कारण छल, काल्हि भरि दिन कचहरियेक चक्करमे बीतल रहए। बिना अपने उठने केबाड़क बिलैया तँ खुजैत नहि, मुदा तैयो असकताइते मनो आ देहोकेँ उठबैत ओछाइन छोड़ि बिलैया खोललौं।

एकटा पट्टा हटैबते पत्नीक तमतमाएल चेहरा सोझमे आबि गेल। मुदा हमहूँ तँ नौतल रही, माने पहिनहि कानमे पड़ि गेल रहए जे एकटा समाचार पत्नी कहती, तँए बीचमे किछ बाजबकेँ उचित नइ बुझि समाचार सुनैले कानो ठाढ़ केलौं आ आँखियो पत्नीक मुँहपर गरेलौं। पत्नियोँ बुझि गेली जे हमरे समाचार सुनैले कनखड़ल छैथ। ठिकिया कऽ बजली»

“भूदानी बाबाकेँ कछमछी आबि गेल छैन, जे दिन जे पहर छैथ, सहए।”

पत्नी ई नइ कहली जे जा कऽ जिगेसा करियौन। मुदा एहेन समाचारक अरथे की भेल। एक तँ मनो-देहो असकताएल तैपर बज्रपात भेल। ओना बजरपातेसँ ब्रज-पात कहियौ आकि लुज पात, सेहो तँ होइते अछि। मन हल्लुक बनबै दुआरे बजलौं»

“पहिने एक-लोटा पानि आ एक गिलास चाह नेने आउ, तखन आगूक कोनो मुँह-मिलानी करब।”

पत्नियोकेँ बुझले रहैन जे काल्हि भरि दिन ओहन अगियाएल समैमे कचहरीक चक्कर लगबैमे बीतल रहैन तँए देहोमे जरान आबिये गेल हेतैन आ मनो तबैधिये गेल हेतैन, ओ खुमारी जाबे मनसँ नइ

निकलतैन ताबे असकतेबे करता। जइसँ एक नइ अनेक रंगक छिन्ना-बहाना तकबे करता। तँए बिना किछु हँ-हूँ बजने पत्नी पानि-चाहक ओरियानमे विदा भेली। बाढ़ैन जे बिच्चे ओसारपर छल ओकरा उठा कातमे रखि आगू बढ़ली।

पत्नीकेँ आगू बढ़िते केबाड़क जे दोसर पट्टा लगले छल ओकरो खोलि देलिऐ आ ओछाइनपर पुन: आबि पड़ि रहलौं। मनमे उठल कौल्हुका काज। काल्हि भूदानी जमीनक गामक दूटा झगड़ाक फैसला भेल।

एकटा गौएँक छेलैन माने जीतवारपुरेक आ दोसर बगलक गाम- हरपुरक छल। दुनू गोरे कचहरिया संगी सेहो छैथे, तँए दस दिन पहिने कहि देने छला जे केसक फैसला दिन रहबै। एक तँ पेटक आगिक भूख मेटबैबला वौस, तैठाम नइ जाएब केहेन होएत। भिखमंगाकेँ एकमुट्ठी भीख खाइले आ एक बीत भरि वस्त्र पहिरैले तँ सभ दइ छैथ, मुदा मुट्ठियो भरि अन्न आ बीत भरि वस्त्र सभ-दिना भेटै से केते गोरे विचारि दइ छैथ। एहेन स्थितिमे कचहरी नइ जइतौं सेहो तँ नीक नहियेँ होएत। भरि दिन दौड़-बरहाक पछाइत साढ़े चारि बजेमे दुनू केसक फैसला सुनौल गेल। एके कचहरी, एके केस मुदा दुनू दू गामक रहितो फैसला दू-रंगक भेल। जीतवारपुरक जीवकान्त भाइक फैसला पक्षमे भेलैन आ हरपुरबला हरनाथक फैसला विपक्षमे भेलैन। फैसला तँ हँ-नइमे होइते अछि, तँए जहिना माथक चोट जकाँ झनाक-दे सोझे मगजमे लगैए तहिना भेल। ओना फैसला तँ एक शब्द-एक पाँतमे होइए मुदा फैसलाक व्याख्या तँ अनेको पाँतमे होइए, ओ तँ बिनु पाँत-पाँत आ पतियानी-पतियानी बुझनौं तँ नहियेँ बुझि सकै छी, तँए तत्काल माथकेँ दबैत कचहरीसँ निकललौं।

ओना संगमे दुनू गोरे माने जीवकान्तो भाय आ हरनाथो भाय

रहैथ, तँए बिना किछु बजने-भुकने गाम एलौं।

जहिना जीतवारपुरक भूदानी विवादक जमीनमे एक पक्ष गौआँ छला आ दोसर पक्ष बहरबैया रहथिन, तहिना हरपुरोक विवादमे छला। मुदा दुनूक विवाद दू रंगक छेलैन। भूदानी आन्दोलनक किछुए दिनक पछाइत जीतवारपुरक समाज एकठाम बैस, आन्दोलनकेँ संग पुरैत जेते जमीन दान- स्वरूप गामकेँ भेटल छल ओकर निवटारा कऽ नेने छला। ओइमे दू तरहक जमीन छल। एक तरहक छल- गौआँक देल आ दोसर तरहक छल- बहरबैयाक देल मलिकाना जमीन। ओना आन्दोलनक मांग[13] छल अपन जमीनक छठम भाग दानमे देल जाए, मुदा से हू-बहू नइ भेल। जे सम्भवो नहियेँ छल। सम्भव ऐ दुआरे नइ छल जे गाममे गोटि-पँगरा पाँच बीघासँ ऊपर जमीनबला छला बाँकी बिनु जमीनबला आ कट्ठासँ बीघा भरिक छला आ अखनो छैथ। जिनका अपनो पेटक बुतात खेतसँ नइ जुमै छैन ओ दानमे केते जमीने देथिन। तँए कट्ठा-दू-कट्ठा पाँच-दस कट्ठा तक लोक दान केने छला।

गामक बैसारमे माने भूदानमे देल गेल जमीनक बँटवाराक बैसारमे जहिना सभ स्वेच्छासँ दान देने छला तहिना छोड़ि देलैन। जरूरत-मन्द लोकक बीच बँटबरो कऽ लेलैन। मुदा गाममे जे बहरबैयाक जमीन छल, ओइमे विवाद शुरू भेल। ओना, बहरबैयाक जमीन गामेक लोक बँटाइयो करै छला। गामक-गाम जमीन रखनिहार जमीनदार सभ भूदानी आन्दोलनकेँ सुरक्षा-कबच बुझि गामक-गाम दानमे दऽ देलखिन।

जीतवारपुरबला सभ सामूहिक विचार कऽ बहरबैयो-बला जमीनकेँ जिला-कार्यालयक भूदानी कार्यकर्ताक बीच बैसारमे सभकेँ सभटा जमीन बाँटि देलैन। अधिकांश बँटेदारे छला, जे सोलहन्नी

[13] भूदानी जमीनक मांग

खेतक मालिक भऽ गेला। गौआँ तँ एक-मुहरी भऽ बाँटि लेलैन, मुदा कानूनोक तँ अपन रस्ता छइ। जे जमीन-दाता छला, हुनका नाओंसँ कागजे ने छेलैन। कागजी अधिकार दोसर-तेसर समांगक छेलैन। यएह मुद्दा जीतवारपुरक रहइ। मुदा हरपुरक मुद्दा दोसर रंगक छल। हरपुरक मुद्दा छल जे अपन सुरक्षा-कबच बना हरपुरक जमीन भूदानकेँ तँ दऽ देलैन मुदा ओइ जमीनक बिकरीक गप, दाम तोड़ि कऽ गौआँ सभसँ कऽ लेलैन। ओना सैयो बीघा जमीनक बिकरीक बात-चीत चारिये गोरेसँ केलैन।

मुदा ओ चारू चारि जातिक मुँहगर-कन्हगर लोक। एक-के-दू के नै चाहैए। जइ जमीनक दाम जेतेक छै ओ ओतेक अदहेमे हएत, केकरा गाड़ा लगतै। आन्दोलन खेल भऽ जाए, तँ भऽ जाए! आन्दोलनी तँ खेलाड़ी बनि खेलबे करता! सएह भेल। बीस बीघा जमीन गामक जे छुट्टा सभ छल से-सभ मिला अस्सी बीघा जमीन, अपना नामपर चारू गोरे लिखा लेलैन। दस्तावेज बनि गेल। ने हरिपुर-समाजक बैसारमे भूदानी जमीनक बँटबारा भेल आ ने कियो भूदानक जिला कमिटि दिससँ आबि जमीन बँटलैन। गौआँक देल जमीनसँ लऽ कऽ अनगौआँक तकक जमीनमे झंझट ठाढ़ भेल। कम संख्यामे रहितो जरूरत-मन्द लोक अपनामे बैस विचारलैन जे जोरू-जमीन जोरकेँ नइ ते केकरो औरकेँ..। विचारमे उग्रता बढ़ल, जमीनबला कानूनक दोगमे नुका रहला आ गौआँक बीच मारि भऽ गेल, एक गोरे खून भेला।

हरनाथ भाइक मुद्दा ऐसँ भिन्न छेलैन। हुनकर मुद्दा छेलैन जे भूदानक जिला-कार्यलयसँ जमीनक प्रमाण-पत्र भेट गेल छेलैन, मुदा ब्लौकसँ रसीद नइ भेटल छेलैन, लेन-देनक दुआरे प्रमाण-पत्रेकेँ प्रमाण बुझि जमीनपर केस कऽ देलखिन। संजोग नीक भेलैन जे आन भूदानी जकाँ जिनगी भरि कोटे-कचहरीक झोरा नइ उठबए पड़लैन,

आठे बर्खमे फैसलापर आबि गेलैन। ओना जमीनक ओझरी चारू दिससँ लगि गेल रहैन, भूदान कार्यालयसँ तीन-तीन गोरेकेँ एके जमीनक प्रमाण-पत्र, पाइक लेन-देन कऽ भेट गेलैन। जेकरा जमीनदाता भूदानमे देल गेल जमीनक रजिष्ट्री केने छेलखिन तेकरे भूदानक कार्यालय सेहो बँटवारा कऽ प्रमाण-पत्र दऽ देलक। पहिलुकाकेँ खारिज करैत दोसर गोरेक नाओंसँ दऽ देलक। चालू-पुरजा लोक, ब्लौकोसँ रसीद कटि गेलइ। ओना भूदानक प्रमाण-पत्रक रसीद नइ रहै, रहै रजिष्ट्री जमीनक रसीद, मुदा रसीद तँ रसीद छी, जे रहबे करइ। ओना जमीन लिखौनिहार कोटमे नइ रहैथ, रहैथ जमीनदाता, जिनकर लगक लोक फैसला केनिहार कुरसीपर, तँए सोझमे रहब जरूरी रहबे करैन।

पत्नी पहिने लोटामे पानि दऽ गेली, जाबे कुर्ड़ा-आचमन केलौं ताबे चाहो बना कऽ नेने एली। भिनसुरका समए, तहूमे समाजक समाचार सेहो कानमे पड़िये गेल छल, मन फुल-फुलाएल रहबे करए, पत्नीक हाथमे चाह देखते बजलौं»

“भोरे-भोर अहाँ तेहेन समाचार सुनेलौं जे भरि दिनक यात्रा भडैठ गेल।”

पत्नी अकचकेली। अकचकेली ई जे कोन एहेन बात बजा गेल जे सुति-उठि लोक शुभ-शुभ करैए आ ई एना कहलैन! पुछबो की करबैन, अखन मुँहमे चाहो नइ लेला अछि, मुँहमे चाहक गिलास भीरेबे केलौं कि पत्नी बजली»

“से की?”

एक घोंट चाह पीब नेने रही, कण्ठ लगतक गरमी पसैर गेल रहए, बजलौं»

“तेहेन समाचार भोरे-भोर कहलौं जे अपने दिन बेठेकान भऽ

गेल!"

पुन: पत्नी बजली»

"से की?"

कहलयैन»

"भूदानी बाबाकेँ जखन कछमछी आबिये गेलैन तखन जँ जिगेसा करए नइ जाएब से उचित हएत? संयोग छी जँ ओतए पहुँची आ परान छुटि जाइन तखन छोड़ि कऽ अएबो तँ उचित नहियेँ हएत। मनमे रोपने छेलौं जे पहिने कोटक कौल्हुका फैसला पढ़ब, से अहाँ छोड़ा देलौं!"

ओना विषय-विषयक अपन-अपन काजक गम्भीरता छै, मुदा काजो तँ काज छी, सभकेँ अपन-अपन अनुकूल होइ छइ। जइसँ काजोक गम्भीरता तँ भिन्न-भिन्न भाइये जाइए। पत्नीक लेल तँ भूदानी बाबाक कछमछी गम्भीर भेबे कएल। तँए अपना जनैत ओ ओकरे जरूरी बुझलैन। चाह पीब लेलौं आ पान खा भूदानी बाबाक जिगेसा करए विदा भेलौं।

रस्तापर अबिते कन्हामे खादी भण्डारक झोरा टाँगल, धपधपौआ धोती-कुरताक ऊपर चरि-हत्थी चद्दैर आ कटोरिया धोधि, धक्-दऽ मनमे खसला। जेना-जेना पाछू दिस ताकी तेना-तेना भूदानी बाबा सिनेमाक रील जकाँ घुमए लगला। सभ-दिना रूटिंग छैन जे दाढ़ी बनेबे करता, देहक जेते वस्त्र छैन, सभ दिन ओकरा साबुन चढ़ेबे करता, तैसंग अपन विचारकेँ लोकक बीच दू घन्टा रखबे करता। दिने केतेटा होइए जे ऐसँ बेसी काज लोक पुराइये पौत। अहिना ने एक दिन एक दिन सटि जिनगीक अन्तिम दिन लग पहुँच जाइए।

दलानक ओसारक पलंगपर भूदानी बाबा, माछी दुआरे आकि

कि सौंसे देह झँपने सूतल छैथ। दोसर कियो लगमे नइ रहैन। दुनू बेटा बीस-पचीस बर्ख पहिनहि बजारेमे जमीन कीनि, मकान बना अपन-अपन कारोबार केने छैन।

सीढ़ीसँ ओसारपर चढ़िते बुझि पड़ल जे भूदानी बाबाकेँ कछमछी नइ छटपटी छैन। शरीरक रोगसँ शरीरमे कछमछी अबै छै आ मनक रोगसँ छटपटी अबैए, सएह बुझि पड़ल। जहिना शिकारीक तीर लगल कोनो चिड़ै हौउ आकि भाला लगल कोनो जानवर, दर्दसँ जहिना छटपटाइत परान तियागैए तहिना बुझि पड़ल। तारतममे पड़ि गेलौं जे भोरे-भोर पत्नी कहने छेली जे भूदानी बाबाकेँ कछमछी आबि गेलैन। तइसँ बुझलौं जे भूदानी बाबा चलन-पियारा भऽ गेला, मुदा ऐठाम देखै छी जे गमौल प्रण-प्रतिज्ञा मनकेँ गरगोटिया दऽ रहलैन अछि तइसँ छटपटा रहला अछि। झाँपल देह तइसँ बुझिये ने पबी जे जागल छैथ कि सूतल। मत्था दिस कनी हिल-डोल होइन बाँकी सौंसे देह असथिर भेल पड़ल रहैन। संजोग बनल, तहीकाल सुधनी दादी आँगन दिससँ खों-खों करैत दरबज्जापर पहुँचली।

नजैर पड़िते बजली»

"बौआ, तेहेन कफ भऽ गेल अछि जे भरिसक लाइये कऽ जाएत।"

तेहेन बात दादी बाजि गेली जे मने अकबका गेल। मनमे हुअए जे पत्नीक समाचार सुनि भूदानी बाबाकेँ जिज्ञासा करए एलौं आ दादी अपने बेथे बेथाएल बजै छैथ- 'मरिये जाएब।' ओना दादीक बात सुनि मनमे खौंझ उठल, खौंझ ई उठल जे दादी बुढ़ भेली जे मरैक उमेरो भेलैन, अपनो जनिते छैथ जे जहिना सभ मरैए तहिना हमहूँ मरब। कहाँसँ भूदानी बाबाक कष्ट-पीड़ाक बात कहितैथ, तँ कहै छैथ जे आब अही कफे संगे चलि जाएब! मुदा, की करितौं पाशा बदलैत बजलौं»

"दादी, बाबा सूतल छैथ कि जागल। एकटा विचार करब अछि?"

विचार सुनि दादी अपन बेथाकेँ टारैत बजली»

"जगले छैथ।"

'जागब' सुनि भूदानियौं बाबा मुँह परक चद्दैर उघारलैन। हमहूँ ससैर कऽ लगमे जा पलंगपर बैसलौं। भूदानी बाबाकेँ बकारे ने फुटैन जे किछु बजता। मुदा तैयो मुहेँ दिस तकैत रहैथ, हमहूँ चुपे रही। संजोग नीक भेल जे दादीए पलंगपर बैसैत बजली»

"बौआ, चाहो पीऐबतियऽ से जहियासँ अपने चाह पीब छोड़ि देलैन तहियासँ अपनो छोड़ि देलौं, तँए चाहक ओरियाने छोड़ि देने छी।"

ओना मनमे ई भेल जे कहिऐन घरबैया दुआरे जँ बहरबैया मारल जाए, से केहेन भेल। मुदा लगले मनमे उठल- आब ऐ अवस्थामे कहनौं आ बिनु कहनौं दुनू बरबैर। आब तँ सहजे गाछीक बाट पकैड़ नेने छैथ, आब गाछी ओगरती आकि अपन घर-अँगनाक मान-मरजाद रखती। तँए दादीक विचारमे हुअए जे हुँहकारी भरैत कहिऐन जे दादी, हमहूँ चाहक ओते सिनेही कहाँ छी, पाबैनियेँ-तिहारे कहियो पीब लइ छी। मुदा से नइ कहि कहलयैन»

"दादी, एकबेर भिनसरमे आ एकबेर साँझकेँ चाह पीबै छी, तइमे भिनसुरका पीबिये कऽ घरसँ निकलल छी, तँए चाह-ताह भने नहियेँ अछि सएह नीक।"

मनमे उठैत रहए जे भूदानी बाबासँ भूदानक किछु विचार करब, मुदा दादीक बात जेना अखन ओराएले ने छेलैन, तहिना लगले-सूढ़िये बजली»

"बौआ, अपने चाह छोड़ि देलैन एकर माने हमहूँ छोड़ि दी ई

उचित नइ भेल, हँ एहेन छोट बच्चा- दूध-पीबा बच्चा-क संग माइक सम्बन्धमे कहल जा सकैए, मुदा पति-पत्नी तँ से नइ छी।"

बिच्चेमे बजा गेल»

"एकरा के काटत।"

हमरा बातमे दादीकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा मुँहक सुरखी बदलए लगलैन। बजली»

"बौआ, अपने जे चाह छोड़ि देलौं से डॉक्टर मनाही कऽ देलैन तँए, कहलैन जे चीनी देल चाह नइ पीबू।"

कहलयैन»

"चाहक गाछक पातक रस लोक पीबैए आकि दूध-चीनी पीबैए, तइले चाहसँ सिनेह किए तोड़ि लेलौं?"

'सिनेह' सुनिते दादीक मन उमैड़ गेलैन। उमैड़ते जेना मातृत्व जगि गेलैन। बजली»

"बौआ, चाहसँ सिनेह तोड़ैक मन कहाँ भेल, असल भेल जे सभ दिन मीठ-मीठाइ खाइक चहैट तेहेन पकैड़ लेलक जे बिनु मीठे किछु नीके ने लगै छेलए, जे रोग बनि गेल आ डॉक्टर मनाही करि देलैन। ओही लागल चाहो छुटि गेल।"

ओना मनमे ईहो हुअए जे अनेरे दादीक दादागिरीमे वौआइ छी, मुदा मनाहियोँ केना करितिऐन जे कनी बाबासँ गप करए दिअ। ओना दादीपर भूदानी बाबा तरेतर दाँत पीसैत रहथिन। ओ ऐ दुआरे जे जनु अपन मनक बात कहैले ओंढ़, ओलाढ़ि मारैत रहैन। सएह भेल, दादीक मुँहक बात छिनैत-चोहटैत बाबा बजला»

"कते अहाँ चाह-ताहकेँ औटै छी!"

भूदानी बाबाक चोहाटसँ दादी चुप भेली। जइसँ वातावरणमे

शान्ति पसरल। मनमे भेल जे जँ रामायणिक कोनो काण्डक प्रश्न बजा जाएत तँ बाबाक मनक बात तर पड़ि जेतैन, तँए, हुनकेसँ बजाएब नीक हएत। अकचकाइत बजलौं»

“बाबा?”

‘बाबा’ सुनिते बाबाकेँ भूदानी रूप सोझामे नाचि उठलैन। बजला»

“बौआ, मन औनाइ-ए जे अपन जिनगीक बात ओहन आत्मा लग पहुँचा दिऐ जे विचारवान हुअए, जे तोरासँ नीक केतए भेटत।”

बाबाक विचार सुनि मन पघील गेल। आँखि उठा आँखिपर देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे बाबाक मनमे ओहन विचार औना रहलैन अछि जे बाहर होइले चाहि रहल छैन। झोंक दैत बजलौं»

“बाबा?”

भूदानी बाबा अपन विषाद भरल जिनगीक मनसँ निकैल बजला»

“बौआ, भरि जिनगीक कथा तँ बड़ नमहर अछि, मुदा ओते बजैक ने समए अछि आ ने शरीरमे शक्ति, आ ने बजैक मोले। तखन एतबे सुनह जे भूदानी भाषण आ भूदानी काजमे एते दूरी रहल जे लूटक अड्डा बना हमरो सबहक, माने सर्वोदय कार्यकर्ताक जिनगी लूटि लेलक। खादी भण्डारक सुविधा, जमीनक मामला, लूइटिक बीच लूटिहारा बनि गेलौं। धनक इत्ता नइ रहल मुदा आइ जखन ओछाइनपर अन्तिम साँस गनि रहल छी, तखन बुझि पड़ि रहल अछि जे सर्वोदयक नामपर जे कौलेज छोड़ि भूदानसँ जुड़ि सर्वोदयक प्रणक संग जिनगीक प्राण-प्रतिष्ठा केलौं, से..!”

दुनू आँखि नोरा गेलैन। मने-मन जेना बुकौर लागए लगलैन, मुँहक बोल जेना बिला गेलैन! कहलयैन»

“बाबा! एकरत्ती चूक भेने लोक पीछैड़ कऽ खसि हाड़-पाँजर तोड़ि लइए, मुदा...।”

‘मुदा’ कहि चुप्पे रहि गेलौं। आगू कि कहितिऐन से पेटसँ निकलबे ने कएल।

◌

शब्द संख्या : 2322, तिथि : 15 अप्रैल 2016

गैत-वीध

पोती बिआहक छअ मासक पछाइत, बेरुका समए, जुआएल रौद, हवा खसल, दरबज्जाक ओसारक मोथीक ओछाइन बिछौल चौकीपर असगरे चिन्तू काका बैसल अपन वीर्तमानसँ भविस दिस चिन्त्यमे पड़ल छैथ। ने आगूक समटल-समतल कोनो बाट देख रहला अछि आ ने पाछू घुसकब उचित बुझि रहल छैथ। पाछू उनैट जखन अपन जीवन-क्रिया दिस तकै छैथ तँ विचार समतले बुझि पड़ै छैन, मुदा एना जिनगी बीच धारमे डुमि जाएत, से अनुमान नइ छेलैन। तखन एना किए परिवारक गाड़ीक धुरिये टुटि गेल जे एकाएक जीवन मरणमे बदलैक रूप पकड़ने जा रहल अछि? नजैर आगू घुसैकते मन कहलकैन»

“यएह परिवार छी जे सालो भरि खाइ-पीबैक चिन्ता कहियो ने मनमे आबए देलक, आ आइ देख रहल छी जे रातियो चुल्हि जरत कि नइ, सेहो अन्देशा अछि..!”

चिन्तू कक्काक लगमे दोसर कियो ने, जे कहबो करथिन आ रस्तो तकताह। असगरे बैसल चिन्तू काका चिन्तामे डुमल चिन्त्य करए चाहै छला मुदा चिन्ताक पन्ना भेटिये ने रहल छेलैन जे एना भेल किए। समाजमे बेटी बिआहक जे धार फोड़ि रहल अछि ओ पाँच लाखक संस्कार जरूर भऽ गेल अछि। ओना, मिथिलांचलमे मिथि-मालिनिक

कमी नइ, तँए ने मथि-मथि कहै छैथ जे बेटीकेँ जेते नीक शिक्षा दिअबैमे, जेतेक नीक खर्च करब, तेते नीक ओरियान तँ बिआहो-संस्कार-ले करए पड़त। डॉक्टर बरक मोल पनरह लाख मुदा डॉक्टर कन्याँक मोल केते? वएह ने- माइनस पनरह लाख? वाह रे साँझ पराती आ भोर वसंत गौनिहार बुधियार समाज..!

पोती बिआहक खर्च–पाँच लाख–पर नजैर पहुँचते पाँचो लाखक बेवस्थापर चिन्तू कक्काक नजैर अँटकलैन। दू-लाख रूपैआक ओरियान अपन असथिर सम्पैतोसँ आ खेतोक उपजासँ भेल मुदा तीन लाख तँ लोकेसँ कर्ज लिअ पड़त।एक तँ एते पाइक लेन-देन कर्ता गाममे नहि, दोसर जँ कियो परदेशी चोरनुकबा जगबो कएल तँ ओकरा पाँच रूपैआ महीना सुइद चाही! जे सुइद बाँसक कोंपर जकाँ एगो-दूगो बिआन नहि करैत, ओ तँ पानिक-केचली जकाँ सत-सतटा बिआन करैए! एक तँ ने नोकरी-चाकरीक आमदनी अछि आ ने वणिज-बेपारक, छेहा किसान भेलौं, तैठाम पाँच लाख खर्चक काज बाल-बोधक खेल नइ ने छी।

समाजमे खर्चक जे धार बेटी बिआहक फुटि गेल अछि, ओकरा थोड़े रोकि पएब। तखन तँ जीबैले ओइ धारमे बहए पड़त। आब कि ओ विचार आकि ओ काज थोड़े रहल जे सृष्टिक सृजन-ले पुरुख-नारीक सम्बन्ध स्थापित हुअए, जे एक चुटकी भुसना सेनुर आ कनगुरिया आँगुरक एक बून खून-सँ-खून मिला सिनेह स्थापित कएल जाएत। आब तँ समाजमे ओ प्रतिष्ठित बेकती भेला जे बेटा बिआहमे सभसँ ऊपर चढ़ि नगद-नारायण पौलैन आ बेटी बिआहमे नगद-नारायण गनलैन। मुदा ऐठाम तँ विचारणीय बात ईहो ऐछे जे एहेन प्रतिष्ठाकेँ समाज अंगीकार करैथ वा नइ करैथ। समाजो तँ समाज छी। ओना समाजोक भीतर तेते विचारक समाज पनैप गेल अछि, जेकरा समरस बना चलब, खेल नहियेँ छी। खेलो केना रहत, जहिना

रंग-रंगक समाज, गामक-समाजक पेटमे समाएल अछि तहिना समाजक बीच जातिक सेहो अछिए। जातियो तँ जाति छी, केकरा आगू कहबै आ केकरा पाछू, बेराएब कठिन अछि। धारीनुमा एहेन धार जकाँ बनल अछि जे पकड़ब कठिन अछिए। एक तँ ओहिना सएक-सए जाति, तइमे एक-एक जातिक बीच सए तँ नइ मुदा गण्डा, गाही, दर्जन, सोरे आ कौरीक हिसाबसँ सबहक उपजाति अछि। जेकरा बीच आगू-पाछूक सीढ़ी बनल छइ। जइक चलैत ने एक-दोसराक अन-पानि खाइ-पीबैए आ ने बेटा-बेटीक बिआह-दान एक संग करैए। ओना बेटी बिआह सभ जातिक बीच अखनो एके रंग सस्त कि महग सेहो नहियेँ अछि। अखनो खास-खास जातिक लेन-देनमे किछ-ने-किछ अन्तर देखमे अबिते अछि, तैपर जातियोक बीच नव-नव उठाइन भेने, आरो दूरी पैदा काइए रहल अछि।

चिन्तू कक्काक नजैर अपन पोतीक बिआहक खर्चक ओरियानपर पुन: पहुँचलैन। तीन लाख रूपैआमे तीन बीघा खेत जे जोतसीम अछि, भरना लगा लेलौं। जइकेँ चलैत एको कनमा ने धान भेल आ ने ऐगला आशा देख रहल छी। धारक पतराएल धारा जकाँ मध्यम् किसान आ छोट किसानक जिनगी चलि रहल अछि, तेकरो[14] जेना आगूसँ घेर तेना रोकि रहल अछि, जइसँ दिन पहाड़ जकाँ बनि रहल अछि..!

एकाएक चिन्तू कक्काक खसैत मन पनपलैन। पनैपते चिन्तू काका अपन सोचै-विचारैक समीक्षा करए लगला। समीक्षा शुरू करिते मन बुदबुदेलैन»

“बेटा-बेटीक बिआह तँ जेहने मनुखक वंश बेवस्था-ले तेहने तँ समाजो-ले छीहे। आब तँ ओ जुग नै रहल जे पशु-वत रूपमे चलत।

[14] धारा

आब तँ समाज-बेवस्था एते आगू बढ़ि छिड़िया रहल अछि जे समृद्ध समाजमे बसब असम्भव तँ नहि मुदा कठिन तँ भाइये गेल अछि। बेकता-बेकती आगू बढ़ैक होर पकड़ने जा रहल अछि जइसँ संयुक्त परिवार तँ छिन्न-भिन्न भाइये रहल अछि जे समाजोक रूप-रंगकेँ बिगाड़ि रहल अछि। समाज उठने परिवार आ परिवार उठने, बेकती उठैए। मुदा एहेन धारणा धरियाइत-धरियाइत धैड़-किनछैर पकैड़ रहल अछि। बीच धारमे यएह विचार तरंगित भऽ रहल अछि, जे अढ़ाइ-तीन सालक जखन बेटा-बेटी हएत तखने माल-जाल आकि कुत्ता-बिलाइ जकाँ परिवारसँ अलग शिक्षण संस्थानमे दाखिला करा, छोड़ि दियौ, मासे-मास पाइ-पठबैत रहू आ बेटा-बेटी आगू बढ़ैत रहत। एहेने सम्बन्ध बनने ने मातो-पिताक अपन पसरल जिनगी सम्हारमे नइ औत, तखन ऐगला पीढ़ी- बेटा-बेटी-क खगता महसूस हएत। तैठाम जँ मासे-मास पाइ पठा वा अपने पेन्शन भरोसे छोड़ि देब, आकि पूर्वजक देल खेत-पथार, जइसँ जीवन-जापन करैत चलि आबि रहल छी वा बेटाक भिनौजीसँ तेसर-चारम-पाँचम भागमे जिनगी टुटि ऐने रहह, टुटैत पारिवारिक सम्बन्धेटा पिता-पुत्रक वा पति-पत्नीक नइ ने छी, मनुखक जिनगी छी किने, जइमे मनुखताक वृक्ष अँकुरैत बढ़ैत, चतरैत, फुलाइत, फड़ैत दुनियाँक बीचमे ठाढ़ भऽ दुनियोँ देखै आ ओहो देखए... ।”

क्लेशसँ कलशैत मनमे मनुखता अबिते चिन्तू कक्काक विचार आगू ससरलैन। आगू ससैरते विचार उठलैन- जखन परिवारक बीच समस्या उठि गेल अछि तखन परिवारमे जे कियो छैथ, सबहक सोझ एने अपन माथक बोझ तँ कमबे करत। अनेरे परिवारक समस्याकेँ जबूरगर बना मनकेँ बोझिल बनौने छी। बेटो-पुतोहु बुझनुक भाइये गेल छैथ तँए किए ने सबहक बीच सभ किछु रहह। पत्नियोँ सहजे एक उमेरिये छैथ। जिनगीक कोनो ठेकान अछि, कखनो माता-पिता तँ

कखनो पिता-माता सेहो होइते छइ। अखने आँखि मूनि लेब तँ हमरा जगह तँ वएह ने पिता-माता कहौती... । पत्नी लग आबि चिन्तू कक्काक मन अँटैक गेलैन। अँटैकते अपन पत्नीक चेहरा झलकलैन। गप-सर्रक्का जेते लिअ, सोहर-समदौन जेते सुनी, हाट-बजार जेते घुमि ली, सिनुर-टिकुलीक ओरियान जेतेक कऽ ली, सिनेमा-सरकस जेतेक घुमि-फिर कऽ देख ली, मुदा परिवारक आमद-खर्चक रस्ता छोड़ि कऽ..! चिन्तू कक्काक मनमे खौंझ उठलैन, खौंझ उठिते विचार जगलैन जे सीढ़ी-दर-सीढ़ीमे पत्नीक गिनती जोड़मे होइए, अखन अपने जब छीहे तखन घटाएबे नीक। कोनो विचार करैमे जेते जड़ि सक्कत रहत, ओते ओ आगू बढ़ैत ने शक्तिशाली बनैत जाएत?

चिन्तू कक्काक मनमे फेर भेलैन- पोतीक सेवा जेते पत्नी केने छेली, तेते अपने तँ नहियेँ केने छेलौं, जेकरे बिआहक समस्याक समाधान करैक अछि, तँए हुनकोसँ विचारब जरूरी अछिए।

एकाएक जेना चिन्तू कक्काक चिन्ता चुनिया गेलैन। चुनियाइते मनमे उठलैन- आइक सम समैमे, जेते अपन पुश्तैनी लगा अपनो अरजल सम्पैत अछि, ओकर मूल्य केतेको लाख अछि। हरा-हरी, घराड़ीसँ चौक तक जँ पचासो हजार रूपैये कट्ठा जोड़ै छी तैयो दस लाख एके बीघाक भेल। तखन एते चिन्तामे किए छी? मुदा जहिना पूरबा हवामे छोट-छोट मेघक टुकड़ी उड़ैत सूर्जकेँ झाँपि दइए, तहिना चिन्तूओ कक्काक विचार झँपा गेलैन। झँपाइते रंग मलिन भऽ गेलैन। मुदा ओ मलिनता लगले छँटि गेलैन।

काजमे चूक केतए भेल? ऐपर चिन्तू कक्काक मन पहुँच गेलैन। ओ छी जमीनक बिकरी-दाम आ भरना-दाम। तीन बीघा जमीन पाँच हजार रूपैये कट्ठा भरना लगा अपन सभ उपजाउ खेत फँसा देलौं, जइसँ परिवारक आमदनियेँ बाधित भऽ गेल, जइसँ हाथक काज सेहो

छीना गेल। माने जिनका हाथे खेत भरना लगौलैन ओ अपने खेती करता। दिन-रातिक चिन्ता चिन्तू कक्काक मनकेँ तेना घेर लेलकैन जे टक-टक तकैत आँखि ज्योति विहीन भऽ आगू-पाछू किछु ने देखैत, दूरक कोन बात जे लगोक अवाजकेँ कान सुनि नहि पबैत। जेना चिन्तासँ चिन्तू काका चेतन-शून्य भेल जा रहल छला। तखने काकी दरबज्जापर एली। पतिक टकटकी देख चिन्तित भेली। एहेन रूप किए बनि गेल छैन? अपन मनक समस्याक समाधान लछमी काकी ऐ ताकमे ताकए लगली जे जखन लगेमे छिऐन तखन तँ मुँह खोलि किछ बजबे करता, जखने किछ बजता तखने ने चिन्ता घटए लगतैन।

मुदा चिन्तू काका गुम-सुम भेल अपन परिवारक चिन्तामे डुमल डुमकी मारि रहल छला। दुनू बेकती अपन-अपन ताकमे ताकि रहल छला तँए चुपा-चुपी पसरल जा रहल छेलैन।

एकाएक लछमी काकीक मनमे उठलैन जे भरिसक चाहक ने तँ तिसना जगल छैन? जइसँ देह-तेह ने तँ ज्वरित भऽ गेलैन अछि?

बिना किछु बजने काकी दरबज्जापर सँ आँगन आबि पुतोहुकेँ कहली»

“कनियाँ, बुड़हाकेँ चाहक बेर भऽ गेलैन।”

ओना सुचितो बेरुका चाह बना नेनी छेली। चाहक गिलास सासुक हाथमे देली। कुशेसर ओसारेक खुट्टामे ओंगैठ चाहक आशामे बैसल। हाथमे चाहक गिलास नेने लछमी दरबज्जा दिस बढ़ैत बेटाकेँ कहलखिन»

“बौआ, चाह पीब दरबज्जेपर अबिहह।”

चिन्तू कक्काक आगूमे चाहक गिलास रखैत लछमी काकी बजली»

“अँगनासँ अबै छी ताबे अहाँ चाह पीबू।”

खग जानए खगक भाषा, चिन्तू काका बुझि गेला जे चाह पीबए जा रहल छैथ। बजला»

"बेसी देरी नइ करब।एकटा विचार करैक अछि।"

पति-मुँहक विचार सुनि लछमी-काकीक मन क्लेशसँ कलैश गेलैन। कलशबो केना ने करितैन। पत्नीक अनेक रूपमे विचारी-रूप जे हाथ लगलैन। हाथ लगिते देहमे पानि चढ़ि गेलैन। उनटे डेगे दरबज्जासँ आँगन पहुँचली, चाहक गिलास भफाइते रहइ।

हाँइ-हाँइ गिलास उठा दुखियाएल रोगी जहिना दवाइक खोराक बढ़ा कऽ खाए चाहैए, तहिना लछमी काकी चाहक खोराक सेहो बढ़ा लेलैन। होइतो अहिना छै जे काजक ताकक पाछू लोकक खेनाइयो-पीनाइ अबेवस्थित भाइये जाइ छइ।

ओना सुचिता देवालक अढ़ेमे ठाढ़ भेली, किएक तँ सभ बात सुनै-बुझैक जिज्ञासा मनमे रहबे करैन। तीनू गोरे–माने चिन्तू काका, लछमी काकी आ कुशेसर–एक-दोसराक कोणा-कोणी चौकीपर बैसल रहैथ। जहिना कोनो ऑफिसमे एक-दोसराक हाथे काजक निष्पादन-ले भार बढ़ौल जाइए तहिना चिन्तू काका अपन भार बढ़बैत कुशेसरकेँ पुछलखिन»

"बौआ, परिवारक गाड़ी एहेन लसकामे लसैक रहलह अछि जे जँ समए रहैत अखैन नइ चेतबह तँ आगूक दुर्दिनमे दुरकालक सामना करए पड़तह।"

ओना पिताक बात सुनि कुशेसर चुपे रहल मुदा लछमी काकी टपैक पड़ली»

"से की?"

पत्नीक प्रश्न सुनि चिन्तू कक्काक मनमे विराग नइ राग जगलैन। राग जगिते विचार भेलैन जे किए ने सभ बात सबहक बीचमे रखि

परिवारिक जिनगीक ढाँचाक रूप-रेखा खींच दिऐ। ओना कुशेसर चुपे रहल मुदा मने-मन पिताक आक्रान्तक अंकन तँ करिते छल।

समझदार चिन्तू काका, मने-मन विचारलैन जे अखन परिवारक बीच सुदिन आ दुर्दिनक विचार करए बैसल छी। तँए कोनो समस्याक वर्तमाने रूप-टा नइ, ओ रूप बनैक जे पूर्व-पीठिका अछि, माने ओइ समस्याकेँ उठि कऽ ठाढ़ होइक जे कारण अछि, जँ ओकरा नीक जकाँ बुझब आ परिजनकेँ बुझा दिऐ तँ ओ आगू बढ़ैले बेसी कारगर हएत। पाछू दिस नजैर खिड़ा तकलासँ बुझि पड़लैन- परिवारमे जे संकट उपस्थित भऽ गेल अछि, ओकर जड़ि कारण भेल- पोतीक बिआह-काजकेँ ओकातिसँ नमहर बनाएब। ओना ओकातिसँ नमहर काजक दू कारण अछि- एकटा अछि परिस्थितिवश आ दोसर अछि बलउमकी। अपन काज तँ बलउमकीमे नइ भेल, ओ तँ भेल समाजक बीच बहैत बिआहक धारमे बहब। ओना धारमे बहैक सेहो दू कारण अछि, एक अछि भँसि कऽ डूमब आ दोसर अछि हेल कऽ पार हएब...।

..ऐठाम आबि चिन्तू कक्काक मन ठमैक गेलैन।

ओना लछमियो काकी, पतिक विचार सुनैले आ कुशेसरो, पिताक बात सुनैले कान ठाढ़ केने, मुदा बजनिहारोकेँ तँ अपन विचारक पतियानी लगबए पड़ै छै, तेही पतिअबैमे चिन्तू कक्काक मुँह बन्न रहैन। ओना टटका पीलहा चाहक लहकीसँ सबहक मन लहलहाइते रहैन मुदा किछु छी तँ परिवारक विचार छी, ठट्ठा नइ ने छी। आकि बैकवार्ड-फोरवार्ड ऑफिसक स्टाफ नइ ने छी, परिवार छी किने। कुशेसरो नजैर उठा पिताक आँखिपर देलक। आँखिपर नजैर फेकते कुशेसरकेँ बुझि पड़ल जे घनघोर घटाक बीच पिताजीक मन औना रहल छैन। औनेबो केना ने करितैन। जीन-मरूक बीच पड़ल

जिनगीक नाह छैन।

चिन्तू काका कुशेसरकेँ कहलखिन»

"बौआ, परिवारक जे स्थिति बनि गेलह अछि, ओ संकट ग्रस्त भऽ गेल छह, एकर निमरजना तँ अपने सभ ने करबह?"

जहिना कुशेसरक मनमे पहिनहिसँ जवाब तैयार रहै तहिना बाजल»

"हँ, से तँ करए पड़त।"

जेना कोनो फलक गाछ रोपैसँ पहिने फल भेट गेने खुशी होइ छै, तहिना चिन्तू काकाकेँ भेलैन। अपन परिवारक जवाबदेहीक एहसास करैत बजला»

"बौआ, बेटी बिआहक मोकर जे लोकक मनमे फूटल जा रहल अछि, तेकरा अखन छोड़ि दहक, अखन अपन जे समस्या छह तेतबे विचार करह।"

बिच्चेमे लछमी काकी टपकली»

"काजे कोन अछि जे से करए अखने जाएब आ तेकर औगुताइ रहत। जखन विचार करए बैसलौं तखन सभ विचार ने सेरिया कऽ कऽ लेब।"

पत्नीक विचार चिन्तू काकाकेँ अदहा नीक लगलैन आ अदहा अनटोह लगलैन। नीक ई लगलैन जे काजे कोन अछि, भाय! काजे ने जिनगी छी आ अकाजे ने मृत्यु...।

मुदा आगूक जे बात रहैन, माने 'सभ विचार' से अनटोह लगलैन। रिझैत-खिजैत चिन्तू काका बजला»

"एहेन जे लाल-बुझक्कर बनब तखन तँ दुनियेँ आछन भऽ जाएत..!"

आगूक बात चिन्तू कक्काक पेटेमे रहैन कि बीच्चेमे लछमी काकी बजली»

"से की?"

जहिना लछमी काकीक मुहसँ जिज्ञासु-वाण छुटलैन, तहिना चिन्तूओ काका समधाइन कऽ जवाब-वाण छोड़ला»

"घर-अँगनामे जखन कोसी धारक बाढ़ि चलि औत, तखन पहिने बँचै-बँचबैक ओरियान करब आकि ई विचारए लगब जे कोसी नदीक छहरे-नहर इंजीनियर कमजोर बनौलक!"

चिन्तू कक्काक विचार लछमी काकीक मनमे चुभलैन। चुभलैन ई जे कोनो समस्या, जैठामक रहए, ओकरा नीक जकाँ बुझैक कोशिश करी, जेते नीक जकाँ बुझैक परियास करब तेते ओकर तह-तहक बात बुझबै। ओना अढ़मे पुतोहु-सुचिता सेहो ठाढ़ छेली। हुनका मनमे कि चुभलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा खिल-खिला-खिल-खिला हँसली से सभ सुनलैन। एहनो भऽ सकैए जे मनकेँ खींच काज लग आ काजक समस्या लग अनलासँ, किछ नव रोशनी सेहो भेटै छै, जइ रोशनाइसँ लोक अपन बेथा-कथा सेहो लिखि सकैए...।

सुचिताक हँसबसँ चिन्तू कक्काक चिन्ता जेना कमलैन, कमबो केना ने करितैन, हँसि कऽ समस्याक समाधान करैत हँसैत चली, यएह ने भेल जिनगी। मुदा लछमी काकीकेँ पुतोहुक हँसब नीक नइ लगलैन। भाय, कियो अपनापर हँसि दिअए, ई केकरा नीक लगतै जे लछमी काकीकेँ नीक लगितैन?

हँ! जँ मन-बुधि आ हाथ-पएरसँ ओहन काज करी जे खुशीसँ हँसी पैदा करए, ओ ने नीक भेल। दाँत पीसैत लछमी काकी रहि गेली मुदा बजली किछु ने।

ओना माइयो आ पत्नियोंक बीच कुशेसर, तँए थोड़े धर्म-संकटमे

पड़िये गेल। धर्म-संकट ई जे माइक विचारकेँ खण्डित होइत देख पुतोहु हँसली, सासुपर थोड़े हँसली? विचारक एक टुकड़ीपर हँसली, सेहो अधलासँ नीकक बाटमे हँसली।

ओना अही तारतममे चुपा-चुपी सेहो पसैर गेल। चुपा-चुपी देख चिन्तू काका पाशा बदलैत बजला»

“बौआ, बिआहमे जेना सभ उपजाउ खेत भरना लगा लेलौं..?”

कुशेसरोकेँ जेना सह भेटल। बाजल»

“बाबू, ओना मुँह खोलि कऽ तँ नइ, मुदा जी दाबि कऽ तँ कहने रही ने जे..?”

खेतक भरना आ बिकरीक बात खुलि कऽ नइ उठल, मुदा लाल बुझक्कैर जकाँ लछमी काकी बुझि गेली। बजली»

“बाप-माइक सम्पैतमे जखन बेटियोक हिस्सा छै, पचास हजार रूपैये कट्ठा जमीन अछि, छबे कट्ठा बेचने सभ भार हटि गेल रहैत, बाँकी जे खेत अछि ओकर उपजा तँ हेबे करैत। किए एहेन स्थिति होइतए।”

ओना चिन्तू काका लछमी काकीक विचारकेँ महसूस केलैन, मुदा अपन जे विचार- ‘भरना लगाएब’ छेलैन, सेहो सोलहन्नी मनसँ हटल नइ छेलैन, जे बात कुशेसर बुझि गेल।

ओना कुशेसर पहिनेसँ बुझैत जे भरना-मूल्य खेतक उपजापर निर्भर करै छै, खेती पछुएने- माने किसानक दशा पछुएने- खेतक उपजो पछुआएल, तैपर रौदी-दही सेहो अनिवार्जे जकाँ भऽ गेल अछि, जइसँ भरनाक स्थिति बिगड़ल छइ। तँए मूल्य, माने भरना-दर, कम अछि। बैंकक सुइदमे रौदी-दाही नइ छै, तैसंग बिसवासू सेहो अछि...।

..आगूक जिनगीक आस लगा कुशेसर बाजल»

“उपाय?”

बेटाक मुहसँ ‘उपाय’ सुनिते चिन्तू कक्काक चिन्त-मन चिनमय भऽ गेलैन, चिनमय होइते बकार होइत मुहसँ फुटलैन»

“बौआ, गनगुआरिक एकटा टाँग टुटने गनगुआरि नांगर थोड़े हएत। पाँच बीघा सम्पैतमे जे पान-छह कट्ठा चलिये जाएत तइसँ केते जिनगी प्रभावित हएत।”

सह दैत कुशेसर बाजल»

“जँ जिनगी प्रभावितो हएत तेकरो तँ लाखो उपाय अछिए। जखन हाथ-पएरक संग धरतीपर छी तखन करै-चलैसँ केकरो कियो रोकि थोड़े देत?”

◌

शब्द संख्या : 2424, तिथि : 21 अप्रैल 2016

दियरबा-भैंसुर

विलासपुर एकटा मझोलका गाम। ओना इलाको-इलाकाक गामक बासमे अन्तर होइ छै, नम्हरो गाममे अवादी कम रहै छै आ छोटोमे बेसी रहै छइ। विलासपुर चारू भागक गामक बीचमे सेहो पड़िते अछि। एक तँ मिथिलांचल ओहिना सघन बासबला गामक समूह छी, तहूमे विलासपुर ओहन इलाकाक गाम छी, जे आरो बेसी सघन अछि। मुदा जे अछि से अछि, अपन जे खतियानी गामक सीमा छै से तँ विलासपुर नाओंसँ छेबे करइ। अही गाममे, माने विलासपुरमे छलानन्द आ सुधानन्द दूटा प्रशासनिक अफसर सेहो छैथ। ओना सालक शुरूहेसँ छलानन्द सेवा निवृत्ति भऽ गाममे रहि रहला अछि। सुधानन्द दू साल पहिने सेवा निवृत्ति भेला, मुदा ओहो गाममे रहै छैथ।

छलानन्द आ सुधानन्द पनरहे दिनक जेठ-छोट, तँए एकमसुए दुनू गोरे, मुदा एक-पनरहियाक अन्तर तँ छैन्हे। एकटाक जन्म अन्हरिया-एकादशी आ दोसरक इजोरिया-एकादशीक भेल छैन। एके दिन तँ नहि मुदा एके साल दुनू गोरेक पिता दुनू गोरेकेँ स्कूलमे नाओं सेहो लिखा देलकैन। एके किलासक संगी दुनू गोरे, मुदा एक गाममे रहितो, दू जातिक रहितो पढ़ैमे दुनू एकरंगाहे, तेकर कारण एके शिक्षकक पढ़ौल विद्यार्थी सेहो अछिए।

अदहा फागुन बीत गेल मुदा आन साल जकाँ ने ऐबेर शीतलहरी भेल आ ने मघाइर-बरखे, जइसँ आन सालक अपेक्षा गरमियोँ अगते आबए लगल आ मौसमोक रूप-रंग अगतेसँ अपन रंग पकड़ए लगल। ओना, छलानन्द आ सुधानन्दक जन्म पनरहे दिनक अन्तरमे भेल छेलैन जइसँ छलान्द पनरह दिन जेठ आ सुधानन्द पनरह दिन छोट भेला। ऐठाम तँ पनरह दिनक अन्तरक जेठाइ-छोटाइ भेल। जौआँ बच्चाक जन्मक अन्तर तँ से नइ होइए मुदा ओहूक बीच तँ जेठाइ-छोटाइक अन्तर भाइये जाइए...।

साढ़े चारि बजेक बेरुका समए। दुनू परानी–छलानन्द आ विलासिनी– ओसारक कुरसीपर बैस दोहरौनी चाह पीबैत रहैथ। एक तँ फगुनहैठ हवा, दोसर फगुआक आगमनक खुमारि सभपर चढ़िते रहइ। विलासनियोकेँ से बढ़िये गेल रहैन। पति दिस मुँह उठा बजली»

“ऐबेर सुधानन्दक संग फगुआ खेलब।”

साठि बर्खक अवस्थामे सुधानन्दो सेवा मुक्त भेल छला आ छलानन्द सेहो। दू साल पहिने सुधानन्द सेवा मुक्त भेला जे बात छलानन्दोकेँ बुझले छैन। छलानन्दक मनमे भेलैन जे एना किए पत्नी बजली जे सुधानन्दक संग फगुआ खेलब? दियर-भौजाइक बीच लोक फगुआ खेलाइए, भैंसुर-भावोक बीच केना खेलती?

पत्नीकेँ मनाही करैत छलानन्द बजला»

“एहेन विचार किए मनमे उठल जे भैंसुरक संग फगुआ खेलब? गामक लोक जे बुझत ते बाट चलए देत?”

पतिक विचार विलासिनीकेँ नीक नइ लगलैन। एक संग केता प्रश्न मनमे उठि गेलैन। पहिल उठलैन जे सुधानन्द एक रेंकक निच्चाँ रहि सेवा निवृत्ति भेला आ अपने एक रेंक ऊपर चढ़ि सेवा निवृत्ति भेला, तखन तँ हम ओहिना ऊपर भेलौं माने जेठ भेलौं, जइसँ भैंसुर-

भावोक सम्बन्ध नहि दियर भौजाइक भेल। दोसर ईहो विलासिनीकेँ बुझल रहैन जे सुधानन्द पनरह दिनक छोट हमरा पतिसँ छैथ, जे झँपाएल अछि, मुदा अपने तँ जनै छी। असल इच्छा विलासिनीक मनमे ई रहैन जे समाज सुधानन्दकेँ निष्ठित बनौनहि छैथ। जहिना सबहक मनमे निष्ठितक लिलसा रहै छै तहिना विलासिनियोँक मनमे रहैन। जेकरा ओ सम्बन्धक रूपमे बनबए चाहै छेली। मुदा मनमे ईहो तँ नचिते रहैन जे ने एक आँगुरसँ चुटकी बजै छै आ ने एक हाथसँ थोपड़ी, तहिना असगरमे दोस्तियो केकरासँ हएत। अपन जँ इच्छे अछि आ सुधानन्दक इच्छा नइ हेतैन, तखन केना हएत। तँए पतिकेँ पुछने छेली जे सुधानन्दक संग फगुआ खेलब...।

ओना सुधानन्द ऐ रहसकेँ बुझै छैथ जे दुनू गोरेक बीच पनरह दिनक जेठाइ-छोटाइक अन्तर अछि, भऽ सकैए जे छलानन्दे जेठ होथि, मुदा जन्म तिथिक चुगली तँ जन्म-कुण्डली करैए, तइसँ छलानन्द छोट साबित भाइये रहल छैथ। ओना सुधानन्दक अपन मन तँ गवाही दइते छैन जे एके मास स्कूलमे दुनू गोरेकेँ पिताजी नाओं लिखौलैन, एके किलाससँ पढ़ब शुरूहो केलौं आ साले-साले संगे-संगे आगूओ किलासमे पढ़लौं। तेतबे नइ, पढ़ाइक पछाइत दुनू गोरे एके साल नोकरियो करब शुरू केलौं। मुदा..? मुदा ई जे सभ किछु एक रहितो दू साल बेसी छलानन्द नोकरी केलैन आ एकटा परमोशन भेने ऊपरो उठला।

शिक्षामे उम्र सीमा ऐछे जइसँ नोकरी प्रभावित होइए। छलानन्द आ सुधानन्दक सभ किछु एक रहितो, की छलानन्द नइ बुझि पेब रहला अछि जे केतए गड़बड़ अछि, आकि सुधानन्दे नहि बुझि पेब रहला अछि? ओना सुधानन्द उम्रक गड़बड़ी पछाइत बुझलैन। जबकी छलानन्द अगतिये बुझै छला। ओना बाल-बोध रहने ने छलानन्द बच्चामे बुझलैन आ ने सुधानन्द। तँए ईहो नहियेँ कहल जा सकैए जे

आनो नइ बुझै छला, बुझै छेलखिन छलानन्दक पिता। तँए ने अपन जे जन्म टिप्पणि छैन तइसँ दू साल घटा कऽ छलानन्दक नाओं स्कूलमे लिखौलखिन।

ओना एहेन विचार जे छलानन्दक पिताक मनमे एलैन ओहो अनुचित नहियेँ एलैन, किएक तँ माता-पिताक धर्म-कर्मक सूचीमे बाल-बच्चाकेँ पढ़ाएबो तँ अछिए। तइ काज-ले जँ हम समैसँ पहिने तैयार भऽ जाइ तँ ऐमे दोख की भेल? तँए बाल-बच्चाक शिक्षा ग्रहणक समए जँ पाँच बर्ख निर्धारित करै छी आ तैठाम जँ हम तीनियेँ बर्खमे तैयार भऽ जाइ छी, तँ दोख की भेल?

एक तँ ओहुना जन्म-टिप्पणि लिखैक प्रथा समाजक किछु जातिक किछु परिवारक बीच समटा गेल अछि। तेकर अनेको कारण अछि, मुदा प्रमुख कारण ई अछि जे अधिकांश परिवारक जीवन-स्तर ओहन रहल, जेकरा ने जाड़सँ बँचैक समुचित उपाय छेलै आ ने रहैक नीक घरमे नीक वस्त्र छेलै आ नहियेँ उचित भोजन, एहेन स्थितिमे कागज-पत्रकेँ बँचा राखब असम्भव नहि तँ कठित तँ अछिए। जँ से नइ छल तँ की गोटि-पँगरा रचना छोड़ि सभ डुमि केना गेल? की रचनाकारे आकि सृजनकारे जुग-जुगक अन्तरालपर जन्म लेलैन आ ओ अपन पैरूख देखा कऽ गेला?

एहेन विचारक पाछू ईहो तँ कहले जा सकैए जे तखन सभ जुगमे एते लड़ाइ-झगड़ा किए भेल? लोकक सोभावमे झगड़ालुपन सेहो तँ ऐछे, मुदा ईहो तँ कहले जा सकैए जे शान्ति-प्रिय मनुख एना अशान्त भऽ किए जीबए चाहैए?

सभ दिन धरती एकसँ एक रचनाकारो-सिरजनकारो पैदा करैत रहल अछि आ आगूओ करैत रहत। तखन एकरो नइ नकारल जा सकैए जे छोट-छीन धारकेँ जहिना बड़की धार अपना पेटमे समेट

लइए तहिना भेल हएत। जइसँ एहनो तँ भेले हएत जे दसटा खलीफाक बल पेब जहिना एकटा महा-खलीफा भेल हेता तहिना दसटा रचना समेट कियो रचनाकार वा सिरजन समेट सिरजनकारो भेल हेता।

अपन मिथिला आइयेसँ नइ पहिनहिसँ सभ दिन उर्वर भूमि रहल अछि। उत्तरसँ सैकड़ो पहाड़ी धार जइमे अधिकांश बारहो मास पानिक भण्डार भरैत रहल अछि, तैसंग बर्खाक जोग सेहो अछिए। सालक तिहाइ-चौथाइक मासमे बर्खा होइते अछि। तहिना धरतीक माटि सेहो अछिए। मुलायम उपजाउ। तैसंग मौसमक चक्र सेहो एहेन अछि जे सालक तीन रूप तँ अछिए। अगहनसँ फागुन जाड़, चैतसँ अखाढ़ रौद-गरमी आ सौनसँ कातिक बरसात। तीनू मौसमक अपन-अपन गुण-धर्म छै जइसँ सृजन-संहारक शक्ति सेहो छइहे। खाएर जे छै, मुदा एते तँ सभ देखते छिऐ जे बारहो महिना अपन किछु-ने-किछु रंग-रूप लऽ कऽ अबिते अछि। तैसंग दुनियाँक सभसँ सुरक्षित, माने धरतीक जे उपद्रवी तत्व अछि, तइसँ जेना ज्वालामुखी, जे भुमकमक कारण बनैए, से छीहे। जइसँ गाछ-बिरीछसँ लऽ कऽ चिड़ै-चुनमुनी, जंगलीसँ पालतू धरि जानवर, रंग-रंगक मौसमानुकूल फल-फूल, तीमन-तरकारी, उपजैमे दुनियाँमे सभसँ आगू अछि। जे मिथिलांचल छोड़ि दोसर नइ अछि। तँए अदौसँ मिथिला ऋृषि-मुनी-साधकक भूमि रहल अछि आ आगुओ रहत।

दोसर पक्ष ईहो अछि जे मौसमोक चढ़ाव-उतार होइ छइ। गोटे साल कम तँ गोटे साल मध्यम आ गोटे साल बेसी जे अपन उग्र रूप धारण कऽ लइए तइसँ जिनगी जीबे दूभर भेल जाइए। मुदा ईहो तँ बिसवास ऐछे जे जहियासँ ऐ धरतीपर मनुख भेल तहियासँ जे मनुखक वंश आगू बढ़ल ओ आइ धरि जीवित अछि। जँ से नइ तखन अपने केना छी? ओना वर्तमानक उम्रक पाछू अनेको कारण आरो अछि मुदा

ओ अखन नइ, संगे उम्रक गड़बड़ी केतए-केतए केना-किए होइए अखन सेहो नइ।

नोकरीक जिनगीसँ साल भरि पहिने जहिना छलानन्दक बिआह भेलैन तहिना सुधानन्दोकेँ भेलैन। नोकरी शुरू करिते दुनू गोरे अपन-अपन परिवारकेँ–परिवारक माने माता-पिता-दादा-दादी नइ, खाली अपन पत्नी, पछाइत ने ओइ परिवारमे बच्चाक जन्म हएत–लऽ कऽ संगे रहए लगला। सरकारी मकानक संगे स्तरक हिसाबसँ सभ किछु उपलब्ध भेलैन।

छलानन्दक जेहने परिवार अपन छेलैन तेहने परिवारमे बिआहो भेल छेलैन। जइसँ अपना जकाँ तँ नहि मुदा पढ़ल-लिखल पत्नी छेलखिने एम.ए.पास। मुदा सुधानन्दकेँ से नइ भेलैन, बिनु पढ़ल-लिखल पछुआएल जातिक परिवारमे जन्म भेने, केते तक्का-हेरीक पछाइत एकटा लोअर-प्राइमरी स्कूलक शिक्षकक बेटी, जिनका नाम-गाम लिखबसँ चिट्ठी-पत्री पढ़बक संग हुट्टा तक खांत लिखऽ अबै छेलैन, तिनका संग बिआह भेलैन।

मुदा संगीक पत्नी माने छलानन्दक पत्नीकेँ देख सुधानन्द झुझुएला नइ। मनुख तँ माटिक शकल-रूपमे जन्म लइए मुदा ओकरा तँ परिवारे-जन आकि माते-पिता गढ़ि-मढ़ि मनुख बनबै छैथ।

ओना छलानन्दो आ सुधानन्दोकेँ एके दिन नोकरीक चिट्ठी भेटलैन मुदा तीन दिनक आगू-पाछू दुनू गोरे ज्वाइन कऽ सरकारी अफसर बनि गेला। अखन धरिक संग-साथ दुनू गोरेक हटए लगलैन। तेकर कारण भेल दुनू गोरे राज्यक दू भागक जिलामे पदस्थापित भेला।

आर्थिको आ शैक्षणिको स्तरपर आगू बढ़ल परिवारक छलानन्द अखन धरिक माने नोकरीसँ पूर्व जे जिनगी बितौने छला ओ

विद्यार्थीक रूपमे, तँए कनी-मनी खाइ-पीबैक दोष आबि गेल छेलैन, मुदा दोखी बनै जोकर नइ आएल छेलैन।

ओना अगुआएल परिवारक किछु अवगुण विलासनियोँमे शुरूहेसँ रहलैन जे नोकरीक पछाइत जिनगीमे उतरए लगलैन। जइसँ छलानन्द परिवारक संग गामसँ विदा भेला तँ गामेक दू गोरेकेँ नोकर-रूपमे संग कऽ लेलैन। नमहर सरकारी क्वाटर रहबे करैन, तँए नोकरो-चाकरकेँ रहैक असुविधा नहियेँ रहैन। नीक वेतन, सरकारी खजानाक अधिकारीक संग विशाल आमजनक भविस सेहो हाथमे आबिये गेलैन।

एक तँ ओहुना सरकारी पदाधिकारीक परिवारक बीच भोज-काज बेसी होइते अछि तैसंग गामो-समाजक बीच सम्बन्ध बनने आरो बढ़िये जाइए। अनधुन कमाइक संग अनधुन खरचो आ बँचतो करैक जोगारक गोटी नीक जकाँ छलानन्दकेँ बैसिये गेल रहैन। धीरे-धीरे जइसँ जिनगी अबेवस्थित जकाँ हुअ लगलैन। माने जीवन-क्रिया आ समए-क्रियामे दूरी आबए लगलैन। ने काजक चिन्ता आ ने अपन चिन्ता दुनू परानी छलानन्दकेँ रहलैन। होइतो अहिना छै जे जखन कियो तीस-पैंतीस सालक नोकरी देख अपन ऐगला जिनगी (माने सेवा निवृत्तिक) नहि देख पबैए, तहिना छलानन्दोकेँ भेलैन।

ओना सुधानन्दो छलानन्दे जकाँ वेतनक संग सरकारी खजानाक जबवदेहो भेला आ विशाल आमजनक बीच सेहो रहला। मुदा अपन ज्ञान-शक्तिकेँ इमान-शक्ति अरजैक दिशामे सुधानन्द अपनाकेँ अग्रसर केलैन। भाय, केकरो कहने आ केकरो केने, केकरो इमान-धर्म बनै छै आकि नइ बनै छै? ओ तँ अपन जिनगीक लीला छी। जे अपने केने हेबो करैए आ जेबो करैए।

जहिना सुशील बेकती अपन शीलकेँ शुरूहेसँ ई सोचि रक्छा

करैए जे जे जीवधारी अछि ओकर विनाश एक दिन हेबे करत। तहूमे कहिया हएत तेकरो निसचित नहियेँ अछि। एहेन वेठेकान जिनगीकेँ जँ ठेकाइन कऽ नहि चलब तँ जिनगीए बेठेकान भऽ जाएत, जेकर कोनो मोजर धरतीपर नइ रहि जाइ छै, तँए ओकरा ठेकाइन कऽ चलैक भार तँ ओइ बेकतीपर अछिए। से सुधानन्दो बुझलैन आ बुझि-विचारि कऽ जिनगीक डेगो उठौलैन।

पहिल दिन परिवारक संग सरकारी बासमे जखन दुनू बेकती सुधानन्द प्रवेश केलैन आ कार्यालयमे ड्यूटी करए पहुँचला, तखन मात्र औपचारिक रूपमे काज-भार लेलैन। ने किछु बुझल रहैन आ ने किछु कएल रहैन। ऑफिसमे असगरे बिनु काजेक बैसल छला। मुदा आजुक दिन तँ जिनगीक चौबट्टीपर आबि अँटकल रहैथ, से तँ मनमे रहबे करैन।

पहिल दिन छी, ओना आन सभ जकाँ ज्वाइन केला पछाइत ऑफिस छोड़ि जाइए सकै छी, मुदा से नइ जिनगीक एक सीमापर ठाढ़ सेहो तँ छीहे, जँ आइयेसँ काजमे ढील-ढाल आकि लापरवाही राखब तँ ओ घर करैत जाएत, जइसँ धीरे-धीरे लापरवाही बढ़ैत जाएत, तँए जिनगी जीबैले किछु संकल्प-व्रत लिअ पड़त...।

मुदा लगले सुधानन्दक मन आगू बढ़ि पत्नी आ माता-पिताक परिवारपर पहुँचलैन।

परिवारपर जनैर दौड़ते सुधानन्दकेँ एक संग अनेक रंगक बोझ माथपर अबैत देखाइ देलकैन। दुनू दिससँ देखल जा सकैए। एक दिस अपन जिनगी अछि, तैसंग पत्नीक बीच परिवार अछि, माता-पिताक बीचक परिवार अछि, संगे जइ समाजमे जन्म लऽ प्रशासनिक अफसर बनलौं, तइ माटि-पानिक पूजा जँ नइ कऽ सकब, तखन जिनगीए की हएत?

मुदा लगले मन घुमि पहिल दिनक प्रवासी जिनगी बुझि अपन क्रिया-कलापकेँ असथिर करैक विचार सुधानन्द मनमे रोपलैन। अपने अफसर बनलौं, पत्नी साधारण शिक्षकक बेटी छैथ, जे पढ़ै-लिखैक नामपर हुट्ठा तक खाँत आ चिट्ठी-पत्री पढ़ै धरि छैथ...।

बर्खाक बीच जहिना बादल तड़ैक ठनका खसबैए, तहिना सुधानन्दोकेँ भेलैन। भेलैन ई जे जइ समाजक बीच आबि ठाढ़ भेलौं अछि ओ समाज केहेन अछि? आ ओइ समाजक बीच अपन पत्नीक संग सम्बन्ध स्थापित केते दूर तक कऽ पाएब? अखनो समाजमे अल्हर-बकलेलकेँ हँसीक पात्र बना लोक हँसैए। मुदा समाजक ओहो अंग छी, एकरा के बुझत?

अपन समाजक जे रूप-रंग बनि गेल अछि ओकरा छोड़लो नइ जा सकैए आ पकड़लो नइ जा सकैए। मुदा केते पकड़ल जाए आ केते छोड़ल जाए, ई तँ निर्भर करैए ओइ कर्ताक काजपर...।

एकाएक सुधानन्दक मन अपन नोकरीक काजपर उतरलैन। काजपर उतैरते अपन निर्धारित काजक समए आकि अपन आठ घन्टाक समए निर्धारित कऽ लेलैन। सरकारी काज करैक जगह कार्यालय छी आ कार्यालयक काज छी।

तैबीच जँ कोनो नब सम्बन्ध स्थापित होइए तँ ओकरा एक सीमा तक राखबे नीक हएत। मुदा अपन जे बाँकी बँचल समए अछि जँ ओकरा परिवारक संग आगू बढ़ैक बाटपर उतारि आनि अपनाकेँ ठाढ़ कऽ लइ छी, तँ ओ बेसी नीक हेबे करत।

ऑफिसक पछाइत जखन सुधानन्द डेरा एला, तँ डेराक मुहथैरपर विरहाएल पत्नीक चेहरापर नजैर पड़लैन। पत्नीकेँ देखते सुधानन्दक अपनो मन विरहा गेलैन। चाह पीविते पत्नीकेँ कहलखिन»

“आइसँ हम कमाए लगलौं। कमा कऽ आनब आ अहाँ-हाथमे

ऐ दुआरे देब जे अहीं ने गृहिणी भेलिऐ।”

पतिक विचारकेँ सुचालिनी हलैस कऽ नइ, हलैस कऽ ऐ दुआरे नइ जे एक आज्ञाकारी केना अपन आज्ञा पलबैक भार लेत। मुदा हिया कऽ जरूर अङैज लेलैन।

...तीस सालक नोकरीक जिनगीमे सुधानन्द निष्ठित मनुख बनि, सेवा निवृत्तिक पछाइत शेष जिनगी बितबए चाहै छैथ।

विलासिनी दियोर बुझि, माने वास्तविक जिनगीक तिथि भँजिया मने-मन बजैत जे फगुआ खेलब। मुदा समाजोक तँ अपन बान्ह-छेक छै, केना मानत जे सुधानन्द विलासिनीक दियर भेलैन?

◌

शब्द संख्या : 2089, तिथि : 29 अप्रैल 2016

एक दिन

चौमुहानीपर ठाढ़ भेल कोनो यात्रीकेँ जहिना चारू दिससँ अबैत गाड़ी-सवारी बाट रोकि दैत, तहिना लाल भायकेँ सेहो भेलैन। एक संग चारिटा काज आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। ओना जँ चारू काज आगू-पाछू[15] रहैत तखन तँ कोनो प्रश्ने नहि भेल, मुदा से नइ एक समैमे चारू काज चारि दिससँ चौमुहानीपर ठाढ़ भेल यात्री जकाँ घेर लेलकैन। करब चारूकेँ छैन, छोड़ैबला एकोटा ने। निराश भेल लाल भाइक एक मनकेँ दोसर मन आस दैत कहलकैन»

“अरे, धीर मन चल।”

कानमे पड़िते लाल भाइक मन सुगबुगेलैन। सुगबुगाइते बुझि पड़लैन जे चारू काजकेँ सेरिया-बटिया पकैड़ करब तँ समैक संग चारू काज निमाहि लेब। मुदा जहिना एकटा पढ़ल-लिखल लोक सन विचारमे विचरन करैत अबोधो सबोध बनि निच्चासँ ऊपर तक, पेनीसँ कान तक वा जड़िसँ छीप तक देख लइए तहिना लाल भाइक मन देखलकैन तँ मुदा बच्चासँ कौलेज तकक बीतल जिनगीक काजसँ भेँट नइ भेने जहिना पहाड़ बनि अज्ञान जिनगी आगूमे ठाढ़ भेल रहैए तहिना लालो भायकेँ भेबे केलैन। एक संग आएल चारू काजकेँ

[15] समैक हिसाबसँ आगू-पाछू

तहियबैत-सरियबैत पहिल नम्बरक काज अगुएलैन। पोती बिआहक काजक अन्तिम प्रक्रिया[16] काल्हि नइ सम्पन्न भऽ जाएत तँ एकेटा दिन बिआहक आगू शेष अछि, साले सम्पन्न भऽ जाएत! सालक महतपूर्ण परिवारिक काज पूर नइ भेने परिवार तँ धकाल खेबे करत। आगू सालक तँ आगू काज अछि, तइमे जँ पैछला सालक महतपूर्ण काज छुटि जाएत, जइमे अर्थक खर्च संगे समैक खर्च सेहो हेबे करत। जखने से हएत तखने ऐगला साले अ-असथिर भऽ जाएत! तखन? मुदा उलझनो तँ असान नहियेँ अछि। बेटीक बिआह पिताक माथक केहेन बोझ बनि ठाढ़ भऽ गेल अछि, सबहक सोझहेमे अछि।

लाल भाय अपन मनकेँ केतबो उत्साहित करैथ तैयो एक्काक घोड़ी जकाँ पएर पाछू घुसैक जाइन। घुसैक ई जाइन जे रहक समाजेमे अछि, समाज दिशाहीन बनि कन्यादानकेँ पहाड़ बना आगूमे ठाढ़ कऽ लेलक अछि, कन्यादान केतए हुअए, केना हुअए तइमे पुरना घटक सभकेँ गरदनियाँ दैत नवका घटक सभ भऽ गेला अछि। जहिना शीशोक गाछ वा अन्य ओहन गाछ जे जिनगीक संग-संग अपनामे शीलपन सिरजए लगैए जे सारील रूपमे जेते जुआइए तेते चमकैए तहिना विचारक बोनमे वौआइत-वौआइत लाल भाइक मन ऐठाम आबि गेलैन जे आइ कन्यादानक दिन पक्का कऽ काल्हि बिआहक पूर्वक अन्तिम प्रक्रिया पूरा कऽ नेनाइए।

व्रतक संग लाल भाय विचारकेँ काजक मुड़ी पकैड़ ऐगला सूचीमे रखलैन। एक काजक विचारक पाराग्राफ समाप्त होइते कथाक दोसर पाराग्राफ जकाँ दोसर काज धाँइ-दे विचार करए आगूमे खसलैन।

लाल भाइक आगूमे दोसर काज ई खसलैन जे आइ चारि बजे

[16] बिआहसँ पूर्वक

भोरे एकटा संगीक फोन आएल रहैन जे फल्लाँ संगी रहैत हमरा केण्डिडेटक विरोधमे काज कऽ रहला अछि। बिनु किछु जवाब देनहि लाल भाय फोन रखि नेने छला।

लाल भाइक जिनगी बहुआयामी छैन, जइमे गौ-पालन सेहो छैन। अपनो मन गवाही दैते छैन जे गौ-पालनेसँ ने गोबरधन पूजाक पाबैन सेहो होइए जइसँ अन्न सबहक बखारीमे अन्न भरल रहैए। गौ-पालनेसँ ने गजधन सेहो भेटै छै आ गौमुखी विचारक धार सेहो सदिकाल प्रवाहित होइए। मुदा प्रश्न एतबे नइ अछि।

प्रश्न अछि पौष्टिक अहार-ले दूधक जरूरत अछि, जे औत गाए-महींसक पालनसँ। मुदा ओ पलाएत केना से नान्हिटा प्रश्न नइ अछि। गाइक पालन-ले घासक जरूरत सेहो होइ छै, एक-आधटा जँ पोसौ चाहब ओकरो-ले घास चाही। बारहो मासक घास-ले खेतक संग पानियोँक जरूरत होइ छै, तैठाम एक दिस खेतक समस्या अछि, समस्या ई जे जिनका बेसी खेत छैन हुनके नमहरका नोकरी सेहो छैन। अपने की करता, केमहर करता? माल-जालक घास-ले बँटाइयो खेत के देत? हुनका ओइ घाससँ की भेटतैन। तँए गम्भीर प्रश्न अछि। एक दिस गामक बेरोजगार युवक गामसँ पलायन कऽ रहला अछि तँ दोसर अनुकूल परिस्थिति पैदा नइ हुअ देल जा रहल अछि।

गाइक सेवासँ जुड़ल लाल भायकेँ जहिना सम्बन्ध गाए-मालक डॉक्टर डा. किशोरीसँ तहिना दवाइ दोकानदार-साहित्य प्रेमी गोपीकान्तसँ सेहो जुड़ल छैन। मुदा जिनगी बहुविधि काजक सम्बन्धो तँ बहुविधि लोकोसँ हेबे करत। तँए अपन-अपन जिनगीक सीमा होइ छै जे लक्ष्मण रेखा सदृश होइ छइ। गोपीकान्तेक फोन लाल भायकेँ डॉक्टर किशोरीक सम्बन्धमे आएल छेलैन। एक दिस जहिना पंचायतक वार्ड सदससँ लऽ कऽ सरपंच, पंचायत समिति, मुखिया,

जिला परिषदक चुनावक सुगबुगाहट बिहारमे अछि, तहिना केते राज्यमे एम.एल.ए.क सेहो छइहे। सौंसे देशेमे जखन चुनावी माहौल बनल अछि तखन अखन तँ बिहारक बच्चा-बच्चा घरक मुहथैरपर बैसल अछि..! एकाएक लाल भाइक मनक विचार मन पड़लैन। मन पड़लैन ई जे जखन भोँट खसाएब छोड़ि देलौं, राजनीतिक मंच छोड़ि देलौं, तखन अनेरे गोपीकान्तक प्रश्न मन रखने छी। गाए पोसै छी, तँए डॉक्टर किशोरीसँ सम्बन्ध बना रखै पड़त, तहिना तँ गोपीकान्तो दवाइ-ले भेला, जहिना लाल भाइक सम्बन्ध गोपीकान्तसँ छैन तहिना गोपीकान्तोक सम्बन्ध डॉक्टर किशोरीसँ छैन्हे। तीनू गोरे तीनू गोरेक परीचितेमे छैथ।

एहेन स्थितिमे की करब से लाल भाइक मनमे एबे ने करैन। तहूमे सेकरेट मेटर छी, तीनियेँ गोरेक बीचक बात छी, तहूमे तीनू बुधिजीविये छी। जँ कोनो हवामे कनियोँ गन्ध निकैल जाएत तँ तीनूक बीचक सम्बन्ध कसाइन-कसाइन भऽ जाएत! तँए केकरोसँ पुछलो केना जाएत? जहिना सभकेँ होइ छै जे अन्हारमे चलैत-चलैत अन्हार कम हुअ लगै छै आ आँखिक इजोत बढ़ए लगै छै, जइसँ किछु फरीच देखए लगैए तहिना लाल भायकेँ भेलैन। नजैरकेँ फरिच होइते मन कुदि कऽ कहि देलकैन»

“जाबे प्रश्नक जड़ि नइ पकड़ब ताबेक जवाब अधखिजुए रहत।”

लाल भाइक एक मनक विचारमे दोसर मन अपन जिज्ञासा रखैत बाजल»

“अखन तँ गामक वार्ड सदससँ लऽ कऽ अमेरिकाक राष्ट्रपति तकक चुनावी माहौल अछि। मुदा लोक तँ अपन अधिकारक प्रयोग अपने करत ने। तहूमे विदेश-देशक बात जे गामो-घरमे अधिकार चाहे

विकाउ भऽ गेल अछि चाहे ठकक ठकैती भऽ गेल अछि! एहेन स्थितिमे लोक अपन जीबैक बाट तँ अपने ताकत ने। भौँट खसबैक देखौआ प्रयोगमे एकटा अछि, ओ अछि नोटा भौँट। जेकर माने अछि जे हमरा मनोनुकूल या तँ राजनीतिक दले ने अछि वा दलवाहे ने अछि। भाय, जेहेन भगता रहत तेहने ने डलवाहो रहतै। एहेन स्थितिमे जँ अहाँ नोटा भौँट विचारि कऽ खसबै गेलौं आ केण्डिडेट सबहक एजेन्ट बुथपर नइ देखत? देखबे करत। जखने देखत तखने सभ अपना-अपना गिरहतकेँ नइ कहत जे फल्लाँ भाय फल्लाँकेँ देख मुसकिया देलैन आ हमरा दिस तकबो ने केलैन? तखने ने सबहक मन गवाही देत- 'फल्लाँ फल्लाँकेँ भौँट देलखिन।"

जखने से भेल तखने लाल सागरमे खसब कि कारी सागरमे आकि प्रशान्त महासागरमे पहुँचब तेकर कोन ठेकान? मुदा जहिना बेसी खेलापर ढकार हुअ लगै छै तहिना लाल भायकेँ पेटसँ निकललैन»

"जे मंच छोड़ि देलौं पुन: जाएब नीक नइ। हँ! ओइ विषयक[17] जे आगूक मूल छै, तेकरा पकैड़ चलब अछि।"

ढकारक पछाइत जहिना सबहक मन-पेट हल्लुक होइए तहिना लाल भायकेँ सेहो भेलैन। असथिर होइते मन पड़लैन»

"फोनमे गोपीकान्त की कहने छला? एतबे ने जे डॉक्टर किशोरी हमरा केण्डिडेटक विपरीतमे दोसर केण्डिडेटक संग दइ छैथ?"

असथिरसँ मने-मन लाल भाय विचार करए लगला। बहुआयामी जिनगीमे परिवारसँ लऽ कऽ देश-विदेश तक सम्बन्ध बनैए आ टुटैए, तैठाम अनेक रंग सखा-सम्बन्धित सेहो होइते छै, मुदा हमरा तीनू गोरेक बीच चुनावीक सम्बन्ध तँ नहियेँ अछि। ओ दुनू गोरेक माने

[17] मंचक विषय

डॉक्टर किशोरी आ गोपीकान्तक बीचमे कोन-कोन तरहक सम्बन्ध छैन, से केना बुझब? एहेन अनभुआर जगहमे अपने हेरा जाइ ईहो तँ उचित नहियेँ हएत। डॉक्टर किशोरीक गौँआँ केण्डिडेट छिऐन, पुश्तैनी केहेन सम्बन्ध रहलैन.., हमरा चलैत जँ ओइपर कोनो अवघात हएत, ई नीक नइ। जहिना विचारक सीमान होइ छै, जैठाम दोसर-तेसर आड़ि-मेड़ रस्ता-पेरा होइ छै तैठाम तँ लोक अपने नजैरसँ हिया कऽ देख अपने ने डेग बढ़ौत? विचारक पराग्राफक छीप लग पहुँचबो ने लाल भाय केला कि बिच्चेमे एक मन कहलकैन»

"भने सेकरेट मेटर छी, एकरा जँ बेसी सेकरेसी दऽ देबै तखन ओ आरो बेसी सेकरेट भऽ जाएत, तँए नीक हएत जे जहिना आन-ले तहिना जँ डॉक्टर किशोरियो बाबू-ले सेकरेटे बना ली, ओ बेसी नीक हएत।"

अपन पहिल मन तँ लाल भाइक मानि गेलैन मुदा दोसर मन टोकि देलकैन»

"जँ गोपीकान्त तगेदा करैथ तँ?"

पहिल मन बाजल»

"की तगेदा करता यएह ने अहाँ जे कहने रहितिऐन तँ ओ आबि कऽ अपन गलती सुधार करितैथ, से नै केने हेतैन सएह ने?"

दोसर मन बाजल»

"समदिया बना समाद देलैन आकि सिपाही बना कहने छला जे पकैड़ कऽ नेने आउ! भेँट करैन वा नइ करैन, ई तँ किशोरीजीक मनक विचार छिऐन ओइमे हम केतए छी?"

नीक जकाँ निर्णए काइए ने पेने छला कि जहिना दाहा पाबैनक उपलक्षमे मरसिया गबैकाल गौनिहार गबैए जे 'एक मरसिया खतम हुआ है दोसर शुरू होता है', तहिना लाल भाइक मनमे तेसर काज

कुदि कऽ खसलैन। खसिते मन बजलैन»

"काल्हि तँ सर-पोतीक बिआहक बरियाती औत, नौत-लियौन भेल अछि?"

जहिना भारी मोटा देख मोटैत वा सवारी भरल सवारीक घोड़ा हदिया जाइत जे उठाएब कठिन अछि, तहिना लालो भायकेँ भेलैन। अक्-बक् दुनू बन्न भऽ गेलैन। खग जानए खगक मन-बात। चाहे ओ चिड़ै रूपमे बुधि हौउ आकि खगल रूपमे खगाएल खग। गंगाकातक लोक सभ दिन गंगेमे नहाइ छैथ आ दूर हटल लोककेँ मनेमे रहै छैन जे 'गंगा नहाएब' तँए कि गंगा नहाएबक सभटा धरम सबदिने नहेनिहारकेँ भऽ जेतैन आ शेष बाँकी किछ रहबे ने करत जे दोसर-तेसरकेँ हएत..?

बोझ-तर दबल लाल भाइक मनमे 'सासुर जा हएत कि नइ जा हएत' ऐ सुरागमे अपन विराग-मन ठेलि देलकैन। ठेलाइते मन फुनफुनेलैन»

"सासुरक चारिम पीढ़ीक विआहक उत्सव छी, चारि पीढ़िक सर-सम्बन्धी सभसँ भेँट-घाँट हएत, आरो नीक-बेजा जे हौउ मुदा जीवित भेँट तँ हेबे करत। तेकरा छोड़ब नीक हएत? आइक परिवेशमे लोक रस्ते-पेरे बिआह रचि माइयो-बापकेँ नहि निमंत्रित करै छैथ, मुदा संस्कार आ संस्कार गीत वएह गबै छैथ! यएह तँ छी आजुक परिवेश! जे परिवेश जेकरा-ले जे हौन मुदा अपन परिवेश जँ अपना मनोनुकूल बना नइ चलब तखन ओइ बीचमे स्वतंत्र अधिकारक महौते की?"

ई बात मनमे अबिते लाल भाय विचारि लेलैन जे नौत पुरए काल्हि सासुर जरूर जाएब। मुदा लगले जहिना रथक घोड़ाक मुखारी पाछूसँ खिचाइते घोड़ा ठमैक जाइए तहिना लालो भाय ठमकला।

एक दिस घर-परिवारक काजसँ बोझिल लाल भाय, तैपर सर-

सम्बन्धीक बोझ सेहो आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। बिआहक नौत छी, रौतका प्रमुख काज छी, माने बिआह। ओ काज एक दिस महिला सबहक छिऐन, दोसर दिस बरियातीक सनोमान करब जइमे बरियातीकेँ खुएनाइ-पीऔनाइ आ यज्ञक अन्तिम प्रक्रिया बर-कनियाँकेँ अरियाति कऽ विदा करब अछि, जे यज्ञक फल भेल, ओ काज सभसँ उपयुक्त तँए ओइ समैपर जरूर पहुँचब अछि। बीचक जे किछु प्रक्रिया भेल ओइमे जँ कमी-बेसी भेल, ओकरो विदाइ करैत ने नव सम्बन्ध स्थापित हएत।

जिनगीक क्रियाक सरियाइत काज देखते लाल भाइक मन टुसिएलैन। टुसियाइते बुदबुदेलैन»

"जँ भरि दिनक काज गर अँटि जाए, मात्र करबटा बाँकी रहल, तँ वएह ने शुभ लग्न भेल। आइ केते खर्च अछि जे हएत, जँ तेते पाइ जेबीमे रहत तखन अनेरे जे चिन्तासँ मनकेँ दबने रहब, ओ चिन्ता प्रिय, माने अनेरो मनकेँ भरिएने रहब, लोकक वृत्तिक आवृत्ति भेलैन। भाय, काल्हि-ले काल्हि छै, आइ थोड़े काल्हि छी। काल्हि तँ भविस भेल, वर्तमान ने वीर्तमान भेल जेकर कीर्तमान बनबैक अछि।"

मन असथिर करैत लाल भाय आगू बढ़ैक विचार करिते रहेथ कि समधौत आबि गोर लगलकैन। मुँह उठा असिरवाद दैत पुछलखिन»

"बाउ, की हाल-चाल अछि?"

तइ बिच्चेमे समधौत बिआहक कार्ड आगूमे बढ़ा देलकैन। कार्ड खोलि पढ़ला तँ काल्हिये छोट भाएक बिआह छिऐन, तेकरे नौत-हकार-ले आएल छेलैन।

कार्ड पढ़िते लाल भाइक मन मन्हुआ लगलैन। मन्हुअए ई लगलैन जे एना जँ काजक उपरौज हएत तखन आदमी काइये की

सकैए? बिआह सन संस्कारमे संस्कार भरैक अछि, असिरवादक अवसर छी आ तैठाम जँ जाइये ने पएब तखन हएत केना? गनल-गूथल सर-सम्बन्धी कुटुम-परिवार छैथ, एना किए सभ एके दिन काज बेसाहि लेलैन। लगले सूरमे माने विचारक कड़ीमे मने-मन निर्णय कऽ लेलैन जे जे पहिने विचारि नेने छी, से करब, तँए कहि दिऐन। अही असमंजसमे लाल भाइक मन ओझराएल रहैन कि बिच्चेमे समधौत कहलकैन»

"पापा, कहलैन अछि जे अपने जरूर उपस्थिति दर्ज कराबिऐ।"

समधौतक आग्रह सुनि लाल भाइक मन पीड़ित जकाँ पीता गेलैन। भेलैन जे ठाँहि-पठाँहि कहिऐन जे एना अनेरे सभ कियो माने सभ सम्बन्धी एके दिन किए काज ठेक लेलौ। मुदा बाल-बोध लग बजलो केना जाए। तँए लाल भाय चुपे-चुप रहैथ मुदा मन मन्हुआइत रहैन। तइ बिच्चेमे समधौत कहलकैन»

"बाबूजी, धड़फड़मे काज ठीक भेल तँए धड़फड़ीमे एना भेल।"

काजक असथिर प्रक्रियाक बीच धड़फड़ी सेहो कहियोकाल समयानुसार आबि जाइ छै, सभ माए-बाप चाहैए जे जेते जल्दी बाल-बच्चाक बोझ[18] माथपर सँ उतैर जाएत ओते जल्दी ने बाल-बच्चाक कर्जासँ छुटकारा भेटत। जिनगीक बहैत धारमे एतबे ने जरूरी अछि जे माता-पिताकेँ पार लगबैत श्रद्धा-सुमन दैत बाल-बच्चाकेँ घर बसा कऽ जिनगीकेँ स्वतंत्र बना ली।

समधौतकेँ आग्रह करैत लाल भाय कहलखिन»

"बाउ, आइ रहि जाउ, कनी निचेन होइ छी, तखन नीक जकाँ गप-सप्प करब।"

[18] पोसि-पालि, पढ़ा-लिखा बिआह-दानइत्यादिसँ निवृत हएब।

लाल भाइक मनमे रहैन जे अपने जइ काजक सूत्रपात करए जा रहल छी, तइमे दुनू गोरे माने सासुरक सारो आ समधियौरक समैधो, काजक अन्तिम दौड़मे पहुँचल छैथ, तँए किए ने एक सर-सम्बन्धीक परिवारमे काजक की दूरी अछि आकि नजदिकी। जाबे से नइ बुझब ताबे सर-सम्बन्धीक बीच दब-उनार होइते रहत जइसँ किछ काज प्रमुख आ किछ गौण होइत रहत, जे विचारक दिशाकेँ झकझोरत। लाल भाइक मन औनए लगलैन। तैबीच कानमे समधौतक ई बात सेहो आबि गेलैन»

"अखन काजक धुमसाही अछि, बहुत ठीमन जाइक अछि नइ अँटकब।"

कहि समधौत मोटर साइकिल पकैड़ लेलक। दरबज्जा तक अड़ियबैत[19] लाल भाय बजला»

"जखन सभ अपने सिरे नचै छी, तखन अपन-अपन सम्हारू।"

शब्द संख्या : 2063, तिथि : 5 मई 2016

[19] आड़ि बनाएब

दुधियाएल बरखा

बैशाख मासक अन्हरिया-एकादशीक अढ़ाइ बजे राति। मात्र आधा घन्टा बाँकी तीन बजे भोर होइमे। ओछाइनपर पड़ल दुर्वासा काका मौसमक तापसँ तपित होइत कछमछ करैथ। हवा शान्त, ताप तपतपाइत। तपतपेबो केना ने करैत, जहिना रेडियो तहिना अखबारो दिन-राति चिचियाइत जे केता बर्खक पछाइत एहेन टेम्प्रेचर मौसमकेँ चढ़ल अछि! कछमछ करैत ओछाइनपर दुर्वासा कक्काक मन उतप्त भऽ वौआइत-वौआइत ऐठाम आबि अँटैक जाइन जे जीब कठिन अछि...।

केना नइ बुझि पड़तैन जे जीअब कठिन अछि? जखैन नीने हराम तखैन लोके आकि कोनो आने पालतू-सँ-जंगली जानवर आकि माटि परहक पंछीसँ लऽ कऽ गाछ परहक पंछी धरि जीविये केते दिन सकैए? बुझले तँ बात अछि जे जखने कफ-पीत आ वात संग पकड़लक तखने औरदा खटियए लगल। जखने जिनगीक औरुदा खटियाएत आकि चौकियाएत आकि पलेगाएत तखने ने बुझि लिअ जे आब गाछी लगिचाएल..!

बेर-बेर दुर्वासा कक्काक औनाइत मनमे उठैन जे मौसमक बेतुकी गतिसँ पैछला सालक अन्तिम फसिल मारल गेल..! आमक दरसे ने..! पाकलक कोन बात जे टुकलाक चटनियो नदारत..! आन सालक

हिसाबसँ दोबर पटौला पछातियो गरमा धान पुजियोमे घाटा लगौत..! आ गहुम सहजे मारले गेल..! गहुमक गेने पैछला साले चलि डुमि गेल..! मुदा खेरही तँ ऐगला खेती छी, परिवारकेँ के कहए जे समाजसँ लऽ कऽ जिला, राज्य आ देशक समस्या दालिक छी..! केना नइ दस कट्ठा खेरही दुर्वासा काका करितैथ?

ओना धड़फड़ाएल किसान कहियौ कि औगुताएल आकि अगुआएल, सरोसत्तीए पूजाकेँ वसन्तक जन्म-दिन बुझि खेरही-बीआ आधा माघेसँ खेतमे छीटब शुरू करै छैथ, मुदा से नइ बतीस दिन पहिने दुर्वासा काका सलोहाल खेतकेँ पटा, जोति-कोरि बीआ छीटि चौकिया उन्नैत किस्मक अल्पकालिन खेरही दस कट्ठामे ई सोचि केने छला जे समुचित विधि-विधानसँ केने निसचित परिवारक साल भरिक दालिक समस्या मेटा जाएत। हिसाबो सोझ बुझि पड़लैन। ओना चालीस किलो कट्ठा तक खेरहीक पैदावार अछि, मुदा अपने तँ ओहन किसान छैथ नइ जे ओइ ऊचाइकेँ पकैड़ पेता। मुदा एहनो तँ झड़खण्डी किसान कहियौ कि अधमरू आकि पछुआएल नहियेँ छैथ जे सोलहन्नी बीओ बुड़ेता...।

तँए बीच-बँचाउ करैत बीस किलो कट्ठा मानि, दू क्विन्टलक हिसाबसँ खेरही-खेती केने छला। हिसाब एना सोझ बुझि पड़लैन जे सालो भरि जँ आधा किलो पाँच गोरेक परिवारमे खर्च हएत तँ सौ-ग्राम मुड़े-मुड़ भेबे कएल। ओना सबठामक अपन-अपन जरूरत छै, मुदा से अलग अछि। तहूमे दालि-दालिक अपन-अपन कद-काठी सेहो होइए। एक दिस खेसारीक कद-काठी अछि, जे दानामे अदहा खोंइचा आ अदहा दालि होइए जखन कि खेरही तइ कद-काठीक नइ छी, ओकर कद-काठी दोसर छै, किलोमे आठो सए ग्रामसँ बेसी दालि होइए। तेतबे किए, कुरथी-तेबखा आ खेरही ओहन दालि छी जेकर खोंइचो खाद्ये छी। जँ से नइ छी तँ भतउसनामे धानक चाउर कुटि

कऽ आ खेरहीक दालि सौंसेक दोस्ती केना होइए? दू-तीन दिनसँ मेघ असथिर हवामे रूइयाक फाहा जकाँ उड़ियए लगल, जइसँ झपन-तोपन शुरू भेल। तैसंग हवो उड़ए लगल। हवाक गतियो रसे-रसे तेज होइत गेल। ओना धरती जे तपित भऽ गेल छल आ ओकर जे तपवन उठए लगल, तइसँ वातावरणमे कोनो बेसी सुधार तँ नइ भेल छल मुदा सुधारक किछु झलकी तँ आबिये गेल छेलइ। अढ़ाइ बजे रातिमे हवाक गति तेज भेल, वादल सेहो उमड़ए लगल। बुन्दा-बुन्दी पानि शुरू भेल। जे धीरे-धीरे बढ़ए लगल, जइसँ धरतीक तपित तन रसे-रसे तुषित हुअ लगल। अकास-सँ-धरती धरि मौसम समरूप तँ नइ भेल मुदा सिमैस जरूर गेल।

धरतीक तपित तापसँ औनाइत दुर्वासा कक्काक मन रसे-रसे चैन हुअ लगलैन। अखन धरि जे औनाइत मनमे वौआइत विचार उठै छेलैन आ खसै छेलैन ओ मौसमकेँ बदलैत रूप देख मौसमे-अनुकूल, अदलए-बदलए लगलैन। जहिना अदलै-बदलैबला मंडीमे शान्ति राखब जरूरी होइ छै, जँ से नइ राखब तँ पाइयेक हिसाब ओझरा जाएत, तहिना।

जेना-जेना दुर्वासा कक्काक मन मौसमानुकूल चैन होइत जाइन तहिना-तहिना सौन मासक पूनो-चान जकाँ अपनो चान फरीच हुअ लगलैन। जेना-जेना अपन चान फरीच होइत जाइत रहैन तेना-तेना मन चैन भेल जाइन। तीन बजे राति बीतल आ तीन बजे भोर शुरू भेल। मेघो बुनियाएब बन्न केलक। एका-एक ओते रातिमे कहियौ आकि ओते भोरमे चुट्टी-पीपरीसँ लऽ कऽ मनुख तक चल-मला गेल। मुदा दुनियोँ तँ दुनियाँ छी, जेकरा जे भवै वएह ने ओकर भावना भेल आ जेहने भावना तेहने ने बुधि, आ जेहेन बुधि हएत तेहेन काज करैमे आनन्दो आएत आ वएह आनन्द ब्रह्मानन्दोमे जा कऽ मिलत!

अपन रागमे दुर्वासा काका मने-मन डुबकी बजबैत रहैथ कि चिकनी काकी चिचिआइत लगमे आबि कहलकैन»

"अखनो तक जे गठूला घर नै बनेलौं से देखियौ-गे सभटा गोरहाक दशा! भीज कऽ सभटा गोबर भऽ गेल! फेरसँ पाथए पड़त!"

होइते अहिना छै जे घरमे आगि लगौ आकि नहमर बिहाड़ि अबौ आकि भुमकम हौउ परिवारजन तँ अपने-अपने भवन मनसँ ने अपन-अपन जानक संग ओहू वस्तु आ विचारकेँ जान-बँचबैत घरसँ बहराइए जे ओकर प्रिय रहै छइ। जहिना सैयो-हजारो रंगक वस्तु-जातसँ भरल घर-परिवारमे वएह वस्तु वा विचारकेँ बँचबए चाहैए आ आन वस्तु वा विचारक भरमार रहितो छोड़ैले तैयार होइए, तहिना चिकनियो काकीकेँ भेलैन।

भेलैन ई जे जहिना गोबरधन-पहाड़ ओढ़ि ब्रजमण्डलवासीक जान बँचबैक पाछू कृष्ण भीर गेला तहिना परिवारक पहियाक चलैत घुरीक एकटा किल्ली जकाँ जारैनपर चिकनी काकी अपन सुरता गड़ौने छेली। वएह सुरता हुनका बुन्दा-बुन्दी छुटिते गोरहाक मचान दिस बाड़ी लऽ गेलैन, जेकर दुर्दशा देख चिकनी काकीक मन कलहैन्त गेल छेलैन। ओहीसँ आक्रमित भऽ दुर्वासा काका लग आबि बाजल छेली। मुदा दुर्वासा कक्काक मन बदलैत मौसम आ बदलैत जिनगीक गति-विधिपर धियान अड़कल छेलैन, जइसँ चिकनी काकीक बातक कोनो उत्तर नइ देलखिन। देबो जरूरी नइ बुझलैन। जरूरी ऐ दुआरे नइ बुझलैन जे चिकनी काकीक आद्योपान्त बात सुनलैन। सुनिते जखन गुनए लगला तँ बैशाखक अधमसिया बुझि पड़लैन, नइ कि मौसमक उतार बुझि पड़लैन।

माने ई जे मौसमक उतार भेल गरमी मास, माने जखन बरखा मास बनए लगैए तइ बीचक समए, जे एक उतरैए दोसर चढ़ैए। मुदा

बैशाख तँ से मास नइ छी, ओना एक मास जेठुआ रौद सेहो पछुआएल अछि। जइमे सालक सभसँ जुआएल रौद होइए। जुआएल कहियौ आकि जबनाएल, समए तँ सभसँ नीक गोरहा-ले भेबे कएल। तैठाम जे पत्नी माथ पटकै छैथ, यएह भेल अनेरो दुख बेसाहब...।

दुर्वासा कक्काक मन आगू घुसैक गेलैन। घुसैक कऽ गोरहा घर कहियौ आकि जारैनक गठूला, तइमे जा कऽ अँटकलैन। अँटैकते मनमे उठलैन- एक तँ आश्रमी घरसँ आकि भण्डार घरसँ गठूला कद-काठीमे छोट होइए, तैसंग नीपै-बहारै आकि लेबै-मुनैक कोनो खगते ने होइए, तइले एते जे माथ-कपार पीटै छैथ से अनेरे ने! हिनके सबहक सपनामे कहियो चारि बीघाक ताज-महल औतैन..? तँए आरो अनठा कऽ दुर्वासा काका कनतोपि लेलैन।

ओना दुर्वासा कक्काक मुँह नइ खुजने चिकनी काकीक मन चिक्कन हुअ लगलैन। किएक तँ पति-पत्नीक बीच जँ पत्नीक बातसँ पति मुँहकेँ बन्न कऽ लैथ, सएह ने भेल पत्नी-लेल चिक्कन। आब कि माथपर चढ़ि टीक पकैड़ ठीक करती तखन मन चिक्कन हेतैन?

चिक्कन मन बनिते चिकनी काकीक नजैर पतिक बन्न मुँहपर पड़लैन। पहिने शंका भेलैन जे पूर्वाक लहकीमे भरिसक नीन छैथ तँए हमर बात नइ सुनलैन। मुदा गोरहा-घर आ गोरहाक दशा मनकेँ बेथित केनहि रहैन, तँए बेर-बेर मनमे विचारक झोंको उठबे करैन। मुदा असगरमे के केकरासँ पुछत आ के केकरासँ कोनो विचार लेत कि देत। तखन तँ भेल जे जे भऽ रहल अछि ओकरा छातीमे मुक्का मारि देखैत चलू। यएह सोचि अपन पनचैती अपने करैत चिकनी काकी अपन ओछाइन दिस बढ़ि गेली।

अन्हरिया-एकादशीक भोरक उदित चान जहिना दुधियाएल लाली नेने फरीच मौसमक बीच चौठक चान जकाँ हँसियाएल अपन

रंग-रूप निहारैए तहिना दुर्वासा कक्काक मन अपन जिनगीक रंग-रूप निहारए लगलैन। मरहन्ना गहुमक खेती आ फलाएल आमक बगान बोनिआ गेने दुर्वासा कक्काक जे मनसँ भूख व्याकुल भऽ पड़ा लगल छेलैन ओ पुन: खेरही खेतीपर नजैर पड़िते आबए लगलैन। दालिक अभाव किए भेल? पहिल प्रश्न दुर्वासा कक्काक मनमे उठलैन। खैहन अन्न भेल धान, गहुम, मकइ इत्यादि आ दलहन भेल बदाम, केराउ, मौसुरी, खेसारी इत्यादि। भोजनक पहिल खगता खैहन अन्नसँ पूर्ति होइए नइ कि दलिहनसँ। दलिहन भेल खैहनक सहयोगी। ओना दलिहनोक रोटी, सतुआ आ उसनाक रूपमे खैहनक पूर्ति करैए, मुदा ओ भेल अभावक भाव।

ओना दलिहनोक खेती आनो-आनो मौसममे होइए, जेना राहैर, खेरही, कुरथी आ तेबरखा। मुदा राहैर, कुरथी आ तेबरखा ऊँचरस जमीनक फसिल छी, जे धार-धूरक इलाका रहने मिथिलांचलमे कम अछि, तँए राहैर-कुरथी उपजै जोकर चासे कम अछि। रहल कैतका खेती, माने जाड़-मासक खेती मुदा ओ तँ जहिना खैहनक समए छी तहिना दलिहनक सेहो छी। एक तँ ओहिना धार-धूर, डोह-डाबर चौर-चाँचर, कोचाढ़ि-बीरैक गाम जइमे मध्यम किस्मक जमीन कम अछि, तैपर खैहनक बदला दलिहन अभावी लोक किए उपजेता, तैसंग ईहो भेल जे समुचित ढंगसँ दलिहनक खेतीक चलैन कमि गेल आ दलिहनक छिट्आ खेतीक चलैन जोर पकैड़ लेलक, जे करैमे असानो होइए। मुदा समुचित ढंगसँ नइ भेने तिहाइयो-चौथाइ उपज नइ होइए! अस्सीक दसकमे वैज्ञानिक पद्धतिसँ गहुमक खेती करैक सरकारी योजना बनल, उपजामे बढ़ौतरी भेल, दलिहन खेत गहुमक खेतमे बदैल गेल जइसँ दालिक उपज कमि गेल!

दुर्वासा कक्काक मन आगू घुसकलैन। आगू ई घुसकलैन जे जखन एहेन स्थिति बनि गेल अछि तखन कि लोक दालिये खाएब

छोड़ि दिअए? कनीकाल-ले महगक दुआरे छोड़ियो देत मुदा अदौरी-बरीक कोन दोख भेल जे गाम छोड़ि पड़ा जाए? जाड़क हिस्साबला समए जे गहुमकें छोड़ि दइ छिऐ, तैयो ओइमे गरमा दालि माने खेरही-तेबखा तँ कएल जा सकैए? तइले दुनूक समैक अँटाबेश करब अछि। मुदा अँटाबेशक पाछू पैछला मौसमक प्रभावो-दुष्प्रभाव तँ ऐछे? जँ खेत बिलैम कऽ उखड़त- माने खेतीक अनुकूल बनत- तखन खेतीमे बिलम हएत। जखने खेतीमे बिलम हएत तखने फसिल आगूक समए पकड़त। जखने आगूक समए पकड़त तखने ऐगला फसिल प्रभावित हएत..?

दुर्वासा कक्काक मन आगू घुसैक अपन देश-कोस दिस बढ़ि गेलैन। कहू जे दुनियाँ भरिमे अपना सबहक भोजनक जे सचार-विचार अछि, ओ दुनियाँमे केतए अछि? ओना चाउर-दालि सभ देशक भोजन छी, मुदा जइ सचार-विचारसँ हम सभ खाइ छी ओ केतए अछि? भातक पहिल संगी दालि छी, से आन थोड़े बुझैए..?

आब दुर्वासा कक्काक नजैर अपन खेरही-खेतीपर एलैन। खेतमे बीआ देना बतीस दिन भऽ गेल। सत्तैर दिनक पछाइत फड़ ललियए लगत। पचहत्तैर-अस्सी दिनमे खेरही खस्सी बनि आगूक भोज्यमे शामिल भऽ जाएत। जहिना नख-सिखक वर्णन तहिना सिख-नखक वर्णन सेहो होइते अछि। एकेबेर दुर्वासा कक्काक मन हहैर कऽ बतीस दिन पाछू घुसैक ओइ दिनपर गेलैन जइ दिन खेतमे खेरही बीआ बाउग केने छला।

बाउग करैसँ चारि दिन पहिने पटौने छला, धरती एते तबैध गेल छल जे सलोहाल पटौल खेत चारिये दिनमे उखैड़ गेल, माने खेती करै जोकर भऽ गेल। डकरा हाल खेतमे रहने भुआ जकाँ गाछ जनमल। बीआक उपचारक संग जोतो आ खादो अनुकूल भेल। जइ गतिये

फसिलक बढ़बारि हेबा चाही ओइमे मिसियो भरि कोताही नइ भेल। जहिना अपन कर्तव्यमे कमी नइ भेलैन, तहिना खेरही सेहो अपन चालि-ढालि आ रंग-रूप पकड़ने दुधिआइत-दुधियाइत फुलिआइपर पहुँच गेल अछि..!

दुर्वासा कक्काक मन हलसैत-कलशैत ओइ अवस्थामे पहुँच गेलैन जेतए जिनगीमे मोड़ अबैए आ दुधिआइत देहमे फुलिआइत मन नचैए। नचैत दुर्वासा कक्काक मनमे जेना घुरमी लगलैन। होइतो अहिना छै जे नचैत-नचैत जखन देहमे घुरमी लगै छै तखन ओ नचैत-नचैत धरतीपर या तँ बैस जाइए वा खसि पड़ैए। घुरमी ई लगलैन जे दालिक उपटान केना किसानक बीच आएल? मुदा से अखन नइ। अखन एतबे जे जहिना चाउरक हिसाबे दू सेरक बदला तीन सेर धान भिनसुरका उखड़ाहाक[20] बोइन छल तहिना चाउरेक हिसाबसँ दू सेर दालियो बोइन छल। एकर माने ई नइ जे मिथिलांचल दालि-दलिहनक भण्डार छल।

हँ, एते जरूर छेलै जे किछु किसान परिवार एहेन छला जिनका अपना परिवारसँ फाजिल दालि होइ छेलैन, जे बोइनोमे दइ छेलखिन। एकर माने ईहो नइ जे दालिक प्रचूरता छल।

जे किसान निम्न-मध्य परिवारक छला ओ धानक अभावमे सेहो दालिये बोइन दइ छेलखिन। ई तँ भेल भिनसुरका उखड़ाहाक बोइन। मुदा बेरुका उखड़ाहाक[21] सबा सेर चाउरक हिसाबसँ दू सेर धान जहिना बोइन छल, तहिना सवा सेर दलिहन सेहो छल। एकर माने ई नइ बुझब जे बोनिहारकें तीन सए पैंसैठो दिन काज लगै छेलैन, भरि साल कमाइ छला, बेरोजगारी नइ छल। नइ छल कि छल से तँ

[20] माने बारह बजे तकक

[21] माने बेरसँ साँझ धरि-

सबहक सोझहेमे अछि।

अधरतिया बीतल, बरखा सेहो बन्न भेल। पूर्वा हवाक लहकीमे अकासमे पसरल वादल सेहो छँटि गेल। जहाँ करिया मेघ परीच भेल कि भुक-भुक तरेगनो आ भकजोगनियों सभ भुकभुकाए लगल। अन्हारिया-एकादशीक भोरक चान हँसिया-सद्दश हँसिआइत पूब दिशामे उगल। बदलैत मौसमक अखड़ेहे ने अखार भेल जँ से नइ भेल तँ किए कालीदासकें कहए पड़लैन-

"आषाढ़स्य प्रथम दिविशे:..!" जँ पूर्णिमा आ सकराँतिक हिसाबसँ मास चलैत तँ किए लिखए पड़ितैन? सोझ-साझ पूर्णिमा आकि सकराँतिक हिसाबसँ सीमापर खुट्टी गाड़ि मासकें खुटिया दितैथ..!

आन दिनक अपेक्षा जेना आइ दुनियाँक सभ किछु भोरे जगि गेल तहिना दुर्वासा काकाकें बुझि पड़लैन। आन दिन तीन बजे भोरमे पौड़कीए-टा बोली दइ छल, से आइ धरतीक धोंघा-सितुआसँ लऽ कऽ गाछ परहक चिड़ै-चुनमुनी सहित बोली दिअ लगल! गाए-महींस घरसँ बहार होइले डिरिया लगल अछि। दुर्वासा काका ओछाइनसँ उठि ओसारपर आबि चिकनी काकीकें कहलखिन»

"दुनियाँक सभ किछु जगि गेल आ अहाँ ओछाइने धेने रहब?"

ओना चिकनी काकी अपने बेथे बेथाएल अखनो छैथे, जइसँ कखनो बरखाकें झड़कौआ कहि गरियबै छथिन तँ कखनो अपन कपारकें दोख लगबै छैथ, तँ कखनो पतिकें अपन कपार बुझि अपनाकें कोसबो करै छैथ जे केहेन कपारमे बेथाएल छला! मुदा सभकें समटैत चिकनी काकीक मन गवाही देलकैन, भोरका समए छी, सभ अपन-अपन भरि दिनक सगुन बनबैले हँसैत उठैए, तैठाम जँ मरियाएल-कडुआएल उठब से नीक नहि। मनकें बदलैत ओछाइनसँ

उठि चिकनी काकी ओसारपर आबि बजली»

"आइ भोरे नीन बिला गेल।"

मुस्की दैत दुर्वासा काका बजला»

"बिलाएल कहाँ बिलाइ जकाँ दूध-फूल तकैए..!"

◌

शब्द संख्या : 2059, तिथि : 11 मई 2016

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक जन्म झंझारपुर अनुमण्डल अन्तर्गत बेरमा गाममे- 5 जुलाई 1947 ई.मे भेलैन। आरम्भिक शिक्षा ग्रामीण माहौलमे तथा उच्च शिक्षा मिथिला विश्वविद्यालय- दरभंगामे प्राप्त केलैन। हिन्दी एवं राजनीति शास्त्र विषयमे एम.ए. करि गाम आबि कृषि-कार्यक संग जीवन-यापन आरम्भ केलाह। विभिन्न तरहक सामाजिक समस्या एवं शोषणक खिलाफ मण्डलजी ठाढ़ भेला, जइमे काफी संघर्ष करए पड़लैन। दर्जनो बेर जहल गेला। तथापि पैंतीस बर्ख धरि एक-रफतारमे लड़ैत रहला। हहरैत शरीर देख, पछाइत साहित्य-लेखन आरम्भ केलैन।

नव नजैर, फरिच्छ दृष्टिकोण आ समन्वयवादी विचारधारा मण्डलजीक विशेषता अछि। जे किछु रचै छैथ, जे किछु बजै छैथ, सहए करबो करै छैथ आ तेहने जिनगियो छैन। ठोस आधारक संग ठाढ़ रहब हिनक निजी जिनगीक व्यावहारिक पक्ष रहल अछि। पक्षमे आकि विपक्षमे जेतए केतौ ठाढ़ होइ छैथ बिनु बैसाखीक ठाढ़ होइ छैथ। हिनक रचनाकेँ जखन पढ़ै छी तँ केतौ ओझरी नहि बल्कि सोलहन्नी सोझरीमे सोझराएल आगू बढ़ैत रहै छी। सोझराएल विचार आ सोझराएल जिनगीक कारणे मण्डलजीक कोनो रचना ओझराइ नइ छैन एकदम्म सोझराएल रहै छैन। एकबेर लिखि देलौं लिखि देलौं..! नियमित एवं अनवरत लेखन एकर परिचायक अछि आ मंसा-वाचा-कर्मणा, सदैत सोझराएल रहबक द्योतक...।

मैथिली साहित्य मध्य सोझराएल एवं स्वतंत्र रचनाकारक स्थान जे रिक्त छल, ओकर पूर्ति जगदीश प्रसाद मण्डलजी पूर्ण सक्षमतासँ कऽ रहला अछि। 2002-3 ईस्वीमे पहिल पोथी–गामक जिनगी–लिखलैन, जे 2009 ई.मे श्रुति प्रकाशनसँ प्रकाशित भेल। आइ अपनेक हाथमे जे-**गाछपर सँ खसला**–पोथी अछि ओ मण्डलजीक लिखल 53म पोथी अछि। एकर अतिरिक्त कएक-टा अनछुअल विषयपर आलेख सेहो प्रकाशित छैन।

जगदीश प्रसाद मण्डलजी सम्मानित/पुरस्कृत सेहो होइत रहला अछि। 'गामक जिनगी' (लघु कथा संग्रह) लेल हिनका 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' (राष्ट्रीय), 2011 इस्वीमे देल गेलैन। तहिना, पहिल 'विदेह-भाषा-साहित्य-मूल-सम्मान', पहिल 'विदेह बाल-साहित्य-पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान' तथा पहिल 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/ पुरस्कृत भेला...।


पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-01-8